ISSN : 0975-8011

# बुंदेली बसंत २०१८




02/2018

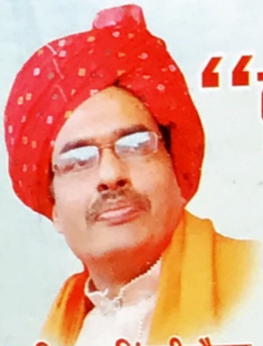
बुन्देली लोक संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन हेतु आयोजित

बाइसवें

# "बुन्देली उत्सव-२०१८"

के आयोजन पर

## हार्दिक शुभकामनायें



मा. शिवराज सिंह जी चौहान
मुख्यमंत्री म.प्र. शासन



मा. विश्वास सारंग जी
सहकारिता मंत्री म.प्र. शासन

## म.प्र. राज्य सहकारी बैंक मर्यादित, भोपाल (म.प्र.)

**सशक्त सहकारिता, समृद्ध मध्य प्रदेश**

1. सहकारी कृषि ऋणों पर शून्य प्रतिशत पर ब्याज पर केसीसी ऋण उपलब्ध कराना।
2. वस्तु ऋण पर (खाद एवं बीज) 10 प्रतिशत अनुदान (अधिकतम 10000 रूपये)।
3. 10 लाख तक के कृषि ऋण पर स्टाम्प ड्यूटी समाप्त करना।
4. कृषि ऋणों के लिये नोड्यूज प्रमाण पत्र लाने के झंझट से मुक्ति।
5. सहकारी लोक अदालत के माध्यम से पुराने ऋणों के एकमुश्त समझौता में ऋण जमा करना।
6. पुराना ऋण अधिक ब्याज का चुकता कर नया ऋण शून्य प्रतिशत ब्याज की दर से प्राप्त करना।
7. संस्था का सदस्य बनाकर किसान क्रेडिट कार्ड जारी करना।

## "समृद्धि आपकी योजनाएं हमारी - अपेक्स बैंक"

### अमानतों पर ब्याज दर

| क्र. | अवधि | सामान्य | वरिष्ठ नागरिक |
|---|---|---|---|
| 1. | 180 दिन या 1 वर्ष से कम | 7.00% | 7.50% |
| 2. | 1 वर्ष से 3 वर्ष तक | 7.25% | 7.75% |
| 3. | 3 वर्ष से अधिक | 7.50% | 8.00% |
| 4. | बचत खाते | 4% | 4.% |

**सौजन्य से : जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या., छतरपुर (म.प्र.)**

बुन्देली साहित्य, संस्कृति तथा इतिहास को समर्पित- UGC Approved Journal

ISSN-0975-8011
पंजी क्र. MPHIN-17761/12/1/2002-TC

# बुन्देली बसन्त

अंक १९, फरवरी २०१८

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा हिन्दी की सूची में क्रमांक १०७ पर जर्नल क्र. ४७६९२ के रूप में अधिमान्य

संरक्षक :
**शंकरप्रताप सिंह बुन्देला `मुन्नाराजा'**
राजमहल परिसर, छतरपुर (म.प्र.)
मोबाइल : ०९४२५१४१४५५, ०९९८५०३०५५

संपादक :
**डॉ. बहादुर सिंह परमार**
एम.आई.जी.-७, न्यू हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी
पन्ना रोड, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१
मोबाइल : ०९४२५४७४६६२, ७९७४२१७७५६
e-mail : bsparmar1962@gmail.com

सह संपादक :
**डॉ. हरिसिंह घोष**
घोषयाना, संकटमोचन मार्ग, छतरपुर (म.प्र.)
मोबाइल : ०९४२५१४२०६६

संपादन सहयोग :
**शिवभूषण सिंह गौतम**
अन्तर्वेद, कमला कॉलोनी, छतरपुर (म.प्र.)
मोबाइल : ९८२६७५६९२९

बुंसंवि

प्रकाशकः
**बुन्देली विकास संस्थान**
महल परिसर, छतरपुर (म.प्र.) ४७१००१

★ संपादन एवं प्रबंध पूर्णतया अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

★ **आवरण चित्र :**
अंशुमान सोनी
द्वारा-रामकुमार सोनी
गोवर्धन टाकीज के पास, छतरपुर (म.प्र.)

★ **सहयोग राशि :**
२०० रुपये

★ **मुद्रक :**
आकृति ग्राफिक्स, छतरपुर (म.प्र.)

★ **संगणकीय अक्षर संयोजन :**
प्रतिमा तिवारी
छतरपुर (म.प्र.)



| | |
|---|---|
| वार्षिक सदस्यता | - २५० रु. (डाक व्यय सहित) |
| द्विवार्षिक सदस्यता | - ५०० रु. (डाक व्यय सहित) |
| पंचवार्षिक सदस्यता | - १००० रु. (डाक व्यय सहित) |

जो पाठक बुन्देली बसंत की सदस्यता चाहते हैं। वे बुन्देली विकास संस्थान, बसारी के **केनरा बैंक के खाता क्र. 1915101001608, आई.एफ.सी. कोड CNRB0001915** में राशि जमा कर या चैक द्वारा अग्रिम भुगतान भेज कर सदस्यताले सकते हैं।

# अनुक्रमणिका

## भाषा, साहित्य और आलोचना



## इतिहास, परम्परा और संस्कृति

## बुन्देली गद्य



## बुन्देली काव्य



## अन्य

# संपादकीय -

हमारा देश एक विशाल प्रजातंत्रात्मक गणतंत्र है, जिसमें अनेक जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय तथा भाषा को अपनाने वाले लोग निवास करते हैं और जो विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों आचार-विचारों और सांस्कृतिक छवियों का विविधता से परिपूर्ण चित्र खड़ा करते हैं इस गणतंत्र में आज भी सत्तर प्रतिशत लोग गाँवों में निवास करते हैं। शेष तीस प्रतिशत लोग शहरों में रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि गाँव बहुसंख्यक हैं और शहर अल्पसंख्यक। किन्तु बहुसंख्यक गाँवों को शहर नियंत्रित व प्रभावित कर रहे हैं। जो प्रजातांत्रिक भावना के विपरीत हैं। सच्चे मायने में ग्रामीण भारत को जितना प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए था, वह अभी कोसों दूर है। इसी कारण से चाहे राजनीतिक सत्ता का प्रतिनिधित्व हो या सामाजिक सांस्कृतिक महत्ता या आर्थिक आत्मनिर्भरता वह गाँव हासिल नहीं कर पा रहे हैं। हम गणतंत्र की 68 वीं वर्षगांठ मना चुके हैं। किन्तु गाँवों को मूलतः मुख्य धारा में शामिल नहीं कर सके हैं। हम आज भी गाँवों के किसानों, मजदूरों व कारीगरों के श्रम से शहरों के भण्डार भर रहे है जिससे गाँवों को न्याय प्राप्त नहीं हो पा रहा है लेकिन मुश्किल यह है कि गाँव अभी भी असंगठित है। अपने हकों-हुकूकों के प्रति जागरूक नहीं है। कारण साफ है कि प्रकृति के सानिध्य में सतत संपृक्त रहने से सहनशील, संतोषी व धैर्यवान हैं। हमारे देश भारत के परिप्रेक्ष्य में यह देखें तो यह स्थिति अखिल भारतीय है। मध्य क्षेत्र में स्थित बुन्देलखंड की दशा तो और अधिक शोचनीय है। गाँव जो कभी पूर्ण स्वतंत्र सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक इकाई होती थी, भौतिकवादी चिंतन व बाजारवाद के प्रभाव से छिन्न-भिन्न हो गई है। कारीगरों ने पारंपरिक काम बंद कर दिए हैं। खेती अजैविक खादों व मशीनों से होने के कारण पशु तथा मानवीय श्रम का उपयोग नहीं हो पा रहा है। गाँव-गाँव में जो गायें कभी महत्वपूर्ण धन समझी जाती थीं, अब बोझ मानी जा रही है। गाँव के निवासी रोजी-रोटी के लिए शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का सतत् दुरुपयोग चिन्ता के कारण हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से जब हम गाँव की सांस्कृतिक परम्परा की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि हर गाँव सांस्कृतिक परम्परा को अपने लोक जीवन में जीकर उसे सहेजता रहा है। जबकि नगरों में इसकी परवाह नहीं की गई। गाँवों में रचने बसने वाली संस्कृति ही लोक संस्कृति है। इसमें ही सही लोक आचरण प्रतिबिम्बित होतें हैं। भारतीय संस्कृति गाँवों की लोक संस्कृति से ही ऑक्सीजन लेती है किन्तु इन ऑक्सीजन के केन्द्रों को उसी तरह छोड़ दिया गया है जिस तरह हम यह जानते हुये वृक्षों व वनों का विनाश किए जा रहे हैं कि इनके बिना हमारा जीवन संभव नहीं है। गाँव के निवासियों को अभी भी गँवार माना जाता है, इन गँवारों के द्वारा सहेजी गई संस्कृति को लोक संस्कृति माना जाता है। इसको सहेजने व जानने के लिए हमें पहले गँवार बनना होगा तभी इसके मर्म तक पहुँच पाएंगे। लोक संस्कृति के सभी आयाम आज काल की मार से कराह रहे हैं। आचरण से लेकर भाषा तक प्रभावित हो रही है। हमारे संस्कार, अनुष्ठान, गीत, कथाएँ, गाथाएँ तथा खान-पान के तौर - तरीके पश्चिमी भौतिकवादी हो रहे हैं। हमारे गाँव

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए एक बहुत बड़े मार्केट के रूप देखे जा रहे है। अंतर्राष्ट्रीय धन्ना सेठ ललचाई नजरों से इन गाँवों को लूटने को लालायित हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों में लोक साहित्य से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। गाँव की प्रकृति, संस्कार, कृषि, भक्ति, प्रेम, शौर्य, बलिदान तथा त्याग आदि विषय आज भी प्रासंगिक है। हमारे बुन्देलखण्ड के लोक साहित्य में आज भी मनुष्यत्व की रक्षा हेतु साहित्य रचा जा रहा है। समाज में जीवन मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ाने का कार्य निचले स्तर पर लोक कलाकार अपनी लोक कलाओं के माध्यम से कर रहे हैं। लोकमन का सही प्रतिबिम्बन लोक रचनाओं में हो रहा है किन्तु कुछेक कलाकार विकृत प्रयोग भी कर रहे हैं। इनसे बचने की अपेक्षा है। बुन्देली लोकमन संघर्षी होने के साथ मानवीयता के प्रति आस्थावान, प्रेम, त्याग व शौर्य को आत्मसात करने वाला रहा है और आज भी यह भाव लोकमन में विद्यमान हैं। वीर हरदौल व महाराज छत्रसाल के आचरण आज भी लोक प्रेरणा के केन्द्र हैं। अन्याय का प्रतिकार, समता में विश्वास तथा सभी को अवसर प्रदत्त करना ऐसे लोक भाव हैं जो बुन्देली लोकमन को सदैव प्रेरित करते हैं। आस्तिकता के साथ दूसरों के कल्याण की भावना जन-जन में परिव्याप्त है। लोक कथाओं का व्रत कथाओं के अंत में कहा जाने वाला यह वाक्यांश 'कि जैसी उनकी फेरी वैसी सबकी फेरै।' इस बात का प्रमाण हैं कि लोक कल्याण का भाव कितना व्यापक है।

बुन्देली लोक अँचल में इस समय युवाओं में अकर्मण्यता, लक्ष्य भ्रष्टता तथा श्रमविमुखता के दुर्गुण भी पनप रहे हैं। इसके कारण उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है आज का युवा स्वयं का उद्यम स्थापित न कर, दूसरे की मजदूरी करना स्वीकार रहा है। इसके साथ शारीरिक मेहनत से बचता है और अपनी क्षमता व योग्यता से अधिक पाने की लालसा रखता है जिसका परिणाम यह होता है कि वह असफल होता है। अतः आज युवाओं को रोजगार हासिल करने के लिए श्रम से प्रेम करने के साथ उद्यमशील बनना पड़ेगा। बुन्देलखण्ड अँचल के उत्कर्ष में युवा पीढ़ी को अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा तभी यह क्षेत्र अग्रसर होगा।

बुन्देली उत्सव के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी लोक संस्कृति की जड़ें से परिचित कराने का प्रयास आदरणीय श्री मुन्ना राजा साहब बुन्देली विकास संस्थान के माध्यम से कर रहे हैं। 'बुन्देली बसंत' बुन्देली लोक का दस्तावेजीकरण करने में अपनी भूमिका का निर्वाह कितनी कर पा रहा है यह तो आप सब ही तय करेंगे किन्तु विगत वर्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली से हिन्दी क्षेत्र के मान्य रिसर्च जनरल की सूची में क्रमांक १०७ पर जर्नल क्रमांकम ४७६९२ से बुन्देली बसंत को अधिमान्यता प्रदान की, जो हमारे लिए गौरवपूर्ण है।

बहादुरसिंह परमार

*साथ कुछ शूरमों के एक थी अली गई।।*

*विप्र घनश्याम हाँकतें ही रहे बातें अरि,*

*ताकते ही रहे कहाँ कौन कौन सी गली गई।*

*बैरियों की भीर थी औ हाथ शमशीर थी यों,*

*चीरती फिरंगियों को तीर सी चली गई।।*

पाण्डेय जी के समय कवित्त सवैया की कविता में उक्ति कौशल का बहुत महत्व था। पाण्डेय जी की उक्तियाँ न तो भाव विरहित चमत्कार उत्पन्न करने के लिए प्रयुक्त हैं, न वे सूक्तियों के रूप में नीरस नीति निष्कर्ष हैं। उनमें कल्पना की नवीन उद्भावना और भाव की कलापूर्ण निष्पत्ति है। महाभारत के युद्व में भीष्म कृष्ण से कहते हैं-

*नन्द के नहीं हौ वसुदेव के नहीं हौ आप,*

*देवकी के नहीं नहीं जसुदा दुलारे हौ।*

*काहू के नहीं हौ सब काहू के वहीं हौ नाथ*

*जहाँ जहाँ जात साथ प्रेम से पुकारे हौ।*

*विप्र घनश्याम नहीं शत्रु मित्र भाव तुम्हें*

*पूर्ण कर्मयोगी ज्ञान वारे ध्यान वारे हौ।*

*कौन कहै पारथ के आप तौ हमारे नाथ*

*पारथ कौं पीठ दयें सामने हमारे हौ।*

राम और भरत के मिलन के समय भरत की गरिमा तुला के रूपक से चित्रित है-

*राम परतंत्र होय तापस बने हैं किन्तु*

*भरत स्वतंत्र रहे तौ हू तपे खौल कें।*

*कानन सिधारे राम शासन पिता की मान।*

*भरत फिरे हैं वन आप तनु रौल कें।*

*विप्र घनश्याम चित्रकूट में मनाय रहे*

*बन्धु कों कलंक धोये कीरति कों धौल कें।*

*राधव उठे हैं ऊँचे भरत परे हैं भूमि*

*भारी कौन देखिये तुला पै तौल तौल कें।।*

घनश्यामदास पाण्डेय की काव्य-चेतना का एक सबल पक्ष उनकी युगीनभाव के प्रति संवेदना है। यहाँ उनकी कविता के दो पक्ष है-राष्ट्रीय चेतनापरक और सामाजिक विसंगतियों पर आक्रोश भाव। 1931 ई० में प्रकाशित 'गांधी गौरव' में उन्होंने गांधी जी की प्रशस्ति और मऊरानीपुर के झंडा सत्याग्रह का वर्णन किया है। पाण्डेय जी की राष्ट्रीयता में वीर भाव प्रधान है, यह चेतना उनके गीतों और सैरों में भी वर्णित है। इसी प्रकार सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक पाखण्ड, पूँजीवादी शोषण आदि पर वह बहुत प्रगतिशील है। इन विसंगतियों के निवारण के लिए वह नीतिशास्त्र की शरण नहीं लेते न शोषकों से हृदय परिवर्तन का निवेदन करते हैं। वह पाखण्ड और अन्याय की पोल खोल कर उसे चुनौती देते हैं। किसी वृद्ध विधुर द्वारा तरूणी से पुन: विवाह कर लेने पर उसकी विधवा पुत्री की प्रतिक्रिया कितनी तीखी है-

*लाये वृद्ध बाला को विवाह के उछाह भरे,*

*देख सुता विधवा ने अश्रु बरसाये है।*

*वृद्ध समझाने लगा बेटी देख तेरे लिए,*

*माता हम लाये हुए तेरे मन भाये हैं।।*

*विप्र घनश्याम बोली सुता पिता आपने तौ,*

*मुझपै सदैव प्रेम भाव दरसाये है।*

*रोया करती थी मैं अकेली बैठ आज तक,*

*मेरे साथ रोने को सहेली भली लाये हैं।।*

कविवर पाण्डेय जी ने लोक विधा के अंतर्गत प्रचुर परिमाण में फागों और सैरों की रचना की है। उनकी फागों का विषय प्रमुख रूप से भक्ति है। उनकी फागों में विचार और अभिव्यक्ति की सरलता दर्शनीय है-

*कब लौ रैहौ ई बखरी में - नींव नहीं है जी में।*

*दिन ना रात मरम्मत चालू बनीरात है ई में।।*

*तौऊ दरकन परत रात है-भीत छत्त खिरकी में।*

*बने रहौ तौ लौ जौ लों तुम-मालिक की मरजी में।*

*कवि घनश्याम एक दिन मिलनें-नोटिस रजिस्टरी में।।*

उद्धव प्रसंग की एक फाग में विवश आकुलता मूर्त हो गयी है-

*हरि बिन और काज सब सरहै-ऊधौ जग चक्कर है।*

*दशरहू हो जैहै बिन उनके-दीपावली उजरहै।*

*उनके गुन गा गा फागुन में-दृग पिचकारी भरहै।।*

*कवि घनश्याम सकल ब्रजवासिन - एक बात को डर है।*

*कोपै इन्द्र कहूँ फिर सैं तौ-को गोबरधन धर है।।*

पाण्डेय जी के सैर काव्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अन्य कुछ कवियों की तरह अपनी उत्कृष्ट काव्य शक्ति से उसे श्रेष्ठ काव्य बना दिया। आभिजात्य और राष्ट्रीयता तथा प्रकृतिपरक और उसे श्रेष्ट युगीन संदर्भों पर उनकी सैरें अलग स्थान रखती है। सैर सम्मेलन इस अंचल के बहुत रोचक और महत्वपूर्ण काव्य-समारोह रहे है। गंगाधर व्यास, नाथूराम माहौर और घासीराम व्यास के मण्डलों से प्रतियोगिता में घनश्यामदास पाण्डेय और उनके पुत्र नरोत्तमदास पाण्डेय अपने श्रेष्ठ सैर काव्य का परिचय देते रहे हैं। उनका शास्त्रज्ञान वहाँ बहुत सहायक था।

इस तरह घनश्याम दास पाण्डेय, अपनी काव्य चेतना में द्विवेदी युग के कवियों के साथ प्रतिष्ठित है। उनका श्रेष्ठ काव्यत्व और उनका अनूठा शिल्पांकन तत्कालीन अनेक कवियों को अतिक्रमित कर जाता है। वह अपने समय के सार्थक और कवि का सामाजिक दायित्व समझाने वाले कवि हैं।

-70 हाथीखाना, दतिया (म. प्र.)
संपर्क-07522-233057

---

# पर्यावरण बचाँय

-रविन्द्र यादव

*आव पर्यावरण बचाँय, खूबई पेड़ लगाय। आव.........*

*देवें हवा उर दवा, फूल-फल, जे पानी बरसाँय। आव..*

*इक-इक बूँद जरूरी जल की, जल न ऊसई बहाँय। आव..*

*चिपको कि-तराँ आन्दोलन होवे, जुरें पुरुष-महिलाएँ।आवो..*

*कित्तौ जरूरी पर्यावरण है, समझै उर समझाएँ। आओ .*

*कजन लगा न पाव पेड़ तौ, लगे कटन न पाएँ। आवो.*

*खूबई पेड़ लगाय, आव पर्यावरण बचाँय।*

*आव पर्यावरण बचाँय, खूबई पेड़ लगाय।*

-द्वारा आकांक्षा पब्लिक स्कूल, नई चर्च के पीछे
शिवनगर कालोनी, टीकमगढ़ (म. प्र.)

# बुन्देलखण्डी कवि ठाकुर के कवित्तों का आलोचनात्मक संस्करण

-उदय शंकर दुबे

हिन्दी साहित्य के सृजन विकास और प्रचार प्रसार में बुन्देलखण्ड का विशेष योगदान रहा है। वीरगाथा काल से लेकर भक्तिकाल एवं रीतिकाल में एक से एक कवि रत्न इस धरती की देन है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हिन्दी का आधे से अधिक साहित्य बुन्देलखण्ड में ही लिखा गया। यहाँ के कवियों द्वारा रचित विपुल साहित्य धरोहर के रूप में हमें प्राप्त है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में जिसे आचार्यों ने रीति काल या श्रृंगार का अभिधान दिया है- इस काल खण्ड में बुन्देल खण्ड में सर्वाधिक रीति परक साहित्य रचा गया। इसका कारण यह था कि इस क्षेत्र विशेष में छोटी बड़ी बहुत सी रियासतें थी। सन् 1800 ई. तक इनकी संख्या बढ़कर सैंतीस हो गई थी। इन रियासतों के रजवाड़े अपने दरबार में कवि पंड़ितों कलाकारों को आश्रय देना अपनी प्रतिष्ठा समझते थे। स्वयं महाराज छत्रशाल ने कवियों के विषय में कहा है- कीरति के बिरवा कवि हैं इनको कबहूँ कुम्हिलान न दीजै। यही कारण है कि बुन्देलखण्ड के रियासतों के ग्रंथगारों में हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथ सुरक्षित है। रीतिकाल में इस क्षेत्र में रीतिपरक ग्रंथों के साथ भक्ति नीति उपदेश परक और काव्येतिहास ग्रंथ भी लिखे गये। रीति बद्ध साहित्य लिखने वाले कवियों की संख्या अधिक है। ठाकुर और बोधा रीतिमुक्त कवि है। दोनों हीं बुन्देलखण्ड की देन है। ठाकुर कवि रचित कोई ग्रंथ अब तक प्राप्त नहीं हुआ है। बोधा कवि के ग्रंथ उपलब्ध हैं। इनके ग्रंथों को आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने संपादित किया था। यह बोधा ग्रंथावली नाम से नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित है सर्व प्रथम बुन्देली कवि ठाकुर के स्वतंत्र छंदों को संकलित कर डॉ .काशीप्रसाद जायसवाल ने संवत 1961 वि. (सन 1904) में ठाकुर शतक नाम से प्रकाशित कराया था। इसके पश्चात हिन्दी के वरिष्ठ लेखक और टीकाकार लाला भगवानदीन ने बुन्देलखण्ड में अध्यापन कार्य करते हुये ठाकुर कवि के छंदों का संकलन कार्य किया। उन्हें भी ठाकुर रचित कोई ग्रंथ नहीं मिला केवल फुटकर छंदों से संतोष करना पड़ा। इन पंक्तियों के लेखक ने भी बुन्देलखण्डी लाला ठाकुरदास कृत ग्रंथ खोजने का भरसक प्रयास किया किन्तु केवल संग्रह ग्रंथों में उनके स्फुट छंद ही पढ़ने को मिले। लाला भगवान दीन ने ठाकुर कवि के संकलित छंदों का विधिवत संपादन कर **'ठाकुर ठसक'** नाम से सन 1928 ई. में साहित्य सेवक कार्यालय काशी से प्रकाशित कराया। इस संग्रह मे ठाकुर के 192 छंद हैं। आगे चलकर लाला भगवानदीन के पटु शिष्य आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ठाकुर ग्रंथावली का संपादन किया। इस ग्रंथावली में बुन्देलखण्ड के ठाकुर कवि के कुल 219 छंद संकलित है। नागरी प्रचारिणी सभा काशी के हस्तलिखित विभिन्न संग्रह ग्रंथों से ठाकुर कवि के छंद संग्रहीत किये गये थे। मूल आधार लाला भगवानदीन का ठाकुर ठसक ही है। एक संग्रह पंडित चन्द्रशेखर मिश्र द्वारा किया गया था किन्तु विद्वानों ने उसे प्रामाणिक नही माना। लाला भगवानदीन द्वारा संपादित संस्करण ठाकुर-ठसक को अधिक महत्ता प्राप्त है।

इधर सन् 2014 ई. के पूर्व विदेश हंगरी के बुदापैश्त विश्व विद्यालय के हिन्दी प्रोफेसर डॉ. इमरै बंघा (अब आक्स फोर्ड विश्व विद्यालय लंदन में कार्यरत) ने हिन्दी साहित्य के रीति मुक्त धारा के प्रसिद्व कवि ठाकुर के छंदों को संकलित कर उसका संस्करण आलोचनात्मक प्रस्तुत करने का निश्चय किया। डॉ. इमरै ने स्वयं रीतिमुक्त कवि घनानंद (आनंद घन) रचित ग्रंथों पर शोध प्रबंध संपन्न किया था। वे आलम और ठाकुर कवि के छंदों से बहुत प्रभावित थे। अतः उन्होंने पहले ठाकुर कवि के छन्दों को संकलित करना शुरू किया। इस दुष्कर कार्य हेतु उन्होंने बार-बार भारत की यात्रा की। विशेष रूप से उन्होंने बुन्देलखण्ड स्थित दतिया, छतरपुर, बाँदा, चरखारी, जैतपुर, बिजावर की यात्रा कर प्राचीन ग्रंथागारों में उपलब्ध संग्रह ग्रंथों से ठाकुर के छंदों को संग्रहित किया साथ ही यहाँ के विद्वानों से मिलकर जानकारी प्राप्त की। वाक्पटुता के कारण ठाकुर कवि के छंदों का मात्र बुन्देल खण्ड में ही नहीं प्रचार-प्रसार रहा अपितु राजस्थान पंजाब तक के कवियों ने उनके छंदों को अपने संग्रह में स्थान प्रदान किया था। डॉ. बंघा ने राजस्थान के जयपुर, अलवर, बीकानेर, उदयपुर, भरतपुर स्थित प्राचीन ग्रंथों का अवलोकन कर उनमें से ठाकुर के कवित्तों को एकत्र किया। इसी क्रम उन्होंने पंजाब एवं हरियाणा स्थित अमृतसर पटियाला चंडीगढ़ नाभा रियासतों के पुस्तकालय से सामग्री जुटाने का कार्य किया। उन्होंने अपना विशेष समय बुन्देलखण्ड और उत्तरप्रदेश के सोरों, मथुरा, बृन्दावन, प्रयाग, काशी के अतिरिक्त पटना स्थित राष्ट्र भाषा परिषद के ग्रंथागार का भी अवलोकन कर ठाकुर कवि के बहुत से कवित्तों को एकत्र करने का परिश्रम साध्य कार्य पूरा किया।

डॉ. इमरै बंघा ने कई वर्षो तक लाला ठाकुरदास के कवित्त जुटाते रहे। इसी खोज के दौरान उन्होंने मुझसे संपर्क किया। मैंने उन्हें बताया की आप भरतपुर (राजस्थान) स्टेट लाइब्रेरी चले जाइये। उस लाइब्रेरी में वृंदावन के प्रसिद्ध कवि गोपालराय नवीन कृत सुधासर ग्रंथ की हस्त लिखित प्रति सुरक्षित है। इस ग्रंथ के अंत में नवीन कवि ने नामधारी कवियों की सूची दी है। मैंने इस ग्रंथ से गोरेलाल भट्ट की जानकारी प्राप्त की थी। उसमें ठाकुर नामधारी कवियों का भी उल्लेख है। इसमें समस्या का समाधान हो जायेगा। डॉ. बंघा ने भरतपुर की यात्रा की, सुधासर ग्रंथ का अध्ययन मनन किया और पंजाब चले गयें उन्होंने पंजाब से मुझे सूचित किया कि पंजाब और हरियाणा के ग्रंथागारों में सुधासर की छैः प्रतियाँ सुरक्षित है जिनमें तीन गुरूमुखी और तीन नागरी लिपि में है। भरतपुर स्टेट लाइब्रेरी में सुरक्षित हस्तलिखित प्रति की पुष्पिका इस प्रकार है- इति दुत छापी कवि नामरासी कवि संपूर्णम्।। शुभम।। पोथी लिषायत श्री प्रोहित जी श्री हरसुष सिंह जी।। हस्ताक्षर तेजा सिपाही के ।। मिती श्रॉंवन वदी 13 संवत् 1910।। (पत्र 449-450) श्री गोपालराय नवीन ने सुधासर की रचना संवत 1895 वि. (सन् 1838 ई.) में किया था। तेजा सिपाही ने पन्द्रह वर्ष बाद इसकी प्रतिलिपि की थी। यह प्रति अधिक प्रामाणिक हैं। सुधासर ग्रंथ से यह निश्चित हो जाता है कि संवत 1895 वि. तक बुन्देली कवि ठाकुर के छंद जनमानस में प्रसिद्ध हो गये थे। नवीन जी ने नामधारी कवियों के विवरण में तीन ठाकुर कवियों का नामोल्लेख किया है-

15 - ठाकुर - 3 1- प्राचीन मसल बंद, 2- झांसी वारे ठाकुर दास ब्राहमण, 3. लाला वृन्द्रावन वासी।

आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय लंदन के हिन्दी प्राध्यापक डॉ. इमरै बंघा हिन्दी भाषा में लिखी गई प्राचीन पाण्डुलिपियों के ज्ञाता है। वृन्दावन में रहकर उन्होंने ब्रजभाषा का विधिवत अध्ययन किया और रीतिमुक्त प्रसिद्व कवि घनानंद पर शोध कार्य संपत्र किया । उनका अधिक समय प्राचीन पाण्डुलिपियों के अध्ययन संपादन में व्यतीत होता है। कई वर्षो के परिश्रम के बाद उन्होंने बुन्देल खण्ड के प्रसिद्ध कवि ठाकुर रचित छंदों का संकलन और संपादन कर प्रकाशित कराने का श्रम साध्य कार्य किया है। उन्होंने यह ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में लिखा है। मूल छंद नागरी लिपि में है। ग्रंथ का नाम है-

Scorpion in the hand
braj bhasha court poetry from
central India around 1800
Acritical edition of Thakurs kabittas

प्रकाशक-मनोहर पब्लियर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, 4753/23, अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली - 110002
प्रथम संस्करण - 2014, पृष्ठ - 370, मूल्य - 1500

डॉ. बंघा प्रथम अनुसंधित्सु हैं जिन्होंने सुधा सारग्रंथ का सविधि अध्ययन कर बुन्देलखण्डी ठाकुर दास कायस्थ के विषय में अपना मत प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्राचीन मसल बंद ठाकुर को मान्यता दी है जिनके छंदों में बुन्देलखण्ड में प्रचलित मुहावरे कहावतों का प्रयोग हुआ है। इतना ही नहीं उन्होंने ठाकुर कवि रचित एक सवैया छंद की अन्तिम पंक्ति को लेकर अपने ग्रंथ का नामकरण किया है यथा-

ऊधों जू दोष तुम्हैं न उन्हैं हम लीन्ही है आपने हाथ ही बीछी

-Scorpion in the Hand- ( B.60) पृष्ठ - 135

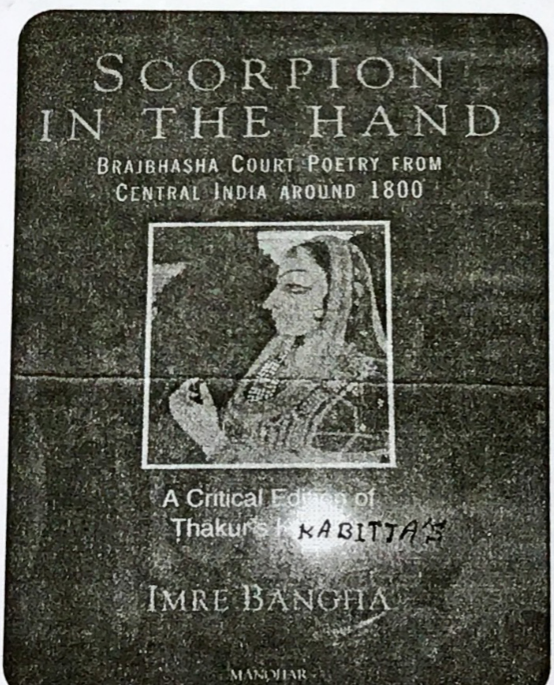
दि मेनी ठाकुर्स (the many thakurs) शीर्षक के अंतर्गत लेखक ने ज्ञात सभी ठाकुर कवियों के विषय में पर्याप्त तथ्य प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्राचीन मसलबंद ठाकुर जो अपने छंदों में मुहावरा या कहनावत (कहावत) का प्रयोग करते थे वे ओरछा के थे और पूर्वी बुन्देलखण्ड में स्थित जैतपुर राजा के आश्रय में थे। कवि बिजावर चरखारी बाँदा के राज दरबार से भी सम्मानित था। वह अनुपगिरि हिम्मत बहादुर के दरबार में भी उपस्थित हुआ था। दृष्टव्य

scorpion in the hand: the poet and his times, page-23-28

नवीन जी ने अपने सुधासर में झाँसी बारे ठाकुर दास ब्रहमण का नामोल्लेख किया है किन्तु इनका कोई ग्रंथ देखने को नहीं मिला । झाँसी के वरिष्ठ कवि और लेखक श्री रामचरण मित्र हयारण ने मुझे इनके विषय जो कुछ बताया था वह इस प्रकार ठाकुरदास का जन्म झाँसी में हुआ था। इनके पिता का नाम ज्ञात नहीं पुराने लोगों का कहना था कि ये बड़े हष्ट पुष्ट जवान थे । वीर रस की कविता करने में कुशल थे। रानी लक्ष्मी बाई की सेना में सैनिक थे। सन् 1857-58 ई. में जब अंग्रेजों ने झाँसी में आग लगा दी इनका भी घर जल गया । इन पर बलवा फसाद का केस चला था बस इतनी ही जानकारी है। झाँसी के अधिवक्ता मेघराज सिंह कुशवाहा द्वारा लिखे गये बुन्देल खण्ड में सन 1859-58 में स्वतंत्रता सेनानियों के मुकदमे शीर्षक आलेख में दिये अभिलेखों मिसिलबंद रजिस्टर में अन्य विद्रोहियों के साथ ठाकुरदास ब्राहाम्ण का नाम मिलता है। 14 जून 1858 ई. को न्यायालय के फैसले के अनुसार कुछ लोगों को चौदह वर्ष की सजा हुई कुछ लोग रिहा हुये कुछ पर वारंट जारी हुआ। इस अभिलेख से सिद्ध है कि कुछ पर वारंट जारी हुआ। इस अभिलेख से सिद्व है कि ठाकुर दास ब्राहम्ण सन् 1858 ई. में वर्तमान थे। दृष्टव्य संधान 5 मध्यांचल में 1859 का विद्रोह और उसमें भागीदारी प्रोसीड्रिंग्स नवम संगोष्ठी 2006 संपादक डॉ. सुरेश मिश्र पृ.105 डॉ. भगवानदास स्मृति शोध संस्थान झाँसी । झाँसी के ही प्रसिद्ध

साहित्यकार डॉ.राम नारायण शर्मा ने अपनी पुस्तक - बुन्देली के रचनाकार: ग्रंथ गद्य-पद्य संग्रह में कवि ठाकुर दास का जन्म स्थान गढ़कुंडार बताया है साथ ही बंशावली भी दी है और ओरछा के शासक भगवंत सिंह (सन 1684-1685 ई.) के राजदरबार में आश्रित होना लिखा है। डॉ. शर्मा ने अन्य ठाकुर नामराशी कवियों की चर्चा भी की है। गढ़कुंडार में जन्मे कवि ठाकुरदास रचित चार छंदों को भी उद्धृत किया है। (दृष्टव्य (बुन्देली के रचनाकार ग्रंथ (गद्य-पद्य संग्रह) लेखक डॉ. राम नारायण शर्मा पृष्ट 59-65 प्रकाशक - डॉ. सुशीला 695/3 रानी लक्ष्मी बाई पार्क सिविल लाइन्स झाँसी सन 2011) इसके उपरांत उन्होंने अन्य तीन ठाकुर कवियों के विषय में संक्षिप्त चर्चा की है जिसमें ओरछा में जन्मे ठाकुरदास कायस्थ का भी नामोल्लेख है।

इनके अतिरिक्त असनी गाँव (जिला फतेहपुर उ. प्र.) के ऋषिनाथ के पुत्र ठाकुर कवि श्रृंगवेरपुर प्रयाग के राजा देवकीनंदन के आश्रित थे। राजा देवकी नंदन सिंह राजनीतिक कारण वश प्रयाग छोड़ कर काशी आकर बस गये थे। उनके द्वारा काशी के रामापुरा में बनवाई गई हवेली आज भी वर्तमान है। यह देवकी नंदन हवेली के नाम से प्रसिद्ध है। हवेली से सटा हुआ एक शिव मंदिर भी है जिसमें एक शिलालेख उत्कीर्ण है। ठाकुर कवि ने संवत 1861 वि. (सन 1804 ई.) में बिहारी कृत सतसई पर सतसैया वर्णनार्थ नामक



तिलक की रचना गद्य में की। इसके प्रारम्भ, देवकी नंदन का पूरा विवरण मिलता है। (दृष्टव्य – बुन्देली बसंत अंक 10 वर्ष 10-1 फरवरी 2009 ई. पृ. 30-34 पर प्रकाशित सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड के कवि-पंडितों ने बिहारी के दोहों को क्रमबद्ध किया था। शीर्षक लेख) । श्री नवीन ने सुधासर में और ठाकुर का उल्लेख करते हुये उन्हे "लाला वृन्दावन वासी" लिखा है इनका विशेष परिचय अप्राप्त है। वास्तव में नाम साम्य के कारण ठाकुर नामधारी कवियों द्वारा रचित स्फुट छंदों का आपस में सम्मिश्रित हो जाना स्वाभाविक है।

डॉ. इमरैबंधा ने विभिन्न अंचलों की यात्रा कर ग्रंथागारों और व्यक्तिगत संग्रह में सुरक्षित अट्ठावन हस्त लिखित ग्रंथों से बुन्देली खण्डी ठाकुर कवि के छंदों को संग्रहीत किया और सन 2012 के पूर्व ठाकुर कवि विषयक प्रकाशित सभी सामग्री का आलोड़न-विलोड़नकर तब अठ्ठानबे पृष्ठ की भूमिका के अंतर्गत ठाकुर कवि की जीवनी बुन्देलखण्ड का तत्कालीन इतिहास हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का विवरण भाषा काव्य रीति मुक्त काव्य धारा आदि विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार कर अपनी उपस्थापना प्रस्तुत की है।

भूमिका के बाद ठाकुर कवितावली शीर्षक के अंतर्गत ठाकुर के कवित्तों का प्राप्त प्रामाणिक मूल पाठ अन्य हस्तलिखित प्रतियों में प्राप्त पाठ (पाठान्तर) कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया है, इसमें पाठकों को छंदों का अर्थ समझने में कठिनाई का अनुभव नहीं होता। लेखक ने ठाकुर कवि के 340 (तीन सौ चालिस) प्राप्त छंदों को विषय क्रम से रखा है-

1. भक्ति और लीला वर्णन – गनेश स्तुति, भक्तों का नाम, राधा कृष्ण स्मरण, गोबर्धन धारण, युगल प्रेम उद्धव प्रसंग।
2. श्रृंगार-प्रेम रूप वर्णन, नेत्र वर्णन, वयः संधि, उरोज वर्णन, संयोग, पूर्वराग, प्रवास, मान, उपदेश, प्रतीति, परकीया, सामान्या, चेतावनी, चबाथ,
3. ऋतुवर्णन -बसंत ,फाग, अखती, ग्रीष्म, पावस, कजली, तीज, हेमंत आदि ऋतुओं का विस्तृत वर्णन।
4. संसार और नीति – मानव वैचित्र्य, कलियुग, लक्ष्मी, का पुरुष, मर्दानगी, सेवा।

संदिग्ध छंद, कूट, प्रकीर्णक, समस्यापूर्ति के छंद और अंत में कवि ठाकुर के 131 (एक सौइकतीस) छंदों का अंग्रेजी में अनुवाद भी प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

डॉ. इमरै बंधा द्वारा संपादित ठाकुर के कवित्त ग्रंथ प्राचीन हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों के शोध एवं संपादन की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण है। इस विशिष्ट ग्रंथ के लिये हिन्दी साहित्य जगत उनका आभारी है।

-साहित्य कुटीर, कठारी बाजार
पो.-खमरिया, जिला-भदोही उ. प्र.
पिन-221306

*लघुकथा-*

## भजन पै नईं आओ ढुकरा

**-डॉ. डी. आर. वर्मा 'बेचैन'**

माया सींग भौत बूढ़ौ हो गओ तो। करयाई टेड़ी हो गई ती। आँखन सें सूजत नई हतो। खाल छुआरे जैसी सूक गई ती। हांतन में हियाब हतो न पाँवन में। उम्मर हुइये सौ बरस के नगीच। डील डौल बड़ौ हतो सो चलतन में डर लगत्तौ कै क्याएं कुल्थ ना जाय। माया सींग के दो लरका सत्तर-पचत्तर साल के हते। ऊ के नाती उर पंती बड़े हो गये ते। लरका वऊयें बूड़े हते। नतवउ यें नाती पंती बब्बा की खबर लयें रत्ते। कई कर देत्ते। कोंड़े पै बैठ कें रोजई तापत हते उर बब्बा की बातन कौ मजा लेत हते। कौनऊँ नाती पंती घोंटा नांय कौ मांय धर देत तो कौनऊ पनइयां दुका देत तो। बब्बा गुस्सा होंके नाती पोतन सें मंगवा लेत ते।

एक दिना चार पांच नातियन नें सला बांदी कै आज बब्बा सें कौड़ें पै अपुन गुसाई बब्बा जैसौ भजन करत सो वैसई भजन करवे के लानें कबूं। ठीक है सबनें तय कर लई। व्याई स्याई करकें जैसेई बब्बा कोंड़े पै तापवें बैंठे, बे सबरे आ गये। कोंड़ो जंट लगा दओ तो कै जांदा रात तक चलत रयै। एक नाती बोलो, "बब्बा! एक बात कयें।" बब्बा ने सुन लई कछू। बब्बा बोलो, जोर से कओ बेटा" नाती बोलो-

"इन नैंनन धरबू करे, सदा हरी कौ ध्यान।" बब्बा ने तुरतई कई, "जो नैनन लख पाउते, जा बसते खरयान।" चिरइया चुन चुन जावें रे। बड़ो मोय ज्ञान सिकावे रे। बब्बा बोले अरे लरका हौ।" अगर दिखात ई होतो तौ खरयाना में जाते उतई धान रखाउते, चिरइयां सवरीधान खाँय लेती।" को गौर करै, नातियन ने फिर कई भजन करें गये। चपकुटौ करत करत एक पार रात चली गई। दूसरों पारौ लगो। नाती पोतन ने फिर कई। "बब्बा एक बात कयें," कओ बेटा बब्बा नें कई।

एक नाती बोलो- "गोड़न सें करबू करे कुछ तीरथ उर धाम।" सुनकें बब्बा खाँ फिर गुस्सा आ गई और ज्वाब दओ - "छिरिया जाय चराउते जो गोड़े करते काम।" अरे छौरा हरौ! तुम का जानौ? परी भर दूद नईं मिलत। अगर गोड़े चलवे लाख होते तौ गैयां, छिरिया ना चराएते भजन करते? हमें तौ साँसी क्याउत। ऐसई ऐसें को गौर करै चपकुटो करत रात कौ दूसरो पार सोउ बड़ा गओ। अकेलें नाती पोता डटे रये। तीसरे पारौ लगो सो नाती पोता बोले बब्बा एक बात कये – कऔ बेटा कैवे में उर खैवे में काय की चमक? एक नाती फिर बोलो- "करत-करत कर थक गये, अब माला ले लो हांत।" बब्बा ने तुरतई कई, "जो माला लै पाउते तौ ढिरिया लेते कात।" डोरिया बिन दुख पावै रे। बड़ौ मोय ज्ञान सिकावें रे। इते कई हियाब होतो हांतन में माला फेरौं तो ढिरिया ना चलाउते। सूतौ बनाउते। डोरिया फट गओ। कोउयै फिकर नइयां। तुमाई एकऊ बातें मनै नईं आई कौ गौर करे चपकुटौ करत करत बब्बा एकई नाई गओ और-

*"करत-करत बकवाद भोर भओ बोल गओ कुकरा*
*कहें कथा बेचैन भजन पै नई आओ ढुकरा।"*

ई कथा कौ भाव है कै आज आदमी माया मोह में इतनो फँस गओ कै आखिरी बेंरा तक भगवान भजन में लौ नईंलगा सकत।।

-ग्राम व पोस्ट-स्यावरी, मऊरानीपुर जिला-झाँसी

# बुन्देली लोक साहित्य में सौन्दर्य प्रसाधन

-डॉ. श्रीमती गायत्री वाजपेयी

मानव सौन्दर्यप्रिय प्राणी है, सौन्दर्य के प्रति उसके मन में विशेष आकर्षण होता है। सौन्दर्य को परिभाषा की सीमा में आबद्ध करना अत्यन्त ही दुष्कर कार्य है क्योंकि सौन्दर्य तो वह सौम्य प्रकाश है, चेतना का वह उज्जवल वरदान है जो केवल अनुभवगम्य है। वह तो क्षण-क्षण नवीन रूप धारण करता रहता है- 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयता याः। ' इस क्षणे क्षणे नवीन सौन्दर्य के परिवर्धन हेतु मानव विभिन्न प्रकार से सजता सँवरता है, तरह तरह के वस्त्राभूषण धारण कर श्रृंगार करता है क्योंकि सहज सौन्दर्य भी श्रृंगार के अभाव में पूर्णता को प्राप्त नहीं होता। अतः सौन्दर्य की समग्रता। हेतु श्रृंगार आवश्यक है। रीतिकालीन प्रवर्तक आचार्य केशव ने 'भूषन बिना न राजई कविता वनिता मित्त' कहकर श्रृंगार अर्थात आभूषणों की अपरिहार्यता स्वीकार की है। महाकवि भास ने तो स्पष्टः कहा है-

स्वभावरमणीयानि मण्डितानि अति रमणीयानि भवन्तिः अर्थात् प्रकृत्या सुन्दर वस्तु को अलंकारों से और सुन्दर बनाया जा सकता है।

सौन्दर्य अर्थात सुन्दरता का ही दूसरा नाम है आकर्षण। आकर्षक व्यक्तित्व में ही वास्तविक सुन्दरता है। अतः व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए मानव श्रृंगार की ओर उन्मुख होता है। श्रृंगार शब्द श्रृंग एवं आर दो शब्दों के योग से निर्मित हुआ है जिसकी व्युत्पत्ति निम्न प्रकार से है- श्रृंग+ऋ गतौ + अण [कर्म में] = श्रृंगार श्रृंग का एक अर्थ है कामोद्रेक अथवा काम की वृद्धि तथा आर गत्यर्थक धातु क्र से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है प्राप्ति। श्रृंगार शब्द की व्युत्पत्ति की ओर संकेत करते हुये कहा गया है-

*श्रृंग हि मन्मथोदभेदस्तदागभन हेतुकः।*
*उत्तमः प्रकृति प्रायो रस श्रृंगार इष्यते।।*[1]

अर्थात श्रृंग कामोद्रेक को कहते हैं और उसकी उत्पत्ति का कारण वह अभीष्ट श्रृंगाररस है जो उत्तम प्रकृति का होता है।

श्रृंगार का अर्थ है स्वयं को सजाना सवाँरना। श्रृंगार की यह प्रवृत्ति मानव को प्रकृति से प्राप्त हुई है। प्रकृति विभिन्न ऋतुओं में भिन्न भिन्न प्रकार के पुष्पों से अपने को सजाती सँवारती है। मनुष्य भी प्रकृति के अनुरूप विभिन्न ऋतुओं मे भिन्न भिन्न प्रकार के वस्त्राभूषण धारण कर अपने सौन्दर्य को नवीनता प्रदान करता है। मनुष्य ने प्रारम्भ से ही श्रृंगार प्रसाधन के सभी उपादान प्रकृति से प्राप्त किये है। प्रारम्भ में जहाँ पत्थर मिट्टी तथा धातुओं आदि से विभिन्न आभूषण बनाये जाते थे, वहीं नाना प्रकार के सुन्दर पुष्पों से आवश्कतानुरूप वस्त्राभूषण भी बनाये जाते थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'एक बार चुन कुसुम मंगाये। निजकर भूषन राम बनायें।।' कहकर अपने आराध्य श्री राम से सीता जी का श्रृंगार करवाया है। महाकवि कालिदास ने तो कई स्थलों पर श्रृंगार कर सारी सामग्री प्रकृति से प्राप्त कर शकुन्तला के सहज सौन्दर्य को अलंकृत किया है।

सामान्यतः अलंकृति के चार भाग हैं। वस्त्र, भूषण, माल्य और अनुलेपन। इसे ही वेशभूषा कहा जाता है। अलंकरण अर्थात् प्रसाधन की इस प्रवृत्ति का सम्बन्ध मन और आत्मा से मानते हुए श्री अत्रिदेव विद्यालंकार लिखते हैं- इसका संबंध मन और आत्मा के साथ रहने से यह शिक्षित अशिक्षित स्त्री पुरुषों में समान रूप से है। इसलिये आज की भाँति प्रागैतिहासिक काल में तथा इसके पश्चात युग युगान्तर में भी इसके प्रमाण मिलते हैं। इससे सिद्ध है कि प्रसाधन कार्य में मनुष्य की रुचि जन्मजात है। जिस प्रकार काम नित्य है उसी प्रकार प्रसाधन प्रवृत्ति भी नित्य व शाश्वत रही है।[2] अलंकरण की यह प्रवृत्ति नारियों में विशेष रूप से पायी जाती है। प्रारम्भ में नारी अपनी सुन्दरता वृद्धि के लिए प्रकृति के उपादानों का सहारा लेती रही है। आज विकास के युग में साधन सम्पन्नता के कारण श्रृंगार प्रसाधन की सामग्री सहज ही उपलब्ध हो जाती है आज नारियाँ बहुमूल्य वस्त्र सुन्दर आभूषण एवं अन्य व्यय साध्य साघनों का उपयोग कर सौन्दर्य परिवर्धन करती हैं यद्यपि प्राकृतिक उपादानों की महन्ता आज भी अक्षुण्ण है। कवि एवं साहित्यकार भी नारी सौन्दर्य के चित्रण में इन उपकरणों का सहारा लेते हैं। कवि की दृष्टि भी पुरुष सौन्दर्य की अपेक्षा नारी सौन्दर्य के चित्रण में अधिक रमी है। इसका कारण है नारी की सुकुमारता। डॉ. गायत्री वर्मा के अनुसार कवि को सुकुमारता प्रिय है क्योंकि उनकी चित्तवृत्ति जितनी नारी सौन्दर्य में रमी है उतनी पुरुष सौन्दर्य में नहीं। पुरूष सौन्दर्य में कठोरता और वीरता ही सर्वत्र मिलती है परन्तु लावण्य कमनीयता सलोनापन स्त्री सौन्दर्य के प्रतीक है स्त्री के एक एक अंग में उन्होंने लावण्य और सकुमारता के दर्शन किए।[3] नारी सौन्दर्य के विधायक सोलह श्रृंगार माने जाते हैं जिनका वर्णन शिष्ट साहित्य एवं लोक साहित्य में प्रचुर रूप में मिलता है। वात्स्यायन के कामसूत्र में नागरिकों के सौन्दर्य प्रसाधन का विस्तृत वर्णन मिलता है। अभिसारोत्सुका नारी को अनेक प्रकार के आभूषण विविध प्रकार के सुगन्धित लेप और अंगराग तथा धवल वस्त्र धारण करना चाहिये-

*बहुभूषणं विविध कुसुमानुलेपनं विविधांगराग समुज्जवलं वास इत्याभिगामकोवेषः।*[4]

बल्लभदेव कृत सुभाषितावली के एक श्लोक में सर्वप्रथम सोलह श्रृंगार का उल्लेख प्राप्त होता है। यथा-

*आदौ मज्जन चीरहारतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलौ।*
*नासामौक्तिक केशपाश रचना सत्कञ्चुकं नूपुरौ।।*
*सौगन्ध्यं करकंकणं चरणयोः रागो रणन्मेखला।*
*ताम्बूलं करदर्पणं चतुरता श्रृंगारकाः षोडशः।।*

इस श्लोक में वार्णित सोलह श्रृंगार इस प्रकार है- (1) मज्जन (2) चीर (3) हार (4) तिलक (5) अंजन (6) कुण्ड़ल (7) नासा मौक्तिक (नाक की लौंग) (8) केशपाश रचना (9) कंचुक (10) नूपुर (11) सुगन्ध (12) कंकण (13) चरणराग (14) मेखला (15) ताम्बूल (16) करदर्पण।

नारी श्रृंगार में इन सोलह श्रृंगारों की परम्परा अत्यन्त ही दृढ़ व स्थिर हो चुकी है। यही कारण है कि आदि से लेकर आधुनिक काल तक निरन्तर इस परम्परा का निर्वहन कविगण करते आये हैं। लोक साहित्य में शिष्ट साहित्य की भाँति सोलह श्रृंगार का विधिवत वर्णन भले ही न मिलता हो परन्तु ग्रामीण वेशभूषा के अनुरूप बाह्य अलंकरण का विस्तृत वर्णन अवश्य प्राप्त होता है। लोककवि की नायिकायें शिष्ट साहित्य की नायिकाओं की तरह नागरी नहीं हैं। वे अपने ग्रामीण परिवेश के अनुरूप परिधान, आभरण, अनुलेपन आदि कर श्रृंगार करती हैं। वे चुनरी, कंचुकी और लँहगा धारण करतीं हैं।

चुनरी या ओढ़नी का प्रयोग कमर के ऊपर के भाग, पृष्ठभाग तथा सिर ढ़ँकने के लिए किया जाता है। लोक रचनाकारों ने नायिका द्वारा निकाले गये घूँघट का बडा ही मनोरम चित्रण किया है-

*रजउ नैन तुमारे बाँके रहें न घूँघट ढाके।*
*देखत छैल तकत दोरे हो बादें रावें नाके।।* [6]

घूँघट के भीतर से झाँकते ये मदभरे नेत्र तो प्राणों के भूखे हो गये हैं नायिका के तीक्ष्ण कटाक्ष ने तो नायक को आहत ही कर दिया है-

*नैना भये प्रान के भूँके घूँघट में हो ढूके।*
*लागी लगन चोट हाड़न में रक्त माँस सब सूके।।* [7]

बुन्देलखण्ड में जहाँ विवाहित युवतियाँ घूँघट निकालती हैं वहीं अविवाहित युवतियाँ ओढ़नी या साड़ी को अपने कन्धे पर डालती हैं जिसे कंदेला कहा जाता है। मेला देखने जा रही एक नवयुवती का बड़ा ही सुन्दर चित्र लोक रचनाकार ने प्रस्तुत किया है-

*बिसर न घलन कंदेला की दये झांक जुबन अलबेला की।*
*गोटादार हरीरी अंगिया, बेल भरी चौबेला की।*
*आड़ी डरी भुजन के ऊपर, कोर लदाऊ सेला की।*
*उड़ उड़ परत थमत न थामी, पवन चलत झकझेला की।*
*गंगाधर कयें राह चली गई खजुराहो के मेला की।* [8]

साड़ी एक लम्बा कपड़ा मात्र है जो शरीर के मध्य भाग में लपेट लिया जाता है और ऊपर सिर पर पीछे की ओर से डाल लिया जाता है। साड़ी सौन्दर्य का वृद्धिकारक वस्त्र है अतः इसका विशेष उल्लेख साहित्य में मिलता है। जूनागढ़ की साड़ियों के प्रति स्त्री समाज का विशेष आकर्षण रहा है। चन्देलकालीन संस्कृति से लेकर रीतिकालीन संस्कृति तक ये साड़ियाँ राजसी वेशभूषा का प्रतीक रही है। गंगाधर की नायिका के सुकोमल तन पर जूनागढ़ की साड़ी कैसी सुशोभित हो रही है इसका शब्दचित्र इन पंक्तियों में दृष्टव्य है-

*झूना भौजी लैन गुलाबी ओढ़ खड़ी भई भावी।*
*मजेदार खिल रही बदन में चुवो परत दिन आवी।*
*भौतउ नौनो लगे पैरतन देख तुम्हें सुख पावी।*
*जब से नजर लगी गंगाधर तब से भई बेताबी।* [9]

वही ईसुरी की नायिका प्रियतम से हरी साड़ी के लिए बिरज रही है। जिसका सूत महीन हो तथा मुलायम हो, छोर पर मोर पपीहा बने हों और किनारी जरतारी हो, बीच-बीच में बेल बूटे तथा फुलवारी भरी हो। ऐसी सुन्दर साड़ी उसके सुन्दर और सुकुमार शरीर पर सुख और सौन्दर्य प्रदायक होगी। उदाहरण दृष्टव्य है-

*पिय लैदो हमें हरियल सारी, पलका पै मचल रइ है प्यारी।*
*सूत महीन झीन न हौवे बड़ी मुलायम तरज बारी।*
*छोरन मोर पपीहा राजे जरद कोर रंग जरतारी।*
*बीचन बीच बेल बूटन सें भरी होय जू फुलवारी।*
*कात ईसुरी सुनलो प्यारी भोर मँगा देब सुकुमारी।* [10]

ग्रामीण वस्त्राभूषणों से अलंकृत सुन्दरी सिर पर गागर रखे हुए कैसी मनमोहनी छवि बिखेर रही है? ऐसे रूप को निहार कर किसका मन उद्वेलित न होगा? सौन्दर्य और यौवन से भरपूर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित नायिका का मनोरम चित्र दृष्टव्य है-

*ना बिसरे धरन गगरिया की घूँघट में चपन उँगरिया की।*
*शीशफूल माथे पै बेंदा जारी कटी पुँगरिया की।*
*गोटादार हरीरी अँगियाँ माड़न जरद चुनरिया की।*
*बांह बरा बाजूबन्द सोहै छापे छला छिंगुरिया की।*
*कयें गंगाधर कड़त इतै हो बाँकी चाल सुनरिया की।* [11]

ईसुरी की नायिका का एक शब्द चित्र दृष्टव्य है-

*पैरें सब सोने कौ गानों सुन्दर रूप सुहानो।*
*पैरें कड़ै मलमल की धोती जिनको रंग बैजानो।*
*कसकत काम कोट बेलन पै नीलकमल लिपटानो।*
*इन खाँ अपूनौ कहत चन्द नें होस रये ना मानो।*
*मथुरा की चौबिनै ईसुरी इन्द्रपरी सी जानों।* [12]

नारी वस्त्रों में साड़ी, अँगिया, चोली, ओढ़नी, घाघरा, लहँगा आदि का विशेष उल्लेख मिलता है। अँगिया या कंचुकी वक्षोदेश में पहनी जाती है। इसमें प्रायः पीठ खुली रहती है। यह वक्ष स्थल को ढँकने मात्र के लिए तैयार की जाती है तथा डोरी द्वारा पीछे पीठ पर बाँध दी जाती है। बाँह के उर्ध्व भाग के बीच तक आस्तीन आती है। यह कंधे के बीच में फँसी रहती है इसकी कोर सुनहरी होती है। गंगाधर की चोली धारण किए नायिका का कामोद्दीपक चित्र दृष्टव्य है-

*रेजा लिपट रहो नये तन में गोरी के गोरे बदन में।*
*चुभ रही गौट भुजन के ऊपर धन के बालापन में।*
*क्या छवि देख बिलोकत प्यारी खड़ी खड़ी दरपन में।*
*गंगाधर मिलवै के खातिर लगी लालसा मन में।* [13]

नारी प्रायः अपने स्वाभविक सौन्दर्य की अभिवृद्धि हेतु कृत्रिम प्रसाधनों का सहारा लेती है। नारी के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने में उसके केश विन्यास का अत्याधिक योग रहता है। केशपाश को सुसज्जित करने में नारी की विशेष रुचि होती है। प्राचीन काल से भारतीय नारियाँ अनेक तरीके से केश विन्यास कर अपने को अलंकृत करती रही हैं। भारतीय साहित्य में केशों पर अनेक कविताएँ लिखी गई है। लोक कवियों ने भी नारी के केश प्रशाधन एवं केशविन्यास पर अपनी भाव वर्षा की है। लोक कवि की गहरी सूझ, उक्ति कौशल, भावभिव्यंजना और अदभुत कल्पना शक्ति इन पंक्तियों में दृष्टव्य है-

*कम्मर लौ केश डरे कारे अति स्याम सचिक्कन सहकारे।*
*मानो स्याम रेसम के डोरा तड़िता पै सूखन डारे।*
*मानो कनक कलश के ऊपर फिर रहे नाग गुस्सावारे।*
*गंगाधर कहँ इन केसन पै रीझ रहे बंशीबारे।* [14]

तन्वगी कुरंगनयना नायिका के श्यामल चिकने केशों की लम्बी चोटी उसके सौन्दर्य को द्विगुणित कर देती है। चंचल लटें तिरछे नेत्रों के कटाक्ष क्या बांकपन लाते हैं। यह इन पंक्तियों में दृष्टव्य है-

*पटियाँ मन हरबे खाँ पारै रचरच माँग सँवारे।*
*चुटिया चुस्त बंधी चुटला सें गुरियां कुच पै डारै।*
*ऊपर माँग भरी मोतिया की सीस फूल को धारै।*
*मन भावन मन हरबे कारन हर हर बेर उधारे।* [15]

भारतीय सौभाग्यवती स्त्रियों के सौन्दर्य प्रसाधनों में माँग को सिन्दूर से भरना अत्यन्त प्राचीन है। सोलह श्रृंगार की परम्परा में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत साहित्य में इसकें लिए 'सीमान्त' शब्द प्रयुक्त हुआ है तो प्राकृत में मंग और मंग से हिन्दी में माँग रूप में यह विकसित हुआ जान पड़ता है। माँग को सिन्दूर, पुष्पों अथवा मोतियों आदि बहुमूल्य पदार्थों से सजाने का उल्लेख साहित्य में मिलता

है–

*गोला मौं पै पटियाँ पारें सुन्दर माँग समारैं।*

*मानो स्वच्छ चंद के ऊपर  कागा पंख पसारैं।*[16]

भारतीय नारियों के मस्तक पर दीप्त बिन्दी सौभाग्य का चिह्नन मानी जाती है। विवाहिता के माथे पर बिन्दी लगने पर ही वह सुहागिन कहलाने की अधिकारिणी होती है। नारी के भाल पर लगी बिन्दी उसके अखण्ड सौभाग्य की सूचक होती है। बिन्दी का पूर्व रूप तिलक था। भारतीय साहित्य में ललाट पर सुशोभित बिन्दी का बड़ा ही चित्रमय वर्णन मिलता है। बिन्दी के अनेक रूपों का वर्णन कवियों ने भी किया है। कही नारियों को सुन्दर (रोली रोरी) चन्दन आदि की बिन्दियाँ तो कहीं मृगमद केशर आदि की बिन्दियाँ लगाते हुये वर्णित किया है। लोक काव्य में भी बिन्दी या बूँदा को लेकर अनेक रचनाएँ मिलती है। उदाहरण स्वरूप एक दृष्टव्यहै–

*बूँदा अजब आड के तर को मजा देत दिलबर को।*

*दिपत दिमंक सरूप ऊबदै रूप भाल के भर को।*

*प्रभा हरन के  काज भजे गुरु चोर चन्द्र के घर को।*

*बेंदा साज सिंगार आब  है भान राज अवसर को।*

*खायें रात अफीम ईसुरी नसा न जात नजर को।*[17]

बूँदा पर ही कुछ पंक्तियाँऔर दृष्टव्य है–

*बूँदा तरै दओ भौजाई ऊपर आड़ लगाई।*

*भौंहन के दुबचर्रे प्यारी बेंदी एक जमाई।*

*तीसे चलकें तनक फेर से सैंदुर सींक सुहाई।*

*दीनी आड़ काड़ से बड़कें भात बिंदुलिया भाई।*

*तेई पै ईसुर घूंघट घालो प्रान हरन चढ़ाई।*[14]

बैंदी या बेंदा सोने चाँदी के भी बनते हैं। जिसके धारण करने से गोरे भाल की शोभा बढ़ जाती है। लोक कवि ने बैंदा लगाए हुये नायिका का चित्रमय वर्णन किया है–

*बैंदा सीस राधिका दीनों भौंहन बीच नवीनों।*

*उदयाचल से मानों सूरज उदै प्रात ही कीनों।*

*देखत लुप्त होत तारायन तेज चन्द्र कौ छीनो।*

*ईसुर ऐसी सजन सजा कें बस मोहन कर लीनो।*[19]

नायिका के भाल पर सुशोभित बैंदा की अद्‌भुत छटा का चमत्कारिक वर्णन निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य है–

*सैंदुर लाल भाल पै सोहे, बैंदा लाल लसो है।*

*लाल कापोल लाल हैं नैना डोरा लाल खिचो है।*

*लालई लाल कुचन विच रेखा लाल  भराव  भरौ है।*

*रसिया लाल लाल है पलका संग लाल लिपटो है।*[20]

मनोहर स्वच्छ और विशाल आँखें सुन्दरता की प्रतीक मानी जाती हैं। आँखों की पुतलियाँ काली, पतली और घनी होनी चाहिए। आँखें किसी भी व्यक्ति के सौन्दर्य की ही नहीं स्वास्थ्य का भी दर्पण होती हैं। आँखों के माध्यम से किसी के भी हृदय में झांका जा सकता है। मुस्कराती बोलती हुई कारी कजरारी आँखों से कौन प्रभावित नहीं होता। आँख को आकर्षक बनाने कृष्ण और धवल दो भाग होते है। ये दोनों भाग स्पष्ट होने चाहिए इसी में आँखों का सौन्दर्य है। इस सौन्दर्य को निखारने के लिए आँखों में अंजन या काजर लगाया जाता है जो आँखों को सुन्दर ही नहीं स्वस्थ भी बनाता है। लोककवियों ने सुन्दरी नायिकाओं के नेत्रों में अंजन अथवा काजल का वर्णन किया है–

*मारे नैन करकें तिरछे काजर कोरन भरकैं।*

*जैसे व्याघ मृगा के ऊपर छोड़त बान समर कै।*

*ज्यों हथियार नैंन न मानैं घायल होत  नजर कै।*

*सूरवीर  रनधीर सिपाही बेदत सामे परकैं।*

*गंगाधर ना लगत कूर के पूरे लगै सुधर कै।*[21]

गंगाधर की नायिका काजर कोरों में भरकर तिरछे नेत्रों से कटाक्ष करने में निपुण है, तो ईसुरी की नायिका भी कम नहीं है। उसने भी बाँके नेत्रों में कजरवा आँज लिया है, परन्तु उसका प्रियतम परदेश गया है इसलिए उसका श्रृंगार भारतीय संस्कृति और कुल मर्यादा की रक्षा में बाधक बन गया है। ईसुरी कृत इस फाग में उपदेशात्मकता हो गई, क्योंकि बुन्देली लोक संस्कृति के अनुसार पति के परदेश गमन पर सौभाग्यवती नारियों को श्रृंगार नहीं करना चाहिए। यथा –

*बाँके नैन कजरवा आंजौ बलम बिना न साजौ।*

*दुलहन घरै दिखैया को है वो परदेस बिराजौ।*

*आई बड़ी बड़न कै ब्याही अपनो कुल खाँ लाजौ।*

*करती कौन काम का कहिये कजरौही न माजौ।*

*साजौ नईं लगत है ईसुर वेऔसर को बाजौ।*[22]

कपोल व चिबुक का प्रसाधन भी सोलह श्रृंगार के अन्तर्गत आता है। कपोल तथा चिबुक का प्रसाधन कई रूपों में होता है। कपोल पर प्राचीन समय से चित्रकर्म, पत्र भंग, लोध्ररज का उपयोग प्रायः होता है किन्तु काल क्रमानुसार इस प्रसाधन के रूप तथा स्थान में परिवर्तन आता गया। कपोलों पर कृत्रिम तिल बनाना तथा बाद में गुदने से गुदाकर कोई आकृति बनबाने की प्रथा प्रबल रूप से चल पड़ी। आज स्त्रियाँ अपने अंगों को गुदना गुदवा कर अलंकृत करती हैं। लोक साहित्य में तिल और गुदना से सम्बन्धित अनेक पद प्राप्त होते हैं। नायिका के गोरे कपोलों पर काला तिल कैसा सुशोभित हो रहा है? इन पंक्तियों में सन्देह अलंकार के द्वारा दृष्टव्य है–

*बरबस हरै लेत  मन मोरो तिल कपोल कै तोरौ।*

*कैधों सरस चन्द्र में बुन्दा कै जमुना जल केरौ।*

*कैधों रवें गुहराई भीतर देवै श्याम दरेरौ।*

*मन भावन कहै नजर मिलाकैं एक बेर फिर हेरौ।*[23]

नायिका के गाल पर अंकित गुदना का वर्णन कवि गंगाधर की इन पंक्तियों में आकर्षक शब्दों में दृष्टव्य है।

*गुदना लगत गाल पै प्यारौ हमखाँ रजउ तुमारौ।*

*गोरे बदन गाल के ऊपर बन बैठो रखवारौ।*

*देखन देव नजर भर हमखाँ घूंघट पट न डारौ।*

*ठाड़ी होव देख लैं चित सौं जी ललचात हमारौ।*

*गंगाधर की तरफ देख कें दै देव तनक इसारौ।*[24]

गुदना गुदवाने की प्रक्रिया पीड़ादायक होती है, परन्तु लोकविश्वास में  गुदना गुदवाना स्वर्ग प्राप्ति का साधन है, जिसके गुदना अंकित होता है उसके पापों का मोचन हो जाता है। अतः ग्रामीण बालाएँ सौन्दर्य वृद्धि के साथ-साथ परलोक सँवरने की भावना के कारण भी इस कष्टसाध्य प्रसाधन को अपनाती हैं । एक फाग में गुदना करवाते समय नायिका के मनोभाव का वर्णन दृष्टव्य है–

*गोदत हमें न हौवे पीरा हाँत चलै सो धीरा।*

*बना देव सुन्दर रुच रुंच कैं नग नगमोर पपीरा।*
*जिनै देख कैं खुस हो जावें वे ननदी के बीरा।*
*आहैं सखी पुरा पाले की जुरै भौत सी भीरा।*
*ईसुर देव गुदाई मन की भरभर झोरन हीरा।*[25]

ओष्ठय स्वाभाविक रूप से लालिमा युक्त होना चाहिए। ओठों पर लालिमा लाने के लिए पान का उपयोग किया जाता था तथा ओठों को लाल रंग से रंगा भी जाता है। इसके लिए नन्दीचूर्ण तथा मोम का प्रयोग किया जाता था। आज तो ओष्ठ्य राग अनेक रंगों के उपलब्ध हो जाते है जिन्हें त्वचा और वेशभूषा के अनुरूप उपयोग में लाया जाता है परन्तु लाल और गुलाबी रंग का प्रचलन विशेष रूप से है। पान अर्थात् ताम्बूल एक सर्वगुण सम्पन्न स्वास्थ्यवर्धक श्रृंगार प्रसाधन है जिसका वर्णन साहित्य में प्राप्त होता है। लोक कवि ने भी नायिका के मुख पर शोभित पान की पियराई का बखान इन शब्दों में किया है–

*प्रानन हरत पान पियराई रजौ के मौपे आई।*
*कै घूँघट के रहे छाँयरे धूप परन ना पाई।*
*कै तो तबक दिये सोने के कै केसर की खाई।*
*ईसुर छटा भोर के पारै उबत भान पै छाई। 26*

भारतीय संस्कृति में सौभाग्यवती नारी के लिए मेंहदी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका प्रयोग सौन्दर्य वृद्धि के लिए किया जाता है। मेंहदी सामान्यतः तरावट देने वाला पदार्थ है जिसका प्रयोग फटे तलुआ, सिरदर्द, आँखों में जलन व बालों आदि में किया जाता है। मेंहदी की पत्तियों को बारीक पीसकर या पिसी हुई मेंहदी में पानी मिलाकर भलीभाँति मन्थन कर सींक से या फिर कौंद से हाथ – पैरों के तलुओं पर सुन्दर आकृतियाँ बनाई जाती हैं। सोलह श्रृंगार में मेंहदी को स्थान प्राप्त है। लोककवि की नायिका के मेंहदी से भरे पोरों पर नायक की मुग्ध दशा इन पंक्तियों में दर्शनीय है–

*पोरा दसऊ लाल कर राखें मेंहदी में भर राखें।*
*मँजू मँजीठ माठ की लाली, तासें बेहतर राखें।*
*मानों इन्द्र वधुन को छौना कमल दलन पै राखे।*
*तुमने दिखा दिया सौतिन खाँ गरब गुमर हर राखे।*
*गंगाधर कयें देख हिये में गिरधर ने धर राखें। 27*

इसी प्रकार सौभाग्यवती स्त्रियाँ महावर या जावक से अपने पैरों का श्रृंगार करती हैं। महावर एक प्रकार की लाख से बना हुआ लाल रंग होता है जिसे सुहागिन स्त्रियाँ बड़े मनोयोग से लगाती हैं। कलापूर्ण तरीके सें महावर लगाने से पैरों की शोभा द्विगुणित हो जाती है। लोककवि की राधा के पैर कमल-पत्र से कोमल हैं उनकी ऐड़ी की स्वाभाविक लालिमा ही इतनी सुन्दर है कि महावर की कृत्रिम लालिमा की आवश्कता ही नहीं है–

*तैंका देत महावर नायन कमल पत्र के पायन।*
*ऊसै लगत मृदुल तरुवन की लाली अधिक सुहावन।*
*जावक जपा तामडा तासों दूनी ओप बढ़ावन।*
*फीको रंग परत मेंहदी कौ कर कर थकी उपावन।*
*गंगाधर राधे के पग लखि लागे नैन जुड़ावन।*[28]

सौन्दर्य के परिवर्धन हेतु नारियाँ अनेक प्रकार के मूल्यवान आभूषण धारण करती हैं। नारी – मन आभूषण प्रिय होता है। भिन्न भिन्न प्रकार केआभूषणों के प्रति उसका विशेष आकर्षक होता है। विश्व हिन्दी कोश में आभूषँणों के चार भेद किए गए है–

1. *आद्वेय (जो अंगों में छेद करके पहने जाते है)*
2. *बंधनीय (जो अंग पर बाँध कर पहने जाते हैं)*
3. *क्षेक्य (जिसमें अंग डालकर पहने जाते हैं)*
4. *आरोध्य (जो लटका कर पहने जाते हैं)*[29]

भरत के 'नाट्य शास्त्र' में भी अलंकारों के यही चार भेद माने गये हैं। भारतीय परम्परा में द्वादश आभूषण प्रमुख माने गए हैं। जायसी ने 'पदमावत' में इसका संकेत देते हुये कहा है–

बारह अभरन एइ बखाने। ते पहिरै बरहौ असधाने।।

श्री हफी जुल्ला खाँ के 'हजारे' में आभूषणों का उल्लेख इस प्रकार है–

बैंदी भाल, नासा, बेरू बेसर, तरौना कान, कण्ठ सिरी, कण्डहार हीरा मनि अंग में। बाजूबन्द, कंकन, अंगूठी छल्ला छाप युत नीकी बन्द किंकिन सोहाई रस रंग में। भले रघुनाथ पाय नूपुर मंजीर मजुराजत रंगीली भरी जोवन तरंग में। लीन्हें प्रतिबिम्ब चन्द बिम्ब को निकाल लखे बारह आभूषण बिराजे बाल अंग में।[30]

लोककवियों की नायिकाओं का भी आभूषण के प्रतितीव्र आकर्षण है। वे बुन्देलखण्ड में प्रचलित प्रमुख आभूषण बूँदा, बेंदी, दुर, बेसर, कर्णफूल, छूटा, बिचोली, बाजूबंद. ककना, मुंदरी, छला, पैजना, व बिछिया आदि पहने दिखाई पड़ती हैं। ये समस्त आभूषण उनके सौन्दर्य में चार चाँद लगा देते हैं। दुर पहने नायिका का रूप इतना सुहावना है कि उसने तो नायक पर जादू सा ही कर दिया है–

*जादू सो कर गई हेरन में दुरवाली तनक दृग फेरन में।*
*मुख भर पान नैन भर सुरमा तिरछी भौंहे तरेरन में।*
*उड़त फिरत जैसे नभ पंछी गिरत बाज की घेरन में।*
*गंगाधर घनश्याम विकल भए दही मही की टेरन में।*[31]

छूटा पहनें नायिका का चित्र इन पंक्तियों में दृष्टव्य है–

*छूटा पैरें तीन तरा के भौजी संग हराके।*
*इक छटिया रेशम की गंडा बिच बिच दीने ताके।*
*डरवाये सोने के गुरिया मोती संग हरा के।*
*ईसुर गरो गये लैबे खाँ गोल बन्द गजरा के।*[32]

कर्णफूल पहने नायिका के मुख का सौन्दर्य ऐसा शोभित हो रहा है कि नायक बेकाबू हो उठा है–

*साँकर करनफूल की झूमें गोरी कौ मुख चूमै।*
*झुक झुक परत गिरत आनन पै लेत चलत में लूमे।*
*थिर न रहत करत चंचलता दमकत घूँघट हू में।*
*देखी नहीं आज लै ऐसी जा छवि और किसी में।*
*गंगाधर मनमोहन कौ मन रहत नहीं काबू में।*[33]

लोककवि नायिका के पैरों में सुशोभित पैजना की झंकार नायक के मन को उद्वेलित करने वाली है। यथा–

*प्यारी पैजनियां ठनकारे जीरा लेत निकारे।*
*सहजइ निगत फिरत आँगन में झनक परत है द्वारे।*
*सुधर सुनार रचें रुच रुच कें दौरी घरी रबारे।*
*गाँठे छुवत जात चलतन में सुन्दर ककरा डारें।*
*ईसुर स्याम सुरत के मारे खा गये प्रान दरारे।*[34]

प्रिय के सतत सामीप्य की अभिलाषी नायिका की आभूषण प्रियता का एक चित्र इन पंक्तियों में दृष्टव्य है जिसमें नायिका नायक को छला के रूप में अपनी अंगुली में धारण करने की

उत्कट अभिलाषा प्रकट करती है-

*जो तुम छैल छला हो जाते परे उँगरइयन राते।*
*मौ पोंछत गालन हाँ छूते कजरा देत दिखाते।*
*घरी-घरी घूँघट खोलन में नजर सामनें राते।*
*मन चाही लख में तुम बिदते हाँत जहाँ जब जाते।*
*ईसुर दूर दरस के लाने ऐसे काये ललाते।*[35]

षोडश श्रृंगार और द्वादश आभूषण से सुसज्जित नायिका की मन मोहनी छवि इन पंक्तियों में दृष्टव्य है-

*लागत सहजहि वदन सुहायो।*
*ताकी सोभा कहै कौन विधि साखिन श्रृंगार बनायो।*
*बेनी माँग भरे मुक्ताहल सीस फूल छवि छायो।*
*बेंदा के नेचें लघुबूटा करनफूल पहरायो।*
*चढ़ी दावनी भृकुटी दवा के बैनी फूल सुहायो।*
*वदन बूँद चिबुक पर तिल रुचि काजर द्रगन लगाऔ।*
*कंठ बिचौली छूटा छुटिया नासा में दुर नायो।*
****     ****     ****     ****
*जे सोरहु सिंगार अभूषन द्वादशं सहित जनाओ।*
*राम किशोर प्रियातन सजके सनमुख मुकुट दिखाओं।*[36]

उबटन, स्नान तथा अनुलह्मपन भी सोलह श्रृंगार के प्रमुख अंग हैं।। स्नान के समय त्वचा के निखार के लिए उबटन लगाना तथा स्नान के पश्चात शरीर पर सुगन्धित वस्तुओं से बना हुआ अंगराग लगाना सौन्दर्यवर्धक माना गया है। उबटन व अंगराग प्रायः सुगन्धित पदार्थो के बनाये जाते थे। ऋतु के अनुसार अंगराग या विलेपन बदलते रहते है। शीत में कस्तूरी, केशर व अगरु की अधिकता होती थी तो ग्रीष्म ऋतु में चन्दन और कपूर की प्रधानता रहती थी। शरीर की शोभा और पसीने की दुर्गन्ध को दूर करने के लिए सुगन्धित द्रव्यों का लेप भी शरीर पर किया जाता था। साहित्यकारों ने अनेक प्रकार के उबटन व अंग रागों का विस्तृत वर्णन किया है। लोककवि की नायिकाएँ भी अंगराग का प्रयोग करती हैं। एक पद दृष्टव्य है जिसमें एक रूपगर्विता नायिका ने षोडश श्रृंगार किये हैं-

*केसर कपूर गन्ध अंगराग चंदन कौ।*
*तन में लगायै तऊ सुख सौ न सौबैरी।*
*मेंहदी अजब खूब जावक सुरंग रंग।*
*भूषण नवीन बास नैन न नोवै री।*
*गंगाधर कहै जो पै मान होय तेरे उर।*
*हौं तौ सखी तेरी बात मौतें मत गौवैरी*
*जान पिया कौ मान गंजन को सौतिन कौ।*
*काहै द्रग कंजन तै अंजन को धौवे री।*[37]

इस प्रकार भारतीय नारियाँ अनादि काल से श्रृंगार प्रसाधनप्रिय रही हैं। नख से शिख तक यहाँ की नारियाँ विविध आभूषण धारण कर अपने रूप को सजाती सँवारती रही हैं। षोडश श्रृंगार की यह ललित कला आदि से लेकर आज तक कालानुसार परिवर्तित परिवर्धित होते हुये भी सुगठित रूप में फलती फूलती रही है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ-**


1. साहित्य दर्पण- पं. विश्वनाथ, पृ. - 26
2. प्राचीन भारत के प्रसाधन - अत्रिदेव विद्यालंकार, पृ. 26
3. कालिदास के ग्रन्थों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति- डॉ. गायत्री वर्मा, पृ. 166-67,
4. कामसूत्र - वात्स्यायन, एक प्रचारिणी व्रत प्रकरणम पृ. 4-6-14,
5. पीटरसन के संस्करण का 2137 वॉं स्टेन्जा पृ. 668
6. लोक कवि ईसुरी और उनका साहित्य-सं. डॉ नर्मदा प्रसाद गुप्त पृ. 22
7. गंगाधर गरिमा- सं. श्री निवास शुक्ल पृ. 50
8. वही, पृ. 57
9. वही, पृ. 57
10. लोक कवि ईसुरी और उनका साहित्य - सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 19
11. गंगाधर गारिमा - सं. श्री निवास शुक्ल, पृ. 62
12. लोक कवि ईसुरी और उनका साहित्य-सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 25
13. गंगाधर गरिमा - सं. श्री निवास शुक्ल, पृ. 60
14. विन्ध्य के लोककवि - पृ. 23
15. वही, पृ. 35, 36
16. बुन्देली फाग काव्यः एक मूल्यांकन - सं. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 44
17. लोककवि ईसुरी और उनका साहित्य-सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 20
18. वही पृ. 20
19. वही, पृ. 20
20. बुन्देली फाग काव्य, एक मूल्याकंन - सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 69
21. वही, पृ. 96
22. वही, पृ. 110
23. विन्ध्य में लोककवि, पृ. 35
24. गंगाधर गारिमा-सं. श्री निवास शुक्ल, पृ. 56
25. लोककवि ईसुरी और उनका साहित्य - सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 15
26. वही, पृ. 19
27. गंगाधर गरिमा - सं. श्री निवास शुक्ल, पृ. 62
28. बसंत की फागें फाग, क्र. 277
29. हिन्दी विश्वकोश, प्रथम खण्ड पृ. 25
30. हजार हफीज्जुला खाँ, पृ. 210 प्रकाशक नवल किशोर लखनऊ सन् 1932
31. विन्ध्य के लोककवि, पृ. 16
32. लोककवि ईसुरी और उनका साहित्य- सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 16
33. गंगाधर गारिमा - सं. श्री निवास शुक्ल, पृ. 56
34. लोककवि ईसुरी और उनका साहित्य - सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, पृ. 19
35. बुन्देली फाग काव्य एक मूल्याकंन - सं. डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त पृ. 80
36. द्वारिका अष्टयाम - पं. गंगाधर व्यास पद 5,2
37. गंगाधर गारिमा-सं. श्री निवास शुक्ल, पृ.86



- प्राध्यापक हिन्दी
'श्रीकृपा निकेत' आदर्शनगर, हायर सैकेण्ड्री नं.1 स्कूल के पीछे
छतरपुर (म.प्र.) 471001
मोबा. नं. 9425189487

# बुन्देली भाषा के दुहरे और जोड़ीदार शब्द

-डॉ. कन्हैया लाल वर्मा 'बिंदु'

सौन्दर्य चेतना है। चेतना जीवन है। जीवन समाज है, समाज साहित्य है। साहित्य सत्य है, सत्य ही ईश्वर है। ईश्वर ही सौन्दर्य है। यह चक्र जीवन का शाश्वत सत्य है। यह शाश्वत सत्य शब्द - शक्ति के सबल सम्बल पर अवलम्बित है। शब्द ही वाणी का मूलाधार है। बुन्देली लोक साहित्य में बुन्देली शब्दों की अकूत सम्पदा भरी पड़ी है। संक्षेप में कहा जाता सकता है कि बुन्देली शब्दों का अथाह भण्डार ही बुन्देली लोक साहित्य है। वाणी की महिमा गान करते तुलसीदास जी ने कहा है। ''गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न'' वाणी और अर्थ दो होकर एक होते है। जैसे जल और लहर दो होकर एक होते है, सिक्के के दो पहलू होकर एक होते है वैसे ही वाणी और अर्थ अभिन्न होते है। वाणी से व्योवहार व्योवहार से अपनत्व, अपनत्व से निजत्व, निजत्व से आत्मीयता का निर्माण होता है। यही निर्माण संसार की संरचना करता है अर्थात् वाणी ही संसार है और संसार वाणी पर अवलम्बित है। बुन्देली कानात कई जात कै जौ लौ बहू, बहू होत सास सें लरत रत। जब सास बनबनू जात तो जीते जी बहू सें लरत - मरत रत। यह क्रम-सूर्योदय से अस्त सा चलता रहता है। यह सब वाणी का ही अनूठा खेल है। यदि वाणी पर संयम रखा जाय तो परिवार ही नहीं सारा संसार सुखी हो जाता है। कुवाणी, कठोर वाणी, अप्रिय वाणी दुखों की भण्डार होती है। बुन्देली की अन्य कानात इस सत्य तथ्य को सिद्ध करती है-

*बातन हाती पाइये, बातन हाती पाँव।*

*इतना ही नहीं बुन्देली में कहा जाता है-*

*खुद कै कें भीतर गई जूता परे कपाल।*

*गुलगुला गुलगुच हो गये मूँड बचे नई बाल।।*

बुन्देली शब्दों में कहने सुनने की अकूत शक्ति भरी पड़ी है। **बुन्देली में जब क्रोध उफान पर आकर उबलने लगता है, जिउवरा खौलने लगता है तो बुन्देली शब्द अपना जादुई असर दिखाने लगते हैं- सुनिए चीर कै दो करदें, टेंटुआ मसक दें, घिची टो डारें, गुलगुला मसक दें, आँख काढ़ लें, खेंच खाँल भुस भर दें, धुनकन कर दें, फार के दो कर दें, करेजा फाड़ारे, कुचल-कुचल डारे, जीब खैच लें, मों में लूगर ठूँस दें, मार-मार गाल लाल कर दें, सबरी खाल कथूला कर दें, टेटुआ सें लग के खून पीलें, मूंड़ काट पेड़े पै लटका दें। इतना ही नहीं बुन्देली शब्दों का रूप अनेक रूपों में प्राप्त होता है। शब्दों की शक्ति प्रभावशाली बनाने हेतु दुहरे शब्दों का खूब प्रयोग किया जाता है। बानगी देखिए-**

**बुन्देली के दोहरे शब्द-**

1. आउत- आउत - 2. अफरौ-अफरौ
3. औरत-औरत - 4. अटपटौ-अटपटौ
5. औंगूं-औंगूं - 6. अपनी-अपनी
7. अपनोऊँ-अपनोऊँ - 8. अकड़ौ-अकड़ौ
9. पैरत-पैरत - 10. तैरत-तैरत
11. पैराउत-पैराउत - 12. उगारत-उगारत
13. हँसत-हँसत - 14.बिलोरत-बिलोरत
15. खोंदत-खोंदत - 16. खोदत-खोदत
17. रोंदत-रोंदत - 18. कुचलत-कुचलत
19. कुचल-कुचल - 20दै दनादन-दै दनादन
21. पछाँड़-पछाँड़ - 22. चीर-चीर
23. फार-फार - 24. दौंच-दौंच
25. लोंच-लोंच - 26. पोंछ-पोंछ
27. नींछ-नींछ - 28. गदरा-गदरा
29. उतारत-उतारत - 30. बुलाउत-बुलाउत
31. चूँस-चूँस - 32. पी-पी
33. गदरा-गदरा - 34. खा-खा
35. आ-आ - 36. जा-जा
37. का-का - 38. गा-गा
39. ऐंठ-ऐंठ - 40. हूँक-हूँक
41. टूँका-टूँका - 42. रीनौ-रीनौ
43. चीनौ-चीनौ - 44. हाँजू-हाँजू
45. बन-बन - 46. ठन-ठन
47. सुरसुरा-सुरसुरा - 48. खुरखुरा-खुरखुरा
49. भरभरा-भरभरा - 50. कंठ-कंठ
51. लोरत-लोरत - 52. विलोरत-विलोरत
53. बिडारत-बिडारत - 54. छेदत-छेदत
55. घेराँ-घेराँ - 56. किट-किट
57. चीं चीं-चीं चीं - 58. चैं चैं-चैं चैं
59. खट्टी-खट्टी - 60. मीठी-मीठी
61. गुच्च-गुच्च - 62. टुच्च-टुच्च
63. ऐंठ-ऐंठ - 64.मरोर-मरोर
65. सेंट-सेंट - 66. फेंट-फेंट
67. उठा-उठा - 68. पटक-पटक
69. पटा-पटा - 70. सटा-सटा
71. कटौ-कटौ - 72. मिलौ-मिलौ
73. कोरौ-कोरौ - 74. कोंरौ-कोंरौ.
75. धौरौ-धौरौ - 76. पीरौ-पीरौ
77. भूरा-भूरा - 78. लाल-लाल
79. गटागट-गटागट - 80.फटाफट-फटाफट
81. खचाखच-खचाखच - 82. फर-फर
83. चलत-चलत - 84. निगत-निगत
85. डर-डर - 86. लर-लर
87. हराँ-हराँ - 88.हरो-हरो
89. हटा-हटा - 90. भटा-भटा
91. खट-खट - 92. चट-चट
93. ढूँढ़त-ढूँढ़त - 94. कूँदत-कूँदत
95. दौरा-दौरा - 96. दोरत-दोरत
97.आत-आत - 98. जात-जात
99. सोउत-सोउत - 100. रोउत-रोउत
101. गाउत-गाउत - 102.बजाउत-बजाउत
103. कात-कात - 104. सात-सात
105. पात-पात - 106. पत्तन-पत्तन
107. कोठन-कोठन - 108. खात-खात

| | | |
|---|---|---|
| 109. रातन-रातन | - | 110. रैत-रैत |
| 111. फोरत-फोरत | - | 112. घोरत-घोरत |
| 113. छोरत-छोरत | - | 114. बाँदत-बाँदत |
| 115. जोरत-जोरत | - | 116. टोरत-टोरत |
| 117. भूँजत-भूँजत | - | 118.सिराउत-सिराउत |
| 119. फाँकत-फाँकत | - | 120. झाँकत-झाँकत |
| 121. हाँकत-हाँकत | - | 122. काँखत-काँखत |
| 123. लाँगत-लाँगत | - | 124. रेंगत-रेंगत |
| 125. फेंकत-फेंकत | - | 126. सेंकत-सेंकत |
| 127. उजयारत-उजयारत | - | 128. उजारत-उजारत |
| 129. सपरौ-सपरौ | - | 130. करई-करई |
| 131. हरी-हरी | - | 132. सेत-सेत |
| 133. गटक-गटक | - | 134. मटक-मटक |
| 135. भटक-भटक | - | 136. अटक-अटक |
| 137. सटक-सटक | - | 138. ठसक-ठसक |
| 139. ठूँस-ठूँस | - | 140. चमक-चमक |
| 141. फड़फडा-फड़फडा | - | 142फटाफट-फटाफट |
| 143.कड़क-कड़क | - | 144. लरम-लरम |
| 145. गुटक-गुटक | - | 146. भड़-भड़ |
| 147. भड़भड़ा-भड़भड़ा | - | 148अकवक अकवक |
| 149. कलारत-कलारत | - | 150.हाँपत-हाँपत |
| 151. चिचया-चिचया | - | 152. हँसा-हँसा |
| 153. कर्रो-कर्रो | - | 154. मुलाम-मुलाम |
| 155. गटागट-गटागट | - | 156. लुक्क-लुक्क |

### *दुहरे शब्दों का वाक्य प्रयोग-*

1. निगत-निगत = चलते-चलते
डुकइया ने कई - ''बब्बा निगत निगत हार गईं''
2. नीछ नीछ = छील-छील
बे बराई नीछ नीछ कें चोंख रये।
3. चीं चीं = चुप्पी साधना - अथाई पै धवल नें कथूले सें कई जब तुमाओ ओसरो काम कौ आउत चीं चीं बोल चेलइया साद के रै जात।
4. चें चें = शोरगुल - चिरइयन के चैनुआ चें चें कर रये।
5. हँसत हँसत = प्रसन्न - लरका बिटिया हँसत हँसत दूनर हो जा रये।
6. लोंच लोंच = काटकर - बँदरिया मोड़ी मोड़न खों लोंच लोंच कें भग गई।
7. सेंट -सेंट = दूध की धार - गुआला नें भैस के थनन सें सेंट-सेंट निचो लई।
8. चीनों-चीनों = पहचान
जो लरका की कौ आय ईको मों चीनों-चीनों सो लग रओ।
9. कुचर-कुचर कूट-कूट = नई बहू नें मउअन खों कुचर कुचर कें कुचला कर दओ।
10. गुच्च गुच्च = चुभो चुभो - गर्रा बैल खों बेर बेर अरई गुच्च गुच्च कोद कर दई।
11. कनूका कनूका = दाना दाना -किसान खेत सें नाज कौ कनूका कनूका घरै ले आउत।
12. कूँड-कूँड = थोड़ी -थोड़ी - घपू ने जाँगा बटत की बेराँ ठाँस के कै दई अपुन कौनऊ ठसक में न रइयो सबरी जाँगा कूँड़ कूँड के बटा लै हों ठाँड़े ठाँड़े।
13. कुरा कुरा = छोटे छोटे से :- उजयान बाई लरती बिरियाँ परोसन सें कै रई अत्त जिन करौ कुरा कुरा से नास हुइये कौनऊँ दिना।
14. फरौ-फरौ = ऊपर-ऊपर - बिन्नू तें तौ सूपा से नांज खों फरौ फरौ परोर ले जादा परोरबे में जिन बीद।
15. निचुर-निचुर = रिस-रिस:- बिन्नू ते तौ उन्ना मड़इया पै डार दे वे तो निचुर-निचुर कें सूक जें।
16. निचो-निचो = पानी काड़ कें:- बाई मैंन तोई धुतिया निचो निचो के डार दई अबै सूकी जात।
17. चूँ चूँ के = चुचा-चुचा:- कोरी गगरी कौ सबरौ पानू चूँ-चूँ के (चुचा-चुचा) घिनौची में बिला गओ।
18. कोंरी-कोंरी = नरम-नरम:- खेत सें कोंरी कोंरी कौंसें टोर लिये।
19. मुलाम मुलाम = नरम नरम:- बिन्नू की हथुलियाँ भौतई मुलाम मुलाम लगतीं थथोलत में।

### *बुन्देली के जोड़ीदार शब्द-*

| | | |
|---|---|---|
| 1. अन्ट -सन्ट | - | 2. अरका-भरका |
| 3. अनी-कनी | - | 4. ओंदों-सूदौ |
| 5. अठन्नी -रुपइया | - | 6. अटा-अटारी |
| 7. आरौ-अरिया | - | 8. अदपक-गदरा |
| 9. हट्टा-कट्टा | - | 10. हाँपत -सीपत |
| 11. लट्म-लट्टा | - | 12. पट्टई -पट्टा |
| 13.हट्टई - हट्टा | - | 14.कट्टई - कट्टा |
| 15. सन्ड - मुसन्डा | - | 16. गुन्डई - गुन्डा |
| 17. इतै -उतै | - | 18. लद -फद |
| 19. दले - दलोचा | - | 20. पले - पलेचा |
| 21. कुल - कुटे | - | 22. लुटे-फिटे |
| 23. बारे - न्यारे | - | 24. तरइयाँ-तारे |
| 25. कउआ - नउआ | - | 26. पंच -पउआ |
| 27. पउआ - पंच | - | 28. लुआर - बाढ़ई |
| 29. नदी - नारे | - | 30. कुची - तारे |
| 31. बर्तन - भाँडे | - | 32. लावर - लबरा |
| 33. लोटा - गिलास | - | 34. माटी - ककरा |
| 35. कूरा - कचरा | - | 36. बंदरिया - बंदरा |
| 37. हाँड़ -माँस | - | 38. पेड़-पत्ता |
| 39. उन्ना - लत्ता | - | 40. पेड़ - पत्ता |
| 41. नाव -नदी | - | 42. गाँव -खेड़ौ |
| 43. हीला - हवालौ | - | 44. ढोर -चारुवा |
| 45. गानौ - गुरिया | - | 46. घोरा - घुरिया |
| 47. डुकरा - डुकइया | - | 48.बकरा - बकरिया |
| 49. गइया - बछिया | - | 50. खैला - खैलिया |

51. झारौ – थेतो –
52. कुपरा – कुपरिया
53. कुठिया – डार –
54. हड़ा – कुपरा
55. हर – बखर –
56. जुआँ – जोत
57. सैल – पंचाई –
58. हर – जोत
59. चका – चकीला –
60. बैल – गाड़ी
61. बेर – करौंदा –
62. आम – अमरूद
63. दूध – करूला –
64. मटका – मटकी
65. गगरी – घैला –
66. गड़ई – लोटा
67. बेल – गड़ई –
68. गोऊँ – चना
69. कुटकी – फिकार –
70. कोंदों – समा
71. जुनई – बाजरा –
72. घीऊ – नैनू
73. बूद – दई –
74. दई – मठा
75. निबुआ – नौन –
76. हरदी – चूना
77. राग – रागनी –
78. कुलइया – बेट
79. खेत – खरयान –
80. गेती – फावरौ
81. छैनी – हतौरा –
82. धनिया – मिरचा
83. नौन – मिरच –
84. उखरी – मूसर
85. दई – बरा –
86. कढ़ी – पकोरी
87. हर्र – बहेरो –
88. कलीदौ – चीमरी
89. भटा – भाजी –
90. नाती – आजी
91. ताल – तलैया –
92. करइया – करछली
93. गुल्ली – डंडा –
94. नथ – नथनी
95. काया – माया –
96. उजयारा – अँदयारा
97. धन – धाम –
98. सूदौ – सादौ
99. पूरौ – आदौ –
100. गुण – गान
101. कत्था – सुपारी –
102. काजू – किसमस
103. बेला – कचुल्का –
104. तबा – चमीटा
105. कटोरा – कटोरी –
106. चकिया – जातौ
107. पेरा – लड्डुआ –
108. दूद – जलेबी
109. अडुआ – भडुआ –
110. निदाई – गुड़ाई
111. जोत – बखरनी –
112. देरी – दुआर
113. उसरा – दुगई –
114. कुआ – बाबरी
115. टपरा – टपइया –
116. कुठिया – बन्डा
117. कीरा – मकूरा –
118. कूरा – माटी
119. लठा – पठा –
120. धुतिया – जोरौ
121. कुरती – कुरता –
122. पंचा – अंगोछा
123. लाँगा – जोरौ –
124. खेत – खरयान
125. कुदई – कोंदों –
126. चना – चबेना
127. मुरका – भुरका –
128. गुर – सतुआ
129. बेर – बिरचुन –
130. आम – अमियाँ
131. गुरवेल – नीम चढ़ी –
132. कढ़ी – बरी
133. गइया – बछिया –
134. पड़ा – पड़िया
135. देर – सबेरे –
136. कोंरे – दुपरे
137. डिन – डूबै –
138. साँज – सकारें
139. लपक – लौलइयाँ –
140. टिया – ठौर
141. भग – दड़ –
142. सूपा – दौइया
143. तइया – तबेला –
144. उथल – पुथल
145. उलट – पलट – 146. उठा – पटक
147. करौ – धरौ – 148. लरौ – मरौ
149. कोंरौ – कर्रो – 150. भोंरा – भोरी
151. अरा – पई – 152. माँर – धरी
153. पनरा – पनाई – 154. घर – घाट
155. ऐंड़ा – मेड़ा – 156. लगड़ा – लूला
157. कचरा – कचरिया – 158. डलिया – टुकनियाँ
159. पट्ठा – पठिया – 160. सकोरा – सनकिया
161. कटोरा – कटुरिया – 162. चूरा – पटैला
163. ककना – दौरी – 164. गुंज – हमेल
165. कक्का – काकी – 166. अजा – आजी
167. हँसिया – खुरपी – 168. गेती – फावरौ
169. लोग – लुगाई – 170. जनी – मान्स
171. मोंडी – मोड़ा – 172. मताई – बाप
173. उल्ला – बिलना – 174. चका – चकौट
175. पानू – पंगल – 176. डरी – फरी
177. मौज – मस्ती – 178. माँगी – ससती
179. चिरई – चिनगुनी – 180. हाले – फूले
181. अतौ – पतौ – 182. रीज – बूज
183. काँय – काँय – 184. इताँय – उताँय
185. नाँय – माँय – 186. पकर – धकर
187. धुकुर – पुकुर – 188. तड़क – भड़क
189. छला – मुदरी – 190. चूरा – चुड़ियाँ
191. कौल – करार – 192. झन्ना – पुता
193. न नगद – न उदार – 194. लयें – दयें
195. गैल – गली – 196. हारे – थके
197. आँदरौ – धूधरौ – 198. गिगआ – किगआ
199. चित्त – पट्ट – 200. लोट – पोट

### *जोड़ीदार शब्दों का वाक्य प्रयोग-*

1. अतो-पतो = ठिकाना:- ऊकौ, अवै लौ अतौ पतौई नइयाँ काँ है काँ नइयाँ।
2. नाँय माँय = इधर उधर:- मताई बोली तोय गइयाँ काय खो मिलने ती तें तौ नाँय माँय फिर किरू कें आ गऔ।
3. चका-चकोट = व्यवस्था :- धुर ढिलयाये से गाड़ी कौ चका चकोट नई लग रओ।
4. पानूँ – पंगल = पानी भरने की बेरा :- पानू पंगल की बेराँ जनी मान्सें मन की बातें बतया लेतीं।
5. चित्त – पट्ट = दौनों हाथ में लड्डू:- नेतन की चित्त पट्ट दोई सई रैती।
6. आँदरौ – धूधरौ = कम दिखाई देना:- आँदरौ धूधरौ डुकरा उसरा में डरो रत।
7. धुकुर – पुकर = घबड़ाना:- सास के डरन के माँय बहुअन की छाती धुकुर पुकुर करत रत।

-163, कला निकेतन, नीरजा नगर, जे. के. रोड, भोपाल 462021
मोबा. 9425079493

# पन्ना का पुरातत्वीय एवं पर्यटनिक वैभव

-नरेश कुमार पाठक

पन्ना मध्यप्रदेश के बुन्देलखण्ड अंचल में है। यह राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 75 पर छतरपुर से 72 कि. मी. एवं सतना से 72 कि. मी. दूरी पर है, निकटतम रेल्वे स्टेशन खजुराहो, सतना, हरपालपुर हैं। निकटतम हवाई अड्डा एवं रेलवे स्टेशन खजुराहो 45 कि. मी. की दूरी पर स्थित है। हरपालपुर 120 कि. मी. की दूरी पर है। पन्ना नगर विंध्य पर्वत पर 24-43 उत्तरी अक्षांश 80-11 पूर्वी देशान्तर पर अवस्थित है समुद्र की सतह से 1100 फीट की ऊँचाई पर मदार टूँगा एवं उत्तर पश्चिम हजारों गहरे कछवा सेहा व मंडला सेहा की घटिया है। इसके बीच में 6 मील लम्बा चौड़ा मैदान है जिसमें यह नगर बसा हुआ है।

पन्ना एक प्राचीन नगर है। इसका संदर्भ पुराण एवं रामायण में पद्मावती देवी के मंदिर का उल्लेख है। पन्ना का पुराना नाम पद्मावती पुरी था। इसका वर्णन विष्णु पुराण तथा विष्णु धर्मोत्तर पुराण में मिलता है। स्कंद पुराण में जेजाक भुक्ती तथा भागवत में किलकिला प्रदेश के रूप में वर्णित किया गया है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार पन्ना प्राचीन काल मे शक्ति उपासक राजा पद्मावत की राजधानी थी उन्होंने अपनी आराध्य देवी के रूप में पद्मावती देवी के मंदिर का निर्माण किया। यह मंदिर किलकिला नदी के कुण्ड ( प्रपात) के पास पद्मावती पुर का नाम जल प्रपात के कारण कालान्तर पन्ना हो गया (या प्रपात) (ऊरन-पानी) आगे चलकर पन्ना हो गया। पन्ना पुरातत्वीय एवं पर्यटनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पन्ना नगर में अधिकांशतः मंदिर बुन्देला शासकों के समय के है। पन्ना नगर के उत्तरी छोर पर किलकिला नदी के समीप पद्मावती देवी का मंदिर है। इस मंदिर को स्थानीय बोली में बड़ी देवन कहते है। लोक मान्यता के अनुसार प्राचीन काल में इस क्षेत्र में पद्मावत नाम के शासक हुये जो शक्ति के उपासक थे। उन्होंने अपनी आराध्य देवी माँ दुर्गा को पद्मावती नाम से इस प्राचीन मंदिर में स्थापित किया। कालान्तर में इस क्षेत्र का नाम इसी मंदिर के नाम के कारण पद्मावती हुआ। जो बाद में परना और वर्तमान में पन्ना। पद्मावती देवी का उल्लेख भविष्य पुराण तथा विष्णु धर्मोत्तर पुराण में किया गया है। यह मंदिर गौण नरेश का भी आराध्य स्थान था। नवरात्रि दुर्गोत्सव के समय स्थानीय मेला का आयोजन होता है तथा भारी संख्या में भक्तगण एवं पर्यटक एकत्रित होकर क्षेत्रीय बुन्देली भजन गाते है ऐसी मान्यता है कि पद्मावती भक्तों की आश्रय दात्री है।[1]

पन्ना नगर के हृदय स्थल पर **जुगलकिशोर जी मंदिर** है इस मंदिर का निर्माण पन्ना नरेश महाराजा हिन्दुपत द्वारा विक्रम संवत 1813 (ईस्वी सन 1753) में हुआ था।[2] ऐसा कहा जाता है कि पन्ना राज्य में तिलक की प्रथा हृदय शाह के जमाने से प्राणनाथ के मंदिर में होने की चली आ रही थी। उन्होंने हिन्दूपत को मान्यता नहीं दी इसलिये हिन्दूपत महाराज ने जुगल किशोर मंदिर बनवाया और जुगल किशोर जी की मूर्ति जो मथुरा से चौबे का एक लड़का मथुरा से चुराकर जिगनी-चंदौरा लाया था और वहां एक साल रखने के बाद पन्ना फिर चुराकर यह मूर्ति विंध्याचल देवी के मंदिर में उसके पास मौजूद थी, हिन्दुपत ने दीक्षित ब्राम्हणों द्वारा जुगल किशोर जी की मूर्ति छिनवा ली और इस मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कराई और गद्दी का तिलक जुगलकिशोर जी के मंदिर में होने लगा और धाम मोहल्ला को छोड़कर बाकी पन्ना जुगलकिशोर जी को मान्यता देने लगा। प्राणनाथ के मंदिर की सारी जागीर छीन ली और सिर्फ एक गाँव बारह सौ रुपया सालाना आमदानी का उनके भोग रस के लिए छोड़ा।[3]

मंदिर पूर्णतः उत्तर मध्य कालीन कला में निर्मित है इसमें बुन्देली कला की छाप परिलक्षित है। प्राचीन देवालय परम्परा अनुसार प्रवेश द्वार में दोनों ओर औटा निर्मित है। इसके आगे सोपान है मंदिर कलेवर में गर्भगृह के ऊपर भव्य शिखर निर्मित है। आन्तरिक भाग में जगमोहन भोगएवे नर मण्डप निर्मित है। गर्भगृह में भगवान श्री जुगलकिशोर जी की प्रतिमा बुन्देली साज-सज्जा के साथ प्रतिष्ठापित है। सनातन धर्मावलम्बियों का यह केन्द्र बिन्दु है। प्रभाती मंगल आरती के दर्शन से, वियारी शयन आरती के दर्शन समय तक भक्तों का तांता लगा रहता है। प्रत्येक अमावस्या को स्थानीय मेला का आयोजन होता है यह मेला प्रातः 10 बजे रात्री 10 बजे तक रहता है। इस दिन आसपास के ग्रामीण क्षेत्र के भारी संख्या में सपरिवार लोग पर्यटन हेतु आते है। ऐसी मान्यता है कि आज के दिन भगवान से मनौती मनाने में शीघ्र मनोकामनायें पूर्ण होती है अतः श्रद्धालुजन अपनी-अपनी समस्याओं की मनौतिया मनाने तथा पिछली मनौतियां पूर्ण हो जाने के उपलक्ष में प्रसाद चढ़ाने दर्शन हेतु एकत्रित होते हैं। हिन्दूधर्म के विशेष पर्व एवं त्योहारों पर यह मंदिर विशेष आकर्षण का केन्द्र रहता है। इसे श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर विशेष रूप से सजाया जाता है। भगवान के जन्म के दर्शन रात्री 12 बजे होते है दीपावली पर्व के दूसरे दिन गोधूलि बेला मे गोवर्धन रूप के तथा अन्नकूट के दर्शन होते हैं। होली पर्व में दोज की रात्रि में सखी भेष रूप के दर्शन होते है। यह दर्शन प्रातः दर्शन के समय से प्रातः 10 बजे तक रहते हैं। मंदिर की साज-सज्जा दर्शनीय हैं।[4] यह मंदिर धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है जब चारों धाम यात्रा हेतु पर्यटक जाता है तो देशभर के लोग पन्ना के जुगलकिशोर मंदिर के दर्शनार्थ आते हैं।

पन्ना के धाम मोहल्ला में किलकिला नदी किनारे प्राचीन **दिगम्बर जैन मंदिर** सिंह द्वार वाले इस मंदिर का प्रांगण और गर्भगृह क्रमशः नीचे है मंदिर के गर्भगृह में लाल संगमरमर की तीर्थकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा विक्रम संवत 1548 (ईस्वी सन 1491) की है। इसके दोनों ओर तीर्थकर आदिनाथ तथा तीर्थकर महावीर की आकर्षक प्रतिमा स्थापित है। मंदिर मे तीर्थंकर पार्श्वनाथ की एक अन्य प्रतिमा स्थापित है। यह पूरा मंदिर भी बुन्देला शैली में निर्मित है इसके दरवाजे को सिंह द्वार कहा जाता है। पूरी तरह से हिन्दू शैली में निर्मित मंदिर है, मंदिर के साथ धर्मशाला भी है। यह मंदिर जैन धार्मिक पर्यटकों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पन्ना नगर के पश्चिम में **महामति प्राणनाथ मंदिर** धाम मोहल्ले में स्थित है इस मंदिर का निर्माण विक्रम संवत 1748(ईस्वी सन 1691) में महाराजा छत्रशाल के निर्देशन पर सेठ लालदास की

देखरेख मे किया गया है। यह प्रणामी सम्प्रदाय का प्रमुख मंदिर है। इसे गुम्मट जी भी कहते हैं, इसमें महामति प्राणनाथ जी के दर्शन अक्षरातीत परमब्रम्ह के स्वरूप मुरली और मुकुट गर्भगृह में विराजमान है। मंदिर का गर्भगृहअष्ट फलकीय है इसमें उत्तर-दक्षिण, पूर्व - पश्चिम, अग्नि, नैऋत्य, वायव्य एवं ईशान कोणों पर पहलू बने हैं। मंदिर में स्वर्ण कलश युक्त शिखर है मुख्य गुम्बद के साथ आठ और गुम्बद हैं जो प्राणनाथ जी के समन्वयवादी सर्वधर्म सद्भाव के दृष्टिकोण के प्रतीक हैं। मंदिर में आंतरिक सज्जा बुन्देली परम्परा के अनुसार हैं। दीवारों और ढलवा छत पर कृष्ण लीला के चित्र उत्कीर्ण हैं।[6] मंदिर के शिखर में प्राणनाथ जी के आर्शीवाद स्वरूप पंजा बना हुआ है। मंदिर में प्राणनाथ जी के उपदेशों संग्रह तारमन सागर ग्रन्थ में किया गया है। यही पर बंगला साहिब के नाम से दूसरा भवन है इसमें बैठकर महामति प्राणनाथ अपने शिष्यों को उपदेश देते थे। शरद पूर्णिमा के अवसर पर एक सप्ताह का विशेष मेला मुख्य पर्व का आयोजन होता है। यहाँ दीवारों पर सुन्दर पच्चीकारी द्वारा कृष्ण भगवान के जीवन से संबंधित घटनाओं का अंकन किया गया है। यहां देश-विदेश के श्रद्धालु पर्यटक आते हैं।

पन्ना नगर के रानीगंज मोहल्ला में **बल्देव जी का मंदिर** है। इस मंदिर का पन्ना नरेश महाराजा रूद्र प्रताप सिंह[7] ने इस मंदिर को विशाल एवं भव्य मंदिर का निर्माण कार्य विक्रम संवत 1933 (ईस्वी सन 1876) में करवाया मंदिर में विशेष रूप से 16 स्तम्भों पर आधारित विशाल मण्डप है। यह मंदिर पूर्व और पश्चिम की स्थापत्य का अपूर्ण संगम हैं। यह बाह्य रूप से लन्दन के प्रसिद्व सेन्ट पाल चर्च का प्रतिरूप है इसके बाह्य सौन्दर्य को देखकर लोग सहज ही चर्च मान लेते हैं। यह मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है। इसके नट मण्डप और भोग मण्डप की महरावे मध्य कालीन स्थापत्य शैली में है। जब कि आन्तरिक सज्जा मंदिरों की तरह है। इसके झरोखे और महराबे उत्तर भारतीय स्थापत्य कला के प्रतीक है जबकि गर्भगृह के ऊपर बना हुआ गुम्बद पश्चिमी शैली में निर्मित हैं। जिस पर मंदिरों की तरह शिखर और स्वर्ण कलश स्थापित है। महाराजा रूद्र प्रताप को कृषि से लगाव था इसीलिये उन्होंने हलधर भगवान की प्रतिमा शालिग्रामी शिला की कृष्णवर्णी प्रतिमा है, स्तम्भों के अग्रभाग में सुन्दर पच्चीकारी की गई है। इस मंदिर में माह वदी नवें को बलदाऊ जी मेला होता है। जिसमें दूर-दूर से पर्यटक एकत्रित होकर सामिल होते है। इस दिन भगवान बलदेव का जन्म उत्सव मेला दिन 12 बजे जन्म का समय होता हैं।

पन्ना नगर के कलेक्ट्रेट (महेन्द्र भवन) के पास **विन्ध्यवासिनी का कांच मंदिर** है। यह पन्ना के नरेशों की कुल देवी का मंदिर है। कांच मंदिर के नाम से प्रसिद्ध इस मंदिर में अत्यंत प्राचीन विशाल विन्ध्यवासिनी देवी की भव्य प्रतिमा स्थापित है। नगर के भक्त जनों द्वारा आधुनिक साज-सज्जा सहित मंदिर का जीर्णोद्धार किया है। मंदिर में कांच लगाने की शैली एवं अन्य साज सज्जा पर्यटको को लुभाती है।

पन्ना नरेश किशोर जी द्वारा विक्रम संवत 1874 (ईस्वी सन 1817) में **जगदीश स्वामी जी मंदिर** का निर्माण कराया गया। यह मंदिर राज मंदिर परिसर कटरा मोहल्ला में है। महाराजा किशोर सिंह जगदीशपुरी से पैदल यात्रा करके जगदीश स्वामी को पन्ना लाये थे। जगन्नाथ पुरी से लाई गई श्री जगन्नाथ श्री बलभद्र एवं सुभद्रा जी की काष्ठ प्रतिमाएं गर्भ गृह में स्थापित हैं। यह मंदिर परम्परा मध्य युगीन शैली में निर्मित है जिसके प्रवेश द्वार पर विशाल सिंह बने हुये है। मंदिर का शिखर सुन्दर है, जिसमें सुनहरा कलश स्थापित है मंदिर का गर्भगृह मण्डप प्रदक्षिणा पथ एवं प्रवेश द्वार परम्परागत शैली में है। मंदिर के प्रांगण में दोनों ओर विभिन्न देवी-देवताओं के अन्य मंदिर है। इस मंदिर से आषाढ़ शुक्ल दो को रथ यात्रा की सवारी बड़ी धूमधाम से प्रारम्भ होकर जनकपुर जाती है। जनकपुर पन्ना से चार कि. मी. पूर्व में है। महाराजा किशोर सिंह ने सन 1832 में इस गाँव को बसाकर इसमें जगदीश स्वामी मंदिर बनवाया यहां अषाढ़ सुदी चौथ से साते तक रथ यात्रा का मेला लगता है और पन्ना से जगदीश स्वामी सहोद्रा व बलदेव जी के तीनों रथ मय सवारी के जनकपुर पहुँचकर तीन दिन रहते हैं। औंर मजहबी रीति के अनुसार कार्यवाही की जाती है। इस मेले को देखने के लिये दूर-दूर से पर्यटक यात्री हजारों की संख्या में आते हैं। यह मेला रथ यात्रा के मेले के नाम से प्रसिद्ध है।[8] मेला के पहले दिन पन्ना राज्य परिवार एवं जिले का कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक उपस्थित रहते हैं। तीसरे दिन तिलक होता है इस दिन राज्य सरकार का प्रतिनिधि रहता है यह रथ यात्रा उत्सव पर्यटन मेला के समान है।

पन्ना राज्य के प्राचीन राज मंदिर भवन (वर्तमान जिलाध्यक्ष कार्यालय) परिसर में **फूलादेवी मंदिर** स्थापित हैं। नगर के भक्तगण दैनिक दर्शनार्थ आते हैं। ऐसी मान्यता है कि देवी जी शीघ्र ही मनोकामनायें पूर्ण करने वाली है। नव दुर्गा उत्सव के समय विशेष भवन कीर्तन होते हैं।

पन्ना नगर के टिकुरिया मोहल्ला में **रामजानकी मंदिर** है। यह मंदिर विक्रम संवत 1752 (ई. सन 1895) में महारानी सुजान कुँवरि द्वारा निर्मित हुआ तथा मूर्तियों की प्रतिस्थापना संवत 1965 (ई. सन 1908) में पन्ना नरेश महाराजा यादवेन्द्र सिंह जी ने करवाई। मंदिर बुन्देली परम्परा का पूर्णतः प्रतीक है। राम भक्त श्री लल्लू जड़िया द्वारा मंदिर की दीवालों पर सम्पूर्ण रामचरित मानस (रामायण) का चित्रण किया गया है। मंदिर में श्री हनुमान जी की भक्तिमय प्रतिमा दर्शनीय है। इस मंदिर में सर्दव धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। चैत्र रामनवमी पर्व पर स्थानीय मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन होता है। जिसे देखने आसपास यात्री एवं पर्यटक आते हैं।

पन्ना नरेश के रानीगंज मोहल्ला में **गोविन्द जी का मंदिर** है। पन्ना नरेश महाराजा रूद्र प्रताप सिंह की महारानी गोविन्द कुँवरि जी इस मंदिर का निर्माण विक्रम संवत 1936 ( ई. सन 1879) में करवाया गर्भगृह में राधा गोविन्द की प्रतिमा है। मंदिर बुन्देली मंदिर बुन्देली शैली का प्रतीक है। यह मंदिर बल्देव मंदिर के समीप स्थित है। मंदिर का कलश शिखर कमल के आकार का है। मंदिर के सामने हनुमान जी का छोटा सा मंदिर है। मंदिर की दीवारे गर्भगृह प्रदक्षिणा पथ तथा मण्डप बुन्देली शैली में है। इसका मण्डप स्तम्भों से घिरा हुआ है।

पन्ना नगर के समीप पहाड़ी पर प्राचीन **खेरमाता वन** सुरई मंदिर का प्रसिद्ध है कुछ भक्त जन दैनिक दर्शनार्थ जाते हैं। प्रतिवर्ष

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में देव शयानी एकादश (चर्तुमास) के पूर्व भारी संख्या में देवी पूजन के लिए भक्त लोग जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि देवी जी सुख समृद्धि व सुरक्षा की आश्रय दात्री है तथा दैविक बाधाओं से शीघ्र मुक्ति देकर मनोकामएं पूरी करती हैं।

पन्ना नगर के मध्य (पुरानी कोतवाली के पास) बड़ा बाजार में **संकट मोचन व शिवालय मंदिर** स्थित हैं। मंदिर में अत्यन्त सुन्दर आकर्षक भव्य हनुमान जी की प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के मुख्य द्वार के सामने एक अष्ट कोणीय आकर्षक शिवालय मंदिर में भगवान शंकर अपने चतुर्भुजी रूप में परिवार सहित है। वर्तमान में यह संकट मोचन शिवालय मंदिर धर्मप्राण जनता का केन्द्र बिन्दु बना है। यहां पर नित्य नये-नये भजन कीर्तन अखण्ड रामायण पाठ एवं धार्मिक प्रवचन आदि कार्यो का आयोजन होता रहता है। सोम, मंगल, शनिवार को विशेष रूप से संख्या में दर्शनार्थी आते है। मंदिर के पुजारी के द्वारा की जाने वाली पूजा अर्चना एवं प्रसाद चढ़ाए जाने की जनता द्वारा प्रशंसा की जाती रहती है। यह मंदिर पन्ना में धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

**जिला पुरातत्व संग्रहालय**-जिला पुरातत्व संग्रहालय पन्ना की स्थापना प्रारम्भ मे 1974 छत्रसाल पार्क में मुक्ताकाश में प्रतिमांओं को प्रदर्शित कर गई अगस्त 1988 में हिन्दुपत महल में संग्रहालय स्थानान्तरित किया गया। संग्रहालय में शैव, शाक्त, बैष्णव व्यन्तर, विविध एवं जैनधर्म से संबंधित प्रतिमायें संकलित हैं।[9] शैव प्रतिमाओं में शिव-पार्वती युगल स्वरूप में, उमा महेश्वर, रावणानुग्रह, त्रिपुरान्तक शिव, गजासुर संहार, हरिहर, कार्तिकेय, गणेश एवं शिव द्वारपाल की विशालकाय प्रतिमा विशेष आकर्षण हैं। शाक्त प्रतिमाओं में मनसा देवी, पार्वती, मातृका, महेश्वरी, वैष्णवी, इंद्रारी, कौमारी, चामुण्डा, बराही की स्वतन्त्र प्रतिमायें हैं। वैनायकी की प्रतिमा दुर्लभ एवं विशेष उल्लेखनीय है। वैष्णव प्रतिमाओं में शेषशायी नारायण, नृसिंह, वामन, राम, सीता, कृष्णलीला पट्ट विशेष उल्लेखनीय हैं। विष्णु के अन्य अवतारों में विष्णु बैकुण्ठ एवं हग्रीव मूर्तिकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। व्यन्तर एवं विविध प्रतिमाओं मे सूर्य, नवग्रह, सती, स्तम्भ, गन्धर्व, कीचक, सिरदल आदि उल्लेखनीय है। जैन प्रतिमाओं में तीर्थकर आदिनाथ, सम्भवनाथ, सुपार्श्वनाथ, आदिनाथ-विमलनाथ द्विमूर्तिक, लांछन विहीन तीर्थकर आदि उल्लेखनीय है।[10] इसके अलावा राधाकृष्ण की मराठा कालीन धातु प्रतिमाएं, मुगल मराठा एवं ब्रिटिश कालीन चांदी एवं ताम्बे के सिक्के भी संग्रहालय बुन्देलखण्ड का प्रतिनिधित्व करने वाली दुर्लभ प्रतिमाओं का संग्रह है एवं पर्यटकों का विशेष आकर्षण है।

**बुन्देली शैली के महल एवं कोठियां**- पन्ना नगर में बुन्देला शासकों द्वारा निर्मित महल एवं कोठिया पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। इन महलों के संबंध में भव्य महल हिन्दुपत महल है एवं मध्य प्रदेश पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय विभाग का राज्य संरक्षित स्मारक है एवं वर्तमान जिला पुरातत्व संग्रहालय इसी महल में संचालित हो रहा है। इस महल का निर्माण पन्ना नरेश महाराजा हिन्दुपत ने 1758 से 1776 ई. के मध्य करवाया गया था। महल का निर्माण वर्गाकार रूप में किया गया था। जो द्विमंजिला है महल के बाह्य भाग में पांच विशाल कक्षों का निर्माण किया गया है जिसका उपयोग सुरक्षा सैनिकों के आवास हेतु रहा होगा। महल भव्य प्रमुख दरवाजों के दोनों ओर सुरक्षा सैनिकों के लिये वर्गाकार कक्ष बनाये गये हैं जो मुख्य दरवाजे कर तरफ दोहरे मेहराव युक्त हैं। दरवाजे के शीर्ष भाग पर अर्द्ध चन्द्राकार शिखर का निर्माण किया गया है। जिसके दोनों ओर घटों सुराहियों से युक्त मीनारों का निर्माण किया गया है। प्रवेश द्वार के मुख्य दरवाजे पर पाषाण निर्मित त्रिशाला युक्त दरवाजा बनाया गया है, जिसे लता बल्लरी एवं गुम्फित पुष्पों द्वारा अलंकृत किया गया है। दरवाजे के दोनों ओर नीचे के भाग के दाँयी ओर ऊर्ध्वमुख किये त्रिभंग मुद्रा में द्वारपाल अस्पष्ट आयुध लिये हुये है। सिरदल के ऊपरी भाग में कीर्तिमुख पंक्तिबद्ध निर्मित है। प्रवेश करु को पार करने के पश्चात महल का मुख्य प्रांगण है। महल के प्रांगण दोहरे और दुमंजिले कक्षों से आवृत वर्गाकार रूप में किया गया है। दरवाजों के ऊपर अलंकृत बैकिट्स बनाकर इसके ऊपर दोहरे छज्जों का निर्माण किया गया है। बैक्रिटस पर तोता, मोर आदि पक्षियों का अंकन बहुलता से दिखलाई देता है। प्रांगण के ऊपरी मंजिल पर पहुँचने के लिये पूर्व दिशा के दोनों कोनों में सोपान पथ का निर्माण किया गया है जिसमें जाने के लिये नीचे प्रांगण से तथा ऊपरी मंजिल से सोपान पथ बनाकर किया गया है। पुरातत्वीय मापदण्डों से यह महल बुन्देली वास्तुकला का अप्रतिम उदाहरण है।

महाराजा अमान सिंह ने (1752 -1758 ई.) अपने नाम का महल बनवाया इसे आजकल **महेन्द्र भवन** कहते हैं। महाराजा माधव सिंह ने (1898 -1902 ई.) अमान सिंह के महल के पश्चिमी वाले हिस्से पर महेन्द्र भवन नाम का महल अपने रहने के लिये बनवाया। इस महल में वर्तमान में कलेक्टर कार्यालय है। महाराजा रुद्र प्रताप ने (1870 -18 93ई.) पन्ना में राजमंदिर व सल्पनाद कोठी कहलाती थी बगिया की कोठी के पास अपने रहने के लिये पीली कोठी नाम की कोठी बनवायी, महाराजा किशोर सिंह ने (1798-1834 ई.) बगिया की बड़ी ड्योढ़ी के नाम की कोठी बनवायी। महाराजा धौकल सिंह (1775 -1798 ई.) ने बगिया की कोठी जिसे नंदनी ड्योढ़ी कहते है, का निर्माण करवाया। ये महल कोठियों को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा सकता है।

**मदार साहब की दरगाह**- मदार साहब के नाम के एक फकीर 1720 ई. में पन्ना आये और उन्होंने मदार साहब नाम की एक कब्र मदार टूंगा पहाड़ पर बनवायी जबसे इस पहाड़ का नाम मदार टूंगा पड़ा। मदार टुंगा पहाड़ समुद्र की सतह से 1557 फीट है। ऊँचाई पर है जो पूर्व में स्थित है। इस पहाड़ी के पूर्वी किनारे पर एक प्राकृतिक चट्टान (राक सेल्टर) के नीचे मजार बनी है जिसे वर्तमान में चमकीली टाईलस से अलंकृत कर दिया गया है। मजार के ऊपर एक गोलाकार किले की बुर्ज के आकार का निर्माण है जिसमें ऊपर छज्जे बने हैं। इसे मदार साहब का बैठका कहा जाता है। बैठका के पास एक मस्जिद है जिसे मदार साहब की मस्जिद कहते हैं बैठका के निर्माण में पत्थर एवं मस्जिद के निर्माण में पत्थर एवं चूने का उपयोग किया गया है। क्वार की तीज को मदार साहब का उर्स मदार टूंगा पर मनाया जाता हैं। जिसमें आसपास के जन सैलाब एवं पर्यटक उर्स का आनन्द लेने आते हैं। इस पहाड़ी पर प्रातः भ्रमण के लिये शहर के

नागरिक आते हैं यदि इस पहाड़ी को विकसित कर दिया जाए तो पर्यटन के रूप में काम आ सकती है।

**आकर्षक सरोबर**-पन्ना नगर में बुन्देला शासकों द्वारा निर्मित सरोवर पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। पन्ना मे छोटे बड़ें तालाबों एवं तलइयों की संख्या 37 के लगभग थी। बुन्देला शासक गुमान सिंह ने सन् 1745 ई. में धर्मकुण्ड पर धर्म सागर तालाब बनवाया और उस जगह जहां धर्म कुण्ड था बीच धर्म सागर में एक मंदिर बनवाया ताकि मालूम हो सके कि इस मुकाम पर धर्मकुण्ड और इस बस्ती का नाम नया पन्ना पड़ा धर्म सागर से पन्ना शहर में पानी की व्यवस्था नहर द्वारा होती है। इस पर सुन्दर घाट एवं किनारे पर मुकरबे ( छत्री) बने हुये हैं। यह सरोवर पहाड़ी की तलहटी एवं शहर के किनारे होने के कारण इसमें नौका बिहार एवं बगीचा पार्क विकसित कर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। इसी सरोवर के निकट छत्रसाल पार्क (राजेन्द्र उद्यान) जहां शहर एवं आसपास के सैलानी व पर्यटक आते हैं। पार्क के मध्य बुन्देल खण्ड केशरी महाराज छत्रशाल की अश्वरोही प्रतिमा है। महाराजा शुभान सिंह ने ही दुबे तलैया जो कमला ताल के पास है और देवे का तालाब जो गहरा हार में है। अपनी याद में बनवाये महाराजा अमान सिंह ने (1752 -1758 ई.) महाराजा सागर सिंह साहब का तालाब दहलान तालाब बनवाये। महाराजा नृपति सिंह ने 1870 ई. में नृपति सागर तालाब खुदवाया इस तालाब से पाइप सिस्टम से पन्ना की जनता के लिये पानी सप्लाई होता है। महाराजा रुद्र प्रताप (1870-1893 ई.) ने इन्द्र भवन तालाब बनवाया जो राज महल कहलाता है, महाराजा लोकपाल सिंह ने (1893 -1897 ई.) लोकपाल तालाब बनवाया इस तालाब से सिंचाई की व्यवस्था पन्ना के आस-पास के गाँव को होती है। इसके अलावा बेनी सागर पन्ना नगर के मध्य में है जिसके घाट आदि टूट रहे हैं यदि इसका संरक्षण कर विकसित किया जाता है तो यह नगर का एक प्रमुख पर्यटन स्थल होगा।

**राष्ट्रीय उद्यान-** पन्ना का राष्ट्रीय उद्यान अपनी प्राकृतिक सुन्दरता जैव विविधता का, दुर्लभ पक्षियों के आश्रय स्थल के रूप में अद्वितीय हैं। यहां 1975 में गंगऊ अभयारण प्रारम्भ किया गया था जिसे 1981 में राष्ट्रीय उधान घोषित किया गया। 553 वर्ग किलोमीटर में फैले इस उद्यान को प्रोजेक्ट टाइगर में शामिल किया गया है। इस बड़े भू-भाग पर केन बहती है। पार्क में कई सुन्दर जल प्रपात है। पूरा पार्क सागौन, आँवला, साल, तेइ, महुआ और पलाश के हरे भरे वृक्षों से भरा हुआ है हिनौता और मंडला के दो प्रवेश द्वार हैं। पार्क अक्टूबर से मई तक पर्यटन के लिये उपयुक्त रहता है। यहां पर्यटकों को हाथी से घुमाने की सुविधा है। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में 28 शेर 32 तेंदुये 1982 नीलगायें, 594 चिंकारा, 902 सांभर, 747 चीतल तथा 130 चौसिंघा हैं। राष्ट्रीय उद्यान में बड़ी संख्या भालू, बंदर, सियार, लोमड़ी ऊद विलाव तथा केन नदी में घड़ियाल है। यह मध्यप्रदेश का राज्य पक्षी दूधराज भी बड़ी भी बड़ी संख्या में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त बतख, मोर, तोता, काले सफेद बहारे कबूतर, चील, गिद्ध, किन्गफिसर, ऊल्लू मैनसा, कौवे, कठफोड़वा आदि भी सहजता से देखे जा सकते हैं। राष्ट्रीय उद्यान की छोटी-छोटी पहाड़ियाँ तथा मनोरम घाटियों के ढलानों पर तेंदू आवलाँ और बेर - के पेड़ बड़ी संख्या में है पन्ना राष्ट्रीय उद्यान खजुराहो हवाई अड्डा से मात्र 25 किमी दूर है। यदि सुव्यवस्थित ढंग से प्रयास किये जायें तो खजुराहो आने वाला प्रत्येक पर्यटक दुर्लभ पक्षियों सरीसृपों एवं वन्य प्राणियों के उन्मुक्त आश्रय स्थल राष्ट्रीय उद्यान पन्ना को अवश्य देखेगा। यहाँ पर्यटन की असीम संभावना हैं। राष्ट्रीय उद्यान पन्ना की नैसर्गिक वन सम्पदा जैव विविधता एवं वन्य प्राणियों को जैविक विरासत को सुरक्षित रखने का प्रयास किया गया है।[11]

**बुन्देल शासकों के मकबरे ( छत्रियां )-** पन्ना नगर में बुन्देला शासकों एवं परिवार के अनेक मकबरे बने हैं जो छत्री स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ये मकबरे चौकोर एवं अष्टकोणीय हैं। चौकोर मुकरबों के मध्य में गर्भगृह चौकार होकर उनकी दीवार मेहरावदार अलंकरणों एवं अलिन्दों से अलंकृत है। मध्य में नीचे समाधि का चबूतरा बना होता है। प्रदक्षिणा पथ चौकोर चारों ओर दरवाजे बने रहते है। दरवाजे दोनों ओर दीवार मेहरावदार द्वारा अलंकरण एवं अलिनद बने रहते है छत गज पृष्ठाकृत होती हैं। बाहर की ओर चारों कोनों पर चार मीनारें बनी होती जिसके ऊपर छत्री बनी रहती है। गर्भगृह ऊपर एक अन्य कक्ष होता है उसके ऊपर गुम्बदाकार शिखर एवं चारों कोनों पर लघु शिखर रहते हैं। ऊपरी तल पर चारों ओर जालीदार दीवार एवं चारों के ऊपर गजपृष्ठाकार कंगूरे हैं। अष्ट भुजाकार मकबरों मे गर्भ गृह अष्ट भुजाकार होता हैं। दीवारों पर मेहरावदार दरवाजे में अलिंद बना होता है। गर्भगृह की जमीन के मध्य में चौकोर चबूतरानुमा समाधि रहती है। प्रदक्षिणा पथ भी अष्टभुजाकार होता है जिसमें चारों ओर द्वार होते हैं। दीवार में मेहराबदार द्वारा अलंकरण एवं अलिन्द बने होते हैं। छत्र गजपृष्ठाकृत हैं। ऊपर जाने हेतु दायी और सौपान श्रृंखला बनी रहती है। गर्भगृह के ऊपर अष्टभुजाकार कक्ष होता है जिसकी दीवारें मेहराबदार द्वारा अलंकरण एवं अलिन्दों से युक्त रहते हैं। मध्य मे चौकोर समाधि का चबूतरा है। कक्ष के ऊपर गुम्बदकार शिखर है। मुकरबा बाहर की ओर अष्ट बनी रहती है। ऊपरी तल पर चारों और जालीदार दीवार चारों द्वारों पर गजपृष्ठाकृत कंगूरे बने हैं।

पन्ना के मुकबरे जिन्हें छत्रीयां भी कह सकते है। स्थापत्यकला की दृष्टि से ओरछा की छत्रीयों के समान है परन्तु जीर्ण शीर्ण होती जा रही है। इन छत्रियों को संरक्षित कर अनुरक्षण कराकर विकसित किया जाये तो पन्ना के पर्यटको को प्रमुख आकर्षक होगी।

**मनोरम जल प्रपात-** पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अंदर पाण्डु प्रपात पन्ना छतरपुर मार्ग पर पश्चिम में पठार की चौकी के पास है इसमें एक छोटी सी नदी का जल सैकड़ो फुट नीचे एक कुण्ड में गिरता है नदी की धार टूटने पर कुण्ड के चारों तरफ पहाड़ों व झरनों का जल दरख्तों की जड़ों में होकर कुण्ड में गिरता है मकर संक्रांत पर सैकड़ों आदमी इसमें स्नान करते हैं। कहा जाता है कि पांच पाण्डव द्वापर में बनवास के समय अज्ञातवास में यहां रहे थे। उनके चिन्ह अब तक यहां पाये जाते हैं। यह पन्ना का महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। पन्ना नगर के पास ही सेहा प्रपात के आसपास हीरा खदानें है। यहां वर्षान्त के मौसम में पर्यटन का प्रमुख आकर्षण रहता है।

**रत्न विरासत हीरा की खदानें-** पन्ना की उर्वर भूमि रत्नगर्भा हैं। यहां से आभूषणों का सम्राट हीरा निकाला जाता है। यहां हीरे की

उपस्थिति और उत्खनन लगभग दो हजार वर्षो से हो रहा है। चाणक्य की सुप्रसिद्ध पुस्तक अर्थशास्त्र में हीरों के सिकन्दरिया बन्दरगाह से निर्यात के स्पष्ट उल्लेख है। गोलकुण्डा की खानों को छोड़कर 1725 में ब्राजील में हीरा मिलने से पूर्व तक विश्व में एक मात्र पन्ना में हीरे निकलते थे। गोलकुण्डा की खानों से केवल मध्य युग में हीरे निकाले गये जबकि पन्ना में हीरे हमेशा निकाले जाते रहे। प्रसिद्ध मुगल लेखक अबुज फजल ने पन्ना में हीरे निकलने का उल्लेख किया है। कुछ समय के लिये यहां की खदानें लुप्त हो गयी थीं बुन्देला नरेश महाराजा सभा सिंह ने पुनः पन्ना में हीरे का उत्खनन प्रारम्भ किया। पन्ना में हीरा की सम्भावना 1000 वर्ग किमी के क्षेत्र में है। यह क्षेत्र पन्ना को सामिल करते हुये झिन्ना से सकरिया तथा मझगवाँ तक फैला है। यहाँ हीरा तीन तरह की परतों में पाया जाता है। प्रथम यहां काले रंग के किम्बर लाईट के रूप में , दूसरे मे यह कड़े कान्गालों मे रेट पत्थर के साथ तथा तीसरे में यह छोटे पत्थरों के रूप में पाया जाता है। पन्ना में अनुमानत 0-5 लाख कैरेट हीरे के भण्डार है। बृजपुर पहाड़ी खेरा के आसपास 1200 ×400 मीटर के दायरे में 5 से 10 फीट गहराई में प्राप्त हो जाते है। पन्ना में नगर के आसपास और बृजपुर क्षेत्र तथा सकरिया में उथली हीरा खदानों से मानवीय श्रम द्वारा हीरा खोदा जाता है। यहां सामान्य व्यक्ति भी हीरा विभाग से मामूली सी राशि देकर लीज पर हीरे की खुदाई कर सकता हैं। मझगवाँ में राष्ट्रीय खनिज विकास निगम द्वारा आधुनिक उपकरणों से हीरे का उत्खनन किया जा रहा है। यह खान पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के प्रवेश द्वार पर स्थित है।

यहां यदि डायमण्ड पार्क बना दिया जाय तो हीरे के व्यवसाय के साथ-साथ पर्यटन व्यवसाय का भी विकास संभव हो सकेगा। खनन में मुख्य रूप से तीन तरह के हीरे पाये जाते हैं। उज्वल अर्द्ध उज्वल एवं धूसर तथा पीताम हीरे सबसे कीमती होते हैं। इनका उपयोग आभूषण में होता था पर अर्द्ध उज्वल हीरे पालिशिंग कटिंग के बाद आभूषणों में उपयोग लाये जाते हैं। धूसर तथा छोटे हीरे औद्योगिक कार्य में उपयोग होते हैं। हीरा कटिंग पॉलिशिंग का कार्य एक दो जड़िया परिवार ही करते हैं। कटिंग पोलिशिंग का पूरा कार्य बम्बई सूरत तथा अहमदाबाद में होता है।[12]

**ठहरने के साधन**-पन्ना नगर में लोक निर्माण विभाग का विश्राम भवन विश्रामगृह, राष्ट्रीय खीनज विकास निगम का विश्राम गृह मोहन राज विलास, पैलिस होटल, श्री माया डीलक्स होटल, राजलक्ष्मी होटल, अभिषेक लॉज, आशीष लॉज, चिमन लॉज एवं सुरेश लॉज आदि उपलब्ध हैं। इसकें अलावा वन विभाग का विश्राम गृह म. प्र. विद्युत मंडल का विश्राम गृह है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता कि मध्य काल से लेकर वर्तमान तक पन्ना की गौरवशाली परम्परा रही है। ऐतिहासिक, धार्मिक पर्यटन स्थलों के सामान्य सर्वेक्षण से यह बात निर्विवाद रूप से सामने आती है, पर्यटन के इतने आयामों में उपलब्ध होने के उपरान्त भी पन्ना के पर्यटन एवं पुरावैभव का संरक्षण साज-सज्जा अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का प्रयास होना आवश्यक है। पन्ना को भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों से जोड़कर पर्यटकों को आकर्षिक किया जा सकता है। साथ ही पन्ना आगमन पर पर्यटकों के लिये एक पर्यटन सूचना केन्द्र प्रारम्भ करना चाहिए । पन्ना में दुर्लभ वन्य प्राणियों का उद्यान बहुमूल्य हीरे की खदानें, सुन्दर मंदिर, महल, मुकबरे (छत्रियाँ) आकर्षक सरोबर मनोरम जल प्रपात, मदार टूंगा का मनोरम पहाड़ एवं जिला पुरातत्व संग्रहालय की दुर्लभ मूर्तियाँ पन्ना को सहज ही असीम पर्यटन की सम्भावना देता है। आज नहीं तो कल निश्चित ही पन्ना पर्यटन के नक्शे पर महत्वपूर्ण नाम बनकर उभरेगा आवश्कता है बस सुबिधाओं और थोड़े से प्रयास की।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**


1. सिन्हा ए. एम. मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पन्ना भोपाल 1974 पृष्ठ 375-75
2. त्रिपाठी कृष्ण कुमार, बुन्देलखण्ड के कतिपय पर्यटनस्थल (डा. सीताराम दुबे द्वारा सम्पादित) पर्यटकों का लक्ष्य मध्यप्रदेश स्मारिका उज्जैन 1998 पृष्ठ 43
3. सिंह शंकर, अतीत का गौरव पन्ना 1969-70 पृष्ठ 35-36
4. शास्त्री भूधर प्रसाद, श्री पन्ना मंदिर दर्शिका, पन्ना 1997 पृष्ठ 56
5. सिन्हा ए. एम., मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पन्ना, पूर्वोक्त पृष्ठ 375-76
6. त्रिवेदी एस.डी., बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, झाँसी 1984 पृष्ठ 67
7. सिन्हा ए.एम., मध्यप्रदेश डिस्ट्रिक्ट गजेटियर पन्ना पूर्वोक्त पृष्ठ 376
8. सिंह शंकर, अतीत का गौरव पन्ना, 1969-70 पृष्ठ 38-58
9. पाठक नरेश कुमार, जिला संग्रहालय पन्ना की जैन प्रतिमाएँ प्रगति पथ पर मध्यप्रदेश वर्ष 12 अंक 1-3 रायपुर मई जून जुलाई अगस्त 1999 पृष्ठ 14-15
10. पाठक नरेश कुमार, मध्यप्रदेश का जैन शिल्प इन्दौर, 2001 पृष्ठ 254-255
11. माथुर प्राकशेन्द्र महोबिया प्रेमचन्द्र पन्ना के पुरावैभव की झलक, 2001 पृष्ठ 31-32
12. माथुर प्रकाशेन्द्र महोबिया, प्रेमचन्द्र विरासत पन्ना के पुरावैभव की झलक, पूर्वोक्त पृष्ठ 29-30



-24 रामानुज नगर, रामवाटिका के पीछे,
सिटी सेन्टर, ग्वालियर म. प्र.
मो. नं.- 9826341257


## चेतावनी

**-डॉ. डी.के. सोनी**

*काटौ काटौ न बिरछा की डार, पिया जू मोरी सुन लइयो।*
*बिनती सुनियों हमाई सरकार,पिया जू मोरी सुन लइयो।*
*ये बिरछा प्रानन प्यारे,जग में लगवें सबसें न्यारें।*
*सुख इनसें मिलत हजार, जे बिरछा सारे कट जैहैं।*
*सब प्राणी जग के काँ रैहैं, तनक मन सें करियों बिचार*
*ये बिरछा हैं पालन हारें, सबके जीवन प्राण अधार।*
*सूनों सूनों लगें जों संसार, पिया जू मोरी सुन लइयो*


बड़ामलहरा, जिला-छतरपुर

# कमजोर हाँतन कौ बल

-सुधा रावत 'क्षमा'

पात्र परिचय

1. लाली - एक वकील जो शहर से वकालत करके आई है
2. सरला - गाँव की सरपंच
3. चंपा - गाँव की बहू
4. चंदू - चंपा को घरबारौ
5. गोपाल - उस्ताद
6. चंदन - जमूरा
7. बऊ - लाली की आजी
8. रज्जो, अम्बा, विनीता, सुनीता, संतोषी, कमला, गेंदा बाई और मनको काकी [जे कछू गाँव की महिलायें]
9. कछु गाँव के पुरुष छुटपुट भूमिका में

**पृष्ठ भूमि** - ठेट बुन्देली परिवेश ,ग्रामीण वातावरण

**वेशभूषा** - गाँव और शहर की मिली जुली

- मनकों काकी गेंदा बाई, संतोषी, कमला और चंपा को पहरबौ ओढ़बौं ठेट बुन्देलखण्डी, पारम्परिक गाने-गुरिया
- लाली, अम्बा विनीता, नीता - सलवार ,कुर्ता, दुपट्टा और साड़ी
- सरला - उल्टे पल्ला की साड़ी मूड़ ढँक के
- गाँव के आदमी - पंचा धोती - स्वाफा, गमछा आदि
- गोपाल और चंदन - पेन्ट-शर्ट जूता मोजा (घड़ी चश्मा ) बाद में उस्ताद और जमूरे बारी ड्रैस
- चंदू - पजामा, कुर्ता, गमछा,

**वाद्य यन्त्र** - अलगोजा ,ढोलक, नगड़िया, रमतूला के सँगे कछू सहायक लोक वाद्य यन्त्र

**नाटक प्रारम्भ - ( लोकधुन के साथ )**

पर्दा उठत है धीरे धीरे । स्टेज पै एक मौड़ी दिखाई देत है जो कहूं जाबे के लाने तइयार हो रही, साड़ी के ऊपर व कारो कोट पहन कें घड़ी बांधत है। फिर सफेद टाई लगा कें गरे में बाँधत भये शीशा मे देख कें मुस्कुराउत भये कत हैं हाँ अब तइयार है लाली वकील' तवई एक वृद्ध महिला कौ प्रवेश होत है। वा हँस के इशारे से ऊ मौड़ी सें मानो कहत है जम रईं हो । दोनो हँसती हैं।

*आजी* - बिटिया तुमसें मिलबे खों दो लरका आये हैं। अपनों नाम गोपाल और चंदन बता रहे हैं।

*लाली* - का? चंदन और गोपाल आये हैं? आजी तुम उने पौर में बिठारौ हम अब्बई आये।

आजी चली जाती है [ पर्दा गिर जात है]

दोबारा पर्दा उठत है।

*दृश्य परिवर्तन* - सामने दो लरका बैठे हैं नास्ता की पलेट उनके सामने मेज पे रक्खी है। चाय के कप उनके हाँथन में हैं। आजी सामने बैठी हैं। तबई हात में पर्स लये लाली प्रवेश करत है। लाली खों देखतई गोपाल और चंदन चाय के कप हांत में लये उठ ठांड़े भये।

*गोपाल व चंदन*- नमस्ते लाली दीदी।

*लाली* - नमस्ते - नमस्ते। तुम लोग यहाँ कहाँ रास्ता भूल पड़े। बैठौ - बैठौ नास्ता करो।

*गोपाल* - आप कहीं जा रही थीं क्या?

*लाली* - हाँ थोड़ा पंचायत तक जाना है। आज दो बजे महिलाओं की बैठक है। चाहो तो तुम लोग भी चलो।

*चंदन* - वाह नेकी और पूंछ - पूंछ । हमें भी तो पंचायत ही जाना है। पर सोचा पहले आप से मिलते चलें।

*लाली* - पंचायत में का काम है?

*गोपाल* - सरपंच जी से मिलना है। सुना है बहुत अच्छी है।

*लाली* - अच्छी नहीं वेमिशाल। गाँव के विकास के लिये हरदम तैयार रहती हैं मैं तो उनकी मुरीद हो गई हूँ।

*लाली* - वैसे तुम लोगों को क्या काम है?

*गोपाल* - दीदी आप तो जानती ही हैं हमारा काम तो नाटक और गीत - संगीत का है।

*चंदन* - हर तरह की योजनाओं व कानून की जानकारी गाँव-गाँव के कौने के आखिरी आदमी तक पहुँचाने का जिम्मा हमें सौंपा गया है।

*गोपाल* - हाँ दीदी यहाँ आस-पास के पाँच गाँवों के प्रचार- प्रसार का काम हम लोगों को ही करना है। इसके लिये पंचायत की अनुमति लेना है।

*चंदन* - कल हम लोगों ने आपको सरपंच जी के साथ देखा था सोचा हमारा काम बन गया।

*लाली* - ये तो बहुत अच्छी बात है। पर तुम लोग ठहरे कहाँ हो

*चंदन* - हँस कर बोला - विन्नी के घर वह हमारी बुआ की लड़की है।

*लाली* - अच्छा विन्नी तो हमारी बहुत अच्छी सहेली है। वो देखो वह है पंचायत भवन। बातों -बातों में पता ही नहीं चला और हम पहुँच भी गये। लेकिन ये क्या पंचायत में इतनी भीड़ भाड़ कैसी है? क्या हो रहा है? (तभी बहुत सारी महिलाओं की आवाज सुनाई देती है।)

*गोपाल* - लगता है यहाँ किसी बात पर झगड़ा हो रहा है।

*लाली* - चलो चलकर देखते है। लाली पास जाकर देखती है चंपा फूट-फूट कें रो रई ती।

*चंपा* - जे देखो इतै देखो। किते बड़े -बड़े नील परे धरे हैं। हे भगवान ई सें अच्छो है कै हम मर जाँये [ रोउन लगत है]

*रज्जो* - ऐसौ काय खों कैतीं । तुमाये राई -राई भरे मोड़ी मौड़ा की के गरें लग हैं। मौंग जाओ रोओ नई।

*अम्बा* - चुप हो जाओ चंपा भौजी नई रोओ।

*मनको काकी* - मोय मिलन दो, ऊ चंदुआ की ऐसी खबर लैहों कै भये की याद आ है। दुलेंन - तुम मोंग जाओ।

*सरला* - चंपा जिज्जी अब चुप हो जाओ [ बीच - बीच में चंपा खूबई रोई है] आप आराम से बैठौ - चुप - चुप हो जाओ कोऊ पानी तौ ले आओ।

(चंपा बैठ कें खूबई फूट - फूट कें हिलकन लगी)

*सरला* - अपुन सबई जनी किरपा करकें अपनी - अपनी जंगा पै बैठ जायें। हम देखत हैं। सब ठीक हो जै है। सबरी माहिलायें बैठ गईं और लाली भी तब तक सरला के पास पहुंच गई। ऊने सरला के कंधा पै हाँत धर कें पूछों-

लाली- का हो गओ सरला भाभी ? जौ हंगामा काय कौ आ मचो अरे चंपा भौजी तुम काय रो रईं।

सरला - अच्छो भओ लाली दीदी आप सई टैम पै आ गईं। जौ तमासो एक दिनां को किस्सा नइयाँ रोज-रोज कौ रोबौ है। चंपा जिज्जी खों चंदू दादा ने संटियन से सूंट के धरो है।

लाली- चंदू भैया ने मारो इत्त बेरहमी सें द अकेलें काय?

सरला- अरे उने चंपा जिज्जी कौ कऊं आबौ-जाबौ अच्छो नईं लगत। येई बात पै खिच्चा कें वे जब चाये इनकी धुनाई कर देत हैं। लेकिन आज तौ हद्दइ हो गई। देखौ तौ ऐसौ मारो कै सबरे शरीर पै नील पर गये।

लाली- आखिर ऐसी का बात हो गई जो चंदू भैया इत्ते गुस्सया गये?

सरला - बात का होने लाली दीदी बेई रोजमर्रा की छोटी-छोटी बातें। कभऊं दार में नौन जादा हो गओ, कभऊं साग-भाजी में मिर्ची कम हो गई। आज तनक दूध उफन गओ । बस इत्तौ बहानो तौ काफी हतौ इनकी हड्डी चटकाबे के लाने।

लाली- सई कै रईं भाभी आप, दूध उफनबो तौ सांसऊँ बहानो हतो। असल तौ उने चंपा भौजी खों आज की बैठक में नई आन दैने तो तबई उनने बेदर्दी सें इने मारो।

सरला- हो सकत जेई बात होय । काय सें चंदू दादा नईं चाहत कै भौजी कहूं बाहर जायें।

लाली- [गुस्सा में बोली] घर में घुसा कें इनको अचार डालने का? जे औरें अगर घर सें बाहर नईं निकर हैं तौ विकास की धारा सें कैसें जुड़ हैं?

सरला- जौई तौ नईं चाहत ई गाँव के मर्द कै महिलायें घर सें बाहर निकरें। कछु जानें -समझें। जा अकेली चंपा भौजी की नईं भौत से घरन की कहानी है।

लाली- का बात कर रईं सरला भाभी और भी लोग ऐसी हरकतें करत हैं अपने गाँव में?

सरला- आप तौ कछूं दिनन खों आउत तीं फिर चली जात तीं अब कछू दिन रुको सो सब बातें पतो पर हैं। कमला बैन कौ आदमी नम्बर वन कौ दारू खोर है। मुन्नी को रोना है कै पति जुआ खेलत है। संतोषी कौ रौवो जौ है कै लल्लू लाला नल्ले -नाकारा हैं। दिन भर घर में बेकार परे रहत हैं। पै पइसा सबखों चानें।

लाली- जब काम धंधा नई कर हैं तौ पइसा कहाँ से आ हैं।

सरला - वाह, वे तौ लाट साब हैं। विचारीं औरतें महनत मजूरी करकें कछु कमा कें ल्यातीं हैं तब घर चलत है और जे औरें उनकी महनत की कमाई खों अपने शौक -फौक पै उड़ा देत है।

लाली- जे औरें काय देतीं है उने पइसा टका साफ मना करें।

सरला - अरे दीदी जब नईं देतीं न सो जानवरन की तरां पीटत हैं निर्दयी।

लाली- आप कुछ भी कहौ पै इे में गलती इन लोगन कीअई है। काय जे उनके जुलम चुपचाप सहतीं हैं?

सरला - आखिर जे करें भी तौ का करें। अपने इतै पुरुष प्रधान समाज है। सब कछू करबे के वाद भी इनकी औकात कछू नइयां। इनकी कोउ सुनबे वारो नईंयाँ और फिर घर कीं बातें की सें कहें और का कहें।

लाली- इतै हम आप सें सहमत नइयाँ सरला भाभी आजकल जे मामले निजि नईं रह गये। सरकार अब ऐसे मामलों में दखल दैन लगी है। कैऊ कड़े कानून बन गये हैं।

सरला- लेकिन घरेलू बातन में सरकार का कर है?

लाली- करहै नईं, कर चुकी है घरेलू हिंसा अधिनियम बनाकें।

सरला- (आश्चर्य) सें - घरेलू हिंसा अधिनियम जौ का है?

लाली- आप खौ पतौ नइयां ई बारे में?

सरला- एक बार सरपंचों के सम्मेलन में ई बारे में कछू बातें बताई गई तो पै पूरी जानकारी नइयां कै जौ का है।

लाली- जौ एक ऐसौ अधिनियम है जौ में घरेलू हिंसा माने मारपीट खों एक अपराध मानो गओ है। और हिंसा करबे बारन के लाने सजा कौ प्राब्धान भी करो गओं हैं।

सरला- तनक विस्तार से बताओं दीदी घरेलू हिंसा कानून कें बारें में पूरी जानकारी लये बिना गाँव की महिलाओं कौ विकास नई हौ सकत ।

लाली- सबई बहनें ध्यान सें सुनो। सब लोगन खों जौ जानवौ जरूरी है कै घरेलू हिंसा अधिनियम का है?

सरला- हमोरन खौं तौ जौ भी नईं पतौ कै घरेलू हिंसा का होत है। तौ सबसें पैलें तौ जोई बताओ कै घरेलू हिंसा का है?

लाली- ऐसी कोई भी हरकत या व्योहार जो घर-खानदान के आदमियों द्वारा घर की महिला सदस्य जैसे-बेटी, बहन, पत्नि, माँ, भाभी, भतीजी, भान्जी, मौसी, चाची, या दूसरी कौनऊ भी औरत खों मारै, पीटै, दर्द दै या चोट पहुँचाये या ऊ के स्वास्थ या जिन्दगी खों कौनऊं हानि पहुँचाये कै खतरा पैदा करे ऊ खों आत्महत्या के लाने उकसाय कै फिर महिला के मान सम्मान पै चोट करै जे सब बातें घरेलू हिंसा कौ हिस्सा हैं।

सरला- काय दीदी - ई में दहेज प्रताड़ना भी शामिल है?

लाली- भाभी ऊसें सें तौ दहेज प्रताड़ना के लाने एक अलग सें कानून बनो है। लेकिन घरेलू हिंसा में सोई दहेज प्रताड़ना खों शामिल करो गओ है।

गेंदा बाई -लाली बिटिया तुम तौ बड़ी अच्छी - अच्छी बातें बता रई जे तो हमोरन खों पतौई न हतीं। अब एक बात और बताओ कै अगर कोऊ की छोड़-छुट्टी हो गई होय और ऊ कौ आदमी गुजारा भत्ता न दै रओ होय तौ ई कानून सें मिल सकत है?

लाली- बिल्कुल मिल सकत है। काकी आपने बड़े काम की बात पूंछी। गुजारा भत्ता के अलावा सम्पत्ती में हिस्सा न देवौ स्त्री धन माने शादी व्याओ में जो गाने गुरिया महिलाओं को मिलत है। वे ऊ की निजि सम्पत्ती होत है। उने स्त्री धन कहत हैं। वो छुड़ा लेवो, भरण पोषण न दैवो और घरेलू वस्तुओं और सुवधाओं सें वंचित राख्वो जे सब बातें घरेलू हिंसा में आउती हैं।

विनीता - ई कौ मतलब तौ जौ भओ लाली कै जौ कानून महिलाओं

खों सम्मान के साथ जीवे कौ अधिकार देत है।

*लाली-* बिल्कुल सई कई तुमने विनिता। ई कानून में एक और बड़े महत्व की बात है वा जा कै अपने देश को जौ पैलौ ऐसौ कानून है जो महिला खों मायके और ससरार दोनऊ जगा रहबे कौ हक्क देत है।

*सुनीता-* जा भौत बड़ी बात है, ई से तौ समझो महिलायें पूरी तरां सुरक्षित हो जै है।

*लाली-* बिल्कुल ई कानून के दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं। एक तौ समाज से हिंसा खतम हो जै है। दूसरे जौ कानून महिलाओं के सुरक्षा कवज कौ काम कर है।

*अम्बा-* हमें तो एक बात समझ में नईं आउत कै महिलायें ठुकती पिटती रहती हैं अकेले अपनें घर की बात कोऊ खों बताती नइयां। फिर उनकी मदद को और कैसें करै।

*लाली-* जा तो अम्बा बिल्कुल सई कै रई। पै ई नरक भरे जीवन सें छुटकारो पावे के लाने अपन खों खुदई पहल करने पर है आगूं आ कें विरोध करने पर है। काय सें हिंसा कौ विरोध न करवो भी एक अपराध है।

*विनीता-* काय लाली अगर रिस्तेदार और अड़ोसी - पड़ोसी भी थोड़े चौकन्ने रयें तौ भी ऐसी मारपीट रोकी जा सकत है।

*लाली-* काय नई, हम सब कौ जौ फर्ज बनत है कै अपने आस-पास कौनऊं बहन - बेटी पै अत्याचार होत देखें तौ चुप न रहें। पैलें तो ऊ आदमी खों मिल-जुर कें समझायें, अगर हटकी न माने तौ फिर सिकायत करें।

*सरला-* दीदी सिकायत कीसें और कहाँ करें।

*लाली-* ऊसें तौ सिकायत पुलिस थानें या परिवार - परामर्श केन्द्र में जा कें करी जा सकत है। लेकिन सीधे एस. पी. साब या मजिस्ट्रेट साब सें मिलकें भी अपनी परेशानी बताई जा सकत है। ई के अलावा शासन द्वारा संरक्षण अधिकारी की नियुक्ति भी करी गई है।

*गेंदा बाई-* संरक्षण अधिकारी का कर है और कहाँ मिल है?

*लाली-* हर जिला में एक संरक्षण अधिकारी रै है जो घरेलू हिंसा सें पीड़ित महिला की हर तरां सें मदद कर है। ऊ खों पूरी जानकारी दै है कै ऊकें का का कानून हैं का हक्क और व अपने हक्क कैसें लै सकत है। आवेदन लिखवावे सें लैकें मजिस्ट्रेट के पास लै जाबो, न्यायालय सें हिंसा रोकवे और महिला और ऊ के मौड़ा मोड़ियन की सुरक्षा कौ आदेश ल्याबे कौ काम भी संरक्षण अधिकारी कौ होत है।

*सरला-* लेकिन दीदी सवाल जौ उठत है कै पैल तौ इत्ती हिम्मत गाँव की महिलायें जुटा नईं सकतीं और अगर हिम्मत जुटा के कोऊ ठांड़ी भी हो जाये तौ ऊ कौ घर तौ छूटई जै है। और केस लड़बे के लाने वा पइसा-डब्बल कहाँ सें ल्याहै।

*सुनीता-* सरला भावी सई कै रईं। वा तौ कहूं की न रै जै है। बिना पइसा - टका के तौ मुरदा नई हलत फिर इत्ते बड़े काम कैसे हो सकत हैं। कौनऊ हँसी खेल है का।

*लाली-* हँसी खेल तौ नइयाँ पै ई कौ भी निदान है।

*सुनीता-* वौ का?

*लाली-* संरक्षण अधिकारी पीड़ित महिला खों विधिक सहायता अधिनियम के द्वारा मिलबे वारी आर्थिक सहायता मतलब रूपइया पइसा की मदद भी करवा है। और भारतीय दण्ड संहिता की धारा - 498 (चार सौ अन्ठानवै) अ के अन्तर्गत आवे बारे दण्ड को केस भी दायर करवा है।

*मनको काकी-* वौ सब तौ ठीक है। पै जब घरवारो घर सें काड़ दैहै सो बेघर-दोर के जनी मान्स मौड़ा - मौड़ी लै कें कितै भटकत फिरे?

*लाली-* ऐसौ कछू नइयाँ काकी। पैली बात तो महिला जी घर में रै रई है ऊ खों उतै से कोऊ नईं भगा सकत। अगर बात जादा बढ़ जाये या महिला खों कौनऊ खतरा लगे और मजिस्ट्रेट चाहै तौ दोषी खों घर सें बाहर निकार सकत है। महिला खों नईं।

*सरला-* अगर महिला घर सें निकर गई होय या निकारी जा चुकी होय तौ?

*लाली-* ऐसे में मजिस्ट्रेट द्वारा ऊ के खाबे-पीबे और रहबे को तुरन्त इन्तजाम करो जात है। ऊ कौं और ऊ के मौड़ा मोड़ी को जायजाद में हींसा भी बनो रहत है।

*विनीता-* हमने सुनो है कै महिला के दुखी बीमार होवे पै ऊ कौ मुफत में इलाज करवाओ जात है।

*लाली-* बिल्कुल, हर तरां की मदद मिलत है।

*संतोषी-* काय लाली संरक्षण अधिकारी तौ आदमियई होत हुईये गैर मर्द के संगे घूमबे-फिरबे में मान्स केऊ तरां की बातें न कर है। महिला की मुश्किलें और बढ़ जै हैं सो अलग।

*लाली-* ई बात कौ ध्यान भी राखो गओ है। संरक्षण अधिकारी के रूप में महिलाओं की भर्ती भी करी जा रई है।

*सरला-* जा तो बड़ी अच्छी पहल है। भौत सी बातें ऐसी होती हैं कै हमाई बहने आदमियों की जांगा महिलाओं सें जादां खुल के बता सकती हैं।

*लाली-* भाभी जब सही तथ्य सामने आउत है तबई दोषी खो ऊ के करे कौ दण्ड भी उचित मिल पाउत है।

*अम्बा-* लाली आजकाल जा बड़ी मुसीबत है कै कोऊ भी अपनो काम ढंग सें नईं करत। अगर संरक्षण अधिकारी भी सई तरीका सें काम नईं करें तौ का हुइये। बा महिला तो कहूं की न रै गई, न घर की न घाट की।

*लाली-* (हँसकें-) का बात है। हमाये गाँव की बहने तौ बड़ी जागरूक हैं तान - तान कें सवाल पूछ रही हैं (सबई जनी हंसती है)। लाली आगें कहत है ऊ से भौत काम ऐसौ होत है कै संरक्षण अधिकारी मजिस्ट्रेट की बातन की अनदेखी करै। पै अगर वौ ऐसौ करत है तौ ऊ खों नईं वक्सो जात, ऊ खों भी दण्ड दओ जात है।

*कमला-* काय लाली ई कानून में दोषी आदमी खों अपने बचाव में कछू कैबे कौ मौका नई मिलत। अगर वौ निर्दोष होय तौ।

*मनको काकी-* (चिढ़ के) - लेओ जे देखो मारबे बारन की हिमायती भी बैठी है इतै (सब जने जोर - जोर सें हंसन लगें)

*सरला-* कमला बिन्नू अपनी जांगा ठीक है, हंसी में टारवें बारी बात

नइयाँ। आज कल बखत बदल रओ है। कछू-कछू महिलायें ऐसे कानूनन कौ दुरउपयोग भी करती हैं।

*कमला* - ओई तौ खुद गुन करकें मान्सन पै अलच्छ लगाउती हैं वाद में पतो परो कें पति निर्दोस निकरो। ऊ की जनी ने झूठ दोष लगाये और बूड़े सास-ससुर तक खों जेल करा दई।

*लाली* - सांसी बात उठाई कमला ने, कानून बिल्कुल आँदरो नईयाँ। दोषी व्यक्ति खों भी बचाव कौ पूरौ मौका दओ जात है।

*अम्बा* - वौ कैसें।

*लाली* - साक्ष्यों यानी सबूतों के आधार पै जो निर्णय मजिस्ट्रेट देत है ऊ के विरुद्ध तीन दिन में दोसी व्यक्ति सत्र न्यायाधीश के पास अपील कर सकत है।

*सरला* - जा अच्छी बात है। ई में कम सें कम निर्दोस तो नई मारे जै हैं। लाली - बिल्कुल नई सरला भाभी, सत्य - असत्य की पूरी जांच के बाद सबसे पैलें तौ मजिस्ट्रेट सुला करवावे की पूरी कोसिस करत है। मारपीट न करबे कौ आदेश देत है। मगर जब वो आदमी इन सब

बातन की अनदेखी कर के बेर - 2 बोई गलती करत है तवई ऊ खों सजा या दण्ड दओ जात है।

*विनीता* - ई में हिंसा करवै बारे खों का सजा और कित्तो जुर्वाना लगत है।

*लाली* - घरेलू हिंसा में एक साल की सजा या 20.000 (बीस हजार)रुपइया कौ जुर्वाना देने परत है। कभऊँ-कभऊँ दण्ड और जुर्माना दौनऊ भरने परत हैं।

*सरला* - हमने सुनो है कै ऐसे मामलन में जमानत भी नईं मिलत।

*लाली* - आपने बिल्कुल सइयई सुनो है। जौ गैर जमानती केस होत है। ना ई में जादा गवाई - सफाई की जरूरत होत है। महिलाओं के सरीर पै करे गये अत्याचार और ऊ के ब्यान के आधार पेई सजा सुनाई जात है।

*मनको काकी* - (हँस के) जौ बढ़िया है। जी ने अब हमोरन के संगै मार - पीट करी सो सीदो जेल में सड़ है। उतई चकिया भाँहै। सारन की जमानतत तक न हुइये।

(सबई जनें खूब हँसत है तबई चंपा अंसुआ पोंछत भये कहत है)-

*चंपा* - हमोरें इतै अपने आँगे बैठ कें इत्ती बातें कर है कर रये हैं। पै उतै उन मान्सन खों का पतौ कै जौ हिंसा है य उनकौ शौक। कै उने मारपीट करवे पै का सजा मिल है। वे तौ इतै सुनन नई आ रये।

*अम्बा* - जा तौ सांसऊँ सोचबे की बात है। लाली कछू ऐसौ जतन करौ कै जे सबरी बातें गाँव के मानसन की जानकारी में आ जाबें। उनै जौ पतौ परै कै मारपीट करवे कौ का नतीजा हो सकत है।

*लाली* - स्यावास चंपा भौजी आपने बात तो पते की उठाई। अम्बा तुमाओं कहबो भी बिल्कुल सई है। काय न अपन नुक्कड़ नाटक दिखावे के बहाने सब गाँव बारन खो एक जंगा जमा करें। और फिर नाटक के बहानें उनें घरेलू हिंसा के वारे में पूरी जानकारी दै दें।

*सरला* - सुझाव तौ भौतई बढ़िया है। मगर नाटक कर है को।

*गोपाल व चंदन* - (आंगे आके कहत है) हम कर हैं नाटक।

*लाली* - सरला भाभी जे गोपाल और चंदन हैं। इनकी एक टोली है। जे लोग गाँव-गाँव में जाकें नुक्कड नाटकों द्वारा विभिन्न योजनाओं और विधिक साक्षरता जैसी जानकारी पौंचा कें लोगन खों सचेत और जागरुक करत हैं।

*गोपाल* - इतै भी हम येई संदर्भ में आपसे मिलबे आये ते।

*चंदन* - पै ई हंगामा में मिलवोई नई हो पाओ।

*सरला* - लेओ जौ भी अच्छो संजोग है। बड़े सई टैम पै आप औरें पधारे हौ। अच्छौ है। नाटक के जरिये बढ़िया रोचक ढंग सें लोगन तक घरेलू हिंसा अधिनियम की जानकारी पहुँच जै है।

*लाली* - तौ पक्की रई। आप तौ बस लोगन खों एक जंगा पै इठक्कौ करबे की डुन्डी पिटवाओ। बाकी सब हमोरें देख लै हैं। चलौ...

(पर्दा गिर जात है और पर्दा के पीछे से अलगोजा पै लोक धुन बजत है)

**( दृश्य परिवर्तन )**

फिर-धीरे -धीरे पर्दा उठत है। दो गाँव बारे एक चौंगा लयें, दूसरो नगड़िया और पूरे गाँव में (मंच पै) डुन्डी पीटत है-सुनो -सुनो-सुनो (नगड़िया बजत है)-

1. सबरे गाँव बारन खों सूचित करो जात है कै आज शाम के 4 बजे सें रामलीला मैदान में एक नाटक खेलो जा रहो है।
2. सबई जाने टेम पै पधारबे को कष्ट करें (फिर नगड़िया बजती है) [पर्दा बंद होत है फिर लोक गीत की धुन बजत है।]

**दृश्य परिवर्तन**-

फिर धीरे-धीरे पर्दा खुलत है (सरला खड़ी हंस रही है तबई लाली आउत है)-

*लाली* - सरला भाभी भीड़ तौ अच्छी जुट गई। सबई आ गये।

*सरला* - हओ दीदी नाटक - नोटंकी कौ शौक तौ पूरे गाँव भरे खों है (फुसफुसा कें) देखो वे देखो चंदू दादा भी आ गये हैं।

*लाली* - अरे वाह हम चाउत ते कै दादा जरूर आयें। चंपा भौजी आईं कै नईं?

*सरला* - हओ वे का बैठीं सामनें (सरला हँस के बोली)

*लाली* - अब आ है मजा तौ फिर शुरू करें नुक्कउड़ नाटक। गोपाल, चंदन भई आ जाओ, कूंद परौ मैदान में [दृश्य परिवर्तन] -लुंगी - कुर्ता पै कारी जाकिट, लाल टोपी पहर के हांत में डन्डा लयें गोपाल बिल्कुल उस्ताद लग रओ तो। और धारीदार कुर्ता - पजामा के ऊपर पीरी फुंदना बारी टोपी और सफेद रंग मौ पै पोत कै कारो चश्मा लगा चंदन बिल्कुल जमूरे कै सौ जंच रओ तौ। दोनऊँ जने कूंदत - फांदत मैदान में आ के सब खों हात जोर कें राम राम करन लगे। सबरे मौड़ा-मौड़ी उने देख कें जोर - जोर सें हंस रये।

*एक बच्चा* - अरे जौ देखौ जौ को आ गओ?

*दूसरा बच्चा* - अरे जो तौ जोकर है। छोटे बड़े सब हँसत भये ताली बजाउन लगे- हा ऽऽऽऽ

**उस्ताद** - सुनो-सुनो इक बात सुनो।
जनें-जनीं सब साथ सुनो।।
**जमूरा** - मैं हों जमूंरा जे उह्यताद।
बिसर न जइयो रखियो याद।।
**उस्ताद** - लै कें आये हैं हम नाटक।
खोलौ अपने मन के फाटक।।
**जमूरा** - नाटक में है बात निराली।
बच्चौ हँस के ठोकौ ताली।।(मौड़ा -मौड़ी ताली बजाउत हैं)
**उस्ताद** - बोल जमूड़े गाँव गओ तो का देखो?
सब खों आज बता दै वौ लेखो-जोखो।।
**जमूरा** - सुनो सुनो उस्ताद सुनो।
एक फिकर की बात सुनो।।
**उस्ताद** - बोल जमूरे का है बात।
तोरो मुखड़ा काय उदास।।
**जमूरा** - (माथा ठोक कें,) - का बताऊं मैं अपनों हाल।
दुनिया के दुख सें बेहाल।।
**उस्ताद** - तै दुनियाँ की फिकरें छोड।
औ खुसियन सें नाता जोड़।।
**जमूरा** - दुनियाँ खों मैं कैसें भूलौं।
सुख-दुख के संग झुला झूलौं।।
**उस्ताद** - तौ फिर बता बात है का?
कोउ बड़ौ गम साथ है का ?
**जमूरा** -ऐसई समझौ तुम उह्यताद।
मोरो परोसी है बरबाद।।
**उस्ताद** - (हंस के कहत है ),- तोय परोसी सें का लैने।
ऊ कौ बीदौ ओई खों सैने।।
**जमूरा** - कैसीं बातें कर रये हौ।
परोपकार सें डर रये हौ।।
अगर परौसी हो खुसहाल।
अपनों भी अच्छौ रै हाल।।
होय परौसी दीन या हीन।
समझौ हम हुइयें गमगीन।।
**उस्ताद** - बात तौ ठीक कही तुमने।
ऐसौ न सोचो हमने।।
चल अब बात बता दे पूरी।
आखिर का ऊ की मजबूरी।।
**जमूरा** - एक नईं दस हैं मजबूरीं।
खुसियन सें ऊ की है दूरीं।।
दारू खोर करै मजदूरी।
घर में हॉकी टीम है पूरी।।
घर बारी रै वै बीमार।
ऊपर सें कर्जा कौ भार।।
**उस्ताद** - घर कैसे चल रओ है उनकौ?
कैसें होय सबई के मन कौ।।
**जमूरा** - घर की जनी कमा कें ल्या रई।
ओई सें घर कौ खर्च चला रई।।
**उस्ताद** - ई में चिन्ता की का बात।
घरबारी जब दै रई साथ।।
**जमूरा** - अरे, सुनो, आगे के हाल।
उरझ गओ डोरन कौ जाल।।
**उस्ताद** - चल तोरे डोरा सुरझादऊं।
समाधन कौ छोर बता दऊं।।
अच्छा अब तैं आँगे बोल।
अपने मन की गाँठें खोल।।
**जमूरा** - मोरो परौसी उगलत आग।
कौनऊं लग नई रई है लाग।।
**उस्ताद** - एक बाल्टी पानी डाल।
बुझ कें राख होय ततकाल।।
**जमूरा** - का बतायें वो भू पै भार।
अन्न कौ बैरी है मक्कार।।
**उस्ताद** - ई कौ मतलब वो गुस्सैल।
मन में भौत भरै हैं मैल।।
**जमूरा** - पत्नि खों रुई सी धुनकत है।
बच्चन की न एक सुनत है।।
का कारतूत बतावैं तुमखों।
माँ भर गारीं देत है हमखों।।
**उस्ताद** - (गुस्सा होकर) -ऊ की बात सुनत तुम काय?
ढंग सें उयै धुनत नईं काय?
**जमूरा** - मोय तरस बच्चन पै आउत।
भौजी को रोबौ तड़पाउत।।
और कछु तौ कर नई पाउत।
हरदम बस ऊ खों समझाउत।।
**उस्ताद** - अरे जमूरे दुखी न होओ।
डोरा में बस गुरिया पोओ।।
ध्यान लगा कें सुन लो बात।
समाधान है मोरे पास।।
**जमूरा** - समाधान का मिलो तुमें।
जल्दी सें बतलाव हमें।।
**उस्ताद** - (पर पैलें)-जा तैं ऊ खों इतै लै आ।
मैं देखों ऊ कौ गुस्सा।।
अच्छे सें समझा दै हौ।
सच्ची राह दिखा दै हों।।
**जमूरा** - और अगर बौ नई मानों।
जादां रार - गुस्सा ठानो।।
**उस्ताद** - (जमीन में डण्डा ठोंक कर कहता है)- तौ थाने भिजवा दै हों।
पक्की जैल करा दै हों।।
जमूरा दोउ कानन पै हांथ धर कें कहत है-
**जमूरा** - नईं नईं उस्ताद ऐसौ गजब ने करियो। मै अबबई ऊ खों ढूंढ़ कें ल्याउत हों। [और फिर भीड़ में इतै-उतै देख कें चंदू खों पकर कें चिल्लाउत है]-अरे - अरे उस्ताद मिल गओ, मिल गओ। जौ तौ इतईं ठांड़ो।
**चंदू** - (नाराज होकें) अरे जौ का कर रये। छोड़ौ हमाओ हांथ।

लाली- ऊँ, हूँ-चंदू भैया जे औरें तौ नाटक आ कर रये। तनक देर के लाने आ जाओ। ऊ में का बुराई है।
चंदू आ कें ठांड़ो हो जात और ध्यान सें उनकी बातें सुनत है
उस्ताद ऊ कौ हांत पकर कैं कत है। अच्छा तौ तुम हो।

उस्ताद- बात रखो जा हरदम याद।
घरेलू हिंसा है अपराध।

जमूरा- (बीच में कूंद कर) का सच्ची कै रये हौ उद्यताद।
घरेलू हिंसा है अपराध।।

उस्ताद- हाँ बिल्कुल सई कै रये, नारी घर के बीच धुरी है।
ऊ सें हिंसा भौत बुरी है।।

जमूरा- हिंसा का है, जौ बतलाओ।
ई कौ सच्चौ अर्थ बताओ।

उस्ताद- अत्याचार, जुलम अन्याय।
घरेलू हिंसा के परयाय।।
महिला के सम्मान पै चोट।
या हो पुरुष-नियत में खोट।।
सारीरिक मानसिक तकलीफ।
दैवौ हँसी-मजाक की ओट।।
जे भी हिंसा के हैं रूप।
गारी, धमकी, लूट-खसोट।।

जमूरा- मतलब कोउ तरां को भी संताप।
नारी खों दैवो है पाप।।

उस्ताद- हाँ घरेलू हिंसा है अपमान।
ई में सजा कौ है प्राब्धान।।

जमूरा- अरे बाप रे। ई कौ मतलब घरेलू हिंसा पै कौनऊँ कानून बनो है का।

उस्ताद- हाँ जमूरे - घरेलू हिंसा रोकबे के लाने एक ऐसै अधिनियम नो है जीमें हिंसा खों अपराध मानो गओ है।

जमूरा- का कै रये उद्यताद।

जमूरा- ई कानून कौ मकसद का है।
कैसें जौ बहनन खों भा है।

उद्यताद- मकसद ई कानून को ल्याबो हिंसा मुक्त समाज बनावों।

जमूरा- (चंदू का हाथ पकड़) पैलें करियो अपनी चिंता।
बाद में घर में करियो हिंसा।।

उस्ताद- नारी अब नईं रई लाचार।
काय करत हौ अत्याचार?

जमूरा- नारी कौ करियां तुम मान।
बई राखत है घर की आन।।

उस्ताद- नारी खों न आँख दिखइयो।
अब बस प्रेम सें संग निभइओ।।
घर में तुम मत हिंसा करियो।
फँस जैहौ जौ जाने रईयो।।
जौ है कवच सुरक्षा कौ।
महिलाओं की रक्षा को।

जनता की तरफ इशारो करकें जमूरा कत है अपुन सब जने भी ध्यान राखियो जा बात एक के लाने नइयाँ।

जमूरा- हिंसा देख कें मौ न मौड़ौ।
समझौ बूझौ चुप्पी टोरो।।

उस्ताद- आस-परोस में हिंसा होबै।
अपनों मन बेसुध न सौबे।।

जमूरा- खटका पै सांकर खटकाओ।
जोई परोसी धरम हमाओ।।

उस्ताद- बोल समज में आओ कछू।
ई चर्चा सें पाओं कछु?

जमूरा- हाँ उस्ताद समझ गये खूब।
घरेलू हिंसा के कई रूप।।
पै एक बात बताओ।

उस्ताद- पूछौ का?

जमूरे- पीड़ित महिलाओं खों आगे, करने हैं का काम।
हिंसा सें मुक्ति मिलै, मिलै उने आराम।।

उस्ताद- घरेलू हिंसा अधिनियम पै, दैने परहै ध्यान।
ऊषा किरण योजना, से भी लैने परहै ज्ञान।।

जमूरा- ऊषा किरण योजना का है, जौ तौ हमें बताओ।
ई में का का भरे फायदा, जौ भी तो समझाओ।।

उस्ताद- (जमूरें की तरफ पीठ करकें मनईं मन बड़बड़ाउत है हाथ ऊपर उठा कें कहत है)-
अब का करें, हमें सोई नइयां, ई सें आँगें ज्ञान।
बुरओ फँस गओ मै तौ, मोरी मदद करौ भगवान।।
[तबई कारो कोट पहर कें, सफेद टाई बांद कें गोल-गोल घूमत भये लाली प्रवेश करत है (सबरे ताली बजाउत है)]

लाली- ऊषा किरण योजना ल्याई घर-घर में खुशहाली।
तकलीफें छू मन्तर हो गईं, खुशियां मिली निराली।।
सुनों ध्यान सें बात जमूरे और तुम भी उद्यताद।
ऊषा किरण योजना खों तुम हरदम रखियो याद।।
घरेलू हिंसा कौ संरक्षण कर रई है सरकार।
पीड़ित नारी खों मिल रओ है जीवे को अधिकार।।
(लाली गाउत-गाउत चम्पा के पास जा कें ऊ खों हांत पकर कें ठांड़ो करकें हँस कें कहत है)-

लाली- कौनऊ तुमें सतावै तौ तुम आँगन-बाड़ी जाओ।
संरक्षण अधकारी खों बस पूरी बात बताओ।।
डी. आई. आर. कौ फारम तुम सें भरवा लै है।
जितनों जो भी काम हुये बो सबरो करवा दै है।।
डरनें नइयाँ तुमे काउ सें, बस हिम्मत करने है।
पइसा - धेला नईं काऊ की गदिया पै धरनें है।

उस्ताद- जिज्जी भौतई मजा आ रओ, आँगें और बताओ।
केस बने मजबूत दोष-दोषी के कछू गिनाओ।।

लाली- अगर सराबी मारपीट, कर रओ है नित्त जनी सें।
डरा और धमका कें पइसा, छुड़ा रओ पतनी सें।।
विधवा खों सम्पत्ती दैवे में, हो आना कानी।
बेटा न होवे को ताना, कै धन-जन की हानी।।
जे सबरे उत्पात घरेलू हिंसा है जौ माने।

जी ने हटकी नईं मानी सो एक दिना फँस जाने ।।

*जमूरा* - फँस है तौ, पै कैसें फँस है ई कौ करौ खुलासा ।
अँधयारे जीवन में दै दो उजयारे की आसा ।।

*लाली* - कोर्ट देत आदेश कै आंगे अब हिंसा ने करियो ।
करी अनसुनी, अनदेखी तौ फिर जुर्बाना भरियो ।।

*उस्ताद* - लाली जिज्जी जुर्वाना में का-का भरने पर है ।
खुल कें तनक बताओं, गधा को का-का करने पर है ।।

*लाली* - एक बरस की कैद संग में बीस हजार रूपइया ।
छोटी सी हिंसा करबे पै, बड़ी सजा है भैया ।।

*जमूरा* - एक बात की संका है ऊ कौ कर दो निपटारौ ।
ऐसौ तौ नईं पेसी बड़बैं, केस चलै लमछारौ ।।

*लाली* - नहीं-नहीं, ई में झंझट नइयां कौनऊँ, सिविल केस है ।
न्याय अवधि बस दो मइना है जौ विशेष है ।।
संरक्षण अधिकारी भी, जब सुने न बात तुमाई ।
तो समझो दण्डित होबेकी, ऊ की बारी आई ।।
मजिस्ट्रेट फिर ऊ, अधकारी के धर खैंचै कान ।
ऊ खों तौ हर हाल में, रखने है नारी की आन ।

(चंदू खों भौतई अफसोस होत है । वो धीरे सें सरकत-सरकत लाली के पास आ कें पाँव पकर कें माफी मांगन लगत गिगयाउन लगत ।)

*चंदू* - लाली दीदी हमें माफ कर दो । माफ करौ, हमें बचालो ।

*लाली* - अरे -अरे जौ का कर रये चंदू भैया का भओ?

*चंदू* - हमने चंपा के ऊपर हाँत उठा कें ठीक नईं करो । हमें माफ कर दो, अब ऐसी गलती कभऊँ न हुइये ।

*लाली* - सोच समझ कें वादा करियो भैया । अगर कऊँ फिर सें ऐसी गलती भइ तौ हम भी तुमें बचा न पा हैं ।

*चंदू* - भगवान की कसम खा कें कै रयें कै दुबारां ऐसी गलती न हुइये [ चंदू कान पकर कें कहत है ]

*लाली* - ठीक है तुम कै रये तौ माने लेत । पै माफी हम सें नईं चंपा सें मांगने पर है वो भी सबके सामू ताकी औरन खों भी सबक मिलै । हमें पतौ है । इतै भौत से लोग ऐसे हैं जो अपनी अपनी घरबारियन खों बात-बात पै मारत-पीटत हैं ।

*सरला* - हमें भी उन लोगन सें एक बात कैने है कै-महिलाओं खों मारबे-पीटबे सें पैला एक नईं हजार बार सोचियो । काय सें जौ ऐसौ कानून है जी में सिर्फ और सिर्फ महिलाओं कीअई सुनी जात ।

चंदू चंपा के सामने हाँत जोर कें ठाँड़ौ हो गओ । चंपा की आँखन सें खुसी के अंसुआ बै कड़े । धोती के छोर सें अंसुआ पौंछत भये चंपा बोल परी-

*चंपा* - देखौ गोपू के पापा, हमें और न रूअईयो वर्ना ठीक न हुइये ।
(सब जने एक संगै हँस परे)

*लाली* - कछू समझे चंदू भैया?

*चंदू* - हओ दीदी सब कछू समझ गये ।

*लाली* - का सब कछू समझ गये?

*चंदू* - जोई कै पैल हते कमजोर जो हात ।
अब कानून कौ बल है साथ ।।

(सबई जने ताली बजा कें हँसत है - वाह का बात है)
पर्दा धीरे-धीरे गिरत है, अलगोजा पै लोक धुन बजत है ।
गजब कर डारो भौजी ने गजब कर डारो भौजी ने .........

(समाप्त)

F-7, ग्रीन बँगले फेस-2
दुर्गेश बिहार, जे के. रोड, भोपाल

---

# बुड़ापौ

-दीनदयाल तिवारी 'बेताल'

बुड़ापे में रै गव जौ सरीर, बैठे रो रए करमन खों ।
बचपन कड़गऔ लाड़ प्यार में खेलत में दिन रातें ।
आई ज्वानी मद में भूले हवा खों मारी लातें ।।
खा रए पी रए हलुआ औ खीर, बैठे रोरए करमन खों ।
बुड़ापे में रै गव जौ सरीर, बैठे रोरए करमन खों ।।

अपने दिनन में नाकी भीतें, लगो न कौनउ उप्टा ।
खेल कबड्डी छलाँग मारी लामों नाको रिपटा ।।
अब तन में भौतइ पीर, बैठे रो रए करमन खों ।
बुड़ापे में रै गव जौ सरीर, बैठे रो रए करमन खों ।।

बूड़े भए खाल लटक गइ नग नग सबइ पिरा रए ।
सांस फूल गइ निंग नइ पा रए घूँटे जुदे पिरारए ।।
बैठे रैगए हो रए अधीर बैठे रोरए करमन खों ।
बुड़ापे मे रै गव जौ सरीर, बैठे रोरए करमन खों ।।

दाँत टूट गए आँख मुँद गइ, कानन नहीं सुनाबै ।
झर गए बार हो गए चँदुआ टकला जुदौ क्वाबै ।।
अब कैसें धरै मन धीर, बैठे रो रए करमन खों ।
बुड़ापे में रै गव जौ सरीर , बैठे रोरए करमन खों ।

घर के मान्स लगे घिनयाबे दूर-दूर सब फिरबे ।
उसार टउका कोउ न करबै चिल्लया चिल्लया परबें ।।
विधि ने कैसी लिखी तकदीर बैठे रो रए करमन खों ।
बुड़ापे में रै गव जौ सरीर, बैठे रोरए करमन खो ।

कयँ 'बेताल' भजत जाव हरि भूल न ईमें करियौ ।
काम काज करबे के संगै भगवन नाम सुमरियौ ।।
जा से मिटबे भव की पीर बैठे रोरए करमन खों ।
बुड़ापे में रै गव जौ सरीर, बैठे रोरए करमन खों ।।

-श्री सिद्ध बाबा कालौनी, टीकमगढ़ म. प्र.
मो.- 9893153534

# अपने-पराये

-श्रवण सिंह सेंगर

दिमान विक्रम सिंह अपनी पुरानी गढ़ी के सामने दरवाजे पै ठाड़े ते दरवाजे पै बडौ़ सौ मैदान हतो। चार पांच जनें गाँव के पास ठाड़े ते। ठाकुर साब देर तक गढ़ी की ओर देर तक ऐसें देखत रये मानों आज पैल ऊँ पैल देख रये होंयें। रामनाथ पंडत ने पूँछी।

''का ये दाऊ जू बड़ी गौर कर कें का आय देख रये''

''अब का बताएँ पण्डत जी पुरखन नें जा गढ़ी बनवा कें धरदई।''

जिमीदारी चली गई खेती की जमीन रै गई कम। जौन वे पुराने नौकर चाकर हैं, एक तो उनसें जा कत नईं बनत की अब हम तुमें न राख पावी, और वे अपनई से छोड़ नईं रये। हमें ई गढ़ी के कमरन की मरम्मत करावौ तक तौ मुश्किल पर रओ, अब तुमई सब जनें बता कै छोटी बेटी कौ ब्याव कैसे होत।'

''अरे दाऊ जू चिंता न करौ सब भगवान पार करै, जैसे बड़ी बेटी और मझली बेटी कौ भओ ऐसेंई छोटी बेटी को हो जै।''

''उनकौ तो कर्जा अर्जा काड़ कें कर लओ, अब तो बड़ी मुश्किल दिखात।''

पण्डित रामनाथ नें ठाकुर साब कों एक घर वर बताओ। उनकौ कैबौ हतो कै लड़का पटवारी है, खातौ पीतौ घर है। उनके पिता जी फौज में हते सो रिटायर हो गये। घर मकान मजे कौ है कछु पक्कौ बनो कछु कच्चौ है। घर में खेती पाती भी मजेई की है। मन होय तौ चलौ देख लओ जाय।

ठाकुर साब ने अपने घर में सलाह करी। सोच विचार कें जौ तै भओ कै अगर तै तोर हो जाय तौ कर दैवौ ठीक है। लड़का तौ पटवारी है ई। सब जनन की मर्जी हो गई सो एक दिना, पण्डित रामनाथ खवास, बैजनाथ और अपने कुँवर केशवेन्द्र प्रताप सिंह खों लिवा कें ठाकुर साब लड़का वाले के दरवाजे पै पहुँच गये। लड़का वाले के दरवाजे पहुँच कें खवास ने ठाकुर धीरेन्द्र सिंह सें राम जुहार करी और बिनती करी-

''दाऊ साब हमाए दिमान साब विक्रम सिंह आपके पास अपनी बेटी के शादी संबंध के लानें आये हैं।''

धीरेन्द्र सिंह ने सब कों बैठका में बैठारो आदर सत्कार करो।

पंडित रामनाथ ने कही-''ठाकुर साब अपने कुँवर की जनम पत्रिका दै दई जाय हम अपने दिमान साहब की बेटी कौ जन्मांक संगै लैके आये।''

ठाकुर धीरेन्द्र सिंह ने विचार करो कै अगर हमाव संबंध दीवान साब के यहाँ हो जै तौ समाज में इज्जत और अच्छी बन जै और फिर बड़े आदमी है दान दहेज तो मिलई जै।

पंडित जी नें कई साब जन्मपत्री तौ मिल गई। एक दान लग रओ सो ऊकी पूजा रचा भर करने परै। सबनें कई पूजा रचा तौ सब हो जै। दिमान विक्रम सिंह ने कहो-

''ठाकुर साब शादी की रूप रेखा बता दई जाय। जो हम सोचें हैं उतने में अगर बन जै तौ ठीक है अपनी हैसियत भर कसर न लगाई जै।''

ठाकुर धीरेन्द्र सिंह ने कहा- ''हमाई बरात कौ स्वागत सत्कार हो जाय और मान लो कै लड़का के अनुरूप दान दहेज हो जाबै।''

शादी तै हो गई मुहूर्त के अनुसार धूमधाम सें शादी भई। दिमान विक्रम सिंह ने 2 साल पूर्व 1988 में अपनी मझली बेटी की शादी से भी अधिक दान दहेज दिया। कुँवर कलेऊ में वर ने चार पहिया कौ वाहन माँगो। घर, परिवार, नाते रिश्तेदार, सबनें भौत मनाओ पै लड़का एक जिद पै अड़ों रओ और आखीर में उठ कैं चलौ गओ। दरवाजे पर लड़के के पिता और रिश्तेदारन नें समझाओ। समझाये सें नेंग दस्तूर करकें नाराजी हालत में जनवासे पै आगओ। बेटी राजलक्ष्मी की विदा हो गई।

दिमान विक्रम सिंह ने अच्छौ दान दहेज दओ अच्छी शादी करी, लेकिन कुँवर साहब नाराज ही हो गये। गाँव वालन ने कई लड़का आयें सब ठीक हो जै अपुन चिंता न करौ। एक महीना बाद मुहूर्त के अनुसार बेटी को लिवाने विदा करानें गये तो भेजबे के लानें मना कर दओ। लिबउआ वापिस आगये।

बेटी राजलक्ष्मी भौत सुन्दर हती। अच्छी सुती भई देह बड़ी बड़ी आँखें और अच्छौ तन बदन मीठी बोली वाणी। घर के सभी सें आदर सत्कार सें बोलवौ। सब जनन की आव-भगत कर बौ सास ससुर तथा नाते रिश्ते दारन के चरन छुवौ। गाँव की जेठी सयानी औरतन कौ चरन छूवौ। गाँव में सब कोऊ उन की बढा़ई करन लगौ। लेकिन पति और सास हमेशा नाराज होकें तानें देत रती। कभऊँ प्यार सें व्यवहार नईं करो। फिर भी राजलक्ष्मी ने घरै मायकें कौनऊँ ऐसी सूचना नईं पौंचाई कै उनें परेशानी है।

दिमान विक्रम सिंह ने खबर अतर लैवे के लानें खवास कों भेजो। खवास के पूँछने पर पटवारी साहब नें कई कै अबै भेजवे कौ उकास नईयाँ। हमें कुँवर कलेऊ में पाँच सौ रुपट्टी मिले का दै दओ? खवास ने घर के सब हालचाल बताए। राजलक्ष्मी रोने लगी और खवास सें कई कै माता जी सें कै दियो सब ठीक ठाक है।

खवास नें घर पहुँच कें सब समाचार बताए। घर के लोगन नें सोची कै पहुँचावे की नाई कर दई चलौ कछु बात नइयाँ बेटी आनंद सें है सौ ठीक है।

राजलक्ष्मी ने एक कन्या रतन खों जनम दओ। सुन्दर कन्या पैदा भई, लेकिन पति और सास कों भौतई बुरौ लगो राजलक्ष्मी के ऊपर पति ने ताना कसो कै व्याव में कछू दओ नईयां और बिटिया जाकें धर दई। सास कान लगी लेव जा बहू तौ ऐसी आई कै बिटिया पैदा कर दई और खर्च कौ घर कर दओ। हम तौ अपने लरका कौ दूसरौ व्याव करें।

माँ-बेटा आपस में बात कर रये ते कै अस्पताल में भओ करावे में भौत पैसा खर्च हो गओ। और डाक्टरनी कै रईती कै अब तुमाई घरवाली माँ नही बन सकत काए सें आपरेशन सें बच्चो भओ। तौ वंश चलावे के लाने दूसरौ ब्याव तौ करनेई परै बताओ अम्मा ?

राजलक्ष्मी पास ई बैठी थी, सो ऊने सुन लई। क्रोध के मारें राजलक्ष्मी की आँखें लाल हो गई, आवाज काँपन लगी और सामने आकें ऊने साफ कै दई-

'हम का सुन रये, हमाये रत भये तुम दूसरौ ब्याव कर रहे?' हाँ ठीक सुनी तुमने हमें अपनों वंश चलावनें तुमाये रत वंश चलने नइयाँ ईसे तुम खुदई चली जाव कऊँ तौ ठीक है नई तौ हमें अपने हांत खून सें रंगने परैं चाऐं जेल काटने परै।'

'मैं तुमें पति परमेश्वर समजतती, तुम राक्षस निकरे तुमें हाँत न रंगने परैं, हम खुद चले जै राक्षसन कौ मौ न देखें।'' राजलक्ष्मी ने अपनी लाड़ली कों उठाओ और घर के बाहर चल दी उसने लौट कर घर की ओर देखो तक नईया।'

माता जी नें खबर अतर लैवे खवास पहुँचाओ। खवास ने लौट कैं आकें बताओ कै बेटी राजा तौ तीन महीना पहलें चली गई। सास और कुँवर साब मिले थे, वे कै रये तें कै उनके दिमाग में कछु कमी हो गई सो वे बिटिया लेकें जाने काँ चली गई। खवास नें आगे बताओ कै पटवारी साब ने दूसरौ ब्याव कर लओ, गाँव वालेन नें बताई कै दूसरे ब्याव की बात चलीती सोई बेटी चली गईतीं।

माता जी को अपनी छोटी – बेटी के बारे में सुनके भौत रंज भओ। बहुत रोईं उन्हें सबने समझाओ पै वे बीमार हो गई इलाज शुरु भओ, तब कछू ठीक भई। ठाकुर विक्रम सिंह भी रंज गम के मारे दूबरे हो गये। गढ़ी सें कम निकरन लगे गाँव में घर में राजलक्ष्मी के बारे में सब जई कै रये ते कै बेटी वाकई लक्ष्मी है, जाँ रै उतै धर्म कर्म सें रेहै।।

राजलक्ष्मी की चिट्ठी डाकिया नें लेंकें गढ़ी में पहुँचाई। उसमें स्थान कौ और अपनौ पतौ उननें नहीं लिखौ। उनके संगे जो व्यवहार करो गओ वौ पूरे ब्योरे कर लिखो। कै हमाये मन नें कई कै माता पिता पै भी हमें बोझ न बनों चहिये। ईसे हम दूर चले आये और ऐसी जगाँ आ गये कै अपने जीवन की नैया भगवान भरोसें छोड़ दई। बस अब एकई प्रण कर लओ कै चाँय जितनी मैनत मजूरी करने पडै, पैई बेटी कों पढ़ा लिखा कें कुछ बना दे। इस पत्र के बाद राजलक्ष्मी का कोई पत्र नईं आओ। दिमान विक्रम सिंह ने बहुत कोशिश करी पै उनकौ पतौ नईं लगा पाये।

समय तौ भइया अपनी गति सें चलत, कछू अवस्था कौ कारण और कछु लाड़ली छोटी बेटी कौ रंज दोऊ प्राणी दिमान साहब और मालिकन समय सें जादा बूढ़े दिखान लगे। कुँवर केशवेन्द्र सिंह के पुत्र पैदा होवे के बाद दोई प्राणियन कौ मन नाती में बिलमत रओ। फिर तीन चार साल बाद नातिन हो गई तो सो और आनंद मंगल होगओ तो। नाती और नातिन को शहर में पढवें भेजो। नाती ने तौ मुश्किल सें मात्र बी. ए. पास कर पाओ। नातिन जरूर पढ़वें में होशियार हती। इस प्रकार छोटी बेटी को गये 27 साल गुजर गयेते।

दिमान साब नें सोची कै इनके पढबे कौ हाल चाल ठीक नइयाँ और पास ई के गाँव वाले दिमान साब कैं एकई बिन्नू हती सो उन कौ ब्याव तै कर लओ। ब्याव की तैयारी शुरू हो गई। घर मेगढ़ी में मरम्मत शुरू हो गई, साफ सफाई रंगाई पुताई होन लगी। नाते रिस्तेदारन कों निमंत्रण डाक सें और खवासन सें भेज दये। बड़ी बेटी और मझली बेटी के परिवार आ गये। लेकिन छोटी बेटी के ससुराल वालन कों न बुलाओ गओ न उन्हे निमंत्रण दओ गओ।

आज गढ़ी जगमगा रई ती लगुन आवनें ती सो अच्छी सजावट करी गई ती। लगुन मे भौंत कारें और भौत जनें आउनेंतें सो व्यवस्था अच्छी करी गई ती। लगुन वाले शाम 4 बजे आ गये। गढ़ी के दरवाजे पर भारी भीड़ इकट्ठी हो गई। गायन वादन चलई रओं तो। लग्न कौ कार्यक्रम शुरू होवे वालौ हतो। पंडित जी ने कुँवर कों चौकी पै बैठने को संकेत करो।

सड़क की ओर सें एक नई चमचमात कार आ कें एक दम दरवाजे पर आयी और रुक गई। कार के आगे चमचमात स्वर्ण अक्षरन में पद नाम जिलाधिकारी लिखो तो। कार सें सबसे पहलें कलेक्टर साब कौ अर्दली उतरो, ऊनें गेट खोलो एक नव युवती जिलाधिकारी उतरी भीड़ लग गई। गौर वर्ण सुन्दर लम्बी छरहरी कलेक्टर साब कों सबने राम जुहार करी। कलेक्टर साब नें दूसरी तरफ जाकें अपनी माता जी कों गेट खोले कें उतारों। राजलक्ष्मी को देखतनई सब लोग उनके पैरों पर गिर पड़े। शोर मच गओ छोटी बेटी राजा आ गई। दिमान साब नें आँसुंवन सें चरण धोये। राजलक्ष्मी ने कहा – राजेश्वरी ये तुमाये नाना जी है। दिमान साब नें और गाँव भरने राजेश्वरी के पैर छुये। उपस्थित जन समूह हर्ष खुसी सें फूलो नहीं समारओ तो।

राजलक्ष्मी और राजेश्वरी अंदर गईं निवास में भी गाँव की बहुत महिलायें थी इतनी खुसी उमड़ रईती कै खुसी के मारे भौत आदमी औरतन की आँखन में अंसुआ आ गये तें। लगुन कौ उत्सव समैया में चार चाँद लग गये। माता जी लिपट गई 'अरे कहाँ रई अबै तक तुम बिटिया' कह कह कें खूब रोई। बहिनें राजलक्ष्मी सें लिपट कें खूब रोई। सबजने बड़े प्रसन्न होत रये। खुशी के मारे अंसुअन की धार लगी ती।

दिमान दम्पत्ति अपने भाग सराह रये ते, हे भगवान हम तौ सोच रहे ते कै ई जनम में तौ अब हमाई बेटी राजा देखवे कों मिलनें नइयाँ।' अरे, अम्मा साब जा तुमाई नातिन राजेश्वरी है कलेक्टर बन गई। राजेश्वरी ने खुद कोशिश करकें ई जिला में अपनों पद लओ। दादी जी ने पैर छुये तो राजेश्वरी ने मना करो हम बड़न सें पाँव न छुआएं दादी जी। राजलक्ष्मी बारम्बार सबसें मिल भेंट रईती। दिमान साब नें पूँछा–

बेटा इतने दिनों कहाँ रही कितनी परेशानी न उठाई हुयै तुमने। ससुराल में शुरू सें ही हमाए संगै अत्याचार भओ। आप लोगन कों नई बताओ कै आप रंज करौ। फिर इन लोगन ने निकार दओ। हम ई बेटी को गोद मे लै के निकर आये। भगवान की कृपा गाड़ी में हमें एक संतान हीन दम्पत्ति मिले वें हमसें बोले – बेटा तुम कहाँ जा रही हो। हमें रोना आ गया हम कुछ बता न पाये। उन्होने हमें शान्ति दी और अपने यहाँ शरण दी। इलाहाबाद में उनकौ मकान हतो और डुकरा – डुकरिया हते। उन्ही की कृपा और आशीर्वाद सें राजेश्वरी अच्छे स्कूलन में पढ़ी। और राजेश्वरी को पढ़ने में कौनऊ रोक टोंक नई रई। दिमान साब और उनकी दादी जी ने राजेश्वरी सें कई।

'बेटा तुमने तो हमाई इज्जत कई गुना बड़ा दई, भगवान तुमने इतने अच्छे दिन दिखा दये।' दोनों की आँखों में फिर आँसू आ गये। राजलक्ष्मी ने कहा – 'पिता जी मेरी ससुराल वालों को हाल चाल क्या है। राजेश्वरी के पिता जी कैसे है?'

'बेटा दूसरी शादी कर लईती। उसके एक भी संतान नईं भई। रिश्वत में पकर गये ते, सजा हो गई ती। माता-पिता को छोड़

# बुन्देलखण्ड कौ स्वांग

-अभिनंदन गोइल

पुरातन काल सें आदमी जिंदगी की अच्छीं-बुरईं परिस्थितियन से गुजरत रए। सो हिये में हुलास पैदां करवे मान्सन के बीचां कैऊ कलाकारीं पर्जीं औ बढ़ीं। बुन्देलखण्ड कौ 'स्वांग' (जनबन की भाषा में लोक नाट्य) सोऊ पुरानें जमानें सें इतै की संस्कृति कौ हैंसा रऔ है। ऐसौ लगत कै जबसें बुंदेली कौ बोलबौ-चालबौ चलन में आऔ हुइए, तबई सें 'स्वांग' इतै मनोरंजन कौ साधन रऔ है।

द्वापर जुग में दुर्वासा ऋषि जू के क्रोध सें द्वारका जलबे कौ कारन जदुवंसियन कौ स्वांग हतो, जी में उननने 'शांभ' खों लुगाई कौ रूप धरा कें, औऊ की कुर्ती में उन्ना-लत्ता ठूँस कें ऋषि से पूँछी ती कै-'ई औरत के पेट सें लरका पैदा हुइए कै बिटिया ?' ई परिहास सें दुर्वासा जू क्रोधित भए और उनके श्राप के कारन शांभ के पेट से सांचऊँ एक तेजस् पुतरा पैदां भऔ जी सें द्वारका समेत सबई जदुवंसी जलकें नाश भए। ऐसई राजा हरिश्चन्द्र और रानी तारामती ने सोऊ डोम-डोमनी कौ स्वांग धरकें अपने सत् की रक्षा करी ती। स्वांग रचबे की ऐसी कैऊ किसा-कानियाँ बुन्देलखण्ड कौ आदमी प्राचीन काल सें सुनत आऔ औ नए-नए स्वांग धरकें मनोरंजन करत रऔ। जनबन की मानें तो आठवीं सदी के कल्हण के बीजक में सोऊ स्वांग को बरनन मिलो है।

दसवीं सदी में बुन्देल भूम पै चंदेलन के राज में 'शिल्पकला' के संगै कैऊ लोककलन खों बढ़ाबौ मिलो, जी में स्वांग की सोऊ भौत उन्नति भई। चंदेल राजा कीर्तिवर्मन के राज में स्वांग कला के बढ़ावे कैऊ नाटकघर औ रंगमंचें बनबाई गई ती। महोबा में तो ऊ काल की बनी नाटक-शाला के खड़ैरा अबै लों दिखात हैं। ऊ काल में कृष्ण मित्र कौ लिखो 'प्रबोध-चंद्रोदय' नाव कौ नाटक राजकीय रंगशाला में खेलो गऔ तो, ऐसी जानकारी जनबन के शोध पत्रन से पतौ चली है।

चंदेलकाल में, दिवालन में देवी-देवतन के स्वांग रच कें नाच-गान औ नाटक होत रत ते। राज की तरफ सें इसकी उन्नति के लानें खूब साधन दए जात ते। जौ काल लोक साहित्य कौ वीर-गाथा काल हतो। जगनिक ने 'आल्हा' जैसौ वीरता कौ महाकाव्य रचो, जी में 52 युद्धन कौ बरनन है, पै संगै कालिंजर औ खजुराहो के सांस्कृतिक वैभव की सोऊ झलक है। ई काल में सुरहिन गाथा, संत-बसंत औ सारंगा-मारंगा जैसे चम्पू गद्य (गद्य काव्य) लिखे गए, जिनसें सोऊ बुंदेली स्वांग प्रेरित रए।

ई के पाछें लोक साहित्य औ संस्कृति कौ भक्तिकाल आऔ। बुन्देलन की राजधानी ओड़छा भई जितै साहित्य औ कला कौ भौत विकास भऔ। 'स्वांग' कला विकसित भई, जीनें रासलीला औ रामलीला कौ रूप लऔ। रासलीला ब्रज में जनमी तौ रामलीला कौ जनम बुन्देलखण्ड में भऔ। पै दोऊ लीलां इतै मंचित होत रईं। धनुष जज्ञ तौ धरम कौ अंग बन गऔ तौ। भक्त कवि गुसाई तुलसीदास जू अपनी पोथी रामलला नहछू में लिखत हैं -''हिलमिल करत स्वांग सभा रस केलि हो।'' जौ युग इतिहास कौ मध्ययुग सोऊ कहाउत। ओड़छा नरेसन की मुगलन से संधि होवे के कारन बुंदेलखण्ड में अमूमन शांति रई। ऐसे में सबई लोक-कलन संगै 'स्वांग' सोऊ फलो-फूलो बुंदेली स्वांग खों मध्य युग में 'राई' कौ संग मिलवे सें ई में 'नृत्य-गायन औ वादन' हतो पै अशलीलता के प्रवेस सें जौ धीरें-धीरें प्रतिष्ठा खो कें नाटक में बदलो औ बाद में बुंदेली स्वांग के रूप में चलन में आऔ।

दो-तीन दसक पैलें लों 'स्वांग' के दो रूप खूब चलन में रए। एक तौ ब्याव में 'बाबा के स्वांग' औ दूसरौ 'राई' के संगै होबे बारौ स्वांग। पैलें लरका के ब्याव में बरात संगै लुगाई नईं जाततीं। बरात जाबे पै वे घरई में मिल-जुर कें बाबा के स्वांग रचत तीं, इनमें कौनऊ मरद नई रत तो। औरतन में से कैऊ जनीं मरदन कौ स्वांग धरत तीं और तरा-तरा से नाटक करके मौज मस्ती करत तीं। दूसरौ रूप राई के संगे होबे बारे स्वांग में बेड़नी (नर्तकी) ढुलक, नगड़िया, तांसे, झांझें और रमतूला के संगै लोक-गीतन की धुनन पै नचत है। बीच में स्वांगिए-बेड़नी संगै मिलकें स्वांग करत भए दिखैयन खों गुदगुदाउत औ हंसाउत रत है। गांवन खेरन में अबै लों कभऊँ-कभऊँ इन दोऊ रूपन की झलक मिल जात।

बुंदेली के और कैऊ नाचन में सोऊ स्वांग रचबे कौ चलन हतो। जैसें ढिमरया नाच में एक जनौ लुगाई कौ स्वांग रचत तो, तौ दूसरौ ऊ के घरवारे कौ, औ प्रेमरस में भींजे लोकगीत गाउत-नाचत भए, नई जुगल जोड़ी में प्रेम की हिलोरें भरवे को काम करत ते।

बुंदेली स्वांगन में कजरियां छेंकवे कौ स्वांग, भूत-प्रेतन कौ स्वांग जैसे कैऊ नाटक होत ते। इन लोकनृत्यन औ स्वांग के लानें कौनऊ मंच, चौंतरा जरूरी नईं रऔ। जे नाच औ अभिनय कलाएँ तौ खुले में होवे बारे लोक-रंजन के साधन रए हैं, जो अब सिनेमा, टी.वी. औ लोक संस्कृति खों विसारबे की मानसिकता के कारन बिलाने जा रए।

-बाजार जैन मंदिर मार्ग,टीकमगढ़ (म.प्र.)
मोबा. 9424923622

## अपने-पराये कहानी का शेष

के जेवर गानों गुरिया लैकें वा औरत काऊ के संगै भग गई ती। पटवारी साहब छूट आ गये ते, सो कछु दिनन भुगतत रये। नौकरी छूट गई ती. और बेटी का बतायें, उन्हें कैंसर हो गओ तो, सो वे भगवान कों प्यारे हो गये ते। गाँव के आदमीयन ने बताओ कै मरती बेरा पछतात भौत रये ते-

''मैने राजलक्ष्मी के संगे भौत जुरूम करो उनकी आत्मा खों दुख दओ ओई कौ नतीजा भुगतने परो। काऊ के संगे दगाबाजी न करो चाहिए।''

यह सुन कैं राजलक्ष्मी को बहुत दुख भओ उनकी आँखन में अंसुआ भर आये। राजेश्वरी नें कई-''ममी ऐसे आदमी के लाने आ रो रई, अरे जा कव कै ऐसी मौत के हकदार हते भौत अच्छौ रओ।''

राजलक्ष्मी ने कहा-''नहीं बेटी ऐसे नईं कानें आउत, आखिर वे तुमाये पिता और हमाये पति देव हते।''

सभी लोग राजलक्ष्मी के आचरण की प्रशंसा करन लगे।

-कैरोखर हाउस, गुरसराय झाँसी
मो.-9415589841-09559837921

# एक प्रगतिशील नरेश ओरछेश श्री वीर सिंह देव द्वितीय

-एन. डी. सोनी

सन् 1531 में वेतवा तट पर महाराज रुद्रप्रताप द्वारा किले की आधार शिला रखने के साथ ही ओरछा नगर में ओरछा राज्य की स्थापना हुई। लगभग 250 वर्षो तक ओरछा में राजधानी रहने के बाद सन् 1783 में तत्कालीन महाराज विक्रमाजीत सिंह ने टेहरी (पूर्व बस्ती) में किला और नई बस्ती बनाकर उसे टीकमगढ़ नाम दिया। ओरछा राज्य बुन्देलखण्ड की रियासतों में सबसे बडा रहा और यहाँ महाराज वीर सिंह देव प्रथम तथा मधुकर शाह जैसे प्रतापी राजा हुए जिन्होंने अपनी वीरता के साथ ही राज्य की संस्कृति, धार्मिकता और साहित्य का संरक्षण और विकास कर देश में नाम कमाया। इसी गौरवशाली राज्य के अंतिम शासक के रूप में महाराज वीर सिंह देव सन् 1930 में तीन मार्च को गद्दी नसीन हुए। उन्हें यह गद्दी अपने पितामह महाराज प्रताप सिंह से प्राप्त हुई थी क्योंकि वीर सिंह के पिता भगवंत सिंह को बीच में ही स्वर्गवास हो जाने के कारण राज्य करने का अवसर नहीं मिला। महाराज प्रताप सिंह ने लगभग 55 वर्षो तक पुरानी परम्परानुसार शान्ति पूर्वक राज्य किया।

ओरछा राज्य के उत्तराधिकारी वीर सिंह की शिक्षा-दीक्षा राजकुमार कालेज या डेली कालेज इंदौर में हुई। यहाँ आधुनिक ढंग से अंग्रेजी और हिन्दी का शिक्षण प्राप्त किया। इंदौर में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने वीर सिंह का रुझान हिन्दी के प्रति अधिक बढ़ाया। सन् 1918 में डेली कालेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद मेयो कालेज अजमेर में पढ़ने पहुँचे जहाँ चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने उनकी हिन्दी प्रतिभा को और अधिक निखारा। पढ़ाई पूरी कर टीकमगढ आने पर भी वीर सिंह जी साहित्यिक गतिविधियों में व्यस्त रहा करते थे। गद्दी पर बैठते ही महाराज वीर सिंह ने अपनी प्रगतिशीलता का परिचय दिया। श्री हरिविष्णु अवस्थी के अनुसार शासन के प्रथम दिन जो आज्ञाएँ प्रसारित कीं उनमें पाँच प्रमुख और महत्वपूर्ण थीं-

1- राज्य की भाषा शुद्ध हिन्दी होगी।

2- राज्य में छुआछूत दण्डनीय अपराध होगा।

3- बिना मजदूरी अथवा कम मजदूरी देकर बेगार में काम लेने की प्रथा राज्य में समाप्त की जाती है।

4- राजा के सामने लोग किसी भी पोशाक में नंगे सर तक आ सकते हैं, छाता लगा सकते हैं।

5. बाल विवाह करना राज्य में दण्डनीय अपराध होगा।

इन आज्ञाओं से स्पष्ट है कि समयानुकूल जनता के सामान्य जन के विकास का मार्ग प्रशस्त करना और गलत रूढ़ियों को समाप्त करना राजा का उद्देश्य रहा।

महाराजा वीर सिंह ने तत्कालीन परिस्थितियों पर गौर करते हुए अपने राज्य को नई दिशा देने के लिए चहुँमुखी प्रयास करना शुरू किए। यहाँ यह बात स्पष्ट करना जरूरी समझाता हूँ कि बुन्देलखण्ड की देशी रियासतों में राजाओं का राज जरूर था मगर अंग्रेजों से सन्धि के तहत पॉलिटीकल एजेन्ट का दबाब राजाओं पर रहता था। वे अंग्रेजों की आज्ञा के बगैर राज्य के सम्बन्ध में कोई निर्णय नही ले सकते थे, न ही कोई कार्य उनके विपरीत कर सकते थे। महाराज वीर सिंह ने इस दबाब के होते हुए भी काफी निर्भीकता से काम लेते हुए राष्ट्रीय भावनाओं के समर्थन में बाधा नहीं पहुँचाई। वे मन ही मन देश के स्वतंत्रता संग्राम के समर्थक प्रतीत होते थे ऐसा अनेक लोगों का मत था। यही कारण है कि उन्होंने ने स्वतंत्रता सेनानियों पर जुल्म नहीं किया, हाँ पॉलिटीकल एजेन्ट की मंशा भाँप कर जरूरी कार्यवाही तो करनी ही पड़ती थी।

महाराज समाज के छोटे से छोटे व्यक्ति की इज्जत का ध्यान रखते थे। वीर सिंह देव को खुशामद पसन्द नहीं थी इसलिए अपनी तारीफ करने वालों से सतर्क रहते थे और उन्हें आगाह भी कर देते थे चाहे वह कोई भी हो। यही कारण है कि उन्होंने अपने जीवन में अपने अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए एकदम मना कर दिया था। महाराज यदि किसी की सहायता करते थे तो उसका ढिंडोरा पीटना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। इसके अनेक उदाहरण उनके शासन काल में भरे पड़े हैं। उस समय के सभी रजवाड़े सामंती विचार धारा के थे लेकिन महाराज वीर सिंह समाजवाद और साम्यवाद के समर्थक रहे इसलिए उन्होंने धीरे-धीरे अपनी प्रजा को अधिकार देना शुरू कर दिया था। यह उनकी प्रगतिशीलता का ही उदाहरण है। श्री वृन्दावन लाल वर्मा ने ओरछेश स्मृति ग्रन्थ में लिखा है कि वह क्रमागत सुधार के पक्षपाती हैं। उन्होंने राज्य के किसानों को भूमि और वृक्ष बेचने इत्यादि का पूर्ण अधिकार दे दिया है। परन्तु दूषित जमींदारी प्रथा को अंगीकार नहीं किया है। प्रजा परिषद भी स्थापित हो गई है जिसमें सदस्य चुनाव के आधार पर प्रवेश पाते हैं। महाराज का विचार था कि राजा अपना व्यय सीमिति करके प्रजा को अधिकार सौंप सकते है। यदि बुन्देलखण्ड के सभी रजवाड़े एक राय होकर सामंती सत्ता में सुधार करें तो इस खण्ड की त्रस्त जनता को राहत की सांस मिल सकती है। इस हेतु उन्होंने सन् 1943 में टीकमगढ़ में एक अधिवेशन भी किया था परन्तु सफलता नहीं मिली, यह बात वर्मा जी ने अपने लेख में उजागर की है।

वर्मा जी ने बताया कि टीकमगढ़ और कुण्डेश्वर के बीच कृषि फार्म बनाकर उस पर मशीनों द्वारा खेती कराके उसे उन्नत करें और फिर उसे प्रजा को बाँट दें, परन्तु पानी की कमी से वह कार्य सम्पन्न न हो सका। इस हेतु सुधा सागर बाँध भी बनवाया गया परन्तु सपना अधूरा ही रह गया। इससे कृषि और किसान के प्रति उनकी भावना का पता चलता है। महाराज वीर सिंह एक न्याय प्रिय और प्रजाबत्सल शासक थे अत: इस बात का ख्याल रखते थे कि किसी व्यक्ति के साथ अन्याय न हो। ऐसे उदाहरण हैं कि यदि कोई गरीब व्यक्ति अपनी जमीन या मकान का मुकदमा अदालत ये हार गया और उसे उसकी नितांत आवश्कता है तो उन्होंने अपने विशेष अधिकार से वह वापिस दे दिया। प्रजा के प्रति राजा की भावना का एक उदाहरण पं. बनारसी दास चतुर्वेदी ने अपने पत्र में स्पष्ट किया है कि सन् 1937 में जब टीकमगढ़ में हुलकी का प्रकोप हुआ (जो छूत की बीमारी है) तो राजा को टीकमगढ़ में न रहने की सलाह दी गई परन्तु उन्होंने इससे इंकार कर दिया। उनका कहना था कि भले ही मैं सीधे-सीधे प्रजा की कोई दवा या सेवा न कर सकूँ लेकिन मेरे रहने से प्रजा के मन में सांत्वना का भाव रहेगा और सब लोग रोग दूर करने हेतु हो रहे

प्रबन्धों के प्रति आश्वस्त रहेंगे।

अपने लोगों को आफतों से बचाये रखना वीर सिंह जी के स्वभाव में शामिल था, चाहे उसके लिए उन्हें कोई भी परेशानी क्यों न उठानी पड़े। पं. बनारसीदास चतुर्वेदी और लाला राम बाजपेई को गिरफ्तार करने के लिए दूसरे राज्यों के वारन्ट होने और पोलिटीकल एजेन्ट की आज्ञा के बाद भी उन्हें बचाये रखा। ब्रिटिस राज्य में ऐसा करना बड़ी हिम्मत का काम था। राजा को उनकी आज्ञा न मानने का जबाब देना पड़ता था।

वीर सिंह राजा होने के कारण शिकार के शौकीन तो थे ही अतः राज्य में इसके उचित प्रबन्ध और स्थान बनाये गये थे, साथ ही जनता के लिये शिकार करने के लिए कानून निर्धारित थे। शिकारी के साथ वे अच्छे खिलाड़ी भी थे। गोल्फ और हाकी खेलना उन्हें पसन्द था। अपने शौक में उन्होंने जनता को भी भागीदार बनाया। टीकमगढ़ में भगवंत क्लब बनाया और क्लब के माध्यम से हाकी की एक बहुत मजबूत टीम तैयार की जिसके लिए दूसरे राज्यों से भी कुशल खिलाड़ियों को बुलाकर यहाँ रखा गया और उन्हें आवश्यक सहायता दी गई। एक समय ऐसा भी रहा जब टीकमगढ़ की हॉकी टीम ने लगातार तीन-तीन वर्षो तक देश के सभी बड़े टूर्नामेंट जीत कर अपनी क्षमता का लोहा मनवाया। महाराज की उस भावना का आदर बनाये रखने के लिए उनके स्वर्गवास पश्चात् सवाई महेन्द्र इन्टर कालेज टीकमगढ़ के पी. टी. आई. स्वर्गीय श्री तारा चन्द राय ने वीर सिंह देव स्मारक हॉकी टूर्नामेन्ट की शुरूआत सन् 1957 -58 में की। उस समय मैं इन्टर का विद्यार्थी था इसलिये मुझे पता है कि सभी विद्यार्थियों से दो-दो रुपये चन्दा करके टीकमगढ़ के अलावा झाँसी, ललितपुर और बीना की टीमों का सहयोग प्राप्त कर टूर्नामेन्ट का श्री गणेश हुआ। बाद में कालेज के साथ जन सहयोग से टूनामेन्ट का स्तर अखिल भारतीय हो गया जो आज तक संचालित हो रहा है। शुरू में पैसों के अभाव में टूर्नामेन्ट कमेटी को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उत्तर प्रदेश पुलिस में टीकमगढ़ के श्री बाबूलाल यादव अधिकारी थे और वे राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी थे, जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग दिया और अपनी टीम को लगातार टूर्नामेन्ट में शुरू से आखिर तक यहाँ रखते रहे। यहाँ तक कि जरूरत पढ़ने पर आर्थिक सहयोग भी किया।

वीर सिंह के अन्य सभी सद्गुणों पर सबसे भारी था उनका साहित्य प्रेम। चूँकि बचपन से ही उन्हें अपनी दादी महारानी ब्रषभान कुँवर की गोद में बैठकर उनके धार्मिक पद या गीत सुनने को मिले। उनके पिता राजाबहादुर भगवंत सिंह भी अच्छे कवि और माता जी साहित्य प्रेमी रही इसलिए परिवार के माहौल में साहित्यमय वातावरण मिला जिसका उन पर प्रभाव हुआ। वीर सिंह बचपन से ही कुसाग्र बुद्धि थे अतः किसी बात को आसानी ग्रहण कर लेते थे। उनकी शिक्षा की व्यवस्था के साथ उन्हें काव्य रचना की शिक्षा के लिए अलग से शिक्षक तैनात रहे। इस प्रकार साहित्यिक वातावरण में बड़े होने के बाद इंदौर और अजमेर के कालेजों में शिक्षा ग्रहण करते समय भी उन्हें साहित्यक रुझान बढ़ाने वाले गुरु मिले। अतः राज्यारोहण के समय ही उन्होंने जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य किया वह था राज्य की भाषा उर्दू के स्थान पर हिन्दी करने की आज्ञा। राज-काज के सभी कार्यो और विभागों में हिन्दी में कार्य होने लगा इसमें आने वाली अड़चनों को दूर करने में उन्होंने स्वयं रुचि ली और बहुत से हिन्दी के शब्द प्रयोग के लिए निर्धारित किये।

दूसरा कार्य हिन्दी की श्री वृद्धि के लिए उन्होंने यह किया कि श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद की स्थापना की जिसकी समिति को पर्याप्त अधिकार दिये गये। परिषद की सक्रियता के कारण साहित्य के अध्ययन हेतु देवेन्द्र साहित्य विद्यालय खोला गया। आम आदमी के पठन - पाठन हेतु परिषद की सिफारिश पर महाराज ने देवेन्द्र पुस्तकालय एवं सुधा वाचनालय स्थापित करवाये। राज्य द्वारा संचालित सवाई महेन्द्र हाई स्कूल में श्री वीरेन्द्र लिटरेरी क्लब के माध्यम से सन् 1932 से 'वीर बुन्देल' पत्रिका का मासिक प्रकाशन किया जाने लगा। इसमें स्थानीय लोगों के साथ बाहर के लोगों की रचनायें भी छपती थीं। श्री हरि विष्णु अवस्थी ने अक्षरा पत्रिका में अपने लेख में (बुन्देलखण्ड का ओरछा राज्य जहाँ 1930 में हिन्दी बन गई राजभाषा) वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद की गतिविधियों का विस्तृत उल्लेख किया है। परिषद की साहित्यिक गोष्ठियों और कवि सम्मेलनों में भाग लेने दूर - दूर से कवि और सहित्यकार आते और देश में परिषद का नाम रोशन होता जाता।

हिन्दी साहित्य को राज्य में बढ़ावा देने हेतु महाराज ने अपने गुरु पं. बनारसीदास चतुर्वेदी को कलकत्ता से टीकमगढ़ बुलाया और उन्हें कुण्डेश्वर की कोठी में निवास दिया। बनारसी दास जी जाने-माने साहित्यकार थे अतः उन्होंने कुण्डेश्वर में लगभग 14 वर्ष रहकर बहुत सें साहित्यकारों को यहाँ बुलाया और कुण्डेश्वर को साहित्य का एक बड़ा केन्द्र बना दिया। यशपाल जैन जैसे साहित्यकार भी यहाँ एक महिने के लिये आकर 61/2 वर्ष रहे। चूँकि बनारसी दास जी एक प्रतिष्ठित पत्रकार थे अतः सन् 1940 में एक अक्टूबर से मधुकर मासिक पत्रिका प्रकाशन बनारसी दास जी के सम्पादकत्व में प्रारम्भ किया गया। इसमें देश के ख्याति प्राप्त साहित्कारों के लेख प्रकाशित होते थे। पत्रिका की प्रतिष्ठा इतनी बढ़ी कि जानने वाले आज भी उसकी याद करते हैं। लोक साहित्य के प्रकाशन के लिए अलग से एक लोक साहित्य परिषद गठित की गई जिसके सचिव कृष्णानंद गुप्त बनाये गये। इस परिषद ने1944 से लोकवार्ता त्रैमासिक का प्रकाशन शुरू किया सम्पादक रहे श्री कृष्णानंद गुप्त।

पं. हरि विष्णु अवस्थी के अनुसार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी अभिनन्दन समारोह के अध्यक्ष पद से काशी में घोषणा की थी कि हिन्दी की सेवा के लिए ओरछा राज्य की ओर से प्रतिवर्ष 2000 रुपये की सहायता दी जायेगी। उसी घोषणा को मूर्तरूप देते हुए 21 जनवरी 1934 को कुण्डेश्वर के वीर बसंतोत्सव के अवसर पर अधिवेशन (श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद के) के सभापति के आसन से लिखित घोषणा की कि दो हजार रुपयों का वार्षिक देव पुरस्कार हिन्दी की श्रेष्ठ . कृतियों के लिए दिया जायगा। उसके लिए समिति में देश के बड़ें साहित्यकारों को रखा गया। प्रथम देव पुरस्कार दुलारेलाल भार्गव को उनकी 'दुलारे दोहावली' को दिया गया। हिन्दी की इस सेवा का कारण यह था कि एक तो ओरछा राज्य की वीरसिंह देव प्रथम के जमाने से चली आ रही परम्परा थी। महाकवि केशव दास मित्र मिश्र जैसे साहित्यकार जिसकी देन थे। दूसरे महाराज वीर

# किस्सा जमड़ार नदी की

-सीताराम राय 'सरल'

कूड़ादेव (कुण्डेश्वर) सें शंकर जू के पांव पखारत इठलाती बलखाती उफनाती नदी जमड़ार पूरे वेग से बउत जा रई है। ई नदी कौ उद्गम मड़ावरा जिला लल्तपुर के तला सें भयो है। पानी बरसत में जमड़ार नदी अपने पूरे वेग सें वउत है। जनश्रुति ऐसी है कि जा नदी मड़ावरा उ. प्र. सें निकल कैं घाट खिरिया में टीकमगढ़ म. प्र. में आउत है। ई नदी में कूड़ादेव में सदा पानी भरो रत है। तला सें शुरू हो कैं कुम्हैडी सें निकरत भई अगौरा बम्होरी होत टीकमगढ़ के घाट खिरिया में प्रवेश करत है। घाट खिरिया सें धनवाहा तिदारी होत करमाई से चलकें अस्तौन गाँव के ऊपर से निकरत भई जमड़ार गाँव में हो कें कूड़ादेव में आउत। इतें जाको बेग भौत ई बढ़ जात है। टीकमगढ़ मारौनी मार्ग पै बने पुल पै जमड़ार की धार बउन लगत है। साउन भादौ में तो ई पुल पै ऊपर सें कई फुट पानी बउन लगत है। कबहुँ कबहुँ पांच - सात फुट तक पानी पुल पै बउत है। जैई सें टीकमगढ़ मारौनी कौ रास्ता बंद हो जात है। ई सें दो-दो दिना आवो जावो बन्द रात है। कूड़ादेव में नदी खों हल्के कुण्ड सें सरपट पट्टी के ऊपर सें चार - पाँच फुट और कबहूँ कबहूँ दस - दस फुट पानू बँढ़ जात है जी सें प्रशासन की चौकसी बढ़ जात है। छोटे कुण्ड सें बड़े कुण्ड खों भरत भई जमड़ार नदी उफनती भई आगे जाकें गनेश गंज के ऊपर से निकर कें बरी घाट में एक हल्के बांध में समाजात भई। आगे निकर कें बांध की सरपट के ऊपर होकें बउत जात है। तनकई आगे जाकें जामनी नदी में समा जात है। जामनी आगे जाकें ओरछा में बेतवा नदी में मिल जात है। ई नदी को फैलाव कम है, छोटो रूप है। पर जा नदी लाखन लोगन की प्यास बुझाउत है और हजारन एकड़ जमीन खों तृप्त करत निरन्तर लगातार बैरई है। ई नदी कों नाम सोऊ नोनों लगत है। ई के नाम की भी रोचक बात है। जा नदी अस्तौन सें निकर कें जैसई जमड़ार गाँव में होके निकरी तैसई ई को नाम जमड़ार पर गयो और अपनों नाम पावे के बाद हाली - फूली जमड़ार नदी कूड़ादेव में आकें भोले बब्बा के चरण पखार कें पुन्य सरिता बन जात भई। कूडा्देव बब्बा के बारे में जनश्रुति है कै जिते आज भोले नाथ बिराजे है उते पैले इक पहाड़िया हती। ओई पहाड़िया पै दस - पन्दरा घर खटीक जात के थे। वे उतै सबई जनें हिल मिल कें रत ते। मेन्त मजूरी करकें अपनों पेट पालत ते। इकवार इक खटीक की घरवाई उखरी में धान डार कें मूसर सें कूट रई ती तबई ऊ नें देखौ कै मूसर की चोट लगतन उखरी में रकत कड़ आव। वा घबरा गई उर चिल्लाकें भगी ऊनें सवई बड़े बूढ़न खों सबरी बात बताई कै ऐसो - ऐसो भयो। सब जनें जुर कें आये और बो नजारौ देख कें कौनऊ अनहोनी मान कें कन लगे कै अब धान न कूटियो। सबई जनें बैठ कें आपुस में बतियान लगे। काऊ ने कछु कई काऊ ने कछु कई। जौ बतकारो होत भयो। तवई इक बुजुर्ग ने कई कै इक मतो वन रयो है कै ई उखरी के चारऊ ओर धीरे धीरे खुदवाओ सब पतो पर जै। तबई ऊ घरैनी ने बताई कै हमें आज रात के भोले बाबा ने सपनों दओ के तुमाई उखरी के नैचैं हम हैं सो सब मिलकें हमें निकार लो, ई सें तुमाव नाव हुईये। सबने मिलकें धीरे धीरे खुदाई करी। तवई शिवजी स्वयंभू लिंग में दिखान लगे। सबने हाथ जोर कें पांव परके भोग प्रसाद चढ़ाव। क्षेत्र भर में सोर हो गओ कि जमड़ार नदी के किनारे पहाड़िया पै इक खटीक के घरै उखरी में भोले नाथ निकरे सो उतै मेला सौ भरन लगो। जितै मूसर लगो तो उते आज भी निशान है और उते मरहम लगाओ जात है। किंवेदन्ती है कै शोणित पुर के शासक वाणासुर की पुत्री ऊषा नित जल चढाउती। वानपुर गाँव वाणासुर के राज्य से जुड़ो तो आज भी बड़े कुण्ड खों उषा कुण्ड के नाम से जानो जात है। भगवान भोले भण्डारी की चरणरज पाकें जिमड़ार नदी पावन पवित्र होकें इठलान लगी। आज जमड़ार नदी के पावन तट पै, भोले के अंगना में सावन में संक्रांति पै महाशिवरात्रि और बसन्तन पै भारी मेला भरत है। इतै दूर दराज सें दुकाने लैकें आउत हैं। ई मेला में पूरे क्षेत्रभर सें नर - नारी आउत हैं और भोले खों जल, वेलपत्ती, धतूरा चढ़ाकें विनती करत हैं। जमड़ार के शीतल निर्मल जल सों जलाभिषेक करत हैं। भोले भण्डारी सबई की मनोकामनाऐं पूरी करत हैं। बुन्देलखण्ड को जमड़ार नदी पै बसो कूड़ादेव (कुण्डेश्वर) भोला भण्डारी कौ पावन धाम है।

-ग्राम पोस्ट पठा, टीकमगढ़ (म. प्र.)
मो. नं. 8839562727

---

***एक प्रगतिशील नरेश ओरछेश श्री वीर सिंह देव .... का शेष***

सिंह देव स्वयं साहित्यकार थे और अपनी समृद्ध लाइब्रेरी में घंटों अध्ययन करते थे तथा साहित्यकारों के प्रति उनके मन में बड़ा सम्मान था। उनके राज्य में भी अनेक राजकवियों को अर्थिक सहयोग दिया जाता था। वीर सिंह जी पत्र पत्रिकाओं में छद्म नामों से लिखते थे क्योंकि उन्हें नाम कमाने की भूख नहीं थी। उन्होंने बुन्देली महाकवि ईंसुरी की चौकड़ियों का संग्रह स्वयं किया था और उन्हें छपवाया भी था। वे चाहते थे कि तुलसीकृत रामायण का एक अच्छा अनुवाद तैयार हो और उसके लिए लोकनाथ सिलाकारी जी को दायित्व सौंपा गया था जिन्होंने काफी कार्य किया था। वे बच्चन जी के भी बड़े प्रशंसक थे।

महाराज जब साहित्यकारों के बीच बैठकर चर्चा करते थे तो उनकी हास-परिहास की रुचि और कुशलता का परिचय लोगों को मिलता था। राजा होते हुए भी उनके स्वभाव में एक फक्कड़पन रहा। उनके प्रकृति प्रेमी और सुरुचिपूर्ण स्वभाव का ही परिणाम था कि वे किले को छोड़कर बैकुण्ठी नामक कोठी में रहने लगे थे जहाँ प्राकृतिक सौंदर्य का वातावरण था। अपने समकालीन बुन्देलखण्ड के राजाओं में वीर सिंह जी अद्वितीय थे। अन्य राजाओं की सामंतवादी सोच से वे एकदम भिन्न थे। राज्य की प्रगति और जनता की भलाई के लिए अपने 17 साल के अल्पकाल में उन्होंने जो काम किये उनकी सराहना आज भी इस स्वतंत्र भारत में हो रही है यही उनके गुणी और प्रजा वत्सल राजा होने का प्रमाण है।

-राजमहल के पास, टीकमगढ़
मोबा. 7999375995

# चांदी पड़िया

– रामस्वरूप दास पाण्डेय

मठा, मठा, मठा, ।

तुमाय मठा के पीछें हमें चाय जैसी ओली ठोली सुनने आई। बरजा तुमाव मठा। तुमें मठा बिना चैन नई परत। कुजाने कैसौ सुभाव है। गुस्सा में भरी बउआ ने चपिया पटक दई। चपिया कौरा कौरा हो गई। बब्बा नें कई अरे का बात हो गई। कहू माँ से तौ कव। चीकनी चपिया काय फोर डारी। का हो गव। कछू कव बारौ।

रामदीन बब्बा गरीब ब्राह्मण हते। तीन बिटियाँ और एक लरका हतौ। तीनई बिटियन के अच्छे व्याव कर दये। लरका भौतई सूदौ सादो। ज्यादा पढ़ौ लिखौ नईं हतौ। यै संत नारायण की कथा बांच लेत तौ। बिटियन के ब्याव में खुबई खर्चा करौ। तनक सी जमीन हती। वे उयै बटिया पै दयें ते। खाबे खों घर कौ नाज हो जात तौ। गाँव गाड़े में गरीबन की गुजर मठा सें होत रत। बूढ़े रामदीन के दाँत पूरे गिर गये ते। वे मठा में मीड़ कें रोटी खा लेत ते। परोस में एक जनन कें भैसें – गइया हतीं। उनके खूब दूद, मठा होत तो। उनकी घरबाई रोजऊ उनसें मठा माँग ल्याउत ती। वे कभऊ मठा खों नांई नई करत ते। उनके लरका कौ हो गव ब्याव। घर में नई बहू आ गई। अब वा मठा दैन लगी। जब ऊने देखौ कै जे तौ रोजऊ मठा खों ठांड़ीं, सो एक दिना वाने झौंझरया कें कै दई कै रोज रोज मठा खों आ जातीं। रोज –रोज को मठा दै पाउत। मठा इत्तौ मीठौ लगत तौ भैंस काय नई लै लेतीं। बहू की ऐसी बेरुखाई की बात सुन कें बउआ बिना मठा लैंय घरै लौट आई। और उनने गुस्सा में भरकें चपिया पटक दई और बब्बा खों खरी खोटीं सुना दई।

मठा मीठौ लगत तौ भैंस काय नई लै लेत जा बात बब्बा खों गोली सी लगी। वे भैस नई लै सकत ते, पै उनने अपने मन में ठान लई कै अब तौ भैंस लैनई लैनें है। उदना उनने रोटी नई खाई। अपने खेत की एक पटिया बेंची। बनियाँ तौ ऊ पै पैलऊँ सें घात लगाँय तो। ऊ ने तुरतई रूपैया दै दये। बब्बा ने उदनई एक ग्यावन उसइया खरीदी। उसइया खरीद कें घरै ल्याये। घरबाई सें कई अरे उरैन तौ डार हम उसइया खरीद ल्याये। घरबाई नें उरैन डारौ। आंगन में एक छपरा डार दव। उतईं खूंटा गाड़ दव। ऊसैं भैंस बंद गई। अब वै दिन भर भैंस चरावैं। भैंस उनके अंगै लग गई। जब वे चाँदी कै कें ओंय करें तौ वा तुरतई उनके लिगा आ जाय। उनें कुत्ता सी पछयाँय फिरै। एक दिना गाँव के एक आदमी ने कै दई कै बब्बा तुमाई उसइया कें तौ पड़ा होंने । ऊ की बात सुनकें बब्बा उयै गरयाउन लगे। जब आदमियन ने देखो सो सबरे उन्हें चिड़काउन लगै के बब्बा चाँदी कें पड़ा होने । वे चिड़कन लगे सो गाँव के मौड़ी मौड़ा बब्बा खों देख कें कयें बब्बा की भैंस कें पड़ा होनें। वे उनै मारवे दौरन लगे, गरयाउन लगे। मौड़ी मौड़न खों खेल मिल गव।

बब्बा भुन्सारी रातें पसर काढ़त ते। गाँव सें दो मील पै नदी के सोंडे मे कैव और सुसयाउल चारौ हतौ। वे ऊपर से छप छपे पानी में सें भैंस खों ऊपारैं चराबें लै जावें। उनकी उसइया संट पर गई। अब बा उछर आई। एक दो दिन में बीबे की आसा बँद गई। एक दिना नदी के पैले पार भैंस चराबे लै गये। तनक देर में भैंस बी परी। अँदयारौ हतौ। उनने देखौ कै चाँदी पड़िया भई। वे खुसी के मारे नचन लगे। उनें कितनी खुसी भई कोऊ कै नईं सकत। वे चाँदी कें चाँदी भई चाँदी भई कै कै कें उचकन कूंदन लगे। तनक देर में उनने घरै जावे की सोची। जितै भैस ब्यानी ती उतै नदी में करयन पानी भरो तो। उनने सोची कै तींते उन्नन पैर कें इत्ती दूर कैसे जें सो उनने अपनौ पैरत कौ पंचा उतार कें अपनी मूड़ से बांद लव। और पड़िया खों ओली में लै कें नदी के ऊ पारें आ गये। ज्यादा खुशी में वे पंचा पैरवौ भूल गये। पड़िया खों ओली में लयें घरै चले। पाछूं पाछूं उनकी भैस चली। गाँव में आउतन आउतन उजयारौ सौ हो आव। वे जैसई गाँव में घुसे कै एक आदमी ने कई काय मराझ जौ काय करें। उनने कई आंदरे दिखात नईयाँ पड़िया भई पड़िया चाँदी पड़िया। फिर और आगें चले गाँव में घुसतन उनै नंगौ देख के लुगाई हँसतीं भईं भीतरै घुस गईं। आदमियन ने फिर कई का मराझ जौ काय। महाराज जोर से बोले अरे पड़िया भई पड़िया चाँदी कें चाँदी पड़िया। एसई ऐसें घर के दौरें आ गय। वायरे सें अपनी घरबाई खों टेरौ अरी किवार तौ खोल। जल्दी उरैन डार दै, चाँदी के चाँदी पड़िया भई। घरबाई भीतर सें बायरें कड़ी । जैसईं ऊ ने किवार खोले सो देखौ के पंड़ित जी नंगे ठाड़े। सो ऊने कई जौ काय। पंडित जी खुन्सया के कई। काय री का तोय हिये की फूट गईं। का दिखात नइयाँ चाँदी कें चाँदी पड़िया भई। तब घरबाई ने कई अरे पड़िया तौ भई अच्छी बात पै नंगे काय ठांडे। अब पंडित जी खों होस आव कै हम पंचा पैरवौ भूल गये। उनने झट्ट पट्ट मुड़ी पै सें पंचा उतार कें पैर लव। फिर हँस के कन लगे कै नदी में करयन पानी भरौ तौ सो हमने सोची अंदयारे में कोआ देखत, इतनी दूर तीतें उन्ना पैर कें को जाय। सो हमने अंगौछा मूड़ सें बांध लव। फिर खुशी के मायँ हम पंचा पैरते वो की खबर भूल गये। गैल भर आदमियन ने टोकौ पै हमने जानी, हमें चिड़का आ रये। अब समझ में आव कै काय हँस रये ते। घरबाई ने कईं अच्छी नगें नगें विन्तयकी सी फेरी। अच्छी चाँदी पड़िया भई। पंड़ित जी ने कई हम का करैं हमें तौ खुशी के मांय खबरई नईं रई।

ऐसे सूदे सांचे हते वे पंडित जी। अब वे दूद मठा सें हो गये।

–अचर्रा जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)

## अनंग आ समायौ है

–ग्यासीराम गुप्त 'अटल'

पिया हैं प्रवास, मम निकरत है उष्ण स्वांस,<br>
बैरी बसंत फिर आन कें सतायौ है।<br>
ये महकतीं फिजायें, दें काम को हवायें,<br>
अनिद्य अंग अंग में अनंग आ समायौ है।<br>
सोलह श्रृंगार में अंगार भरै कौन आज,<br>
कोयल की कूक हृदय हूक को बढ़ायौ है।<br>
बिन बालम के फीका है आलम अलमस्त आली,<br>
ये रितुराज बसंत आगमन मन मेरे न भायौ है।

–आलमपुर, जिला–भिन्ड(म. प्र.)

# सालट जैन मूर्ति लेखों में उल्लिखित लम्बकांचुकान्वय

- डा0 कन्हैयालाल अग्रवाल

हर्षबर्द्धन की मृत्यु के बाद से 1192 ई0 में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय के बची का लगभग छह सौ वर्षों को समय उत्तरी भरत के इतिहास का अत्यन्त महत्पूर्ण काल है। इस लंबी अवधि के अधिकांश समय में किसी सार्वभौम सत्ता का अभाव था और देश आपस में लड़नेवाले छोटे-छोटे युद्धप्रिय राज्यों में विभक्त था। इन राज्यों में से एक चन्देल राज्य भी था, जो नवी शती ई0 के प्रथम चरण में प्रकाश में आया था। इस राज्य की स्थापना नन्नुक ने की। उसके पौत्र जयशक्ति के नाम पर चन्देलों द्वारा शासित क्षेत्र का नामकरण जेजाकभुक्ति हुआ। इसी राजंश में यशोवर्मा हुआ जिसने खजुराहो का लक्ष्मण मंदिर बनवाया। यशोवर्मा का पुत्र और उत्तराधिकारी धंग हुआ, जिसने भगवान शम्भू के मंदिर का निर्माण करके उसमें तण एक पाषण लिंग की स्थापना की। धंग के शासनकाल में अनेक जैन मंदिरों का निर्माण होगा, किन्तु उनमें से सबसे प्रसिद्ध जिननाथ का मंदिर है, जिसे पार्श्वनाथ का मंदिर कहते हैं। धंग का पौत्र विद्याधर अपने पितामह के समान योग्य और रणचतुर था। उसने दो बार सफलता पूर्वक महमूद गजनवी के आक्रमणों का प्रतिरोध किया। श्री कृष्णदेव[1] का कथन है कि चन्देलवंश का सर्वाधिक शाक्तिमान शासक होने के कारण उसने अपने पूर्वजों की देवप्रसाद निर्माण कराने की परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखा होगा और संभवतः इसी परम्परा में खजुराहो का विशालतम और भव्यतम् कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण उसके शासनकाल में हुआ विद्याधर के बाद विजयपाल, देववर्मा, कीत्तिवर्मा, सल्लक्षण वर्मा, जयवर्मा पृथ्वीवर्मा शासक हुए।

पृथ्वीवर्मा का उत्तराधिकारी मदनवर्मा हुआ, जिसमे 1128 ई0 से 1165 ई0 तक शासन किया। वह एक समर्थ शासक प्रतीत होता है, क्योंकि चन्देल राज्य के विभिन्न भागों से प्राप्त उसके शासनकाल के अभिलेखों और मूर्तिलेखों की संख्या पूर्ववर्तो किसी भी चंदेल शासक से कहीं अधिक है। इसके अतिरिक्त लगभग एक दर्जन स्वर्णमुद्राएँ तथा चालीस से ऊपर रजत मुद्राएं उसके राजनीतिक वर्चस्व और साम्राज्य की उन्नत आर्थिक अवस्था की परिचायक है। उसका शासनकाल इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि गोविन्दचन्द्र गाहड़वाल (1114-1154) तथा चालुक्य जयसिंह सिद्धराज (1094-1142 ई0) जैसे समकालीन विजेता भी उसका बाल बांका नहीं कर सके। इतना ही नहीं चंदेल अभिलेखों के अनुसार उसने चेदिराज संभवतः गयाकर्ण कलचुरि को पराजित किया, मालवों का उन्मूलन किया और काशिराज को मित्रवत व्यवहार करने को वाध्य किया।[2] राजनीतिक स्थिरता और साम्राज्य में शान्ति तथा सुव्यवस्था बनी रहने के कारण इस राजा के शासनकाल में सांस्कृतिक गतिविधियों की अभूतपूर्व प्रोत्साहन मिला, जिसके फलस्वरूप जैन कला और स्थापत्य का भरपूर विकास हुआ।

चंदेल शासनकाल में विभिन्न धर्मों में किसी प्रकार का कलह न था। यही कारण है कि चंदेल साम्राज्य में सर्वत्र जैनधर्म के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। मदनवर्मा चंदेल के शासनकाल में सर्वाधिक जैन प्रतिमाओं का निर्माण हुआ, जिसकी पुष्टि मूर्तियों की चौकियों पर अंकित लेखों से होती है। मदनवर्मा के शासनकाल की कुछ जैन मूर्तियों सालट ग्राम से प्राप्त हुई है। यह ग्राम महोबा जिला में स्थित है। यहां जाने के लिए झांसी-मानिकपुर रेलपथ के चरखारी रोड स्टेशन पर उतरना पड़ता है। यहां से सालट ग्राम चार कि. मी. की दूरी पर है। यहां जैन तीर्थकरों की खण्डित मूर्तियां यत्र-तत्र बिखरी मिलती है। जिससे ज्ञात होता है कि चंदेलकाल में यहां कोई जैन मंदिर रहा होगा। यहां से प्राप्त ऋषभनाथ की मूर्ति पर निम्नांकित लेख अंकित है।

1. संवत् 1210 आषाढ़ सुदि 2 सोमे मण्डिल्लपुरे श्रीमानमदन वर्म्म विजयराज्ये लम्बकं चुकान्वये साधु श्रीवलि तस्यात्मज साधु सहसू तस्य भ्राता।

2. ठक्कुर श्री आभट तस्य पुत्राः पाल्हण ताल्हण गाल्हण सूल्हण देव श्री ऋषभनाथं अभिलेख के अनुसार लम्बकांचुकान्वय वंश प्रतिष्ठापकों की वंशावली इस प्रकार है-

*साधु श्रीवलि*

*साधु सहस्* — *ठक्कुर आभट*

*वाल्हण* — *ताल्हण* — *गाल्हण* — *सूल्हण*

विवेच्य लेख से तीन नये तथ्य ज्ञात होते होते हैं-

1. लम्बकं चुकान्वय 2. ठक्कु उपाधि और 3. मण्डिलपुर

हम सबसे पहले लम्बकंचुकान्वय पर विचार करेंगे-

**लम्बकांचुकान्वय :**

सालट अभिलेख से ज्ञात होता है कि वि0 सं0 1210 (1153 ई0) में मण्डिलपुर निवासी लम्बकांचुकान्वय के चार भाइयों ने भगवान ऋषभनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी। अभिलेख के सम्पादक के0 एम0 भादरी[3] का मत है कि इस वंश के लोग लम्बा कोट पहनते थे इसीलिए उनके वंशज लम्बकंचुक कहलाने लगे। यह व्याख्या उपयुक्त प्रतीत नहीं होती क्योंकि अन्वय की परम्परा कोट आदि पहनने वाले गृहस्थों से प्रारम्भ नहीं हुई।

अन्वय के सबंध में अभिलेखों के अध्ययन से दो तथ्य सामने आते है। पहला यह कि किसी बड़े आर्चाय या गुरू के अनुयायी स्वयं को उस गुरू के अन्वय से जोड़ लेते थे। अन्वय की यह परम्परा कुछ पीढ़ियों तक ही सीमित नहीं रही, अपितु सदियों तक निरन्तर चलती रही। दिगम्बर परम्परा के अभिलेखों में "कुन्दकुन्दान्वय" इसका सबसे सशक्त उदाहरण है। दो हजार वर्षो के उपरान्त भी आज तक मूर्तियों पर कुन्दकुन्दान्वय में अपनी गणना कराकर दिगम्बर मुनि और श्रावक गौरव का अनुभव करते हैं।

अन्वय की दूसरी धारा जाति अथवा वंश को लेकर आगे बढ़ी। सैकडों अभिलेखों में जाति का उल्लेख अन्वय के रूप में हुआ है। गोलापूर्वान्वय, अग्रोत्कान्वय, गर्गराटान्वय, जयसवालान्वय आदि उल्लेख इसके उदाहरण हैं। लम्बकंचुकान्वय की संगति बैठाने के लिए जब हम विस्तार करते हैं, तब हमारे समक्ष अहार (टीकमगढ़) के तीन मूर्तिलेख और मड़फा (बांदा) के एक मूर्तिलेख में इस अन्वय का उल्लेख मिलता है। इन्हीं लेखों के अध्ययन से इस अन्वय के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

अहार के वि. सं. 1202 (1145 ई.) के अभिलेख[4] में "लंमकंचुकान्वय" शब्द अंकित है। किन्तु वि. सं. 1210 (1153 ई.) के दूसरे अभिलेख[5] में "लमेकंचुकान्वय" शब्द का उल्लेख है।

मदनवर्माकालीन विवेच्य सालट लेख भी वि. सं. 1210 में ही अंकित किया गया था। किन्तु इसमें लम्बकंचुकान्वय शब्द का ही प्रयोग किया गया है। इस लम्बकंचुक शब्द ने ही भादरी महोदय को ''लम्बा कोट पहनने वालों का सम्प्रदाय'' अर्थ निकालने को बाध्य किया होगा।

वास्तविकता या प्रतीत होती है कि लम्बकंचुकान्वय किसी आचार्य के नाम पर चलने वाला परम्परागत अन्वय न होकर मात्र एक ही जाति के रूप में प्रयोग किया गया है। बुन्देल खण्ड की गोलालारे जाति में ''लमेचू'' एक प्रसिद्ध वंश है, जो अद्यावधि विद्यमान है। प्राचीन जैन ग्रंथों को छापेखाने में छपवाकर प्रचारित करने का जो आन्दोलन दिगम्बर जैन समाज में आज से एक शती पूर्व प्रारम्भ हुआ था, उसके पक्षधर प्रमुख व्यक्तियों में नाथूराम लमेचू का नाम सर्वविदित है। वे अंग्रेजी शासनकाल में कटनी (म. प्र.) में तहसीलदार थे। पुरातनपंथी विचारधारा के लोगों की ओर से उन्हें अपने सुधारवादी कदम के लिए तीव्र विरोध का भी सामना करना पड़ा था।

अहार के वि. सं. 1210 के लेख में लमेचू शब्द को अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि यह अन्वय लमेचू वंश के लिखा गया है। यदि कंचुक शब्द का अर्थ करते हुए हम लम्बे वस्त्रधारी तलाश करना चाहे तब हमारा ध्यान दिगम्बर जैनों में प्रचलित भट्टारक परम्परा की ओर जाता है। क्योंकि ये सारे अभिलेख दिगम्बर मूर्तियां पर ही प्राप्त हुए है, इसलिए दिगम्बर सम्प्रदाय से बाहर किसी भी परम्परा पर विचार करना यहो उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। दिगम्बर संस्कृति के इतिहास में भट्टारक संस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। वे पीले अथवा केसरिया वस्त्रों का व्यवहार करते थे और लुंगी पहनकर ऊपर सिर से पैरों तक ढकने वाली चादर ओढ़ने के कारण उन्हें लम्बकंचुक भी कहा जाता था। हो सकता है कि उनकी परम्परा का मूल नाम ''लम्बकंचुकान्वय'' रहा हो और उसी आधार पर गोलालारे समाज में वंश का प्रादुर्भाव हुआ हो, जिसे कालान्तर में लमेचू कहा जाने लगा।

इस अन्वय का उल्लेख करने वाला एक और महत्वपूर्ण अभिलेख बांदा जिले के बदौसा थानान्तर्गत मड़फा पहाड़ी दुर्ग पर उपलब्ध है। बदौसा से यह स्थान 13 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है। यहां का अभिलेख 8 पंक्तियों में अंकित है। अक्षर घिस जाने के कारण पहली, दूसरी और चौथी पंक्ति ही पढ़ने में आ सकी। विवेच्य लेख में सन्दर्भित विषय के सबंध में अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्यों का उल्लेख है। अत: वाचन योग्य पंक्तियां इस प्रकार–

1. संवत् 1404 वैशाख सुदि श्रीमलसंघे बलात्कारगणै सरस्वतीगच्छ कुन्दकुन्दान्वये।।
2. ..........चारुकीर्तिदेव सिद्धान्तिक..........बसन्तकीर्ति
3. राजगुरू भट्टारक श्रीप्रता (प) चन्द्रदेव लमकंचुकान्वये ............साधु हले।

सुमतिनाथ प्रतिमा पर उत्कीर्ण वि0 सं0 1404 के इस लेख से निम्नांकित तथ्य सात होते है–

1. यह लेख मदनवर्माकालीन सालट मूर्तिलेख से लगभग दो सौ वर्षो बाद लिखा गया है।
2. इस लेख में मूलसंघ, बलात्कारगण और सरस्वतीगच्छ के साथ ''कुन्दकुन्दान्वय' शब्द का स्पष्ट उल्लेख है।
3. लेख में मूर्ति निर्माता के परम्परा गुरूओं के रूप में भट्टारकों कर परम्परा अंकित है। चारूकीर्त्ति, सिद्धान्तिक कीर्तिदेव और बसन्तकीर्ति नाम भट्टारकों के ही होना चाहिए।

सह तथ्य इससे भी स्पष्ट हो जाता है कि मूर्ति निर्माता ने लेख की चौथी पंक्ति में अपने साक्षात गुरू प्रतापचन्द्रदेव नाम के पूर्व ''राजगुरू भट्टारक श्री'' पद का प्रयोग किया है।

4. अभिलेखों में परम्परा और अन्वय के उल्लेख के साथ वंश अथवा जाति को अन्वय नाम से लिखने की परम्परा रही है। इस मूर्ति का निर्माता 'कुन्दकुन्दान्यक' लिखकर स्वयं 'लम्बकंचुकान्वय' लिखवाकर अपना परिचय अंकित कराता है।

इस प्रकार मड़फा दुर्ग की सुमतिनाथ प्रतिमा पर अंकित यह लेख हमें यह निश्चित करने में साधक बनता है। कि मदनवर्मा कालीन निवेच्य लेख का ''लम्बकंचुकान्वय'' शब्द लमेचू जाति के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। भले ही यह लमेचू शब्द लम्बा उत्तरीग्र धारण करने वाले भट्टारकों के अनुयायी लंबकंचुकान्वय के अपभ्रंश के रुप में प्रचलित हुआ हो।

**मंडिलपुर :**

मंडिलपुर का उल्लेख खजुराहो से प्राप्त वि. सं. 1208 (1151 ई.) के मदनवर्माकालीन अभिलेख[6] में भी मिलता है। कीलहार्न[7] ने इस अभिलेख का सम्पादन करते समय स्थान का नाम मंडिलपुर पढ़ा था। किन्तु डॉ. एच. वी. त्रिवेदी[8] ने चन्देल कार्पस में इसनाम को महिलपुर पढ़कर इसका अभिज्ञान छतरपुर नौगांव मार्ग पर स्थित महेबा नामक स्थान से किया है। संभवत: डॉ. त्रिवेदी ने वि. सं. 1210 का सालट जैनमूर्ति लेख नहीं देखा, जिसमें स्थान का नाम मंडिलपुर बिल्कुल स्पष्ट है। अत: डॉ. त्रिवेदी की पहचान युक्तिसंगत नहीं है। पृथ्वीराज रासो से ज्ञात होता है कि सिर सागढ़ पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद जब पृथ्वीराज चौहान ने महेबा को घेरा बन्दी तब उसकी सेना का शिविर मंडिलपुर के समीप लगा था। चन्द्रायसा में इसे माडिल लिखा गया है और आल्हा पढ़ने वाले इसे सालट कहते हैं। यहां अब केवल सालट नामक एक छोटा सा ग्राम आबाद है और माड़ल नाम से विख्यात है। महोबा जिला मुख्यालय से 18 कि. मी. पश्चिम में स्थित इस स्थान में अद्यावधि चन्देलकालीन पुरावशेषों की बहुलता है। इन्हीं अवशेषों मे विवेच्य मूर्तिलेख की तीर्थकर प्रतिमा भी है।

**संदर्भ –**


1. ऐंश्यंट इण्डिया, ,खण्ड 15 पृ. 45
2. एपि. इण्डि., खण्ड 1, पृ. 198, 205
3. स्वस्तिश्री पृ. 137–38
4. जैन, कस्तूरचन्द्र, अहार क्षेत्र के अभिलेख, पृ. 100
5. वही, पृ. 123
6. ''मंडिलपुरात ग्रहपत्यन्यवे श्रेष्ठि माहुल''कार्पस, खण्ड 7, पृ. 409
7. जर्नल आफ दि एशियाटिक सोसायटी, 1898, पृ.101 तथा आगे।
8. कार्पस, खण्ड 7 पृ. 409



–ट्रेजरी रोड, पलटन मस्जिद के पास,
नौगांव जिला छतरपुर(म.प्र.)471201
मो. नं.–09424911221

# मिंदिया

–महेश कटारे 'सुगम'

रेलगाड़ी सरकन लगी ती। लकड़ियन के गट्ठा खौं भीतर सरका कें मिंदिया अपनी फूली सांस पै काबू पान लगी और सँगे सँगे उन सवारियन खौं आशीषत जा रई ती जिननें लकड़िया कौ गट्ठा चढवावे में ऊखों सहारौ दऔ तौ.–"ऐ वीरो राम तुमाओ भलौ करै. दूध करूला करायै भगवान. तुमाये पुतरन खौं खुशी राखवै ईशुर।

मिंदिया रोज कोउ कोउ खौं ऐसेंई अशीषत है. कोउ कोउ खौं गरयात है जब कोउ ऊखौं रेल के डिब्बा में लकड़ियन कौ गट्ठा नईं धरन देत, और वा पलेट फारम पै ठाड़ी रै जात ओर रेल चली जात है, तौ वा उनें खूबई गारीं देत है– "नासमिटे, ठठरी के बंधे. रेल खौं अपने बाप की जागीर समझत हैं" रिजर्व शब्द सें तौ ऊ खौं घिनापन सौ लगत है जी डिब्बा में जाओ, उतइ सें चिल्ल्यान लगत हैं " रिजरब है. दूसरे डिब्बा में जाओ" दुत्कार कें भगा देत हैं, औश्र वा एक डिब्बा से दूसरे तीसरे चौथे डिब्बा में भगत फिरत है. तौ ऊ खौं ऐसौ गुस्सा आत है कै इन रिजरब वारन कौ मौ लोंच लेवै
पैसा की दम पै पूरी गाडी रिजरब करा लेत हैं इत्ती लम्बी गाडी में दो डिब्बा आंगे और दो डिब्बा पाछें ऐसे है जो रिजरब नई होत बस. उनमें भीड़ इत्ती होत है कै पाँव धरवे तक खौं जगा नईं रेत,

–"दस्सू ! बैठ जा" मिंदिया ने अपने मौड़ा खून बैठवे कौ इशारौ करौ. दस्सू गट्ठा पै बैठ गऔ मौड़ा के लिगा बैठवे के लानें जैसई ऊ नें अपनी धोती संवारी, वा धक्क रै गयी. किनारी के ऊपर धोती फट गयी ती. वा उतरौ मौ लै कें सोचन लगी.

मईना भर तौ नईंयाँ अबै, और धुतिया में खौंप लग गयी. कित्ते जतन सें ओढ़त पैरत है साबन सोडा कौ तौ मौ तक नईं देखन देत उन्नन खौं. जब जाकें साल भर तक चला पात है ऊ खौं पतौ है कै साबन सोडा कपड़न खौं चुन चुन कें खा जात हैं ऐई सें सपरवे के बाद धुतिया खौं खूब पानी में फिलोर फिलोर कें धोत है.

धोती कैसे फटी? वा सोचन लगी. हो सकत खाट में बीद कें फटी होय, कै सोत में नईं तर ऐसौ तौ आज तक नईं भऔ कै ऊ की धुतिया फट जाय और ऊ खौं पतौई नईं परै ऊ के सोच नें करोंट लऔ , हो न होय किबरिया में बीद कें फटी हैं. और तबई ऊ की सुर्त जग गयी. वा जब एक उखरे सूखे पेड़ पै कुलारी चला रई ती तबई रमरतिया नें ऊ सें आकें कई हती कै गिरन्टी आऔ है।

–"तोय कैसें पतौ"? मिंदिया फुस फुसाई

–"फुलिया खौं दिखानौ है. खाकी कपड़ा पैरें हैं. होत में डंडा लयें हैं".

फिर ऊ नें कछु नईं सुनी कुल्हारी लै कें रमरतिया के सँगे भगी कै थान पै आ कें रुकी ई बात कौ ऊ खौं खुद ताजुब होत है कै आफत के टेम के बूढ़े शरीर में इतनी हिम्मत कां सें आ जात वैसें तौ वा तनक में हाँफन लगत है डग मग डोलन लगत है.
–"काकी ओ काकी", रमरतिया ने ऊ झकझौरौ –"चलौ अब"
–"रतिया मोरे बसकी नईंयाँ–
"लकड़ियाँ उतई डरीं रें हैं का"? रतिया नें पूछी
–"चूले में जांय वे लकड़ियाँ मोरे तौ सब करम हो गए" मिन्दिया नें मुश्कल सें आँखें खोलीं
–"बस काकी इत्तई में ..............." रतिया हँस दी

मिंदिया खौं धोती फटवे कौ दुःख भौत साल रऔ तौ। मन में सोचन लगी, नईं भगती तौ गिरन्टी कर लेतौ. लकड़िया छुड़ा लेतौ, पकर कें लै जातौ, तबई ऊ खौं ध्यान आऔ अगर कुल्हारी छुड़ा लेतौ तौ.........वा मनई मन कंप सी गयी
कुल्हारी तौ ऊ की जिंदगी आय. कुल्हारी के भरोसे तौ वा जिंदा है. नईं तर...................

नासमिटौ, ठठरी कौ बंदौ, खुद तौ रात में हरे हरे पेड़ कटवा कें ट्रक में भरवा देत. और हमें सूकी लकड़ियाँ नईं बीनत देत. सूकी लकड़ियाँ अपने कुटुम वारन खौं जलावे के लानें रखा रऔ का.

रेलगाड़ी कूका मार कें ठाड़ी हो गयी टेसन आ गऔ तौ, मिंदिया खौं चेत सौ आऔ. पतौ है ई टेसन सें दो सिपाई चढ़त हैं और हर गट्ठा के दो रुपैया वसूलत हैं.

–"दस्सू सिपाई आ रऔ".मौड़ा खौं सचेत कर कें खुद तनक दूर जा कें ठाढ़ी हो गयी. रेलगाड़ी फिर सरकन लगी. सिपाई नें डंडा सें गट्ठा को ठोकौ. वा देखत रई. सोचत रई निकर जाय तौ नौनी रय. सुमरत रई भगवान खौं. हे ईशुर दो रूपया बच जांय.

सिपाई नें पुलिसिया नजर सें इतै उतै देखौ. और फिर चिल्ल्यांन लगौ –" जे गट्ठा की कौ है".वा नईं बोली देखत रई सिपाई नें फिर पूछी, वा फिर नईं बोली. सुमरत रई कारस देव, बाबा जू खौं . मनौ पुलिस वारौ ठेरौ पुलिस वारौ. आव देखौ नें ताव गट्ठा खौं उठान लगौ. मिंदिया घबरा सी गयी. ई नासमिटे कौ कछू भरोसौ नईंयाँ. सो चिल्लया कें बोली –"ऐ मालक हमाऔ आ"

–"तौ बोलत काय नईंया. बीच रस्ता में पटक दये हैं, लोगन खौं कित्ती परेशानी हो रही है
".सिपाई की बातें सुन कें वा
मनई मन उबल परी,–" हरामजादौ देखौ रूपियन के लानें कैसी बातें बना रऔ है" खिसयानी सी हंसी हँसत मिंदिया चिरौरी सी करत बोली–"मालक तनक फरागत खौं आ चली गयी ती. रोज के तुम और के हम ई में बोलवे नें बोलवे की का बात या मालक."
ऊ नें दो कौ नोट निकारौ और सिपाई खौं दे दऔ. सिपाई आगे चलौ गऔ.

दो मौड़ा अपनी सीटन सें उठे और सिगरेट कौ धुंआ उड़ात गेट पै आकें ठाढ़े हो गए. आपस में बातें करन लगे –"सारा जंगल काट के बेच दिया इन लोगों नें ." दूसरे ने सिगरेट कौ सुट्टा लगाऔ और बोलौ– "कुछ मत पूछो भाई तीसों दिन बारहों महीने इनका ये ही काम है. बच्चे पैदा करते हैं, उनहें पढ़ात लिखाते तो हैं नहीं बस इसी काम में लगा देते हैं."

मिंदिया उनकी बातें सुन कें फट सी परी –"भैया कर हैं तौ खा हैं का. पेट पै पथरा बांदे जात होते तौ वे बाँध लेते.
रई बात पढ़ावे की सो नईं चाहत अपनी औलाद खौं पढ़ावौ. मनौ जी कौ बाप मर जात ऊ सें पूछौ कै पढ़वो जरूरी तौ जब है जब जिंदा रै हो जब जिंदा नईं रै हौ तौ पढ़ हौ का हाड़" लड़का तौ फिर कछू नईं बोले मनौ वा जरूर खुदई खौं कोसन लगी ऊ नें दस्सू खौं का दऔ नें सुख , नें ढंग कौ खावौ पीवौ नें अच्छे कपड़ा लत्ता, किताबन की जगा ऊ खौं कुल्हारी पकरा दई. ऊ खौं खुद पै शरम सी आन लगी . ऊ की

आंखन के आंगे दस्सू की फटी नेकर, सूखे बार, दिरकी देह, और मूँड पै लकड़िया का गट्ठा नचन लगौ। जिन हाथन में किताब चानें ती, उनमें ऊ नें कुल्हारी दै दई। मानौ फिर ऊ ने खुद खौं समझावे की कोशिश करी. ठीक रई दो पैसा कमान लगौ, थोरौ पढ़ लिख जातौ तौ ऊ सें का हो

जातौं, अच्छे अच्छे पढ़े लिखे तौ चप्पलें चटकात फिर रये. वा कछू और सोचती कै एक आदमी नें ऊ सें पूछी –'' क्यों अम्मा ये लकड़िया काट कर क्यों बेचती हो

मिन्दिया नें ऊ आदमी खौं ऊपर सें नेचें तक देखौ फिर बोली –'' भैया हम सूखी लकड़िया बीनत हैं, हरे पेड़ नईं काटत. हम तौ जौ सोई नईं करते, मनौ का करें, पेट के लानें सब करनें परत है. नईं करें तौ खाहें का. '' वा टेक रुकी और फिर कैंन लगी –'' भैया तुम हमें तौ ज्ञान सिखावे आ गए, कभऊँ उनसें जा कें तौ कओ जो पैसा के भैराट में आदमियन के गरे काट रये. तिजोरीं भर रये. कछू ऊँच नीच नईं देख रये. सात पैरियन खौं कमा कें धर दऔ मनौ पड़सन की भूख है कै मिट तई नईंयाँ.''

–''अम्मा तुम भी तो चोरी करती हो''.आदमी नें उसकीरौ

–''भैया करत तौ हम सोई चोरी हैं. साँची कै रये तुम .मनौ गिरत्नी खौं पैसा दै दो तौ साउकारी हो जात . ई डब्बा में लकड़ियाँ लै जावा जुरम है, पुलस वारे खौं दो रुपैया दै दो फिर जुरम नईंयाँ ''फिर एक उसाँस भर कें बोली –'' भैया जे कानून फानून, नियम, कायदा सब हम गरीब गुरबन के लानें या बने डाकू तौ इनें अपनी जेब में डारें फिरत हैं. जब जरूरत परत है चांदी कौ जूता कानून के मौ पै मार देत हैं फिर कानून तक की बोलती बंद हो जात है.''

मिन्दिया की बातें सुन कें आदमी मंसूमा उतै सें चलौ गऔ, और वा खिड़की के बायरै देखन लगी. गाड़ी भगत जा रई ती. पेड़ पीछें छूटत जा रये ते. वा सोई पीछें लुढ़क गयी और उतै जाकें अटक गयी जब ऊ की जमीन पै मऊआ के पूरे बीस पेड़ हते . साल भर कौ खर्च मौअन सें पूरौ पर जात तौ. ऐसी उनारी होत हती कै अन्न की तन्न हो जात्ती. मनौ सरकार नें बन्दा का बनवाऔ गांव भरे की जमीनें और पेड़ लील गऔ. और ऐई दुःख में दस्सू के दादा ऐसे गिरे कै उठ नईं हो पाये. बीमारी उनके प्रान लै केंई घर सें बायरी भई.

मिन्दिया पुरानी सुर्त में ऐसी उरझी कै ऊ खौं पतौई नईं परौ कबै निकर गऔ. वा तौ और उरझी रेती अगर टी. टी. आकें ऊ सें पूछतौ –''टिकिट''

'' नईंयाँ मालक''

–''क्यों नहीं है''. टी. टी. ई नें ऊ पै आँखें तरेरी''

–''हजूर गरीबन पै टिकट कां सें आऔ''. वा रिरयानी

–''तो गाड़ी में क्यों बैठती हो. निकालो सौ रुपये जुर्माना''

–''सौ रुपैया होते हजूर, तौ बिलाउट काय खौं चलते. रोटीयन के तौ लाले हैं. टिकट कौन खौं सूझत'' ऊ नें हिम्मत बटोर कें कई.

ऊ की बात सें टी टी ई ताव सौ खा गऔ, बोलौ–''हाँ टिकिट क्यों लोगी. बाप की गाड़ी समझ रखी है न. जेल की चक्की पीसोगी तब पता चलेगा.''

टी टी की बात सुन कें वा मनई मन सोचन लगी. जे तौ ऐसें कै रऔ है जैसें जेल के बायरै हम राज कर रये होय. दो रोटीयन के लानें जो कछू करत हैं, ऊ के आंगे चकिया पीसवौ तौ भौत सरल है लकड़िया कौ गट्ठा मूड पै धर कें दो मील जी दिना चल हैं ऊ दिना पतौ पर जै है कै चकिया पीसवे सें जादा कठन काम रोज आदमी करत हैं ऊ खौं चुप देख कें टी टी ई नें फिर टोकौ –'' क्यों बुढ़िया निकालती है बना दूँ जेल का टिकिट''.

–''जैसी मालक की मर्जी, दो रोटी खानें सो जल में मिल हैं. ई रोज रोज की जान खाऊ मेंहत सें तौ बचहैं''. मिन्दिया नें एकई सांस में पूरी बात कै दई, टी टी नें चश्मा उतारौ, रूमाल सें पोन्छौ फिर आँखन पै लगा कें मिंदिया खौं अछी तरा सें देखौ. वौ नईं समझ पा रऔ तौ कै का करें. ऊ की आँखें मिन्दिया की टूटी टायर की चप्पलन सें सरकत भई बिवाई सें फटे करिया पाँव , चौड़ी किनारी की धोती, फटो सलूका, दिरके हाथ, और मौ पै ऊँग आई झुर्रियन खौं देखत भऔ सफेद बारन पै आ कें गयी . ऊ कौ मन मिन्दिया के घर और जेल की तुलना करत करत आगे खौं चलौ गऔ. अब मिन्दिया गट्ठा पै और तन कें बैठ गयी।

–काव्या, चन्द्र शेखर वार्ड
बीना, जिला सागर (म.प्र.)
मोबा. 09713024380

---

## *तीन बुन्देली गजलें*

**–डॉ.–शिवाजी चौहान**

(1)

चलतन में तो चक्कर आरए। मैराथन में नाव लिखा रए।।
कै रए दौनागिर उठावने। अपनो बजन उठा नई पा रए।।
भूकन मारे बाप मताई । तेरई दुनिया भरे खवा रए।।
रात दिना तो झूठी बोलत। खुद खों हरिसचंद बतला रए।।
औरन के कंधों पै धर कें। चायें जब बन्दुक चला रये।।
नाच न आबे आँगन टेढो। कै कै अपनें प्रान बचारए।।
पैलें वाकौ घर बाड़ारौ। दौर दौर फिर आग बुझा रए।।
आँख के अन्धे नाव नैन साुख। गैल आँदरन खों बतला रए।।
दूद के धुबे बनत है जबकी। बैतरनी में रोज नही रए।।

(2)

ऐरा गैरा नत्थू खैरा। पद खों पर रए भैरा भैरा।।
रहे पारूआ जो औरन के। उनके घर पै लग रए पैरा।।
काला आखर भैंस बराबर। उनके सिर पै बांध रए सैरा।।
इतै उतै नैकऊ ना बैरऔ। एक जगा पै पानी ठैरा।।
डूब गए तौ उबर न पैहौ। तला बेइमानी कौ गैरा।।
सीदे सादे भूकन मर रए। लडुवा मसकत कुरुवा लैरा।।

(3)

है कानात गाँव के अँदरा। जानत गाँव भरे के खदरा।।
तला खुदे नइयाँ पैलऊ सें। देखौ आन लगे है मैंगरा।।
लडकदोंद पर गई पछाई। टोर खात है खीरा डँगरा।।
बिटिया दिन पै दिन कम हो रई। टोरयात फिर रए है लँगरा।।
जौ अन्धरे तकौ सत्ता में। घुस गए डाकू मूरख लबरा।।
वे तौ फूले गुब्बारे से। इतै सूक कै हो गए झकरा।।
जो रिसपत की टानिक पीरए। परे 'शिवा' मातन के बकरा।।

–गुरसराय झाँसी

# एक सात्विक कवि का अवसान

-डॉ. लखन लाल खरे

'हलो' कहते ही उधर से हृदयविदारक समाचार मिला - उरई में रामस्वरूप जी नहीं रहे। अवाक! हतप्रभ!! न बीमारी, न लाचारी चलते-फिरते मुक्त हँसी हँसते चला गया एक सात्विक कवि, सजग लेखक। युग बदला, पर नहीं बदला स्वरुपजी का अंतर्बाह्य। केवल एक परिवर्तन स्वीकार किया उन्होंने-मोबाइल । परन्तु बात सुनने और करने के अतिरिक्त न उन्होंने वाट्सअप चलाना सीखा, न फेसबुक। इसकी उन्होंने आवश्कता हाँ महसूस नहीं की। इसका तात्पर्य यह नहीं कि वे रुढ़िवादी थे और नई वैज्ञानिक तकनीक के विरोधी। उनका स्पष्ट मत था कि जिस दिन कलम-किताब को समर्पित मेरी उँगलियाँ मोबाइल एप की ओर आकर्षित होंगी, उसी दिन से मेरी रचनाधर्मिता के लिए समय का अभाव उत्पन्न हो जाएगा।

सितम्बर 1932 में ललितपुर जिले की महरौनी तहसील के छोटे से ग्राम भौड़ी (गुढ़ा) में जन्मे स्वरूप जी की प्रारंभिक शिक्षा ग्राम की जीर्ण-शीर्ण पाठशाला में हुई। ग्राम के प्राकृतिक सौंदर्य और दैन्य समाज से उदभूत करुणा ने किशोर स्वरूप को गहरे तक प्रभावित किया। आगे चलकर इनके काव्य में इसी प्रेम और करुणा का विस्तार हुआ। स्वतंत्रता पूर्व के विषम सामाजिक वातावरण में दीन-दलितों पर किये गये अत्याचार तथा बेगार देखकर स्वरूपजी का बाल - मन आक्रोश और विद्रोह से भर उठता। परन्तु श्री वंशीधर खरे और माता राजरानी का दुलारा स्वरूप उस आक्रोश और विद्रोह को पी जाता। कैशोर्य से संचित यही आक्रोश व विद्रोह कवि रामरूवरूप खरे की युवा और प्रौढ़ लेखनी से निःसृत हुआ। कवि को जानने वालों में ऐसे बहुत कम हैं जो जानते है कि स्वरूपजी अच्छे कवि और रचनाकार के साथ एक अच्छे चित्रकार भी रहे हैं। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद का आगमन सन् 1952 में कुण्डेश्वर में हुआ था उन्होंने ने कवि के द्वारा बनाये गये आजाद, भगत सिंह, लक्ष्मीबाई आदि के एवं अन्य प्राकृतिक दृश्यों को प्रदर्शित करने वाले चित्रों की भूरि भूरि प्रशंसा की। इतना ही नहीं कुछ चित्रों को प्रसादजीने भेंट स्वरूप सहर्ष ग्रहण किया। काव्य और चित्रकला के अतिरिक्त आपने रामलीला तथा नाटकों में अभिनय किया, निर्देशन किया और संवाद लेखन किया।

सन् 1947-48 में आप गृहस्थ संत श्री भवानी शंकर जी के सानिध्य में आये। यही से कवि ने अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर लिया। प्याज-लहसुन, मिर्च मसाले से रहित भोजन और केवल कुर्ता-धोती धारण करना-अंतिम सांस तक इस व्रत का पालन किया। स्वरूप जी आजीवन अपने गुरू के प्रति सर्वस्व रूप से समर्पित रहे।

अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त स्वरूप जी ने स्वाध्यायी रूप से इण्टर बी. ए.-बी. एड. (सागर विश्वविद्यालय) तथा एम. ए. जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। अत्यन्त संघर्ष करते हुए इन्होंने अपनी शैक्षणिक यात्रा समाप्त की। सन् 1953 में दतिया जिले से शिक्षकीय दायित्व संभाला। केन्द्रीय विद्यालय उनाव में प्रधानाध्यापक, हायर सेकेण्डरी स्कूल सेंवड़ा में व्याख्याता, गोठ मुरैना में शैक्षणिक सेंवाएं देने के पश्चात अगस्त 1966 से डी. ए. बी. हुए। सेवा के प्रारंभिक दिनों में ही 16 जून 1953 को रामस्वरूप जी का विवाह अत्यन्त सादगीपूर्ण ढँग से कमला देवी के संग सम्पन्न हुआ। श्रीमती कमलादेवी का निधन छह वर्ष पूर्व हुआ।

रामस्वरूप जी की प्रथम कविता 'होली' सन् 1948 में 16 वर्ष की अवस्था में अलीगढ़ से निकलने वाली पत्रिका - 'शिक्षा सुधा' में छपी। इसर वय में स्वरूप जी ने एक हस्तलिखित पत्रिका का लेखन व सम्पादन किया। अध्यापकीय जीवन में इन्होंने 'बालरश्मि', 'ज्योत्सना', 'मधुस्पंदी', तथा 'अभिनव ज्योति' पत्रिकाओं का सफल सम्पादन किया। गत बीस वर्षो से अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका - 'शोधार्णव' का सफल सम्पादन किया। इस माह अर्थात दिसंबर 17 का उनका अंतिम अंक था। इस पत्रिका ने साहित्य के अनेक अनछुए प्रसंगों को उद्घाटित किया। रामस्वरूप जी द्वारा संपादित शोधार्णव का बुन्देलखण्ड अंक अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। इस पत्रिका के नारी विमर्श, दलित विमर्श नवगीत विशेषांक, नई कविता विशेषांक आदि भी अत्यन्त लोकप्रिय रहे।

स्वर्गीय रामस्वरूप जी की प्रथम प्रकाशित कृति थी 'श्रीकृष्ण गारी'। उन दिनों बुन्देलखण्ड में विवाह एवं अन्य अवसरों पर गारी गाने का अत्यधिक प्रचलन था। इस आठ-दस पृष्ठीय पुस्तिका उस समय समादृत हुई और पुस्तिका की मांग भी खूब हुई। इस कृति में संकलित यह गारी तो अत्यन्त चर्चित रही-

तुम्हें टेरत है आज दीन द्रोपदी। श्याम कहाँ देर लगा दी<br>
बैठे पाँचों प्राण पियारे। भीसम कर्ण धर्म रखवारे<br>
मुख से कोउ न बैन उचारे<br>
दुस्सासन ने सारी उघार दी। श्याम कहाँ देर लगा दी।

अनेक सम्मानों से सम्मानित स्वरूप जी अब तक निम्नलिखित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं-

**<u>काव्य</u>**

कृष्णगारी (1950), अर्चना (1963), नये युग का अभिनव निर्माण (1967), ज्योति किरण (1967), शतमन्यु (खंडकाव्य-1969) मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र (1972), पूजा के फूल (1974)

**<u>गद्य साहित्य</u>**

हिन्दी भाषा का परिचयात्मक ज्ञान, काव्य दर्पण, भाषा विज्ञान, संध्या हो गयी (कहानी संकलन)

**<u>अनुवाद</u>**

गीता पद्यानुवाद, सत्यानारायण व्रत कथा

**<u>अप्रकाशित साहित्य</u>**

युगध्वनि, युग स्वर, वन्दना, कल्पना, नीराजना, माधुरी, भावना, अधखिले फूल, अपर्णा, प्रेरणा, माधुरी (सभी काव्य) इनके अतिरिक्त सैकड़ों आलेख और अन्य गद्य विधाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन केन्द्रों से प्रसारित हुई हैं। अभी डॉ0 रामस्वरूप खरे जी की अनेक गद्य रचनाएँ अप्रकाशित हैं।

डॉ0 रामस्वरूप जी के काव्य का मुख्य स्वर अध्यात्म पोषित मानवीयता रहा है। फिर भी उन्होंने सामाजिक पक्ष को अनदेखा नहीं किया है । इनके गद्य साहित्य में केवल और केवल मानव की चिंता की गयी है।

शैली व्यक्ति के व्यक्तित्व की सूचक होती है। जैसी साफ स्वच्छ सादगी स्वरूपजी के बाह्य आकार में झलकली रही, वैसा ही निर्मल, सौम्य और शान्त उनका अन्तर रहा-प्रत्येक विकार से रहित। काव्य में भी उनकी यही निश्छलता, तरलता और सादगी प्रतिबिंबित होती है। सरल -सहज संस्कृत निष्ठ शब्दावली का सौंदर्य प्रसादजी, पंतजी और निरालाजी का स्मरण दिला देता है-

लुटाता सौरभ वही प्रसून, प्रथम जो खिलता काँटों बीच
वही दे पाता अभिनव ज्योति, दीप जो हँसता तम के बीच

अहं जब तक रहता अवशिष्ट व्यक्ति का मन फिरता पथ भ्रष्ट
दूसरों का कर अहित सदैव, स्वयं बनता है अधम निकृष्ट

यही है जागरूक का धर्म, लड़े अन्याय के साथ
न्याय पर कर दे प्राणोत्सर्ग, झुकाये कभी प अपना माथ

डॉ0 रामस्वरूप खरे जी का सतत् संपर्क राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, महावीर द्विवेदी, प्रसाद पंत, निराला, महादेवी वर्मा डॉ0 वृन्दावन लाल वर्मा प्रभृति साहित्यकारों से रहा है और इनसे पत्र व्यवहार भी होता रहा है। इन साहित्यकारों का पर्याप्त प्रभाव स्वरूपजी पर पड़ा। स्वरूपजी से जो एक बार मिला , वह उनकी मधुर वाणी तथा मुक्त ठहाकों के प्रति समर्पित हो गया। चिन्ता और क्रोध उनका सामीप्य पाने तरसते रहे, पर उनकी अभिलाषा पूरी न हो सकी। पत्नी श्रीमति कमला देवी (मेरी मामी) के आकस्मिक निधन के पश्चात भी श्री रामस्वरूपजी ( मेरे मामा जी) का धैर्य अडिग रहा, उनका स्वभाव अपरिवर्तित रहा। इसे ही श्रीमद्गीता तथा अन्य शास्त्रों में 'निज स्वभाव में स्थित होना' कहा गया है। एक आदर्श शिक्षक, सात्विक कवि और महामानव के अवसान से सहसा शून्य-सा बिखर गया साहित्य-जगत में।

10 दिसंबर 2017 की रात्रि को अंतिम सांस लेने वाले स्वरूप जी सादर नमन!!

-प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय करैरा
(शिवपुरी) म. प्र.
संपर्क:- 9425137859

**श्रद्धांजलि**

*बुन्देली उत्सव के सक्रिय सहयोगी*
*डॉ. एम.एल. पिपरसानियाँ, श्री हशमत छतरपुरी*
*एवं झाँसी निवासी डॉ. विश्वनाथ शर्मा*
*व डॉ. सुधा गुप्ता के आकस्मिक निधन पर*
*बुन्देली विकास संस्थान गहन शोक व्यक्त करता है।*

# मुरलिया उर ढुलकिया

-गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त

एक बेरें का भओ कै एक मंदर में मुतके लौ भगत जुरे ते। गान तान के संगै भजनन खों भगत गाउते। भगवान की भक्ती में भगत डूबे भओ मगन होकें लौलीन हते। काये कैं पूरौ मंदर पिरभू की धुन में उनई की सुरत में रंगो रचो बसो तो। लोगबाग पूरे भक्ति भाव में तनमय होकें सुन रये ते। मुरलिया की धुन कानन में रस घोररइ ती उर ढुलकिया की गमक ऊकी ताल सुर में मिला कें भौतई नोंनी सुहा रई ती। सबई अपनी अपनी धुन में मस्त हते।

ओई बीचां अचानक एक घटना घट गई। का भओ कै ढुलकिया के मन में एक बात घर कर गई सो उयै मनईं मन भौत आँसो। पै मन में भरी खुटपायें भलाँ किती देर लौ चैन सें रैन देय। सो मन कुलबुलानों उर ऊनें अपनें भीतरेंई भीतर घोको - कै देखौ तौ मुरलिया खों कै बा तौ ओंठन सें लगी भई है। इत्ती सुरत आउतई ढुलकिया के हिये में कसक आंसन लगी। ऊ करिया चितकबरी मुरलिया खों इत्तौ मान-पान दओ जा रओ, भला उयै ओंठन पै धरें हैं। उर मोय मानें ढुलकिया खों दोई कोद सें दनादन धुनों जा रओ पीटो जा रओ है। ऐं भला जौ कहाँ कौ न्याव आय। का हम इत्ते गये बीते हो गए। अरे बिना हमाये का संगीत में रस आ सकत है?

अब भैया ढुलकिया नें सोची कै ई बात की जिकर पिरभू सें करो चईये। सो ऊने भगवान सें कइ - हे पिरभू अपुन के दरबार में इत्तौ अंधेर इत्तौ भेदभाव । देखौ तौ जी कौ नें ढंग ढौरे में रंग रूप, नें नोनों तन, बताव पूरे बदन में लौ छेदई छेद हैं, उर ऊपर सें देखवें में बा कित्ती भद्दी लगत । तौई इत्तौ प्यार उर आदर दओ जा रओ कै उयै ओंठन पै रखत मनख। उर एक मैं हों कै मोरौ शरीर इत्तौ उम्दा गोल बटोल, बड़ौ नौनों खबसूरत, इत्ती अच्छी मैं, सजी धजी, मोरे तन पै रंग बिरंगे फुंदरा झूल रओ, चूरा कसे तौई मनख मोय दोई हांतन सें दनादन पीटतई रैत ऐं। ऐसौ काये?

ढुलकिया कौ ऐसौ उरानों सुनकें क्याऊं सें कछु कैबौ सुना परो। बा आवाज हती मुरलिया की, जोन कैरईती कै - अरे ओ मूरख ढुलकिया, तें जा काये नई समजत है कै जौन मोय जौ मान -सम्मान दओ जा रओ, उर तोय जौन पीटो जा रओ, ऊकौ भलां कौनऊ कारनई हुईयै। समझ नई आ रओ, उर कै तोरे भेजे में नई घुस पा रओ। तौ सुन - ''मोरे भीतरें जो कछु आउत उयै मैं बिना लाग लपैट के औंसई कौ औंसई निकार देत हों। माने ओई बायरें कै देत। भीतरें कछु नईं राखत। मोरे ई त्याग के लानेंई मनख मोय प्यार करकें आदर देत, मांन - पान देत उर ओंठन सें लगाउत हैं। ऊ एक तैं हैं कै सबरी गंदगी बुराई अपनें भीतरईं भरे रैत सो मनख तोरी पिटाई करत है। कछु पल्ले परी कै नई।''

ढुलकिया नें ऐसौ सुनौ सो ऊने मों बिचकाओ, मों मरोर कें दूजी कुदांई फेर लओ। मुरलिया की बात सोराआना खरी हती। काये कै जौन त्याग करत है ऊ बुराई सें दूर रैत भला उयै को नैं चाहत है। पै जौन अपने भीतरेंई कारख पोतें रैय। मानें बुराई खों अंगमाये रैय भरें रैहै तौ उयै फिन को चाह है, को मान-पान दैहै। है नईं साँची बात? ऐं।

P-32/D-10 पैरामेडीकल के बाजू में, कचनार
सिटी, विजय नगर, जबलपुर म. प्र.
मोबा. 8225036728

# रमकल्लो की पतियाँ

-लखन लाल पाल

## पाती नं. - 1

प्राननाथ चरन स्पर्श

तुम्हें गए साल भर सें जादा हो गओ। ऐसौ लगत कब तुम्हाए दर्शन कर लूँ। फुरसत मिलैं तौ एकाध दिना कों हो जइयो। काए सें कि हाई स्कूल बोर्ड की परीच्छाएँ आ गई हैं ।तुमने लिखो तो कि हाईस्कूल कौ फारम भर दइये. मैने भर दऔ। उसकौ प्रवेश पत्र आ गओ तो। सोचत हों परीच्छा दे दूँ पै जी घबरा रओ कि उतै कैसें परीच्छा दैहों। मोखें तौ सरम लगत । आदमी का सोच है कि इतनी बड़ी दस की परींच्छा दै रई है। बड़ी कहाँ हों, वह तो पहरबें- ओढ़बे से बड़ी दिखात हों । मो ब्याव सत्रह साल की उमर में हो गओ तो। अभै ब्याह के कितनी सालें भईं? तनकऊ नईं।तुमनें तो कह दिया कि परीच्छा दै लइए। घर के कामन के मारें ज्यादा पढ़उ तो नईं पाई। फिरउ मैं परीच्छा दे आई।

पहले पर्चा में मैंने कापी में रोलनम्बर गलत लिख दओ तो। बरगए मास्टर ने बहुत हड़काओ। मो लाल मुँ हो गओ तो। पर्चा न दै रई होती तौ ऊ मास्टर खें ऐसौ सुधारती कि सब हड़ुकाबों भूल जातो। तुमई बताव कितनें दिना हो गए पढ़ाई छोड़े, एकाध देर तो गलत होई जात। मास्टर कों सबर न भओ। वहाँ सबकें सामूँ मोई बिज्जती कर दई। संग में परीच्छा दै रही मौड़ी मौ दबाकर हँसत तीं। पर्चा तो ठीक बन गए हैं पै दो पर्चा खराब हो गए। इनमें कछू जादा कड़ाई कर दई मास्टरन ने । फिरउ विकल्प पूछबे सें थोरे रोक पाए । 432 और 223 के संकेत से पूरे प्रशन सही कर लिए। प्राननाथ432 कौ मतलब हतो कि पहले प्रशन कौ चौथा विकल्प सही है दूसरे प्रशन का तीसरा और तीसरे प्रशन का दूसरा विकल्प सही है। घर आकर किताब से मिलाये तो सब प्रशन सही थे।

प्राननाथ ये दो पर्चा न बिगड़ते तौ फस्क्लास पास हो जाती। मैने कापी में 100-100 के लोट धर दए हैं। हो सकत रूपइया दिखखे एग्जामनर लम्बर दै दे। प्राननाथ कापी तो मैनै पूरी भरी एकऊ प्रशन नई छोंड़े । तुम्हें चिठिया लिखत रहत सो लिखबें को खूब अभ्यास हो गओ। और प्रशन तो सरल हते पै एक प्रशन कठिन पर गओ। मैने ऊ प्रशन में खूब मगजमारी करी पै ऊ दिमाग में न चढ़ो । जैसौ मन में आओ सौ मैंने लिख दओ। सही हो गओ तो लम्बर मिल जैहें नईता का लै जैहै। 100 रुपये का लोट मैंने इसी प्रशन कें लाने धरों तो। एग्जामनर को कापी पढ़बे कौ मौका कहाँ मिलत ? एक मास्टर एक दिना में डेढ़ दो सौ कापी जाँचत हे तो तुम्ही बताव ऊ कितने उत्तर पढ़त हो हैं।

अरें हाँ मैं तुम्हें एक बात तो बताबों भूल गई। एक पेपर में फलाईम स्काट आ गओ तो। मोई छाती धक धक होन लगी ती। पहलूँ तो मैं यहाँ वहाँ मुँ मटका लेतती, इन्हें दिखखें मैं बिलकुल सन्ट बैठ गई। यहाँ वहाँ हेरती तो वे नोट न लगा देते । बेकार में साल बरबाद चली जाती। कमरे में ऐसी शान्ति हती जैसे सबखें सॉप सूंघ गओ होवै। चार पाँच लोग कमरा में धड़घड़ात भए घुस आए। उनमें एक औरत हती । वा मोय कोद बहुत देर तक हेरत रई। मैं चुप्पा अपनौ पर्चा हल करत रई। मैं ओसें जादा चतुर हती। बीच बीच में ऊपर को मुंह उठाकर घोकन लगत ती ताकि वा समझें कि मै सोच सोचकर प्रशन हल कर रई हूँ। सोचत तो हो है कि या लुगाई पर्चा दे रई है। पढ़ाई की कछू उम्मर थोरे होत जब चाही तभी से पढ़ाई सुरू कर दो।

प्राननाथ पिसिया मैने मसीन से कटवा लई है। भूसा ओई की मसीन सें बनवा लओ है। घर में अनाज -भूसा दोऊ आ गए हैं। आहर की फसल खुद कर लई। डिल्ली में अरहर की दाल तो बहुत मँहगी हो है। न हो तो एक दिन के लानें चले आइयो और दाल बरी जो कछू है सो ले जइयो। इन चीजन के लाने पइसा बहाउत रैही।

-तुम्हाराई रमकल्लो

## पाती नं. - 2

प्राननाथ हाईस्कूल को रिजल्ट निकर आओ है। मैं फस्क्लास पास हो गई। वे दो पर्चा नईं बिगर गए ते ...........अरे ओई तो जिनमें 100-100 रुपये के लोट धर दए ते। उनमें ठीक लम्बर आ गए। प्राननाथ मैं अब समझी कि अगर नेम से पढ़ो जावै तो परीच्छा दैवो बहुत सरल है। लरका सैके-मैके परीच्छा कौ हउआ बनाएँ रहत। मैं जादा कहाँ पढ़ पाई ती बेई दो महीना किताबें उलटती पलटती रई ती और पास हो गई। गाँव भर मोई बड़वाई कर रहो है। मैने सोई मुहल्ला भर में पेरा (पेडा) बँटवा दए। भूरी भैंस को दूद ओंट लओ तो। ओई खोबा के पेडा बनाखे धर लए। जो कोऊ मार्कसीट दिखन आउत मैं उनका मुँह मीठा कराएँ बिना नई जान देत। मार्कसीट तुम्हउ दिख लइयो, मैं येई चिठिया के संगै ओखी फोटूकापी धर दैहों। हओ मैं जानत हों कि मार्कसीट दिखखें तुम खुस हो जैहौ।

सब बइरे कहत तीं कि हद कर दई रमकल्लो तैने। घर कौ काम दिखत रही औ पास हो गई। उन्हें ऐसी खुसी है जैसे मैं नईं वे पास हो गई हों। प्राननाथ में मोय लानै खुसी के पल है।

प्राननाथ परधान जी तो इतने खुस हते कि कछू न पूछौ। वे कह रहे ते कि धन्य री बहू। तैने गाँव कौ नाव रोसन कर दऔ। यहाँ बइरें पढ़ें की सोच नई सकत और तैने हाई स्कूल पास कर लयी वो भी फस्ट डिवीजन में। तैं तौ गाँव की नाक हो गई। ई खुसी में मोई रात भर आँख नई लगी प्राननाथ। पूरे गाँव में हका मचो है कि फलाने की बहू ने गजबई कर दओ। बताव लै जब गाँव बालन ने इतनी बड़ी पद्दी (पदवी) पै बैठा दओ तो ऊ गरिमा की रच्छातो करनेई पर है।

प्राननाथ मै आंगू पढ़बो चाहत हों। तुम अग्या दे देव तो गेरा (ग्यारह) में एडमीशन ले लूं। चिल्लर सर कहत ते कि रमकल्लो हमाए स्कूल में अपनौ नाव लिखवा ले। प्राननाथ उनकौ असली नाव चिल्लर सर थोरे है। वों तो बच्चो ने उनका नामकरन कर दओ तो। एक देर राई-राई लरका उनके आस-पास दौंथर काट रहे थे सो वे गुस्सा में भन्ना परे ते कि ये चिल्लर सोई खुपड़िया खाने आ गए । बच्चे हैं उन्हीं को डॉलोग उन्हीं पर रोप दओ। लरका उन्हें चिल्खर सर कहकर चिढ़ात हैं। वे मारबे खें दौरत सो लरका उडुनछू हो जात। अगर उनके सामूं कह दो तो तुरन्त लाल-पीरे हो जात। मैं कभऊँ न कैहौं। सुनी है वे हिन्दी भौत अच्छी पढ़ात। उनसें पढ़ लैहों तौ हिन्दी और जादा बनने लग है। हर आदमी को हिन्दी कौ ग्यान जरूरी है कि नाहियाँ? बिलकुल है।

सर कहत ते कि फीस की चिन्ता न करिए, आँगू-पाछूँ मिल जै है। तुम मनीआडर कर दइयो सो साल भर की फीस जमा कर

देहों। पेन्डिग फीस बच्चो के सामूँ माँग दई तो बिज्जती हो जात। ऐसौ कैसौ है कि पहलई जमा कर दो।

किताबें तौ पुरानी खरीद लैहौं। चार किलो घी धरैं हों ओई बेंच देहौं। कापी किताबन की चिन्ता नहियां। चिल्लर सर ड्रेस खें कहत ते। मैं ड्रेस पहन हों? मायका थोड़े है, ससुरार में मौड़ी बनी फिर हों तौ आदमी का कैहैं। मैंने सर सें साफ कह दओ कि मैं धोती पहनकर आ हों। वे हँसत ते। फिर बोले- रमकल्लो नई ड्रेस पहरे सें एकाद दिन झिझक लगहै फिर रूटीन में आ जै है। मै ड्रेस बनवा लै हों।

प्राननाथ मैं कहें देत हों, स्कूल मै जरूर जै हों। जैसी घर में बैठी रहत ऊसई स्कूल में बैठी रैहों। घर से अच्छौ स्कूल । अकेले में तो दुनिया भर की बातें दिमाग में आत। संझा-सबेरे भैस की उसारवाद भर तौ है सो सबेरें कर लए हो। संझा बेरा जल्दी छुट्टी होई जात उँतने समय में गयोड़े वाले खेत सें चारौ काट लए करि हों। तुम चिन्ता काऊ बात की न करियो।

प्राननाथ, हाथ में किताबें दावें स्कूल जावे में सरम तौ बहुत लग है पै जब आँगू बढ़ने है तो इन चीजन सें दर किनार करनै पर है। पराए घर मठा लेन जाव और भटुइया पाछूँ लुकाव तो तुम्हीं बताव ऐसौ कहूँ होत है। मैने पूरौ मन बना लओ है, अब मै बदल हों न। तुम वहाँ ठीक रइयो, यहाँ की चिन्ता बिलकुल न करियो। गलत-सलत लिख गई होऊँ तो माफ करियो।

-तुम्हारई रमकल्लो

-कृष्णा धाम के आगे, अजनारी रोड
नया रामनगर उरई जिला जालौन उ. प्र.
मो.-09236480075

---

# सूका

**-रामानन्द पाठक 'नन्द'**

कैसे कड़त साल सूका की, बरषो नइयां पानी।
दशादीन हो गई किसान की, चौपट भई किसानी।।
मेहनत गई अखारत विरथा, खाद बीज दे डारो।
तीन के तेरा लये साव ने, मंहगाई ने मारो।।
सोची हती हुए ई साले, अपनी दूर गिरानी।
दशादीन हो गई किसान की, चौपट भई किसानी।।
ऐसी आफत आई देखकें, साव को धीरज टूटो।
भाग्य विधाता अन्न के दाता, से काये ते रूठो।।
काहै राम करईयां कीनें, तोरे घर की जानी।
दशादीन हो गई किसान, की चौपट भई किसानी।।
मौड़ा मोड़ी परेशान हैं, कैसें पढवे जावे।
गाड़ीभर मौड़ी मौड़न को, कैसे खर्च चलावे।।
कैसे ब्याव करत बिटिया को, बिटिया भई सियानी।
दशादीन हो गई किसान की, चौपट भई किसानी।।
अब तो रामभरोसे कडवें, जे सूका की साले।
लतरोंदा उनकी ओली में, मारे चाय वे पाले।।
पुरखन की चुलिया ब्याजई में, 'रामानन्द' बिलानी।
दशादीन हो गई किसान की, चौपट भई किसानी।।

-नन्द भवन नैगुवां, पृथ्वीपुर जिला टीकमगढ़ म. प्र.
मो. नं. 9755554351

---

# बुढ़ापे की दशा

**- नवल किशोर सोनी 'मायूस'**

(१)

जीखाँ टेरें ओइ होत है सुनत दायनो डेरो।
कीसें कइये हमें बुड़ापे नें अब भौतउ पेरो।।
ज्वानी में पथरा कौ ककरी मूरा घाँइ चबा गए।
आज सेब खुरमा लौ देखौ कुचर कुचर कें खा रए।।
बिंही पिलपिलीं सीं मिल जावैं दस दस दाँइ नवेरो।।
पैलाँ चड़त हते हम घटिया छिन में गदबद दैकें।
अब तौ छिड़ियाँ कौ चड़ने परती हैं लठिया लैंकें।
ई उम्मर नें आकें हमसें अपनो बल्दो फेरो।।
हाँत पाँव नँइ करत काम सइईसें कूलें काँखें।
काँनन सें बैरा हो गए है धोको दै रईं आँखें।
छाती पेरत रातै खाँसी कैसउ होत सबेरो।।
जौलौ हम नौने रए तौलौ सबइ जने पछयाने।
अब बुलायँ हम तौ आवे में करबें कैउ बहाने।
और काउ की का कइये लरकइ नाँ सूदें हेरो।।
मन तौ ऐंन होत है रोजऊँ नायँ मायँ फिर यावैं।
नइयाँ हयाव निंगें को ईसें बैठे झूकत राबै।
चारउ तरपी अब विपता को बादर छाओ घनेरो।।
अब हमाय संगै घर वारे करन लगे दो भाँती।
लरका बिटिया नाती पोता छिन छिन करबैं दाँती।
सबनें मिलकें बृद्ध आश्रम में अब हमें ठबेरो।।
आय विधान विधी को जो तौ सबै बुड़ापौ आनें।
बूड़न खाँ हिनयाब न अब मायूस सबइ से कानें।
बूड़न की सेवा सें मिलहै खैबे दूद महेरो।।

(२)

सोंची मानौ ई उम्मर ई में जो होबे सो थोरो।
रो रो कें कट रए दिन जब सें आओ बुड़ापो मोरो।।
फुलै फुलै कें रोटी खा रओ झर गइ है बत्तीसी।
पैलां हती देइया नौंनी अब लग गइ है दीं सी।
ऊँचो सुना परत कानन नें सबरो काम बिलोरो।।
मड़वा घाँइं मूड़ हलबै अब तो नँग नँग ढिलयाने।
जब से बूड़ौ भओ मैं तब सें कइयक दुख पछयाने।
सबइ गिरन नें जुरकें मोखाँ उन्नन घाँइ निचोरो।।
जाँव बजारै हाटै कउँ तौ गोड़े ऐंन पिराबैं।
निंगबे लौ की तथा न रै गइ काँखत कूलत आबैं।
कैउ जँगा बैठें तब मोखाँ मिलत मसाकें दोरो।।
ढँग से निंघा परै नाँ अब लग गइ आँखन में टटिया।
क्याँउ जाँव तौ सादत राबै मोय गैल में लठिया।
मोरे मूँडें आन बुड़ापे नें रस में विष घोरो।।
मैनें अपने घर बारन को निशदिन भलो बिचारो।
मोखाँ मोरे घर बारन ने कुत्ता सो ललकारो।
पइसा टका छुड़ाकें सबरे कर दओ मोखाँ कोरो।।
थिगरा लगे पैरकें उन्नाँ फिर रओ भूँको प्यासो।
स्वास्थ भर की संसारी है कात जगत्तर साँसो।
मैनें तनकउ सोचो नइयाँ ऐंन बनो रओ भोरो।।
नइया पार बुड़ापे में हो जैहे मैं मानत तो।
जा दुरगत मायूस हूयै अब जो नाँ मैं मानत तो।
मोय बुड़ापे नें आकें दुख की नदिया में बोरो।।
रो रो कें कट रए दिन जब सें आओ बुड़ापो मोरो।।

-कोतवाली के पीछे, छतरपुर म. प्र.
मो. 9993693226.

# विजेता

-सरोजा शिल्पी

आज पूरे गाँव में सबेरे सैईं खूब हो-हल्ला हो रऔ तो। काय कै ऊ गाँव के संगे-संगे आस-पास के गाँवन के भी कछु लोग जुरे हते। भीड़ - भाड़ इतनी कै उये नियंत्रित करबें में पुलिस भी नाकाम हती। हर व्यक्ति के मौ पै बस एकई नाम हतौ विजेता -विजेता।

कछु जने आपस में बातें कर रयेते कोऊ खौं ऊ की वीरता याद आ रईती तौ काऊ खौं ऊ कौ बचपन। अरे जा मौड़ी तौ औरऊ सैं भौत बहादुर हती। डर कौन चिरइया कौ नाम है जा तौ वा जानतई न हती। जोन काम काऊ सैं न बनें वों काम भी वा चुटकियन में निपटा देतती। भीड़ में बैठे मास्टर जी बोले - अरे कक्का पढ़वे लिखवें में भी हमेशा आँगू रई। हमेशा अब्बल दर्जा में पास होत ती। स्कूल की ऐसी कौनऊ गतिविधि न हती जी में वा भाग न लेत होए। और जौ ठाँडी हो गई तौ जा समझौ कै इनाम तौ औई खौं जीतने है। चौतरा पै बैठी काकी पीछें सैं बोली - ''मौड़ी प्रेमन भी भौत हती। गाँव भर सैं बड़ें प्रेम सैं बोलतती। द्वारे सैं निकरै तौ बिना बतयायें न जाये।'' पास बैठी सुशीला बोली - ''हओ काकी साँसी कै रईं। ऊ की अम्मा ने भौतई अच्छे संस्कार दयेते मौडी खौं। दुर्गा बैन ने बड़ी मुसीबत सै पालों। अरे दुर्गा के पास मौड़ी रई अइ कितैक है। जितने दिना इतै रई सो ऊ की आजी ने ऊ खौं चैन सैं न रन दओ। और साँसी कयें तौ अगर वा इतै रैती तौ आजी ऊ खौं इतैक आँगूं बड़न देती का?'' ''हओ काकी जा तौ तुम साँसी कै रई।''

कछु लोग बातन में लगे ते तौ कछु लोग भगदड़ में हर व्यक्ति की आँखें गीली हती। बिजेता के घर सैं रै रै के रोबै की आवाजें आ रईंती। पूरे गाँव पै गाज सी गिर पड़ी ती सब जने सकते में हते। छोटे मौड़ा - मौड़ियन खौं कछु समझ में न आरऔ तो, माहौल देख कैं वे सहमे -सहमे से हते। अचानक दूर सै कछु गाड़ियन के आबै की आहट भई और गाँव की कच्ची सड़क सैं धूरा उड़त दिखाई दई। सबेरे सचेत हौ कै ओई तरफ देखन लगे। गाड़ियन के पास आउत नईं उतै भगदड़ सी मच गई। एक बड़ी सी गाड़ी रुकी ऊ में सैं कछू वर्दी वाले जवान उतरे और गाँव के कछु स्याने लोगन सैं बात करी। एक बड़ों सौ बक्सा उतारौ जो कै तिरंगा झंडा सै ढको तो कछु जवान ऊ बक्सा खौं अपने कंधा पै धर कैं दुर्गा के घर के द्वारे लै गये। बक्सा द्वारे पे धरतनईं रोवे की आवाजें तेज हो गई। भीतर सैं कछु लोग बाहर आ कैं बक्सा सैं लिपट कैं जोर-जोर सैं रोन लगे। विजेता की आजी बक्सा सैं मूड़ मार-मार कैं गरौ फार कैं रोउत भई छाती पीट पीट कैं अपने आप खौं कोस रईंती। कोऊ बाई खौं मोंगा रईंती तौ कोऊ दुर्गा खौं समजाइस दै रईंती।

विजेता के छोटे भइया विजय कौ तौ रो-रो कैं बुरओ हाल हतो। काय कै विजेता अपने भइया की भौतइ प्यारी जिज्जी हती वे अपने भइया की लाड़ली बैन होवे के संगे ऊ की अच्छी दोस्त और मार्ग दर्शक भी हतीं। वे अपने भइया खौं हमेशा प्रोत्साहित करततीं। विजय रो-रो कैं कै रओ तो - ''उठो जिज्जी उठो आप हमें छोड़ कैं ऐसैं नई जा सकती। आप चली जै हौ तौ हमें राखी को बाँधै? आप के बिना हमाओ मार्गदर्शन को कर है?'' इतने में कोउ ने रोउत भये विजय के कंधा पै हात धरो। सो विजय ''मामा-मामा'' केत भओ उन सैं लिपट कैं रोन लगो - ''मामा जी आप कओ न जिज्जी सैं कै उठ जायें वे आप की बात न टारैं।'' मामा ने विजय कौं छाती सैं लगा लओ। और मूढ़ पै हात फेरत भये बोले- ''बेटा तुमाई जिज्जी तुमें छोंड़ कैं कऊं नईं गईं। व तौ इतई है, काय कै शहीद कभऊँ नईं मरत वे तौ अमर होत हैं। वातौ तुमायें संगै हमेशा है आशीर्वाद के रूप में। मौगौ-मौगौ राजा बेटा ऐसैं रोउत हैं का? तुम तौ बहादुर बैन के बहादुर भइया हो। मामा जी हम उन आतंकवादियन खौं न छोंड़े है। जिनने हमाई जिज्जी खौं मारो है।'' विजय ने रोउत भये कई। ''हओ हओ''। कैत भये मामा जी ने विजय के दोस्तन खौं इशारौ करो सो वे विजय खौं समारवे में लग गये। और मामा जी आंगू की तइयारी करन लगे। कछु जने सैनकन सैं विजेता के शहीद होवे की कहानी पूँछन लगे।

रीति - रिवाज सैं अंतिम संस्कार की तइयारी चल रईती। विजेता के अंतिम दर्शन के लाने आंगन में भीड़ उमड़ परीती। गाँव के लोग अपनी शहीद बेटी के चरनन में फूल चड़ा कैं अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर रयेते। विजेता की अम्मा ऊ के बगल में बैठीं मूड़ पै हात फेर रईतीं। दुर्गा खौं तो जैसे विश्वासई नईं हो रओ तो कै ऊ की लाडली बिटिया उनै छोड़ कै भौत दूर चली गई है। उनकी आँखन में तौ बीते समय की बातैं घूम रईंतीं। जब विजेता पेट में हती सो बाई कैसे पोता आबे की बाट हेरततीं। उनने कितैक मंदिर मड़िया पूजीं कै उनके घर के आँगन में काना जी जैसौ पोता खैले। वे दुर्गा खौ दूधन नहा ओ पूतन फलो कौ आशीर्वाद देतन न थकततीं और ऊ कौ हर तरा सैं खूब ख्याल राखततीं। श्री राम-चरित्र मानस और श्रीमदभागवत गीता जी जैसे ग्रंथ पढ़बे बिठारती और खुद भी बड़े ध्यान सैं सुनततीं और ईसुर सैं विनती करैं कै- हे! भगवान हमें खूब बलबान व बुद्धिमान पोता दियो। भगवान नें भी उनकी आधी बात सुनी सो बलवान और बुद्धिमान तौ दई अकेलैं पोता की जाँगाँ पोती दे दई।

पोती होत नईं बाई कौ व्यवहार बदल गओ। जैसई जौ पतौ परो कै मौड़ी भई। सो ओई दिना सैं उनने मताई बिटिया कौ मौ तक न देखो। सेवा करवो तौ दूर की बात उल्टे लूगरन भाँवरै पारीं। सबेरे सैं शाम तक छोटी छोटी बातन पै बड़बड़ा कैं चकिया सी दरती रयें। इतै तक कै भगवान खौं भी चार खरी खोटी सुना दईं। उनै तक नईं छोड़ो। दुर्गा और मौड़ी कौ तौ जीबो हराम कर दओ। अस्पताल सैं घरै पोचतई बहू खौं काम में जोतन लगीं। मताई काम में जुती रये और मौड़ी पलना में परी किल्लियात रवै। लेकिन कैत है न कै मौड़ीं तौ खेलत -कूदत मार - घसीट कैं पलईं जातीं। सो विजेता भी धीरैं धीरै बड़ी होन लगी। विजेता के पिता घनसूं पैले तौ अम्मा के भड़काये सैं कछु दिनन मौंड़ी सैं आँखे फेरै रये। अकेले बिटिया की बाल सुलभ लीलायें देख कैं धीरैं -धीरैं उनके मन में बिटिया के प्रति लाड़ -प्यार उमड़न लगो। मौड़ी खौ खिलाउत टेम भी जौ ध्यान राखै कै अम्मा सामने न परैं नईं तौ ओई टेम पै चार सुनायें - ''कै मताई बिटिया खौं तुमाये ई लाड़ - प्यार ने बिगारौ है। मौड़ी सैं इतैक लाड़ प्यार अच्छौ नईयाँ। जे तुमे कमा कै नई खुआ दैं। व्याओं में इतैक आँटी लगवायें कै छटी कौ दूध याद आ जै। भइया इन सैं वंश कौ नाम आँगें नई

बढ़ने जे तौ पराओ धन आयें।'' घनसू कौ मौड़ी खौं खिलावो भी बाई खौं फूटी आँखन नईं सुहानो। घर में गइया होवे के बाद भी मौड़ी खौं कटौरा भर दूध कें ओले-झोले रये।

एक दिना बड़े सबेरे सैं दुर्गा उरैन डार रईंती सो दुआरे सैं दिशा बहन जी निकर परीं। दुर्गा खौं देखतनई बोलीं – ''उरैन डर गओ भोजी?'' ''हओ बिन्नू आप स्कूल जा रईं का ? हओ भौजी उतई आ जा रये।'' पास ठाड़ी विजेता दुर्गा सैं बोली – ''अम्मा हमें भी फुआ के संगे स्कूल जाने।'' मौड़ी की बात सुन कैं दुर्गा बोली – ''हओ तुमें तौ जरूर जाने अकैले पैलै आजी सैं तौ पूंछ लो।'' दिशा बोली – ''भौजी मौड़ी सई तौ कै रई। कल सैई ई खौं स्कूल भेजन लगौ। अबै दाखला चलई रये हैं। घनसू भइया सैं कइओ सो मौड़ी खौं लुआ कैं कल स्कूल हमाये पास आ जावें। सो हम दाखला करा दें।'' अब का बतायें बिन्नू चाउत तौ इनके बाबू जी भी हैं कै मौड़ी पढ़ लिख कैं आँगें बढ़े अकेलै बाई के सामने उनकी एक नईं चलत। लेकिन मौड़ी के लाने हम जरूर सैं कै कैं देंखें। ''अच्छा भौजी भइया खौं रैन दो कल आपई आ जाओ हम सब करा दें।'' दुर्गा ने सब खौं मना-मनू कैं विजेता कौ नाम स्कूल में लिखा दओ।

विजेता पढ़बे -लिखबे में हुसियार हती सों सुरू सैईं अच्छे नम्बरन सैं पास होत रई। स्कूल में सबई मास्टर बहन जी ऊ सैं सबई खुश रतते। ऊनें कभऊँ काऊ खौं शिकायत कौ मौका नईं दओ। कक्षा पाँच सैई ऊ खौं पढ़ाई मे बजीफा मिलन लगो तो। सो घर में सबई निश्‍चिंत हो गये कै चलौ मौड़ी की पढ़ाई पै कछु खर्च नईं करने पड़ रओ। दुर्गा तौ भौतई खुश हती कै मौड़ी की पढ़ाई निर्विहन चल डगरीती। अकेलैं ऊ के गाँव में ग्यारवीं तकई स्कूल हतो। सो ग्यारबी करतनईं ऊ की पढ़ाई छूट गई। विजेता आँगे पढ़बे के लाने पूरी कौशिश में लगीती। दुर्गा भी चाहतती कै विजेता पास के गाँव सैं अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखबै।

अकेले बाई ने साफ कै दईती कै मौड़ी खौं पढ़बै के लानें दूसरें गाँव रोज न आन-जान दैहैं। जमानौ बुरओ है जितनो पढ़ने तो पढ़ लओ। अब तौ मौड़ी के पीरे हात कर कै गंगा नहाओ। घनसू की समझ में भी कछु नईं आ रओ तौ कै वो का करै। विजेता चाउतती कै वो पढ़ लिख कैं अपने पाउन पै ठाँडी हो जाये। ऊ की कई सहेली पास के गाँव में जा कैं अपनी पढ़ाई पूरी करवे की तइयारी कर चुकी तीं। मास्टर - बहन जी भी ऊ खौं अपनी पढ़ाई जारी रखवै की सलाह दै रयते। विजेता खौं उदास देख कैं ऊ के छोटे भइया खौ भी अच्छौ नई लग रओ तो। दुर्गा भगवान खौं मना रईती कै हे ईसुर अब तौ आपई कछु करो तौई है। विजेता कौ भाग्य अच्छौ हतो सो ऊ के मामा जो कैबी. एस. एफ. में हते ऊ के घरे आ पौचे। उने देखतनईं सब खुश हो गये। दुर्गा खौं भी कछु आश बंध गई कै चलो भइया आ गये। सोई समस्या कौ कछु न कछु हल तौ निकरई आ है। और ऐसई भओ।

बातचीत में जौ तै भओ कै विजेता मामा के घरै शहर में रै कैं आँगे की अपनी पढ़ाई पूरी कर है। बैन - भइया एक दूसरे सैं बिछड़बौ तौ नईं चाउतते। अकेलैं उज्जल भविष्य के लाने जी पै पथरा धरने परो। विजेता मामाजी के घरै रै कैं खूब मन लगा कैं पढ़ाई करन लगी। पढ़ाई पूरी होतनईं विजेता ने मामा जी के कैवे पै बी. एस. एफ. की नौकरी कर लई। विजेता बड़ी ख़ुश हती कै ऊ के बचपन कौ सपनो पूरौ हो गओ तो। वा शुरू सैंई अपने देश की सेवा कइबो चाहत ती। जब वा छोटी हती सो मामा जी की टोपी लगा कैं उनै सलूट मारौ करै। जब कोऊ ने भी जा नई सोची ती कै विजेता वास्तव में एक दिना बी. एस. एफ. अफसर बन जै है। जौन बटालियन में मामा हबलदार हते औई में विजेता इंस्पेक्टर बन गईती। जब आँफिस में डियुटीपै मामा अपनी भानेजन विजेता खौं सलूट मारै सो उनकी छाती गर्व सैं चौड़ी हो जाये। और भारी खुश होवै कै हमाई बैन और हमाई मेहनत सफल हो गई। घरै भी मौड़ी की सफलता सैं सबई खुश हते। दुर्गा भी निश्‍चिंत हती कै ईसुर की कृपा सैं मौड़ी की तैनाती भी सीमा पै ओई जांगा पै हती जितै ऊ के भइया हते।

अकेलै विधना खौं उनकी जा खुशी देखी न गई। सो एक दिना जाड़े के मौसम में रात कौ समय हतौ। अमाउस आबें बारी हती सो धुत्त अंधयारो छाओ तो। विजेता अपनी औजी पूरी कर कैं अपनी एक महिला साथी के संगै बातै करत अपनें ठिकाने की तरफ जा रईती। कै अचानक ऊ खौं तनक दूर पै कौऊ की आहट लगी वा चौकन्नी हो कैं इतै उतै देखन लगी। अंधयारें में उतै को हो सकत है? इतने में मिमयात भईं पाँच छः छिरिया आस-पास दिखाई दईं। विजेता की साथी बोली 'अरे तुम तो यूँ ही परेशान हो गई ये तो बकरियाँ है।' हाँ बकरियाँ तो है पर तुमें नहीं लगता कि इतनी घबराई सी क्यों है? और ये इतनी रात को यहाँ आईं कहाँ से? अरे यह जानवर है रास्ता भटक कर यहाँ आ गई होंगी। चलो न मुझे बहुत तेज भूख लग रही है। कैत भये विजेता की साथी ने ऊ कौ हात पकर कैं आँगू की तरफ खैचो। कै तबई विजेता ने हथयारन के स्टोर रूम के पास तीन-चार परछाँइयन खौं देखो। वे परछाँई धीरें-धीरें लगभग रैंगती सी आँगू बढ़ रईती। उनकी आकृति सैं साफ समझ में आ रईती कै जे अपनी बटालियन के जवान नइयाँ। दोई जनन ने एक दूसरे की तरफ देखो और विजेता ने अपनी साथी सें इशारे सैं कछु कई। ऊ ने भी बात समझवे कौ इशारौ करो। और अपने आप खौं दुकाउत भई ऊ दिशा की तरफ बड़न लगीं जितै काफी मात्रा में उनके साथी मौजूद हते और सोवे की तइयारी कर रयेते और हथयार रूम सैं लगो भओ भाग हतो।

विजेता खौं समझतन देर न लगी कै जे कोऊ और नौई। जे तौ आतंकी हमलावर आयें ई सैं हर हाल में हमें इनै हथयारन तक पौचवे सैं रोकनेई है। फिर चाये कछु भी हो जाये। सो ऊ ने उन तक पौचवे के लाने उनकीअई छिरियन कौ सहारौ लओ। और धीरे धीरे ऊनै ओई तरफ खौं धकेलवो शुरू करो। और उनके बीच अपने आप खौं दुकाउत भई आँगें बड़ी। एक पेड़ के पास पौच कैं ऊ की ओट लै कै वा ठाँड़ी हो कैं एक क्षण के लाने सोचन लगी। कै इन कौ ध्यान कैसे भटका कैं रोको जाये। सो ऊ ने छिरियन जैसी मिमयावे की आवाज निकारी सो मिमयावो सुन कै दूसरी छिरियाँ भी मिमयान लगी। जैसई छिरियन की मिमयाहट सुनी सो एक आतंकी बोलो – अरे चुप कर मरबायेगी क्या? ''दूसरे ने ऊ खौं चुप रैवै खौं कई। विजेता ने एक पथरा उठा कै छिरिया खौ दै मारो सो वा जोर सैं मिमयात भई भगी। थौड़ी दूर पै तैनात जवान वा आवाज सुन कैं चौकन्ने भये और इतै उतै घूमन लगे। सो आतंकी उतई दुबक गये। दो तीन जवान थोडी दूर पै ठाँड़े हो कैं पैनी निगा सैं निरीक्षण करन लगे।

इतैक में पास ठाँडी विजेता ने देखो कै एक आतंकी एक

*कहानी -*

# विजेता

-सरोजा शिल्पी

आज पूरे गाँव में सबेरे सैईं खूब हो-हल्ला हो रऔ तो। काय कै ऊ गाँव के संगे-संगे आस-पास के गाँवन के भी कछु लोग जुरे हते। भीड़ - भाड़ इतनी कै उये नियंत्रित करबैं में पुलिस भी नाकाम हती। हर व्यक्ति के मौ पै बस एकई नाम हतौ विजेता -विजेता।

कछु जने आपस में बातें कर रयेते कोऊ खौं ऊ की वीरता याद आ रईती तौ काऊ खौं ऊ कौ बचपन। अरे जा मौड़ी तौ औरऊ सैं भौत बहादुर हती। डर कौन चिरइया कौ नाम है जा तौ वा जानतई न हती। जोन काम काऊ सैं न बनें वों काम भी वा चुटकियन में निपटा देतती। भीड़ में बैठे मास्टर जी बोले - अरे कक्का पढ़वे लिखवें में भी हमेशा आँगू रई। हमेशा अब्बल दर्जा में पास होत ती। स्कूल की ऐसी कौनऊ गतिविधि न हती जी में वा भाग न लेत होए। और जौ ठाँडी हो गई तौ जा समझौ कै इनाम तौ औई खौं जीतने है। चौतरा पै बैठी काकी पीछें सैं बोली - "मौड़ी प्रेमन भी भौत हती। गाँव भर सैं बड़ें प्रेम सैं बोलतती। द्वारे सैं निकरै तौ बिना बतायें न जाये।" पास बैठी सुशीला बोली - "हओ काकी साँसी कै रईं। ऊ की अम्मा ने भौतई अच्छे संस्कार दयेते मौडी खौं। दुर्गा बैन ने बड़ी मुसीबत सै पालों। अरे दुर्गा के पास मौड़ी रई अइ कितैक है। जितने दिना इतै रई सो ऊ की आजी ने ऊ खौं चैन सैं न रन दओ। और साँसी कयें तौ अगर वा इतै रैती तौ आजी ऊ खौं इतैक आँगूं बड़न देती का?" "हओ काकी जा तौ तुम साँसी कै रई।"

कछु लोग बातन में लगे ते तौ कछु लोग भगदड़ में हर व्यक्ति की आँखें गीली हती। बिजेता के घर सैं रै रै के रोबै की आवाजें आ रईंती। पूरे गाँव पै गाज सी गिर पड़ी ती सब जने सकते में हते। छोटे मौड़ा - मौड़ियन खौं कछु समझ में न आरऔ तो, माहौल देख कैं वे सहमे -सहमे से हते। अचानक दूर सै कछु गाड़ियन के आबै की आहट भई और गाँव की कच्ची सड़क सैं धूरा उड़त दिखाई दई। सबेरे सचेत हौ कै ओई तरफ देखन लगे। गाड़ियन के पास आउत नईं उतै भगदड़ सी मच गई। एक बड़ी सी गाड़ी रुकी ऊ में सैं कछू वर्दी वाले जवान उतरे और गाँव के कछु स्याने लोगन सैं बात करी। एक बड़ों सौ बक्सा उतारौ जो कै तिरंगा झंडा सै ढको तो कछु जवान ऊ बक्सा खौं अपने कंधा पै धर कैं दुर्गा के घर के द्वारे लै गये। बक्सा द्वारे पे धरतनईं रोवे की आवाजें तेज हो गई। भीतर सैं कछु लोग बाहर आ कैं बक्सा सैं लिपट कैं जोर-जोर सैं रोन लगे। विजेता की आजी बक्सा सैं मूड़ मार-मार कैं गरौ फार कैं रोउत भई छाती पीट पीट कैं अपने आप खौं कोस रईंती। कोऊ बाई खौं मोंगा रईंती तौ कोऊ दुर्गा खौं समजाइस दै रईंती।

विजेता के छोटे भइया विजय कौ तौ रो-रो कैं बुरओ हाल हतो। काय कै विजेता अपने भइया की भौतइ प्यारी जिज्जी हती वे अपने भइया की लाड़ली बैन होवे के संगे ऊ की अच्छी दोस्त और मार्ग दर्शक भी हर्तीं। वे अपने भइया खौं हमेशा प्रोत्साहित करतर्ती। विजय रो-रो कैं कै रओ तो - "उठो जिज्जी उठो आप हमें छोड़ कैं ऐसैं नई जा सकती। आप चली जै हौ तौ हमें राखी को बाँधै? आप के बिना हमाओ मार्गदर्शन को कर है?" इतने में कोउ ने रोउत भये विजय के कंधा पै हात धरो। सो विजय "मामा-मामा" केत भओ उन सैं लिपट कैं रोन लगो - "मामा जी आप कओ न जिज्जी सैं कै उठ जायें वे आप की बात न टारैं।" मामा ने विजय कौं छाती सैं लगा लओ। और मूढ़ पै हात फेरत भये बोले- "बेटा तुमाई जिज्जी तुमें छोंड़ कैं कऊं नईं गईं। व तौ इतई है, काय कै शहीद कभऊँ नईं मरत वे तौ अमर होत हैं। वातौ तुमायें संगे हमेशा है आशीर्वाद के रूप में। मौगौ-मौगौ राजा बेटा ऐसैं रोउत हैं का? तुम तौ बहादुर बैन के बहादुर भइया हो। मामा जी हम उन आतंकवादियन खौं न छोंड़े हैं। जिनने हमाई जिज्जी खौं मारो है।" विजय ने रोउत भये कई। "हओ हओ"। कैत भये मामा जी ने विजय के दोस्तन खौं इशारौ करो सो वे विजय खौं समारवे में लग गये। और मामा जी आंगू की तइयारी करन लगे। कछु जने सैनकन सैं विजेता के शहीद होवे की कहानी पूँछन लगे।

रीति - रिवाज सैं अंतिम संस्कार की तइयारी चल रईती। विजेता के अंतिम दर्शन के लाने आंगन में भीड़ उमड़ परीती। गाँव के लोग अपनी शहीद बेटी के चरनन में फूल चड़ा कैं अपनी श्रद्धांजली अर्पित कर रयेते। विजेता की अम्मा ऊ के बगल में बैठीं मूड़ पै हात फेर रईतीं। दुर्गा खौं तो जैसे विश्वासई नईं हो रओ तो कै ऊ की लाडली बिटिया उनै छोड़ कै भौत दूर चली गई है। उनकी आँखन में तौ बीते समय की बातैं घूम रईंतीं। जब विजेता पेट में हती सो बाई कैसे पोता आबे की बाट हेरततीं। उनने कितैक मंदिर मड़िया पूजीं कै उनके घर के आँगन में काना जी जैसौ पोता खैले। वे दुर्गा खौ दूधन नहा ओ पूतन फलो कौ आशीर्वाद देतन न थकततीं और ऊ कौ हर तरा सैं खूब ख्याल राखततीं। श्री राम-चरित्र मानस और श्रीमदभागवत गीता जी जैसे ग्रंथ पढ़बे बिठारती और खुद भी बड़े ध्यान सैं सुनततीं और ईसुर सैं विनती करैं कै- हे! भगवान हमें खूब बलबान व बुद्धिमान पोता दियो। भगवान नें भी उनकी आधी बात सुनी सो बलवान और बुद्धिमान तौ दई अकेलैं पोता की जाँगाँ पोती दे दई।

पोती होत नईं बाई कौ व्यवहार बदल गओ। जैसई जौ पतौ परो कै मौड़ी भई। सो ओई दिना सैं उनने मताई बिटिया कौ मौ तक न देखो। सेवा करवो तौ दूर की बात उल्टे लूगरन भाँवरै पारीं। सबेरे सैं शाम तक छोटी छोटी बातन पै बड़बड़ा कैं चकिया सी दरती रयें। इतै तक कै भगवान खौं भी चार खरी खोटी सुना दईं। उनै तक नईं छोड़ो। दुर्गा और मौड़ी कौ तौ जीबो हराम कर दओ। अस्पताल सैं घरै पोचतई बहू खौं काम में जोतन लगीं। मताई काम में जुती रये और मौड़ी पलना मैं परी किल्लियात रवै। लेकिन कैत है न कै मौड़ीं तौ खेलत -कूदत मार - घसीट कैं पलईं जातीं। सो विजेता भी धीरैं धीरै बड़ी होन लगी। विजेता के पिता घनसूं पैले तौ अम्मा के भड़काये सैं कछु दिनन मौंड़ी सैं आँखे फेरै रये। अकेले बिटिया की बाल सुलभ लीलायें देख कैं धीरैं -धीरें उनके मन में बिटिया के प्रति लाड़ -प्यार उमड़न लगो। मौड़ी खौ खिलाउत टेम भी जौ ध्यान राखै कै अम्मा सामने न परैं नईं तौ ओई टेम पै चार सुनायें - "कै मताई बिटिया खौं तुमाये ई लाड़ - प्यार ने बिगारौ है। मौड़ी सैं इतैक लाड़ प्यार अच्छौ नईयाँ। जे तुमे कमा कै नई खुआ दैं। व्याओं में इतैक आँटी लगवायें कै छटी कौ दूध याद आ जै। भइया इन सैं वंश कौ नाम आँगें नईं

बढ़ने जे तौ पराओ धन आयें।'' घनसू कौ मौड़ी खौं खिलावो भी बाई खौं फूटी आँखन नईं सुहानो। घर में गइया होवे के बाद भी मौड़ी खौं कटौरा भर दूध कें ओले-झोले रये।

एक दिना बड़े सबेरे सैं दुर्गा उरैन डार रईंती सो दुआरे सैं दिशा बहन जी निकर परीं। दुर्गा खौं देखतनई बोलीं - ''उरैन डर गओ भोजी?'' ''हओ बिन्नू आप स्कूल जा रईं का ? हओ भौजी उतई आ जा रये।'' पास ठाड़ी विजेता दुर्गा सैं बोली - ''अम्मा हमें भी फुआ के संगे स्कूल जाने।'' मौड़ी की बात सुन कैं दुर्गा बोली - ''हओ तुमें तौ जरूर जाने अकेले पैलै आजी सैं तौ पूंछ लो।'' दिशा बोली - ''भौजी मौड़ी सई तौ कै रई। कल सैई ई खौं स्कूल भेजन लगौ। अबै दाखला चलई रये हैं। घनसू भइया सैं कइओ सो मौड़ी खौं लुआ कैं कल स्कूल हमाये पास आ जावैं। सो हम दाखला करा दें।'' अब का बतायें बिन्नू चाउत तौ इनके बाबू जी भी हैं कै मौड़ी पढ़ लिख कैं आँगें बढ़े अकेलै बाई के सामने उनकी एक नई चलत। लेकिन मौड़ी के लाने हम जरूर सैं कै कैं देखैं। ''अच्छा भौजी भइया खौं रैन दो कल आपई आ जाओ हम सब करा दें।'' दुर्गा ने सब खौं मना-मनू कैं विजेता कौ नाम स्कूल में लिखा दओ।

विजेता पढ़बे -लिखबे में हुसियार हती सों सुरू सैईं अच्छे नम्बरन सैं पास होत रई। स्कूल में सबई मास्टर बहन जी ऊ सैं सबई खुश रतते। ऊनें कभऊँ काऊ खौं शिकायत कौ मौका नईं दओ। कक्षा पाँच सैई ऊ खौं पढ़ाई मे बजीफा मिलन लगो तो। सो घर में सबई निश्चिंत हो गये कै चलौ मौड़ी की पढ़ाई पै कछु खर्च नईं करने पड़ रओ। दुर्गा तौ भौतई खुश हती कै मौड़ी की पढ़ाई निर्विहन चल डगरीती। अकेलैं ऊ के गाँव में ग्यारवीं तकई स्कूल हतो। सो ग्यारबी करतनईं ऊ की पढ़ाई छूट गई। विजेता आँगे पढ़बे के लाने पूरी कौशिश में लगीती। दुर्गा भी चाहतती कै विजेता पास के गाँव सैं अपनी आगे की पढ़ाई जारी रखबै।

अकेले बाई ने साफ कै दईती कै मौड़ी खौं पढ़बै के लानें दूसरें गाँव रोज न आन-जान दैहैं। जमानौ बुरओ है जितनो पढ़ने तो पढ़ लओ। अब तौ मौड़ी के पीरे हात कर कै गंगा नहाओ। घनसू की समझ में भी कछु नईं आ रओ तौ कै वो का करै। विजेता चाउतती कै वो पढ़ लिख कैं अपने पाउन पै ठाँडी हो जाये। ऊ की कई सहेली पास के गाँव में जा कैं अपनी पढ़ाई पूरी करवे की तइयारी कर चुकी तीं। मास्टर - बहन जी भी ऊ खौं अपनी पढ़ाई जारी रखवै की सलाह दै रयते। विजेता खौं उदास देख कैं ऊ के छोटे भइया खौ भी अच्छौ नई लग रओ तो। दुर्गा भगवान खौं मना रईती कै हे ईसुर अब तौ आपई कछु करो तौई है। विजेता कौ भाग्य अच्छौ हतो सो ऊ के मामा जो कैबी. एस. एफ. में हते ऊ के घरे आ पौचे। उने देखतनई सब खुश हो गये। दुर्गा खौं भी कछु आश बंध गई कै चलो भइया आ गये। सोई समस्या कौ कछु न कछु हल तौ निकरई आ है। और ऐसई भओ।

बातचीत में जौ तै भओ कै विजेता मामा के घरै शहर में रै कैं आँगे की अपनी पढ़ाई पूरी कर है। बैन - भइया एक दूसरे सैं बिछड़बौ तौ नईं चाउतते। अकेलैं उज्जल भविष्य के लाने जी पै पथरा धरने परो। विजेता मामाजी के घरै रै कैं खूब मन लगा कैं पढ़ाई करन लगी। पढ़ाई पूरी होतनईं विजेता ने मामा जी के कैवे पै बी. एस. एफ. की नौकरी कर लई। विजेता बड़ी ख़ुश हती कै ऊ के बचपन कौ सपनो पूरौ हो गओ तो। वा शुरू सैंई अपने देश की सेवा कइबो चाहत ती। जब वा छोटी हती सो मामा जी की टोपी लगा कैं उनै सलूट मारौ करै। जब कोऊ ने भी जा नई सोची ती कै विजेता वास्तव में एक दिना बी. एस. एफ. अफसर बन जै है। जौन बटालियन में मामा हबलदार हते औई में विजेता इंस्पेक्टर बन गईती। जब ऑफिस में डियुटीपै मामा अपनी भानेजन विजेता खौं सलूट मारै सो उनकी छाती गर्व सैं चौड़ी हो जाये। और भारी खुश होवै कै हमाई बैन और हमाई मेहनत सफल हो गई। घरै भी मौड़ी की सफलता सैं सबई खुश हते। दुर्गा भी निश्चिंत हती कै ईसुर की कृपा सैं मौड़ी की तैनाती भी सीमा पै ओई जांगा पै हती जितै ऊ के भइया हते।

अकेलै विधना खौं उनकी जा खुशी देखी न गई। सो एक दिना जाड़े के मौसम में रात कौ समय हतौ। अमाउस आबें बारी हती सो धुत्त अंधयारो छाओ तो। विजेता अपनी औजी पूरी कर कैं अपनी एक महिला साथी के संगै बातै करत अपनें ठिकाने की तरफ जा रईती। कै अचानक ऊ खौं तनक दूर पै कौऊ की आहट लगी वा चौकन्नी हो कैं इतै उतै देखन लगी। अंधयारें में उतै को हो सकत है? इतने में मिमयात भईं पाँच छः छिरिया आस-पास दिखाई दईं। विजेता की साथी बोली 'अरे तुम तो यूँ ही परेशान हो गई ये तो बकरियाँ है।' हाँ बकरियाँ तो है पर तुमें नहीं लगता कि इतनी घबराई सी क्यों है? और ये इतनी रात को यहाँ आईं कहाँ से? अरे यह जानवर है रास्ता भटक कर यहाँ आ गई होंगी। चलो न मुझे बहुत तेज भूख लग रही है। कैत भये विजेता की साथी ने ऊ कौ हात पकर कैं आँगू की तरफ खैचो। कै तबई विजेता ने हथयारन के स्टोर रूम के पास तीन-चार परछाँइयन खौं देखो। वे परछाँई धीरें-धीरें लगभग रैंगती सी आँगू बढ़ रईती। उनकी आकृति सैं साफ समझ में आ रईती कै जे अपनी बटालियन के जवान नइयाँ। दोई जनन ने एक दूसरे की तरफ देखो और विजेता ने अपनी साथी सें इशारे सैं कछु कई। ऊ ने भी बात समझवे कौ इशारौ करो। और अपने आप खौं दुकाउत भई ऊ दिशा की तरफ बड़न लगीं जितै काफी मात्रा में उनके साथी मौजूद हते और सोवे की तइयारी कर रयेते और हथयार रूम सैं लगो भओ भाग हतो।

विजेता खौं समझतन देर न लगी कै जे कोऊ और नौई। जे तौ आतंकी हमलावर आयें ई सैं हर हाल में हमें इनै हथयारन तक पौचवे सैं रोकनेई है। फिर चाये कछु भी हो जाये। सो ऊ ने उन तक पौचवे के लाने उनकीअई छिरियन कौ सहारौ लओ। और धीरे धीरे ऊनै ओई तरफ खौं धकेलवो शुरू करो। और उनके बीच अपने आप खौं दुकाउत भई आँगें बड़ी। एक पेड़ के पास पौच कैं ऊ की ओट लै कै वा ठाँड़ी हो कैं एक क्षण के लाने सोचन लगी। कै इन कौ ध्यान कैसे भटका कैं रोको जाये। सो ऊ ने छिरियन जैसी मिमयावे की आवाज निकारी सो मिमयावो सुन कै दूसरी छिरियाँ भी मिमयान लगी। जैसई छिरियन की मिमयाहट सुनी सो एक आतंकी बोलो - अरे चुप कर मरबायेगी क्या? ''दूसरे ने ऊ खौं चुप रैवै खौं कई। विजेता ने एक पथरा उठा कै छिरिया खौ दै मारो सो वा जोर सैं मिमयात भई भगी। थौड़ी दूर पै तैनात जवान वा आवाज सुन कैं चौकन्ने भये और इतै उतै घूमन लगे। सो आतंकी उतई दुबक गये। दो तीन जवान थोडी दूर पै ठाँड़े हो कैं पैनी निगा सैं निरीक्षण करन लगे।

इतैक में पास ठाँडी विजेता ने देखो कै एक आतंकी एक

जवान पै अपनी बंदूक सै निशानौ साद रओ है। विजेता ने बिना देर करें ऊ के हात पै एक अच्छौं पथरा दै मारो। चोट के कारण ऊ की बंदूक हात सैं छुट गई और वों तिलमिला गओ। दूसरे आतंकी नें मुड़ कैं ऊ दिशा में फायरिंग करी जी दिशा सैं वो पथरा आओ तो। पथरा फैंक कै विजेता तुरन्त अपनी जगा में झाड़ियन की ओट में पर रई। अकेंले फायरिंग की आवाज सुन कैं अपनें सबई जवान सावधान हो गये। और अपनो-अपनों मोर्चा समार लओ। अकेलें अंधयारे में अंदाज न लग रओ तो कै आतंकी की जगा और कितने हैं।

विजेता समझ गई सो ऊ ने आतंकियन खौं उकसावे के लाने उनपै एक दो पथरा और सन्ना दयें। पथरन के लगतनईं आतंकियन में हलचल भई। सो अपने इतै के जवानन खौं अंदाज लग गओं कै वे किते व लगभग कितने हैं। जैसई जवानन ने फायरिंग करी। सो आतंकियन ने भी जवावी फायरिंग शुरू कर दई। इतनें में विजेता ने देखौ कै एक आतंकी के हात में एक बम कौ गोला है। और वो हथयारन के स्टोर रूम खौं निशानौं बनावे की कौशिश कर रओ है। विजेता बिना देर करें ऊ आतंकी की तरफ चीता की फुरती सें लपकी और शेरनी सी दहाड़ी अचानक भये हमला सैं आतंकी भी हड़बड़ा गओ सो ऊ के हात सैं वो बम कौ गोला छूट गओ झूमा-झपटी के बीच भी वौ आतंकी ऊ बम के गोला तक पौचवे की कोशिश कर रओ तो। विजेता ने अपनी पूरी दम लगा कैं ऊ आतंकी खौं दबोच रक्खो तो। अकेलैं दूसरे आतंकी ने विजेता पै हमला कर दओ। ऊ के कई फायर विजेता ने नाकाम करे लेकिन एक गोली विजेता के पेट में जा लगी। आतंकी खौं लगो कै मौड़ी के लाने एकई गोली काफी है। बस वो इतईं भूल कर बैठो। विजेता घायल शेरनी सी दहाड़ी और पैले आतंकी की गन छुड़ा कैं जीखौ कै वा पैलैईं अदमरौ कर चुकीती सामने वाले आतंकी पै गोलियन की बौछार करन लगी। और पल भर में उये ढेर कर कै पैले पै भी गोली दाग दई।

विजेता मुड़ियई हती कै सामने सैं ऊ की निगा एक आतंकी पै परी जो कै दुक कैं ऊ की बटालियन के कमानडेन्ट साहब खों निसानौ बनाबे बारौ हतो। विजेता ने आओ देखो न ताओ और चिल्लयात भई गन की सूद पकर लई। आतंकवादी की गन सैं निकरी गोलियन ने विजेता कौ शरीर छलनी कर दओ। ऊ की आवाज सुन कैं कमानडेन्ट साहब की बन्दूक सैं निकरी गोलियन ने ऊ आतंकी खौं उतईं ढेर कर दओ।

सबई आतंकियन कौ सफाया हो चुको तो। कछु जने विजेता की तरफ दौड़े और ऊ खौं उठा कैं भीतर लियाये। खून सैं लतफत विजेता अंतिम सांसें ले रईती। मामा भी विजेता के पास पौंच गये और ऊ को मूड़ अपनी ओली में धरत भये बोले बेटा ''जौ का हो गओ? हम जिज्जी खौं का जबाब दै हैं।'' विजेता बोली ''मामा जी अम्मा बाबू सैं कइओ कै उनकी बिटिया ने पीठ पै नईं सीना पै गोली खा कैं उनकौ संकल्प पूरौ करो है।'' इतनो कै कैं ऊ ने अपनो दाहिनो हात उठा कैं सलूट मारी और ''जय हिन्द भारत माता की ज भर कै पाई और हमेशा - हमेशा के लाने सब सैं विदा लै लई। पूरी बटालियन जय हिन्द जय हिन्द भारत माता की जय के नारन सैं गूंज उठी।

विजेता के मामा तौ स्तब्ध हते कै का सोचो तो और का हो गओ। अब अपनी बैन खौं का मौ दिखायें। विजेता के जावे कौ सब खौं दुख हतो। अकेलै ऊ की बहादुरी और सूझ बूझ की भी सब लोग तारीफ कर रयेते। कै अगर वे आतंकियन खौं न रोकती और आतंकी व हथयारन के स्टोर रूम तक पौच जाते तौ एक बड़ों हादसा हो जातो। और ऊ सैं काफी जन -धन की हानि संभव हती। बी. एस. एफ. ने कार्यवाही पूरी कर कैं विजेता के शव खौं ससम्मान उनके गाँव पौचावे की कार्यवाही करी। टी. वी. पै समाचार सुन तनईं पूरे गाँव में हा-हाकार मच गओ कै विजेता देश की रक्षा करत भये शहीद हो गई।

जैसई जे शब्द दुर्गा के कानन में गूंजे। दुर्गा जोर-जोर सैं चिल्लियाई - ''नईं नई विजेता हमें छोड़ कैं कँऊ नईं जा सकत विजेता-विजेता।'' कैं कैं दुर्गा मौंड़ी सैं लिपट कैं रोन लगी। काकी ने दुर्गा खौं उठाओ और अंसुआ पौछत भये बोली - ''मौग जाओ दुलइया मौग जाओ व हमाई -तुमाई न हती। वा तौ देश सेवा खौं आईती सो ऊ की सेवा में बलिदान हो गई। तुम तो भाग्यावान हौ जो वा तुमाई कोख और कुल दोइयन खौं तार गई। मौंड़ी हो कै भी वंश और गाँव कौ नाम ऊँचौ कर गई।'' दुर्गा के भइया बोले-''बैन काकी सांसी कै रई। वा जी की हती सो उनने बुला लओ। अपन तौ ऐई में धन्य हो गये कै वा अपनी बेटी हती, एक बहादुर बेटी।''

तब तक लोग विजेता कौ विमान उठा कैं विश्राम गृह की तरफ चलन लगेते। विजेता धीरे-धीरे माँ की आँखन सैं औझल होत जा रईती। राम नाम सत्य है के बीच भारत माता की जय, भारत माता की जय विजेता अमर रहै विजेता अमर रहै। विजेता -विजेता के नारन सैं पूरौं वातावरन गूंज रओ तो। धरती सैं आकाश तक विजेता, विजेता बस विजेता सुनाई दै रओ तो।

-गीत बंगले फेस 2
दुर्गेश बिहार, जे. के. रोड भोपाल म. प्र.
मो.-9977825997

## खूबईं तन-मन-धन बारो

**-सन्तोष तिवारी 'सरल'**

खूबईं तन-मन-धन बारो, निकरो तोऊ कुआ खारो।
सींचो खून पसीना सें, खेत में उग आओ चारो।।
खबाई जाकी खूब करी, बई बैला ने हमें मारो।
जौनई घर हमनें छोरो, बई में दिखन लगो जारो।।
गगरी ढँक जाती पूरी, मौ पै रखत नहीं पारो।
जा घनघोर गरीबी ने, सबको बहुतई है तारो।।
मेहनत करत करत हारे, मटियामेट भओ सारो।
हवा कछु ऐसी नई चली, मिट गओ आंगन औ आरो।।
जब तक दिशा सही न होय, काकर दै हैगो नारो।
अरे जा हवा पछईयां नें, सबई कों कर डारो कारो।।
गलत सोच में बिदे रहे, बेकाराई जीवन गारो।
खूबईं तन-मन-धन बारो, निकरो तोऊ कुआ खारो।।

-जय प्रकाश नगर, कोंच
जिला जालौन उ. प्र.
मो.- 767408692

# मध्यप्रदेश के दतिया में न्याय व्यवस्था का स्वरूप

-डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला

इतिहासकाल में दतिया के भूभाग बुन्देलखण्ड प्रान्त के अंतर्गत रहे थे और मध्यकाल में इसकी मूल राजधानी ओरछा थी। यद्यपि समकाल के प्रमुख बुन्देलखण्ड के राज्यों की अपनी-अपनी राजधानी रही थी। और वे राज्य सांस्कृतिकरूप से ओरछा से सम्बन्धित रहते हुये अपनी जागीर के भागों के स्वंतत्र शासक के रूप में थे। ये दतिया चंदेरी में थे। दतिया चंदेरी के राज्य ओरछा के बँटवारे से स्थापित हुये थे। दतिया राज्य की स्थापना ओरछा के शासक बीर सिंह देव बुन्देला के पुत्र भगवानराव बुन्देला ने 20 अक्टूबर 1626 ई. को की थी। उस समय दतिया के भाग छोटी-बड़ौनी के अंतर्गत थे और बड़ौनी ही दतिया की राजधानी रही थी। उल्लेखनीय है कि राजतंत्र का समय था इस काल में राजा ही सर्वोच्च और अपील का अंतिम न्यायाधीश होता था। बडौंनी में कचेरी नामक एक गढ़ी है, इसमें बड़ौंनी रियासत का दरबार लगता था। औरा बताया गया है, कि रियासत के अंतिम काल 1907-1948 के बीच यहां न्यायाधीश बैठा करता था। इस कचेरी नाम की गढ़ी को बीरसिंह देव के जागीरकाल (1592-1605) का माना जाता है, ये ही बाद में ओरछा के शासक (1605-1627) रहे थे। बीर सिंह न्याय प्रिय शासक थे। माना जाता है कि न्याय की खातिर उन्होंने अपने एक पुत्र का वध करा दिया था।

दतिया में नगर की स्थापना दलपत बुन्देला (1678-1707) के समय में हुई थी इनके ही समय में दतिया के दुर्ग का निर्माण हुआ था। इस दुर्ग में दलपतराव की एक चौकी बनी हुई है, माना जाता है कि दतपतराव इस पर बैठकर न्याय किया करते थे। दतिया के सभी शासकों के यहां दीवान नियुक्त किये जाते थे। दीवान राज्य की सर्वोच अपील की अदालत होता था। दतिया राज्य का संगठन गांवों का था, इस राज्य में कोई नगर नहीं था और गांव की जमीनें राजा या उनके द्वारा नियत सामंत की मानी जाती थी। गांव का कृषक एक प्रकार का जमीन का अस्थाई पट्टाधारक होता था। गांव के छोटे-मोटे विवाद गांव की अथाई , गांव के चबूतरे पर गांव के नम्बरदार, चौधरी , माते, पटेल आदि नाम के पदाधिकारी निपटा देते थे। गांव के ये प्रमुख लोग ही गांव के न्यायाधीश होते थे। ठकुरासी सामंतों के जमीन के बँटवारे प्राय: आपसी पंचायत से निपट जाते थे। बुन्देलखण्ड के संदर्भ में अभी भी इन क्षेत्रों के गाँव में नियाय के चबूतरे देखे जाते है। पूरे मध्यकाल में 19 वी सदी के प्रारंभ तक अंग्रेजों के दतिया सहित बुन्देलखण्ड की अन्य रियासतों से संधियां हो जाने तक गांवों की आपसी मेलमिलाप की पंचायती न्याय व्यवस्था दतिया में कायम रही थी। दतिया के बुन्देला मुगलकाल में मुगल बादशाओं के मनसबदार रहे थे, परन्तु मुगलों ने कभी गांवों की पंचायती व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं किया था। उल्लेखनीय है कि ओरछा के महाकवि केशव ने अपने ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ 'वीरचरित' की रचना 1607 ई. से प्रारंभ की थी। ग्रंथ के लेखक ने ओरछा नगर के वर्णन में न्याय विभाग का उल्लेख किया है उदा.

*इक दरबार मुहल्ला दाग दूजै दान देत वर भाग।*
*तीजै नगर न्याउ देखिये, चौथे चिर दफ्तर लेखिये ।*

बुन्देलखण्ड के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक इतिहास की परम्पराओं पर प्रकाश डालने वाला यह समकालीन ग्रंथ है। चूंकि ओरछा राज्य से ही दतिया राज्य की उत्पत्ति हुई थी, अत: इन विभागों की परम्पराओं का पालन दतिया राज्य में भी होता था। प्राचीन काल की न्यायिक व्यवस्था का आधार धर्मसूत्र, मनुस्मृति, तथा कौटिल्य का अर्थशास्त्र आदि ग्रंथ थे,इनकी रचना का काल 300 ई. पूर्व से 300 ई. के बीच का माना जाता है। मूलरूप में ये ही प्राचीन ग्रंथ दतिया राज्य में न्याय करने का प्रमुख आधार माने जाते थे दलपतराव बुन्देला के काल से दतिया राज्य में मुस्लिम समुदाय के हुनरबन्दों व योग्य सैनिकों का आना शुरू हो गया था और इन लोंगों को राज्य में प्राथमिकता भी दी जाती थी। राज्य दरबार की न्याय व्यवस्था में मुस्लिमों की हिस्सेदारी भी रहती थी।दतिया के सेंबढ़ा में सन 1707 से 1758 ई. के मध्य दलपतराव के पुत्र पृथ्वी सिंह बुन्देला शासक रहे थे। इनके काल में सेबढ़ा में नवीन दुर्ग बना था, यहां मामलों की सुनवायी होती थी। दतिया के शासक शत्रुजीत बुन्देला (1762-1801) के समय तक दतिया राज्य में न्याय की दरबारी और गांवों में पंचायती व्यवस्था चलती रही थी। राज्य के नगर व गांवों मे आपसी विवाद कम ही होते थे, पर राज्य-रियासतों मे आपसी क्षेत्र सम्बन्धी विवाद इस काल में बढ़े थे। मराठों की 1742 ई. के बाद इन क्षेत्रों में आमद होने के कारण दतिया सहित बुन्देलखण्ड की सभी रियासतों में बार-बार मराठी सेनाओं के आवागमन व रियासतों से अवैध धन वसूली के कारण न्याय संबंधी समस्यायें बढ़ी थी। और राज्य की कानून व्यवस्था को गहरा आघात लगा था, क्योंकि शक्तिशाली लुटेरों के सामने कोई कानून नहीं चलता था। बुन्देली रियासतो की कोई केन्द्रीय सत्ता नहीं रह गई थी, ओरछा का पतन मराठों ने कर दिया था। रियासतों के बीच भुमियावट अर्थात अपनी शाक्ति के बल पर कमजोर रियासत की जमीन आपस में बांट लेने का रिवाज प्रचलित था, इस कारण आमजन को बहुत परेशानी होती थी। फलस्वरूप गरीब प्राय: अपनी रियासत छोड़कर अन्य क्षेत्रों की ओर भाग जाते थे। ऐसे कमजोरों को न्याय ईश्वर भी नहीं दे पाता था इसें हम असंगठित न्याय का काल कह सकते है जो मुगल बादशाह के 1707 ई. में निधन के बाद हुआ था।

दतिया के शासक शत्रुजीत ने राजगढ़ महल का निर्माण करवाया था। यह इमारत दतिया की न्यायालयीन व्यवस्था की सबसे बड़ी गवाह है, इस इमारत में दतिया के भवानी सिंह (1858-1907) के समय से बाकायदा अदालत लगने लगी थी। कतिपय लोग यह भी मानते है कि शत्रुजीत के बाद के काल से व 1804 ई. से अंग्रेजों से दतिया रियासत की संधि हो जाने के बाद से दतिया की इस विरासती इमारत में अदालती कार्य होने लगा था। दतिया के शासक पारीक्षत बुन्देला के काल सन् 1835 दिसम्बर में अंग्रेज अधिकारी बिलियम स्लीमैन नें दतिया की यात्रा थी। उसमें अपने यात्रा विवरण ''रैम्बिल एंड रिकलैक्शन आफ एन इंडियन आफीशियल'' में लिखा है कि दतिया का दीवान गणेश प्रसाद अर्थात प्राइम मिनिस्टर चोरों-डाकुओं, ठगों से मिला हुआ है। और वह उन चोरों के माध्यम से देश के सुदूर भागों में डकैती डलवा कर चोरों को दतिया में छिपा लेता है व उन चोरों से व्यवस्था की विश्वसनीयता पर बड़ा सवाल खड़ा होता है। दतिया के इन्दरगढ़ के आसपास के कई गांवों में ठगों का निवास

रहा था। अंग्रेजों के समय 1858 ई. के काल में अंग्रेजों ने दूसरे क्षेत्रों से दतिया में निर्वासित कर सजा देकर कई बगावती-क्रान्तिकारियों को दतिया में कैद कर दिया था। दतिया के बैस ठाकुरों की पुरानी हवेली का उपयोग भवानी सिंह के काल से जेल के रूप में किया जाने लगा था। दतिया के वर्तमान जेल का निर्माण अंतिम शासक गोविन्द सिंह के समय में हुआ था। जेल का होना इस बात का प्रमाण है, कि न्याय प्रणाली कार्य कर रही थी।

अंग्रेज-कालीन-

अंग्रेजों ने अपने सन 1907 ई. में रियासतों के गजेटियर प्रकाशित किये थे, इनमें समकाल की न्यायिक व्यवस्था का उल्लेख आया है। इसके अनुसार स्टेट का सर्वोच्च-अधिकारी व न्याय का जनक राजा होता था और उसका दफ्तर इजलास खास कहलाता था। राजा के आधीन दीवान होता था, जो राजा द्वारा दी गई शक्तियों का उपयोग करता था, न्यायिक शक्तियां भी उसके पास होती थी। राज्य में एक न्यायिक विभाग भी होता था। दतिया स्टेट के अंतिम समय में दतिया सहित चार तहसीलें थी, इन्दरगढ़ नदीगांव व सेंवढ़ा, इसमें से नदी गांव के क्षेत्र वर्तमान में उ. प्र. के भाग बन चुके है। इन तहसीलों में न्यायिक अधिकारी के रूप में तहसीलदार रहता है था, अदालती भाषा उर्दू थी, हिन्दी का भी उपयोग किया जाता था, फैसले उर्दू भाषा के शब्दों का उसी बोली में हिन्दीकरण करते करते हुये भी लिखे जाते थे। दीवान अदालत के लिये समय-समय पर निर्देश भी जारी करता था, रीति -रिवाजों के आधार पर फैसले किये जाते थे। इंडियन पैनल कोड का उपयोग आपराधिक प्रकरणों में किया जाता था। गांव की न्यायिक व्यवस्था में नम्बररदार को स्टेट के अंतिम समय तक प्रधानता मिली हुई थी। शिकदार नाम का पदाधिकारी दरबार में मुख्य राजस्व न्यायिक अधिकारी के रूप में कार्य करता था। दतिया रियासत का अपील के लिये हाई कोर्ट भी था। टाउनहाल भवन में हाई-कोर्ट लगता था यह भी न्याय व्यवस्था की विरासत का भवन है। दीवान कालकाप्रसाद हाई कोर्ट के जज रहे थे और इनका निवास दतिया नगर में स्वर्गीय नाथूराम नीखरा के मकान में था। इस काल में स्टेट का गजट निकलता था इसमें अदालत के समन निकला करते थे और दरबार के आदेश निकला करते थे, ये आदेश स्टेट के कानून के रूप में मान्य होते थे। नवम्बर 1936 ई. के गजट में लिखा है, ''बअदालत जुडीशली रियासत दतिया मुकाम राजगढ़।'' जून 1936 के गजट में पं. तारादत्त जोशी बी. ए. चीफ जज, चीफ कोर्ट बाबू मदनगोपाल दलेला बी. ए. एल. एल. बी. चीफ जुडिशन आफीसर का नाम दतिया के संदर्भ में अंकित है। पर यहां यह अवश्य उल्लेखनीय है, कि 1862 ई. के बाद से दतिया रियासत में अंग्रेज अधिकारी लगातार आये थे और राजा सहित रियासत की पूरी व्यवस्था उनकी दामाद की तरह सेवा करती थी। अंग्रेजों के अत्याचार, मनमानी, बेगार लेना, मारपीट-हत्या कर देने या उनके शिकार आयोजनों में मर जाने पर आमजन की कोई सुनवाई नहीं होती थी, कहावत भी है कि अंग्रेजों को सात खून माफ थे।

स्वतन्त्रता के बाद दतिया रियासत सन 1949 में विन्ध्यप्रदेश में शामिल कर जिले के रूप में मान्य की गई थी। बाद में 1956 में नये मध्यप्रदेश के गठन के बाद दतिया जिला मध्यप्रदेश में शामिल कर लिया गया था। प्रारंभ में दतिया जिले में डिस्ट्रिक जज का कोर्ट नहीं था, दो न्यायाधीश यहां राजगढ़ में बैठा करते थे। यह समय-समय पर ग्वालियर, छतरपुर और शिवपुरी के जिला न्यायालयों से सम्बन्धित रहा था। दिनांक 15-7-78 को दतिया में जिला न्यायालय डिस्ट्रिक कोर्ट की स्थापना हुई थी। सन 1982 ई. तक सभी अदालतें राजगढ़ महल में लगती रही थी। दतिया की तहसील सेवड़ा में अलग से अदालत की व्यवस्था थी, भांडेर तहसील पहले ग्वालियर जिले में शामिल रही थी, बाद में दतिया जिले में शामिल हुई थी। भाँडेर में रियासती काल में अदालत रही थी, यह कस्बा बुन्देलखण्ड के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र के रूप में रहा था। मुगलकाल में यह मुगलों का प्रमुख महाल या राजस्व-प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में रहा था। बाद में यह मराठों, अंग्रेजों के कब्जे में रहते हुये झाँसी के व ग्वालियर के मराठा राज्य के अंतर्गत रहा था।

इस लेख का लेखक भी न्याय विभाग के विभिन्न जिलों में लायब्रेरियन कम फार्म क्लर्क यू. डी. सी. के पद पर कार्यरत रहा है, दतिया में डिस्ट्रिक कोर्ट की स्थापना के साथ उसका स्थानान्तर दतिया में हो गया था। अदालत के न्यायाधीश का व्यक्तित्व श्रेष्ठ माना जाता है, और अधिकांश लोग ऐसे होते भी हैं। परन्तु लेखक के तौर पर दतिया के प्रथम डिस्ट्रिक जज श्री विष्णुदत्त बाजपेयी को उनमें सर्वश्रेष्ठ के रूप में, निवेदक मानता है, वे ईमानदारी की शाश्वत मिसाल थे। लेखक की अदालती नौकरी मार्च 1977 से मार्च 1982 तक चली थी, बाद में पी. एच. डी. एवार्ड होने के बाद वह शिक्षा विभाग में लायब्रेरियन के रूप में चला गया था। दो घटनाओं का जिक्र मैं जरूर करना चाहूंगा, जब निवेदक सागर न्यायालय में पदस्थ था,उस समय चंद्राणीजी जिला न्यायाधीश थे। घटना इस प्रकार है, अदालत जब चल रही थी, उनकी अदालत में एक दुबली महिला ने अचानक प्रवेश किया और, जज साहब से उसने कहा कि कुछ गुंडे उसके पीछे लगे हैं और उसे मार रहे हैं। उस समय अदालत मे कई वकील भी मौजूद थे, पर उन सबके सामने पर्दे के पीछे से एक हाथ आया और महिला को पूरी अदालत में पुलिस के सामने घसीट कर मारते टैम्पू में बिठाकर ले गया। सारी न्याय व्यवस्था देखती रही, बगल में पुलिस अधीक्षक का कार्यालय भी था। बाद में मालूम पड़ा कि औरत को घसीटने वाले लोग शहर के दुर्दान्त अपराधी थे, कोई उनसे झगडा़ मोल नहीं लेना चाहता था।

दूसरी घटना सम्मानीय श्री रामरतन तिवारी जी एड. ने सुनाई थी, जो स्टेट समय से वकालत करते हुये अब वर्तमान में वकालत छोड़ चुके है। घटना इस प्रकार है, कि गांव का सीधा गरीब किसी प्रकार डाकुओं के चुंगल में फँस वर्षों तक उनका सामान ढोता रहा था, उसने कभी कोई बारदात नहीं की थी, वह हथियार चलाना तक नहीं जानता था। पर पुलिस के चक्कर में फंस कर वह सजा खा बैठा, सम्मानीय तिवारीजी उस समय जी. पी. थे, उन्होंने जजसाहब और पुलिस अधीक्षक से उसकी निर्दोषता की गुहार लगाई पर कुछ नहीं हुआ था। इस प्रकरण में न्यायाधीश महोदय उस गरीब से मिलने जेल भी गये थे। पर कानून की उलझनों में वे सचाई का साथ नहीं दे पाये थे। इसमें दूसरी घटना दतिया जिले की अदालत की है।

-कुंजनपुरा, दतिया, म. प्र.
फो. 07522-236136, 9407588157

# संस्कार

-राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'

कविता आज फिरकें उदास बैठी हती, वा सोस रईती , जाने कैसी कटहै हमाइ जा नीरस जिन्दगी। का ई कौ नाव जिन्दगी है? मोय कब लौ ई तरां सें तिल-तिलकै जीनें पड़ेगे। का इ जन्म में हमाये भाग में कष्टइ-कष्ट सैवो लिखो है, का इ जनम में सुख हमाये भाग में नइयाँ। तभई मताई की आवाज सें वा चौक सी गइ मानों वा सोउत सें जागी भयी हो। मताई नें फिरकें तानकें पुकारौ का इ तरां बैठी-बैठी रोटियाँ तोड़त रेहे या कछु चौका बर्तन सोउ करहै। यूँ तो कविता अपनी पाँच बहिनन में सबसें बड़ी हती औ देखवे में सोउ परी सी सुन्दर या जा कय कि सौन्दर्य की मूरत हती तो लबरी ना हुइए, सायद ईसें ऊकी छोटी बैने उसें एनई जरत बरत हतीं। मताई सोउ ऊसें सौतेलौ व्यौवहार करतती, पतौ नईं काये ? ईकौ जबाब ऊके ऐंगरें नइ हतो, और मताई से पूँछवे की ऊमें हिम्मत नइ हती। मताई ऊमें हमेसा कछु न कछु बींग-कमी निकालकैं डाँटत राहती या जा कैलौ कि उये डाँटवें कौ बहानौ ढूँढ़त राहती, सायद उकी एक वजह उकै व्याव की सोस फिकर, चिंता हुइये।

मध्यमवर्गीय परिवार हतो, उनकौ पिता नौनी नौकरी में हतो, लेकिन भौत सौ पैइसा हौवे पै भी जादां कंजूस प्रवृत्ति कौ हतौ, उके सामे तो कंजूसी भी सरमाओ करतती। ढंग से न तो कौनऊ खाँ नोनो भोजन मिल पात तो और न ही नौनौ पेरबे के लाने उन्ना लत्ते। बस कौनऊ तरां जा जीवन की गाड़ी कौ चला रयते। जौ कैबौ सइ रैहै कि उनसें तो नौने मजूर एवं गरीब लोग जीवन जियत हैं। सुख सें रात हैं। वे जितेक मिलत हैं ऊ में संतोष करत हैं।

बाप चाउत तौ कि जल्दी सें जल्दी कविता के हात पीरें हो जाये, विवाह कौनऊ भी तरह से कर दूं लेकिन पइसा कम से कम खरच करने पड़े। ऐसौ नइं की ऊके ऐंगरे पेइसा टका कम हो, लेकिन का करे कंजूसी तो उनके रग-रग में बसी है. इतैक पैइसा कमावे एवं जोरवे, करवे सें का फायदा जब हम उकौ सइ उपयोग नइं कर सकें। कोई धन दौलत थोड़ई बाँधकें अपने संगे ले जाने है, लेकिन मूरखन खाँ उपदेश दैबे सें का फायदा।

लेकिन कविता तो कम से कम दो साल तक व्याव नइं करन चाउतती, कायसें कि उये तो अपनी कालेज की पढाई पूरी करने हती, और अबै तो वा, एम. ए. प्रथम वर्ष में ही पढ़ रइती। उमर भी तो अबै जादां नई हती। मात्र 20 बरस की है, लेकिन पिता की जिद के आगे उकी एक नइं चलत ती। पिता तौ बस ऊकै व्याब की रट लगाये राहते। मौड़ा तो देखवे कउँ कभी कभार ही जातते पर जादां हात पैर नई मारतते, किन्तु कविता के सामे ही उके व्याव की शीघ्रता की चर्चा घर में रोजऊँ करत राहते। रोजऊँ अपने व्याव की बातें सुनत-सुनत कविता के कान पक गये हते। कविता को अब तो व्याव के नाव सें चिड़ होन लगी हती । कभऊँ कभऊँ तो कविता पिता से कै देत ती कि का मैं इतैक बुरई लगन लगी हूँ कि तुम मोए इ घर सें भगावे की जल्दी करन लगे हो। पिताजी तौ जबाब देत सुनकें चिमाई साध लेतते, लेकिन मताई की जुवान कैंची की तरां चलत ती तुरतईं कतती का तोय जिन्दगी भर इतई परे-परे खिलात रैहे। लोग का कैहै कि जुवान मोड़ी घरे है और मताई - बाप कों कौनऊ चिंता नइयाँ ।

लेकिन साँची कई जाये तो मताई सोउ नइं चाउत ती थी कि कविता कौ व्याव जल्दी हो जाये कायसें कि वेई तो जो न घर कौ सबरौ कामकाज अपने हातन से करत रात है। ठीक एक नौकरानी की तरां दिनभर काम में जुटी रात वा भी बिना पइसा कें और मताई हती कि बस दिन भरे हात पै हात धरें बैठी रात या फिर पलंग पै महारानी की तरां आराम करत रात। पानी तक अपने हाँत उठाकैं नइ पियत। वा तौ दिन भर कविता को ही कोसत रात जैसे उकी दुश्मन हो और मानो वा ऊसें अपने पिछले जन्म कौ बदला इ जनम में लें रइ होय।

कविता ने तो पौथी-पुस्तकन में पढ़ौ हतो कि माँ तो एक ममता कौ सागर होत है और अपने बच्चों कों वा अपनी जान सें भी जादा चाउत है और मौका पड़बे पै अपनी जान की बाजी लगाकैंअपने बच्चौ की जान बचाउत है। लेकिन उकी जा मताई तो बिल्कुल ई के विपरीत गुणन की है। बिल्कुल राक्षसी प्रवृत्ति की। माँ ने सुनीता के हृदय में माँ के प्रति इ कदर नफरत के बीज बो दयते कि उये माँ शब्द सें घृना होन लगी ती और घृना होना ऊके लाने सुभाविक हती। भला कोई मताई अपनी बिटिया के संगे ऐसौ क्रूर व्यवहार करत है? सौतेली माँ तक इतैक कठोर एवं निर्दयी नइं होती जितैक उकी मताई हथी लेकिन कविता भी बेचारी का करे वा बेवस और मजबूर हती।

कविता की माँ तो उये कभऊँ चाउतइ नइ हती जबकि कविता सबसें जादा काम करतती। उकी बाकी बैने तौ दिन भर खेलबे में मस्त राततीं और भी उनें कछु भी काम को नइं कतती बहुत मूड़ पै चढ़ा रखौ तो उन्है। कभऊँ डाँट पड़तती तौ वा केवल कविता को ही । पाँच बहिनों में एक अकेलौ भाई हतो प्रकाश लेकिन उय अपनी दुकान के कामन एवं अपनी मौज मस्ती सें ही कितै फुरसत मिलतती। फिर भी वो कविता कों भौत चाउत तौ।

कविता की एक सहेली हती आरती जो कि पड़ोस में रहत ती। जब कभऊँ भी कविता भौत परेशान एवं उदास होतती तौ उसे मिलकै एवं बातें करकें अपने मन को हल्कौ कर लेतती । आरती भी उयै समय - समय पै सइ सलाह देकै उकौ गम हल्का करत राहती और उये दिलासा दिलात राहती कि सब ठीक हो जेहै। नौनौ टैम आन दो। लगत है कि अबै तुमाओ वक्त खराब चल रऔ है लेकिन धैर्य रखो। कविता सोउ आरती की बात मानतती मानें भी काय नई न पक्की गुइयाँ जो हती और एक संगे एकइ कक्षा में पढ़त ती। आरती कौ एक भाई हतो संजय जोकि कविता के ही हम उम्र कौ हतौ और आकर्षक व्यक्तित्व कौ स्वामी। वो कविता खों मन इ मन भौत चाउत तो लेकिन अपनी चाहत कौ उजागर करबे की हिम्मत अबै लो नईं जुटा पाओतो। दिल की बातें ओठन तक नइं आ पा रईंती। कविता सोइ संजय की ओर आकर्षित होने लगी हती। सायद उके दिल में भी संजय के लाने तनक सी जागा हती लेकिन वा सोउ सामे कछु भी प्रकट नइं होन देत ती कैवौ का मतलब आग दोइ तरफन सें बराबर लगी हती पर पहल कोउ नई करन चाउततो।

संजय की अबै नइं-नइं नौकरी एक प्राईवेट कंपनी में लगी हती। दस हजार रुपइया मइना के मिलतते। वैसे कइ जाय तौ पेइसा की कौनऊ कमी तो उये हती नइं, कायसें कें उके पिता शासकीय सेवा में बड़ें अधिकारी हते। लेकिनकी दम पै ह वो अपने पैरन पै खुदई दम खड़ो होन चाउत तो। उये बाप की कमाई कौ

तनकउ भी घमंड नई हतो । मृदुभाषी सांत एवं गंभीर स्वभाव हतौ उकौ। शायद जेई कारण हतौ कि कविता जैसी सीदी-सादी मौड़ी जो मौड़न सें बातें करवौ तो दूर की बात है उनकी सक्लें तक देखवौ पसंद नइं करतती। वा भी संजय की ओर खिंचत चली आयी जैसे कौनऊ चुम्बक लोहे कों अपनी ओर खैंच लेत है। आरती के जनम दिन की पार्टी में उन दोनन के बीच बातचीत कौ जो सिलसिला सुरू भऔ तो वो कबै धीरे-धीरे प्यार में बदल गयौ उनै पतौइ नइं चलो । दोनों एक दूसरे को बेहद प्यार करन लगे और दो जिस्म एक जान हो गये। इ प्रकार सें कबै दो साल बीत गये पतौ ही नइ चलो। संजय अब कविता सें सादी करवे के लाने जोर देन लगोतौ लेकिन कविता है कि अपने माँ बाप की मर्जी के खिलाफ व्याव करवे की हिम्मत नइं जुटा पा रइती। उ के संस्कार ऐसौ करबे सें रोक रय ते। संजय और आरती के समझावें पै भी कविता सादी के लिए तैयार नइं हो रइती। वा कतती कि मैं अपने पाँच भाई बहनन में सबसें बड़ी हूँ और अपनी मर्जी सें माँ-बाप के खिलाफ जाकर लव मेरिज व्याव कर लओ तो बाकी बहिनों कौ का हुइये, उनकौ व्याव कैसे हुइये। समाज में हमऔ परिवार भौत बदनाम हो जेहे।

संजय जेई सोसकैं अपने मन को तसल्ली देत रात तो कि सायद कभऊँ तौ कविता उ नारकीय यातना देवे वारे घर सें छूट कैं हमाये ऐंगरे व्याव करवें के लाने आ जैहे। हद तो तब हो जातती कि जब कविता की छोटी बहिनें उसपै कौनऊ बात पै लड़त-लड़त हाँत तक उठा देत ती और कविता मताई सें जाकै उनकी शिकायत करती तो मताई केवल ऊपर सें तनक सौ उनें डाँट कैं शांत हो जातती। लेकिन सांत स्वभाव की कविता चुपचाप मूक दर्शक बनकैं गम्में खाकै रै जातती।

कभऊँ-कभऊँ तो कविता खों अपनो जौ जीवन भौत नीरस और बेरंग लगन लगत तो। और कभऊँ तो उके मन में आत्महत्या करवे जैसे कुविचार आन लगत ते लेकिन संजय के प्यार की डोर कविता को अबै लौ जीवित रखैंती । संजय से वा प्यार तो भौत करतती लेकिन व्याव करवे के लाने तैयार नइं होतती। संजय ने कविता के नीरस जीवन में रंग भरवे की भरपूर कोसिस करीती लेकिन सायद संजय के प्यार के रंग पक्के नइ हते जो कि कछु समय बाद धुँधलें पड़त गये। आखिर कब तक संजय कविता के लिए इंतजार करत रातौ । उके लाने उके पिता ने एक मौड़ी पसंद कर लयी उकौ नाव प्रतिभा हतो वा भी सुंदर पढ़ी लिखी एवं संपन्न परिवार से हती। जब संजय पै व्याव के लाने के दबाब डालो गऔ तो वौ भी प्रतिभा सें व्याव करवे कै लाने तैयार हो गऔ लेकिन वो कविता को भूल नइं पा रओतौ। कविता की जिन्दगी में जो कछू दिन संजय के रूप में बहार बनकै आयते वे सोउ चले गये और उकी जिन्दगी फिर सें नीरस हो गयी। शायद भगवान ने उकी किस्मत में जेइ लिखौ हुइये।

कभऊँ- कभऊँ कविता जा सोसतती कि कब लौ वा इ जिल्लत की जिन्दगी सें छुटकारा पाहै पर शायद अबै उये कछु दिन और ऐसई गुजारने पर है। थोड़ा इंतजार करने पर है। यह नीरस एवं मजबूर बेबस जीवन तभी तक है जब तक कि उकौ व्याव नइ हो जात । सुसराल में नइ जिन्दगी की शुरूआत कर है। वा इ शुभ घड़ी की बाट जोहती अपने दिन किसी तरां से काट रई है लेकिन अबै वा कर ही का सकत है केवल सोच साच के अपने दिल को तसल्ली ही तो दे सकत है और कछु देर अकेले में रोकैंअपनो मन हल्को कर लेत है। सायद उके जीवन कौ क्रम बन गऔ है। दामन खुसियाँ भरवे के लाने अबै उये और बाट जोहनें पर है। कितैक दिना जो ऊपरवारौ ही जानत है।

अब कविता जा सोस के ही संतोष कर लेत कि हम इ भारत जैसे संस्कार प्रधान देश के एक तनक से गाँव में रात हैं जीमें लोगन में चाये वे कौनऊ जाति धरम के होंए उने अपने-अपने समाज में रीति रिवाजौं को मानने में ही सबकौ भलौ होत है। जै कोई विदेश नइयाँ या कोनऊ बड़ों शहर नइयाँ कि उतै लव मैरिज कर लो और कछु दिनन बाद फिर छोर छुट्टी करकें दूसरो व्याव रचा लौ। इतै तो व्याव एक बेर होत है और अपनी ही जाति के लोगन में होत है। कोनउ दूसरी बिरादरी में नई । इतै व्याव एक संसकार मानो जात है जी में जीवनभर सात निभावे को वादा करो जात है और निभाओ सोउ जात है। एइसें हमारे देश की संस्कृति और पैचान अबै लो बनी भइ है।

संजय सें मताई-बाप की मर्जी के खिलाफ व्याव नइं करबे के निर्णय पै अब कविता कों कोनऊ दुख नई रै गऔ। उकै मन को मैल उकै उच्च विचारन ने धो दओ। संजय के रूप में आओ प्यार कौ एक तूफान ऊके उच्च संस्कार कौं नई मिटा सकौ । कविता कौ अपने निर्णय पै गर्व भऔ कि ऊनें तो अपनी संस्कृति, मर्यादा और कुल की लाज राख लई। अपने मताई-बाप के दये संस्कार को बनावे राखो।

-शिवनगर कॉलोनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
मो. 9893520965

## गीत

-डॉ. हरिकृष्ण 'हरि'

हिन्दी को आँगे बढ़ावनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनावनें।
कें कें कै सबखौ समझावनें, राष्ट्रभाषा जइखौं बनाउनें।
सब भाषन में प्यारी हिन्दी,
जौ भारत माँ की है बिन्दी,
प्रेम सें जइखौ अपनावनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
हिन्दी खौ आँगें बढाउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
संस्कृत की बिटिया है जौ
गंगा जल की लुटिया है जौ,
सब खौ जौइ पिवाउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
हिन्दी खौ आँगें बढ़ाउने, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
घर आँगन में फूल खिलाओ,
ऊँचा सिंघासन दिलवाओ,
बच्चन खौ जौइ पढ़ाउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
हिन्दी खौ आँगे बढ़ाउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउने।
'हरिकृष्ण' की जौइ अरज है,
देश में जाकौ ऊंचौ ध्वज है,
जन जन में जइखौ फहराउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।
हिन्दी खौ आँग बढ़ाउनें, राष्ट्रभाषा जइखौ बनाउनें।

-एकता नगर, उनाव मार्ग,
दतिया (म.प्र.)

# सांझौ चूलो

-भास्कर सिंह माणिक

मनठोले अपई चौपियारी में चौपिन कों चारो-पानी करत जा रये। मनई-मनई कछु गुनगुनात जा रये। मनठोले को गुनगनावो सुनकें मनसोले चौपियारी के बाड़ा में पौच जात। चुपचाप दबे पाँव जा कें ठांडो हो जात। मनठोला को लोकगीत सुनन लगत। लोकगीतपूरो भी नई हो पात मनसोले जोर-जोर के खिलखिलान लगत। कोरो-कोरो न रंग डारो /भौजी होरी की गुजिया खबा डारो /हम छोटे देवर तुमाये भौजी /होरी खेलन कों तुमसें आये भौजी /न न करकें न न करईयों भौजी/ पैलो -पैलौ है अनुभव हमाओ भौजी/ रंग में रंग न तुम भंग डारो भौजी होरी गुजिया खबा डारो/ गुलाल गालन कैसे लगायें भौजी /तनक बैठ जाओं नीचें तुमई भौजी/ हम छोटी पिचकारी लियाये भौजी /ई कों कैसे चलाये बताओ भौजी/ हमने रंग लुटिया मे घोर डारो /भौजी होरी की गुजिया खबा डारो/ तुम जादा हमें नई तगाओ भौजी / तुम ऐंगर तनक आ जाओं भौजी /मोय खेलन टोली संग जानें /तुम झट हमसें डराओ भौजी /अब सांकल अटरिया की खोल डारौ /भौजी होरी की गुजिया खबा डारो/

'मनठोले भईयाँ कौन सी भौजाई को बुला रये। तनक हमऊ को बता दो।'

'आओ मनसोले आओ'

'मोय का पतो तुम इतनों नोनो गा लेत । तुमे तो रेडियो पै टी. बी. पै गायै चइये।'

'हमें गावों - आवों का आउत?'

तुमाई सौ आज तुम इतनों नोनों गा रयते जैसे कोनऊ अच्छो गावे बारो गा रओ होय। साँची कै रये। तुम हमाये बुन्देलखण्ड को नाओ ऊँचों कर सकत।'

'रामधई तुम साँची कै रये।'

'तुम जी की कओ हम ऊ की कसम खा जाये।'

'का कै रये।'

'काल हमाये संगे चलो।'

'कां चले।'

'हम आकाशवाणी पै लिवा ले चलें। जैसौ अबै गा रयते वैसई गा दियो। फिर देखिओ मनठोले भईया को जलवा।'

'तुमे हमाई सौ सई कै रये।'

'तुमाई सौ तुमाई आवाज में बड़ी दम है हम पूरे विश्वास सें कै रये। बड़े - बड़े गाबे बारे तुमाबों मों ताक है।'

'काल की काल लगी । तुम जो तो बताओ । कैसे आये। का कछु काम हतो।'

'कछु काम काज नईंयाँ। इतेसे निकर रयेते तुमाई आवाज सुनी मोय लगो आज मनठोले के घरे कोनऊ ऊँचो गावे बारो मेहमान आओ बोई मनठोले भईया कों लोकगीत सुना रओ । मोय का पतो तुम गा रये।'

'काये भौजी कां गई।'

'कां गई। खसम कर गईं।'

'ऐसे काये कै रयै।'

'का कर दे। कितऊ निकरऊ नई पा रये।'

'भौजाई गई कां है।'

'कां जें उनको भईया चुनाव तो लड़ रओ। सो इते-उते मटक रई हुये।'

'का कै रये। वो कैसे लड़ सकत।'

'काये नई लड़ सकत। तुमे पतो नईंया का।'

'हम समझे नईं।'

'काये चिंदर रये।'

'रामधई साँची कै रओ। मोय कछु पतो नईंयाँ।'

'काये झूठी रामधई खारये। तुमें कछु पतो नईयाँ।'

'अगर मोय कछु पतो होतो तो हम काये पूछतें।'

'तुमईनें घर से बेघर कराओतो। जब कि सब कछु तुमईको करो धरो हतो और ऐसे पूछ रये जैसे तुमाये मो में सोने डरो होय।'

'मनठोले भईया गुस्सा काये हो रये। मै सच्ची कैरओ। तुम जौ कओ हम उते हांत धरके कसम खा जाये।'

'मनसोले तनक शरम करो शरम। धनते की मौड़ी और हमाये सारे को ब्याओं कीनें कराओतो।'

'ए लेओ जाको तो मोय टिका उड़ गओतो। ऊ को हम कैसै भूल गये। जो तो दीया तरें अंधरो हो गओ। नाक पै चश्मा रखो गाँव पुरा में पूछ रये। ऊटेम तो पुरा में का गाँव भरे में रनतभौर मचोरओ । अगर हम ऊटेम ब्याओ नई कराते तो तुमाओ सारो जेल की चकिया पीस रओ होतो। मोय का पतो जंगली बिलाओ को सोने सी बतक मिलरई। जो तो बोई बात हो गई कउवा मैदा की लोई ले उड़ो। तुमें तो खुश भये चइये । तुमाओ सारो बड़ो भगगी निकरों।'

'तोऊ हमसें पूछ रये वो चुनाव कैसे लड़ सकत।'

'जो काये नई कत वो गुलछर्रे उड़ा रओ।'

'वो गुलछर्रे उड़ा रओ। हम शरम से मरे जा रये।'

'तुम काय मरे जा रये। ऊके द्वारे कौ नईं जात।'

'मोये ऊके द्वारे से का करने तुम देखत नईयाँ धनते मूंछे ऐठ के निकरत हमाये द्वारे से हम कछु नई कैपात ।'

'ऊकी मूंछें वो ऐंठ के निकरे चाये फेंट के निकरे तोय का करने आये।'

'का तुम नईं जानत । की के मों में इतने दाँत है जो हमसे मो लगकें बातें करवे की जुररत रखे।'

'तुमें का हो गओ। तुम काये चक्कर में परे। आज कम्प्यूटर को जमानों है। सरकारऊ आनविरादरी के ब्याओ को सम्मान करत । अपुन सरकार से तो बड़े हो नई सकत। का तुम नई जानत छुआ-छूत के चक्कर में कितनेऊ लोगन की अचकन तक उतर गई।'

'उतर गई हुये। बिरादरी की बातें नई सुनत का तुम।'

'जै बातें तो होतियई रती और होत रै। न खतम हुये। तुमई सोचो हमें कां याद हती। धीरे-धीरे सबरे भूल जात । तुम का अखवार नईपढ़त । जो लोग आजऊ लकीर के फकीर बने बैठे उनके हांत में का रै गओ। आज मौड़ा मौडी उनकी कां सुनरये। तनक नींक की कै दो। तो वे घर छोड़ के भग जात। तनक-मनक पड़ लिख गये तो कैने कोऊ गाँव छोड़ देत। कोऊ शहर और कानो बताये कोऊ कोऊ तो गाँव शहर की का कये विदेश भगजात। लरका बिटियन के जो समझ में आउत वे बोई करत। काये की संस्कृति काये की सभ्यता। का होत आदर बूढें बड़न को। नाक पै गरमी बनीरत। अगर उनकी हाँ में हाँ करत रओ तो

नींक है।

'तुम कै तो नींक रये।'

'तुम दूर काये जात अपने मुखिया जू के लरका को देख लो। वो डॉक्टर का बनो ऊने अंग्रेजिन से ब्याओं कर लओ। वो अंग्रेजिन धरती पै पाँव तक नई धरत रोटी पानी को करत। गोबर-कूरा के तो सपने देखो सपनें और तुम आड़ शरम की बात करत।'

'सो तो है मनसोले भईया।'

'का तुमे पतो नईया। मुखिया जू इतें मूड़ मार रये और वो सात समुंदुर पार। वो जी दिना से गओ का ऊने एकऊ पाती भेजी। हमाये दद्दा कैसे है। हमाई मताई कैसी है। ऊके लानें तो बोई दद्दा -मताई हो गई।'

'बड़ी-बड़ी बातें मारतते मुखिया जू। सब भूल गये। खजेला कुकर घाई खुजातरत। इते-उते सहारों ढूड़त। अगर आज बिटियन को लरका घाई पढ़ावो -लिखाओ होतो तो बेटियाँ मुखिया जू को हांत न बटाती।'

'मनसोले भईया इतनो ज्ञान तुमनों कां सें आओ।'

'युग बदल गओ। हम तो तुमाये सारे जू की तारीफ करत। ऊने अपने बाप-मताई की सेवा करी कभऊँ पलट के जबाब नई दओ और तो और धनते की मौड़ी ने भी अपने बाप-मताई सें बढ़के अपय सास-ससुर की राखी। ऊने अपय सास-ससुर को खटिया से नेंचे नई उतरन दओ। तुमई बताओ में साँची कै रऔ कै नई।'

'सौ तो है। आज मुखिया जू करमन को रो रये। अगर वे अपय लरका की मान लेते तो वो इतेई रतो। डॉक्टरी के संगे-संगे खेती -बाड़ी भी देखत रतो। इते-उते के लरकन को नई ताकने परतो लेकिन नाक के चक्कर में अपय पाँव कुल्हाड़ी मार लई। फिर तुम काये सूख के टटेरे हो गये।'

'मनसोले भईया एक बात तो है तुम कछु कओ गलत को गलत तो कैने आये। चाये हमाओ सारो होय चाय मुखिया जू को लरका होय। वैसे तो हमाये हिसाब से मुखिया जू ने सई करो। आजऊ मुखिया जू की बात सबरे मानत। जो नींक काम थोरी है। सब की अपई-अपई इज्जत होत। अगर ऐसोई सबरे करन लगे तो का रैजे। हम विदेशी तो हैं नईयां। आज जा सें ब्याओ करो काल वा से ब्याओ करो।'

'मनठोले भईया जो तो बोई बात भैंसे के आंगू बीन बजाओ वो रौतई करे। तनक दुनियाँ देखों। आज आदमी चाँद पै रन जा रये और तुम जात-पात की बातें कर रये। ऐसेई लोग अपय मोड़ी मौड़न के हत्यारे बन जात और अपय हाँतन अपय जीवन को नरक बना लेत।'

'तुम कछु कओ मनसोले भईया इज्जत से बड़ी कछु नई होत। जी घर को चाल-चलन अच्छौ नई होत। ऊ घर को कोऊ मान सम्मान नई करत। अपय देश की मिसाल पूरौ जग देत। इते पै आन वान शान के लानें अपओ जीवन तक अरपन कर देत। अपय बुन्देलखण्ड को देख लो इते लक्ष्मीबाई जू, झलकारी जू, सारन्धा जू कितने नाम गिना दें। अपई माटी की लाज राखवे के लाने अपने आपको बलिदान कर दओ आँख नई झुकन दई लाज से बढ़के कछु नई होत, मनठोले और मनसोले रती की आवाज सुन के घबरा जात। इते-उते देखन लगत।

'का तुमे सुनई नई दई।'

'तुम कबे आ गई।'

'तुम कबे आ गई। हम तुमाई सब बातें सुन रयते। का हमाये भईया नें। काये कोस रये ऊको।'

'भौजाई गरमा काये रई। हम तो तुमाये भईया के चुनाव की बातें कर रयेते और कछु नई कै रयैते।'

'बड़े आये चुनाव के ठरगजें।'

'अरे सुनो तो मनसोले से काये भड़क रई।'

'तुम तो चुपपई रओ।'

'सुनो तो, तुम तो दस-बारा दिना की गईती। का तुमाये भईया ने परचा वापिस ले लओ।'

'तुम तो जोई चाउत। हम सरग सिधार जाये और तुम मजा उड़ाओ।'

'तुमें शरम तो लगत नईया। उल्टी सुल्टी बातें करत रत।'

'हमने की की लुगाई पकर लई सो तुमें बुरो लग रओ।'

'हमाये भईया के लानें अब कछू कई तो नींक न हुए।'

'मोई मताई हम होत जोरत पांव छुअते। हमाई का दम हम कछू कै जायें।'

'का कई फिरकू कईयो।'

'हम कछू नई कैरये।'

'हाँ तुम कायेको कै रयै। हम तुमाई मताई है। तुमें शरम तो लगत नईया।'

'हांत तो जोर रये अब चुपऊ हो जाओ।'

'हमाओ भईया तुमाई आँखन में किरक रओ। का कमी है हमाये भईया में सब को मान सम्मान करत उकी लुगाई हांतन पै लेत और का चाउत। वो तुमाई घाई गबार नईयाँ। वो पढ़ी लिखी है। बिटिया होये चाये बड़े बूढ़े होये वो सब को आदर करत। जा जमानें में भी घूँघट डारत। काऊँ के घरे नोंनो नीको होये चाये भलो- बुरो होवे। काम मे हांत बटाउत और तुम ऊको कोसत रत। बानें तुमाओ का पटिया दबा लओ।'

'तुम कां की बातें कां ले जा रई।'

'तुमऊ तो गड़ेमुर्दा खकोउत।'

'बानें कौन सौ खसम कर लओ। जब देखो तब ऊकों कोसत रत।'

'तुमाई सौ हमनें तुमाये भईया -भौजाई के लाने कछु नई कई। मनसोले से पूछ लो।'

'मनसोले को होत जो उनसें पूछे। वे तो जबरन मूसर लये फिरत।'

'भौजी हमने कछु नई कई हम तुमाई कसम खात।'

'तो फिर जे बेकार की बांते काये हो रईती।'

'भौजाई मोय टिका उड़गओ तो सौ इततियई पूछी। सारे जू चुनाव कैसे लड़ सकत।'

'लाला तुम हर जगां दूला के मोसिया नई बनो करो। नई कितऊ।'

'भौजाई हम अपनी कसम खा रये भईया की सौ वो तो मों से निकर गई।'

'ठीक है ठीक है अब जादा मों न चलाओ।'

'भौजी अब तो गुस्सा थूँक दो। तुम गुस्सा में नोंनी नई लगती ईसें तनक मुस्कुरा दो।'

मनठोले और मनसोले ठहाका दै के हंस परत। रती मो में धुतिया दबा के दूध की बाल्टी उठाउत और चौपियारी से निकर जात। मनसोले और मनठोले भी राम कर के अपय-अपय काम काज के लाने निकर जात। रात के मनठोले घरे लौटत। रती को गुस्सा में देख चुपचाप अपई खटिया पै परंरत। रती को गुस्सा सातमें आसमान पै चढ़ जात।

'काये खाट-पाट लै कैं पररये। का तुमाई लुगाई मर गई।'
'मनठोले उत्तर नई देत लेकिन खटिया पै उठ के बैठ जात।'
'तुमई से कैरई, तुमई से। का तुमे सुनाई नइ देत। की कों रोरये।
(धीरे से उत्तर देत) 'सुनाई दे रई। का कैरई कओ।'
'ब्यारू नई करने का। कै काऊ खसमखाउनी ने ब्यारू करा दई।'
'थरिया इतैई लेताओ।'
रती टाती लेके मनठोले के ऐंगर पोंचत। मनठोले रती को हांत पकर के खटिया पै बैटा लेत। रती शरमा जात। मनठोले खटिया से उठके अपई बण्डी से कछु निकारन लगत।
'काये, काये उठ गये।'
मनठोले ने उत्तर नई दओ। रती ने अपई आँखें फिर नीचे कर लई। मनठोले ने रती के बगल में हांत डार कें रती के दाये हांत को पकरो। रती हांत पकरतई घबरान लगत। मनठोले रती की अंगुरिया में मुदरिया पैरा देत। रती मुस्कुरादेत।
'अब तो खुश हो जाओ।'
'हम नखुश कबे रत।'
'कैसी लगी।'
'इतने पईसा काये खरच कर दये।'
'जब मैंन तुमे चौपियारी में देखौ। हम ओई बेरा समझ गयते। हमाई रती कितनो ध्यान रखत।'
'का समझ गयते।'
'मन-मन भावे मुड़ी हिलावे की कहावत तो सुनी हुए।'
'धत, कैसी बातें करत।'
'हमनें अबे का कैदई सौ धत कररई। हमाई मुदरिया कैसी लगी।'
'कितनें की लियाये।'
'का करने आये तुमे।'
'ऐसेंई पूछी। मोय का करने।'
'तुमें कछू नई करने साँची कओ।'
'साँची कैरई। लेकिन तोउ।'
'लेकिन मेकिन छोड़ो। अपई आँख बंद करो।'
'काये।'
'अरे हमाये प्रानन की प्यासी।'
'का कई।'
'कछु नई कई। तुम तो आँखे मींचो और मजा लेओ।'
रती पलकें छपका लेत मनठोले रती के मों में गुलाबजामुन रख देता है। रती मनठोले से लिपट जात है। बातन-बातन में कबे सूरज निकर आओ पतो भी नई चलो। रती मनठोले ने जल्दी-जल्दी उन्ना लत्ता लपेटे। सपर-खोर के अपय-अपय काम-काज निपटा के हांत पाँव धोये। कलेऊ के लानें बैठई रयते के फोन टिनटिनानो।
'टिन-टिन'
रती फोन उठाउत है। मनठोले को देवे के लाने हांत बढ़ाउत। मनठोले रती से बात करवे को इसारो कर देत। रती फोन को बटन दबाउत और कान से लगालेत।
'कओ भईया कैसी गुजरी ब्याओ की वर्षगाँठ। भौजी खुश भई कै नई। भौजी को मुंदरी कैसी लगी। मिठाई-इठाई ले गयेते कै नई। खाली हांत तो नई पौंचगयेते। भौजी की नाक पै गुस्सा बैठियई रत। अब खुश हुये। बोलत काये नईयाँ का भौजी ठांड़ी।'
'रती बटन दबा देत। फोन कट जात। आई है तो जै है किते। रती मारे गुस्सा के आग बबूला हो जात।'
'काये तुमे अरम-शरम तो है नईया। अध बूढें हो गये। कबे अकल आये है।'
'तुम तो फिर से कथा सुनान लगी। हमनें का कर दओ। की को फोन हतो।'
'वो नासमिटाओनो का कै रओतो। फोनऊ पै ऐसी-बातें करत। को हतो।'
'बोई लफरा हतो।'
'बोई को।'
'बोई हतो जीसें तुमनें न कैवै की बातें कई।'
'मनसोले हते का।'
'हओ और को हो सकत।'
'का कै रओ तो।'
'जो कओ का नई कैरओतो।'
'हुये गुस्सा काये हो रई।'
'गुस्सा काये नई आये। वो पूछ रओतो मुदरिया कैसी लगी। मिठाई-इठाई ले गयेते कैनई। वो अपई लुगाई से नई पूछपात सौ हमसे पूछ रओतो। ऊके कीरा पर है कीरा।'
'सो का हो गओ। वो तुमाओ देवर है। भौजाई से नई पूछ तो कींसे पूछ है।'
'तुमाये बार भूरे परन लगे और कैरये का हो गओ। अगर मोड़ी-मोड़ा फोन उठा लेते तो।'
'तुम कलेवा लियाओ और बातें छोड़ों पेट में चुखरा उछल रये। रती रसोई में जात प्लेट उठा के मनठोले के ऐंगर रख देत। मनठोले मनई मनई हँसत जात कलेवा करत जात। रती सब देख के बड़बड़ान लगत।'
'काये अब कबे जानें।'
'मोय कां जाने। हेई मरने। कां जे है।'
'हाय मोई मिसरी। मीठे से कड़बी काये हो रई। मै तो जो पूछ रओ प्रचार के लाने कबे जानें।'
'प्रचार गओ चूले मे पैले जो बताओ तुम लड़कपन कबे छोड़ हो।'
'हम कान पकरत आज से का अभई से हम कभऊ काऊ सें कछु नई कै। अब तो बता दो।'
मलठोले और रती के बीच तकरार चलई रइती ओई टेम ज्ञानू और मनसोने मनठोले को आवाज देत। मनठोले भीतरई से उत्तर देत। ज्ञानू और मनसोले मनठोले की पौर में बैठ जात।
'लेओ आ गये ठलुआ जाओ खेलो पत्ता। कछु काम काज तो है नईंया।'
'ए तनक धीरें बोलो धीरें।'
'काये बतादियों कैसी गुजरी रात। का का भओ। का का खाओ।'
ज्ञानू और मनसोले ने पौर से फिर आवाज लगाई।
भईंया भौजी सें चाय की कै दियो।
मनठोले पौर में आ के बैठ जात और मनसोले ज्ञानू मनठोले से रती के भईया के चुनाव की बातें करन लगत। थोड़ी देर के बाद रती चाय लेकें पौर में आ जात। ज्ञानू और मनसोले रती से चुनाव के बारे में चर्चा

करन लगत। मनठोले हाँ में हाँ मिलात रती जीत पक्की बताऊत ।

'भौजी चुनाव में छोटे बड़े सबको ले के चलने परत। चुनाव में झूठी सच्ची सब कछू बोलने परत फिर तुमाये भईया तो सब जानत समझ है। चुनाव आये नई गीदा चील मड़रान लगत। सबको खबाने पिबाने परत। तब जाके लोग संगे लगत।'

'ज्ञानू लाला ऐसो कछु नईंया। हमाये भईया शराबी-कबाबी लोगन से कोसन दूर रत।'

'काये झूठ बोल रई।' (मनठोले ने चुटकी भरी)

'साँची कै रई। दो बार प्रधान बन चुके हमाये भईया। कभऊ ऊनें शराब-अराब के लाने पईसा नई दये। हाँ एक बात जरूर है। गरीबन के लाने वो आधी रातें उठ के चल देत। मौंका चौंका पै हारी-बीमारी में खरचा भी कर देत।'

'भौजाई ऐसे लोग खर्चा को परता भी निकार लेत। साँची कायें ब्याजसहित एक-एक पईसा ले लेत।'

'लाला जू आज लौ हमाये भईया ने काऊसें पईसा नई लये। न ब्याज को धनदों करो।'

'भौजी एक बात तो माननें पर पैलां खुद प्रधान रये। अब अपई लुगाई को बनाये लेत। आनविरादरी के ब्याओ को मजा ले रये। प्रधानी कितऊ नई जानें। चायें कनऊ सीट होवे को रोकसकत लड़वे सें। सीट अनारक्षित होंवे चाये आरक्षित। दसऊ अंगुरियाँ घी में है।'

'दसऊ अंगुरिया काये कैरये जो कओ मुड़ी करईया में पाँव मड़रिया में। तुमऊ कर डारो ऐसाई । तुमऊ मजा उड़ा लो। गद्दा पै परे-परे पाँव दबाओ।'

'भौजी की बातें। हमाओ ऐसो भाग्य कां।'

'ज्ञानू लाला बेमतलब की बातें काये करत।'

'सौ काये नई। सीधी गइयाँ को चाये जब दोलो। काये मनठोले भईया नींक कई कै नई।'

'तुम कभऊँ गलत कां कत। तुम खजूर जैसे सीधे हो। चढ़तन तो चढ़ जे आदमी उतरतन में दद्दा याद आउत। ऊखर में मुड़ी दई तो चोटन को का डरानें।'

'साँची कैरये भईया। पईसा को जलवा अलगई होत। अपय परोस के गाँव के मुखिया को देख लो उनके उल्टे तबा जैसे लरका को मेंदा जैसी लुगाई मिली।'

'तुम का कैवो चाउत। हमाओ भईया चाल चलन को खराब है का। अगर हमनें तुमायें घर की वही पलट दई तो का हुये।'

'हमनें कां कई तुमाओ भईया चाल-चलन को खराब है। राजनीति में कबे हो जाये जो को जानत। कबे की की नीयत बदल जावे जो की को पतो रत। का तुम नईं जानती। फिर अखबार का पढ़ती। कुर्सी के चक्कर में बड़े-बड़े चकरघिन्नी चक्कर खात फिरत।'

'बड़े आये राजनीति के ठरगजे। तुमाई काकी नें प्रधानी के लानें का-का करो हमसे काये सुननचाउत। हमाये भईया ने ब्याओ करो पूरी विरादरी को आनविरादरी को पात दई। खूब सबने चौपिन घाई चरो। तोऊ सबनें मों चलाये। जिननें मों चलायेते बेई आज पाँव छुअत।'

'तुम चुप नई रै सकती। बेकार की तकरार काये कर रईं।'

'अच्छा मैं तकरार कररई। जात-पात की बातें तुमई तो कर रये। तुमाये फूफा ने...... ।'

'चुपऊ हो जाबो। तुम सें कोऊ नई जीत सकत। तुमसें रामऊ हारत।'

'हम काये चुप रये। ऊबेरा तुमऊ ने रन्ताभौर करोतो। तुमें समझा समझा के हार गईती। उबेरा हमाई का गलती हती।'

'का गलती हती। तुमाओ भईया चुपके-चुपके धनते के घरें जात तो। तुमे सब कुछ पतो हतो। तुम चुप रई। ऊटेम संग न देती तों का करती। तुम जो चारयेते। वो मर जाये।'

'तुम का कैवो चारई।'

'साँची कैरई।'

'काये कांसे घाई ठन्नात रती। तनक-तनक सी बातन को तुम तो तिल को पहाड़ बना देती।'

'खरीखरी कनलगो सो तिल को पहाड़ दिखान लगत। की में दाँत जो भईया से कछु कै जाये। बड़े-बड़े नाओ बारे द्वारे डरे रत।'

'भौजाई तुम लाल पीरीं काये हो रई। बेकार में राई कें तना को लिप्टस बना रईं।'

'तुम तो चुपई रओ। तुमाये दद्दा ने कितने दल बदले गिनती नईया और सुनो जे ज्ञानू लाला बहुत देर से लपलप कर रये इनकी जिज्जी ने ब्याओ नई कराओ लेकिन उननें कुर्सी पावें के लाने किते लपसी चाटी को नई जानत। सौ-सौ चूहा खाये फिरऊ भूखी की भूखी । का अबे तक उनको पेट भर पाओ।'

'तुम काये लालमिर्च जैसी झरझरा रई। पुराने पुरान पलटवे से तुमे का मिल रओ। काये कीचर में पत्थर फेंक रई।'

'चोंटिया लेओहो तो भकोटा भरवेहो। अब काये तिलमिला रये।'

'वो टेम निकर गयो। अब काये लगी। कथा सुनावे। इन बातन पै मट्टी डारो। नोंनी कई हम मट्टी डारें तुम ऊटपटांग बको।

तुम हमाये भईया भौजाई की धुरऊ नईयाँ और अंगुरिया उठा रये। ऊनें तो ठांट से ब्याओ करो। मुतके जनें तो इते उते कूकर घाई भैरात फिरत सौ कछु नई कत।'

'भौजी गलती हो गई। आज सें हम काउ के लानें कभऊ कछु नईं कै।'

मनसोले ज्ञानू, मनठोले और रती से राम राम कर के चले जात है। इते मनठोले गुस्सा के मारे लाल पीले होन लगत।

'तुम तनक तनक पै नागिन घाई फुन्नान लगती। तुमने तो शरम बेंच खाई। नेंकात ठकी है सौ ऊको ढकी रन दो। गाँव के लोग-लुगाई का कै हैं।'

'का कै हैं। वे पेलां अपनो टेंट तो निहार ले तब काऊ की कछु कओ करे। चले आउत। उनकी लुगाई ऐसी उनको खसम ऐसो। कभऊ अपनों मों सीसा में देखो का । मनसोले की काकी ने कुर्सी के लानें कितने चूले मिटाये का तुम नई जानत और कितने मूड फुड़बादये। तुम से का छुपो।'

'रती इन बातन से तुमे का मिल जे। वे हंसी ठिठोली के लगत सौ वे तुमें चिड़ात है और तुम शुरू हो जाती।'

'देखो तुमऊ दूध के धोये नईया। हाँ जो हमऊ जानत। घर घर मट्टी के चूले है ऊँच नींच तो होई जात। जा को जो मतलब तो नई होत। घर की बातें चौराये पै करी जावें। अपई जांग उघार हो तो जग हंसाई तो हुये। अगर चूले में कितऊ दरार आ जात तो चूलो तो नई फेंक देत। ऊको माटी से लीप पोत के ऊको नीको नोनो बनालेत कै नई। 'का कै रई अगर सबरेजोई सोचन लग तो हम में और उनमें को अंतर रै जे। तुम सबको का चौका में बैठा सकती। 'जो तो हमऊ हमऊ नें किताबे

पढ़ी है। पलटी नईयाँ। कुर्सी जो न कराये कमई है। लेकिन हम का कर सकत । सरकार समरसता चाउत और लरका बिटिया स्वच्छन्दता चाउत । गंगा नहाबे से अगर पाप मिट जाते तो पाप को नाओ कां रै जातो। पतो नई जो कैसी हवा चल रई। आपई आँखन खुदई गिररये। नंगे नच है तो लोग हंसहेई।'

'अब कई तुमनें बात पते की। जब की जो सबरे जानत मट्टी के चूले की देख रेख करने परत। जो लोग लुगाई अपय चूले चकिया की देख रेख नई करत उनई को जीवन भर रोने परत। उनें काये लरका- बिटियन तक को रोने परत। जो बात तो अंधरऊ समझत लेकिन मानत तो नईयाँ बड़े बड़े उपदेश देवे बारे उपदेश तो देत वे बा पै खुद तनकऊ नई चलत । अगर वे एकानऊ रती अमल करन लगे तो समाज पै असर परे। सब कोऊ जानत दलदल में पाँव रख हो तो निकरवे के लाने बड़े जतन करने पड़त । एक दाग मिटावे के लाने पूरी उमर लग जात तऊ दाग नई मिटत। आग लगे ऐसे प्यार में। 'तुम काये कुमलियानी जा रई। यार-प्यार की लडाई में कछु सुनने परत। जो दुनियाँ है। जी के मों में जो आउत सौ कत। ईको कानों रोओ। कच्ची माटी को कोनऊ खिलौना होय। जब तक ऊको नोंनो तरां उठाउत धरत रैओ तब तक वो तुमाओ। तनक चूके ओई टेम अंग-भंग हो जात । जईसें बूढ़े-पुराने लोग कत मूँछ पूछ और नारी बारे काये न संवारी। इन बातन को आज के लरका-बिटिया कां समझत।'

'तुम नींक कै रये। कुम्हार कच्ची मट्टी को कूट-पीट के जब तक अपय काम को नई कर लेत तब ऊको चाक पै नई चढ़ाउत। 'पतो नई जो कैसी हवा चलन लगी। अबा के अबा श्योरे निकर रये।'
'जरत चूले में जावे ऐसी हवा। जानें सबई कछु मिटा दओ।'

'तुम काये इत्तो सोचरई। भूख और खाट कां देखत जात-पांत। पानी और प्रेम कां मानत जात-पांत। हार का जीत का जंग में प्यार में। माणिक दीवाना को' का दिन का रात। कोऊ पानी पी के जात पूछे तो ईको का मतलब। बुजुर्ग कै गये कुल ब्याहीये मूँछ राखिए। वैसे तो सई बात जो है। आदमी जो भूल जात एक अंगुरिया दूसरे की तरफ उठावे से पैला जो नई देखत चार अंगुरिया की की तरफ है।'
'अब कई तुमनें बात पते की। जिनें मों में धोबे तक की तमीज नईयाँ वे मुड़ी उठाये फिरत। कितऊ फटाका चल जाये वे चौका में दुकजात। वैसे छाती खोले फिरत। कांच लगावे की अकल नईयाँ। चाल चलन की बाते चपोटत।'
'तुमें का लेने देंने।'
'काये।'

'तुमाओ भईया उनसें तो सलौनों है। जो चोरी-चुपके इते-उते मों करिया करतरत, और समाज कलफ लगो कुर्ता पैर के ऊँची ऊँची नैतिकता की बातें चपोटतारत। अपई नांक पै मक्खी तक नई बैठन देंत। झक-पक बने फिरत। उनकें पों पै नई तो पीठ पांछे लोग उनकी हँसी उड़ाउत। काऊ ने कई-धारा तीन सौ छियात्तर में जीवन भर जैल गये। वे भरी सभा में चाल-चलन के भाषण पैल गये। कुर्सी के लालच ने जाने कितने घरन की पोल खोल दईं।'
'वो तो तुम नींक के रयै। जैसे तैसे लोग भूल पायेते लालच ने धो-धो के ऊजरी कर दई।'
'तुमे काये बुरो लग रओ।'

'मोय बुरो ई सें लगरओ दो-दो बार प्रधान बन चुके तोऊ आरक्षण की सीट पै लार टपका रये। का जरूरत हती भौजाई को लड़ावे की। जो नई जानतते अब बेऊ जानन लग। गगई पै तो पारो रखो जा सकत का मों पै पारो रखो जा सकत। अपय हांतन अपय घर की धो-धो ऊजरी कर रये।'

'तुम काये इतनो सोचती। राजनीति में सब चलत। चुनाव के टेम पै जानें कितनें जनें इते से उते उते से इते दौड़ लगात अगर ईको इतिहास पढ़ हो तो तुमाई आँखें खुली की खुली रैजे। तुम जाओ अपनई भौजाई को प्रचार कराओ । तनक मुस्करा दो । अब मों काये लटकायें।'
'तुम तो ऐसियई बातें करत।'
काये हमने का कै दई। अबे का बूढ़ा गई। नये लरका तुमें देख-देख के लट्टू हो जे लट्टू।'
'धत नेकऊ शरम नई लगत आये। बूढ़े होने चले। ज्वानी चढ़ रई।'
'तुमने एक कहावत तो सुनी हुये की-की को रोये। की-की को याद करे। आराम बड़ी चीज है। मों ढँक के सोओ। साँची कई कै नई।'
मनठोले और रती एक दूसरे को देख के हंस परत। रती प्रचार के लाने चली जात। मनठोले काम-काज के लाने निकर जात । तीन चार दिना के बाद रती घर लौटत। मनठोले मनसोले ज्ञानू बैठे बैठे ताश खेल रये और बीच बीच में बाते करत जा रये। रती दबे पाँव भीतर घुसजात और किवाड़ की ओट में ठाडी हो के बातें सुनन लगत। मनसोले ज्ञानू की आड़ लेके मनठोले को चिढ़ान लगत।
'ज्ञानू एक बात कये।'
'कओ का कैरयै।'
'तुमे बुरों तो नईं लग है।'
'नईं-नईं कै डारो। पेट में काये डारे।'
'तुमाओ सारो तो बड़ो भागगी है।'
'काये।'
'पैलां वो प्रधान रओ अब ऊकी लुगाई बन जे।'
'सौ तो है जा में कोनऊ सक नईंया। आनविरादरी में ब्याओ करवे के बड़े लाभ होत ।'
'साँची कई लेकिन जो बताओ पेट मे दर्द काये होरओ। हमाओ सारो सबको एक नजर से देखत। भेद भाव नई रक्खत। तुमऊ कर डारो दो। चार ब्याओ।'
'भईया की बातें हमसे को कर है ब्याओ।'
'तो समझ लो जा सें बडो़ समरसता को का उदाहरण हो सकत़।'
'ई में तो कोनऊ सक नईयाँ।'
'ज्ञानू तुम पत्ता फेंको बेमतलब की बातें न करो।' (मनठोले ज्ञानू से झल्ला के कत)
'तुम पत्ता तो फेंको।'
'जो डरी हमाई बेगम काट सको तो काट के बताओ।'
'मन मनठोले भईया तुमाई बेगम की का कैनें।'
'तुम का कैवो चाउत।'
'मैं कछू नई कै रओ। मनसोले कै रयेते।'
'कैलो-कैलो। कछू मन में न रै जावे।'
'कान रै जाये। हमाये ऐंगर कछू होतो। तो हम न पटक लेते।'
'बड़े आये पटकवें बारे। बहू के सामनूं थर-थर कांपत।'
'सौ तो है। वे जब अपनें पै आ जाती। ऊटेम हम कां लगत। करिया

नागऊ भगो दिखात।'

'जे उठा-पटक की बातें छोड़ो मोय एक नीक बात याद आ गई। ऊको सुनो।' (मनसोले ने मनठोले और ज्ञानू की बात काटत भये कई)

(मनठोले और ज्ञानू मनसोले की बात सुनन लगत। मनठोले और ज्ञानू हाँ में हाँ मिलात।)

मनठोले भईया प्रदर्शन के लानें नारे और लोकगीत आज कें जमाने में बहुत जरूरी हो गये। जाको जित्तो बड़ो प्रदर्शन ऊको उतनो बड़ो नाओ।'

'मनठोले तुमाई बात में दम तो है। ईके लानें का करने पर।'

'तुमें कछू नई करने आये। काल हमाये दद्दा ने मोय कछू नारे लोकगीत सुनायते। वे तुमोये सारे जू के कामे आ जे।'

'तो तुम सुनाओ हम उनें रिकार्ड कर लेवी। कर के भेजदेवी।'

'सुनो-समरसता लानें है। जात-पात मिटानें है।'

'जो भेदभाव से दूर रये। विजयी बाये बनानें है।'

अगर गाँव को स्वर्ग बनाने। द्वेष ईर्ष्या मिटानें। एक दूजे से प्रेम करे सब। घर-घर जोऊ बतानें। जात-पात को छोड़ो भईया। सबसे नाता जोड़ो भईया। जो माटी से प्यार करे न। ऊसे नाता तोड़ो भईया

'नारेई-नारे सुनाउत रेयो के लोकगीत भी सुनाओ हो।'

लेओ लोकगीत सुनलो-बुन्देलखण्ड की शान निराली। ई की हम करे रखवाली। जय बुन्देलखण्ड। ई की जोत जले अखण्ड।

तुम लोकगीत गारये के कविता सुनारये।

रती किवाड़ से हट के भीतर जात। मनठोले और ज्ञानू मनसोले की हंसी करन लगत। हँसी हँसी में नोंक-झोंक होने लगत। इतनेई में फोने टिनटिनान लगत। रती फोन की आवाज सुनके पौर में आ जात। रती की तेज आवाज सुनके सबरे हक्के-वक्के रै जात।

'ए तुमई से कै रई। तुमे फोन की घंटी नई सुनाई देरई। बेतुकी ऊलजलूल बातन में लगे रत। तुम लोगन नें तो शरम बेंच खाई जब देखों तब इते उते की बांते ले के बैठ जात।'

काम काज नई दिखाई देत। तुम कान खोल के सुन लो। जे बातें नोंनी नई होती। बड़े आये समरसता वाले। कछू नोनी-नींकी बातें भी कर लेओ करो। जानें जो करो सौ करो। आगे बाल बच्चन को पढ़ाओ-लिखाओ समझदार बनाओं अपय घर की और दूसरन के घर की इज्जत करवो सीखो। अपई संस्कृति सभ्यता को बनाये राखो। अगर सई में समरसता लानें है तो अपय मन से भेद भाव मिटाओ सबको अपय घाई समझो काऊ को हक नई छीनो। मिलकें रैवो सीखो। हींन भावना न राखो। अपई माटी के लाने जीओ और मरो। तबई हमाओ और तुमाओ मान-सम्मान रै है।'

मनठोले फोन उठाउत। जैसई बटन दबाउत। बटन दबातई मनठोले उछल परत जैसे बिजली को करंट लगगओ होय। सबरे घबराजात। सब को हक्के-बक्के देख के मनठोले खिलखिला के हंस परत।

-मालवीय नगर (बजरिया) कोंच
जिला-जालौन (उ.प्र.) 285285
मो.-09936505493

## हमारे कैसे नौने गांव

-डॉ. महावीर प्रसाद चन्सौलिया

मोंरे नाच रही वन बागन, पपिहा पीब सुनाएँ।
डाल-डाल पें कोयल कूके, जी को बहुत सुहाएँ।।
मगरें बैठौ शगुन जतारओं, कौवा बोले काँव।
आँगन में बिल्ली मोधों रई, करे म्यावती म्याँव।। हमारे ...
नीलकंठ गलगलिया श्यामा, गेंगा शोर मचाएँ।
गौरेया पड़कुला कबूतर , गुटर-गुटर गूँ गाएँ।।
बगला ध्यान धरें तालन पै, सारस जोड़ सुहाव।
देखें श्याम बदरिया पुरवा, उठत मल्हारी भाव।।
खेत धान के हरे भरे, औ लहर-लहर लहराएँ।
ककुनी सवाँ बाजरा जुनरी, तिली मूँग मन भाएँ।।
गुफना लएँ हाथ में झूमें, हरिया बैठ न पाव।
कऊँ आल्हा रमटेरा गोंटें गाँव भरे उछाव।। हमारे ...
गैयाँ भैंसें चरें चरोखर, गल घंटी टुन्नाएँ।
संजा बिरियाँ बंधे जँगेरू, खिरकन रहै रम्हाएँ।।
श्यामा, धौरी, कोउ चितकबरी, दौरी दूध पियाब।
घर-घर मठा भमत भैसन के जो चाहे ले जाव।।
कउँ-कउँ छपरा कउँ खपरैला, बेले चढ़ी लुभाएँ।
सेम, चचेड़ा तोरई लौकी, बड़ी बड़ी लटकाएँ।।
वन करेल, वन भिण्डी, चोरई, बिना मोल ले आव।
गिल्हा-कचरिया और भुट्टियाँ, जी चाहे तब खाव।। हमारे ...
गेहूँ, बेझर, सरसों, अरसी, तुनें लावनी गाएँ।
झुला पड़े पेड़ पै डलिया, मौड़ा परे झुलाएँ।।
माँग लगा के दूध पिवा कें, फिर बई पैं पोढ़ाव।
बहो पसीना टपटप हो रओ, ता मों पे मुसकाव।।
खरी दुफरिया करें कलेवा, रूखी सूखी खाए।
गुझिया लडुआ सेव पपरिया, लपसी लपलप खांएँ।।
लपटा, मठा, महेरी, थोपा, भूजा, मीड़ा, खाव।
सियरों पानी भरी पुतलिया,गुटर-गुटर कर जाव।। हमारे.........
भरे खजाने अन्न खेत में, औषधिया मुस्काएँ।
दिमाजरी अरू नाह मेंड़ की, जूड़ी ताप भगाएँ।।
खाकें बथुआ, पालक चौरई, पीरा रोग मिटाव।
धनवंतरि को रूप नीमरा, द्वारे की सुख छाँव।।
करी बियारी कोड़ें बैठे, पूछें सब मिल हाल।
कहें कहनियाँ राजा नल की, बिक्रम उर बेताल।।
कहूँ कबड्डी कहूँ डुडुरूआ, खो-खो खेल खिलाव।
कुश्ती मुगदर मलखम चढ़ रए, जो जाकों रुचियाव।। हमारे...
दद्दा, भैया, कक्का, मालिक, सीधे सरल सुभाव।
पाँच पंच मिल जुल के बैठे, दाऊ करत नियाव।।
सावन ,फाग, दिवारी,दिनरी, मौसम में जो भाव।
महावीर सब जग सें न्यारे कैसें नौने गांव।। हमारे....

-ग्रा. पो.-बँगरा, जिला जालौन उ. प्र.
पिन कोड-285121, मो.-8004776067

# गोरी को कूकर घर को न घाट को

- सुरेन्द्र नायक

लरकैयां उमर, तापे मताई बाप की चांय चांय। अपएँ मोड़ा के लाने ऐसी गोरी-गोरी पीरी लुगाई। लियाहें के गाँव भर की आँख चौंधिया जें। हाय! ऐसी नौनी दुलैया। अब पढ़ाई लिखाई में जी का लगे? चौबीस घंटा आँखन के सामने बई बई दिखात देत। बा पायल बजाकें चौंपियारी बखरी में बुला रई, बा चुरियाँ खनका कें भुसौरा में टेर रई। रात जब हुए, तब हुए। सब जनें हँस रए। देख लेओ, बहू ने आतनई गरे मे पट्टा पहना दओ। चौबीस घंटा ओई के ऐंगर टोरियात रत।

अब जा बात तो हमऊँ जानत हैं कि मोड़ियन के पास टौरियान वाले तो मुलक मोंड़ा हैं लेकिन मोड़ी बई के गरे में पट्टा पहनातीं जो देखबे सुनबे में नींके होया जीके चाल चलन तनक नोनें होएं, कछू करम धरम के होएं और कछु कमात धमात होएं। घर गिरस्ती के लाने प्रेमऊ चइए और रोटी कपड़ऊ। ई के लाने कछू रोजगार चइए। अब नौकरी पेड़न पे तो फरती नइयाँ। सो हम सोच रए के ना होए तो कहूं चाय को ढाला खोल लें। वैसे जा दुकान चलावे में दिक्कत बहुतई है। गाँव भर के नंगा - ठलुआ और सेंटा इतई भुबरिया मूतत और तापे उधारी और मुफ्तखोरी । उधारी दई सो दई। बा जा जनम में तो मिलने नइयाँ। लेकिन जा धंधे में तनक में बारे न्यारे हो जात। आदमी जाने का से का बन जाए। अब तो बड़े बड़े आदमी सब काम धंधे छोड़कें जोई काम करन चाहत। सो पुराने नेतन ने जा धंधे पे रोक लगाबे को मुकदमा दायर कर दओ है। ऐसें तो पुराने आदमी उतईं के उजईं डरे रें और पार्टी के दफ्तर में फरश बिछात रें। उतें चाय बेचन वाले कुर्सियन पे मचक कें बैठ जें। इनकी अकल चलतउ तो बहुत तेज है। पहनबे को उन्ना नईं जुरत लेकिन उटंगा घुटन्ना पहनके ऐसो टेड़ों बकोड़ो उचकत कूदत के बड़े बड़े सूट वाले तनक में चिन्त हो जात और धोती बालिन की धोती नीचे सरक जात। जऊ तो समझ में नई आत के जे का कहन चांत और का करन चांत। इनकी करतूत तो देखो, नोटई बंद कर दय। अब हमें अपई पडो़सिन छम्मकछल्लो को धुतिया कैसे खरिदबाएं? रडुअन भडुअन की पीर रंडा-रमंडा का जानें? जाके लाने हीर रांझा को दिल चइए लैला-मंजनू को करेजो चइए। इन्ने तो और उल्टो काम करो और मंजूनूँ पकड़ पुलिस बनवा दईं। मोए पडो़स को एक मौड़ा कौनऊ बड़े शहर में रे रओ। अब ऊकी बियाह करबे लायक तनख्वाह तो है नइयां सो एक मोड़ी के संगे बिना बियाह के रे रओ। उतै बाय लिव इन रिलेंशनशिप कहो जात। अपऐं गाँव जैसौ। बिन फेरे हम तेरे । मन मिले की बात है, भौजाई को रख लो, बहू को रख लो पटीदार को रख लो, मजदूरिन को रख लो, मालकिन को रख लो। न कौनऊ जोर जबरदस्ती, न कौनऊँ बड़ो खर्चा। चुकरिया में गुड़ फूटत रत। बाहर नोनी नोनी बातें करो। तनक सहूर से काम लेओ तो सब सटर पटर चल जात। बात बिगरन लगे तो दूसरो ठिया तलाश लो। कौन बेई ठर्सीं? अरे हाँ, हम बा शहर वाले मोड़ा की बात कर रये ते। बा के संग की मौड़ी भौत चंट है। बा अखबार पढ़त है सो के रईती के अट्ठाइस परसेन्ट जी. एस. टी. काट के प्रेम कर हें। अब बताओ वो मोड़ा प्रेम में का करे, का छोड़े?

हमाए हिसाब से चायबंदी को मुकदमा ठीकई है। एकई आदमी ने नाक में दम कर दई। पतो लगो के अभे गुजरात में मीठी - मीठी बातें कर रओ। कोऊ समझऊ नई पाओ के वो जाकें असम में चिकनी चुपड़ी बातें करन लगो। अभे इते फट्टा कुर्सी नईं उठ पाए के वो केरल कों भरमा रओ। अब ऊसे कोऊ कभे पूछे कि बिजली को का हो रओ, सड़कन को का हो रओ, नौकरी को का हो रओ। नए मोड़ी मोड़न ने बाए नेट में ढूँढ़ो तो पता लगो के ऊकी लोकेशन तनक देर पहले अमेरिका में मिल रइती। जा टेम जापान के ऊपर दिख रओ है और लगत है के आस्ट्रेलिया जा रओ है। ऊको का भरोसो? हो सकत है कशमीर समस्या पे कौनऊ मीटिंग करन चन्दमा पे जा रओ होए। वो घूमतउ तो इत्तो है के कओ बाए खुदई याद न होए के वो कौन देश को नेता है, के बाने कहाँ से चुनाव लड़ो तो। ऊको तो जोऊ पता नइयाँ के अपएं इते पांच साल के लाने चुनाव होत है। ऊ कहत है सन 2022 में जो करहें, 2025 में वो करहें 2050 में जाने का करहें। संगी साथियन की भगवान जानें लेकिन ऊ अपएँ लाने ठसक से कहत है न खें है और खान दें। अब उने को समझाए भैया तुमें भूख नईं लगत तो न खाओ लेकिन सबको लेकिन सबकों काए भूखन मार रए। उनसें को खुशी है। चीन, पाकिस्तान, पत्थरबाज, अलगाववादी और आतंकवादी उने पानी पी पीकें कोस रए । धंधे टूट रए हैं। काले धंधे और काला धन केंचुली बदल रए हैं। खत्म तो खैर जे का हुए नइयाँ लेकिन इनको आतंक के साए में जीबो। कोई छोटो मोटो अत्याचार । नइयाँ । जाए चमत्कारई समझो।

जा समस्या पे तीन-चार दिना सोचबे के बाद हमने कसम खा लई के अब हमें चाय की दुकान नई खोलने। हमे जाको आगें कछू भविष्य नहीं दिखाई दे रओ। जा कह के आगें सब चौपटई धरो। हमें नई बनने ऐसो लेता। जाने कभे हमाओ चुनाव लड़बे को नंबर आए। कौनऊँ दिना पता लगे के हम चायई बेचत रह गए और उते सरकार चली गई। जब ऐसे ऊट पटांग काम करहें तो सरकार के दिना चलजे। इनसें किन्ने के दई के देश सुधारो। टैक्स को देन चाहत? घूस को नईं लेन चाहत? जे के रए के मशीन पुरानी हो गई है सो ओवरहालिंग कर है। पुरानी मशीनें कभऊं नईं सुधरतीं। अकलमंदी जई में है कि बाय ठोक पीट के जुगाड़ से चलात जाओ और अपनो टैम पास करो। अगर अगले चुनाव में जीतवे की कछू जुगत भिड़त दिखे तो ठीकईं है। बा मशीन को ठोक पीट के फिर पांच साल चलाओ। अगर लगे के हारबे को डौल है तो बा मशीन कों इत्तों खराब कर देओ कि अगली सरकार बाय स्टार्टई न कर पाए और बाप-बाप करे। फिर हँस -हँस के उनकी थू-थू को तमाशा देखो। बे पानी पी पी कें गारी दे है। नाशमिटे। सबरी मशीन खराब कर गए। राजनीति में गारी जूता चप्पल खाबे-पीबे को बुरो तो मानों नईं जात। हालईं मुस्का कें जबाब दे दो। हमनें छोड़ताऊ दई तुमतो बाए कबाड़ में बेंच कें बोऊ पैसा खा जात ते।

जा बात तो सबई जानत के गोरी को कूकर बनने हैं तो कछू कमाने परहे। अगर कविताई की जगह पढ़ाई लिखाई पे कछू ध्यान दओ हो तो तौ नौकरी की जुगत कहूं तो भिड़ई जाती । कविताई से मोड़ी पट तो जातीं लेकिन सटती नईंयाँ । सटहें तो बाल-बच्चा हों है। उने का खबें।? कविता की न रोटी बन सकत न सब्जी। अगर अक्ल और जुगाड़ से काम करो जाए तो जासे पछीत वाली नेतागीरी

जरूर हो सकत। अगर कौनऊ पार्टी के ढंग से तलुआ चाटे जाएं तो बाको कौनऊ न कौनऊ नेता भाषण, पंपलेट प्रेस नोट लिखबे के लाने मोय रख सकत। जब हमाई कूकरगीरी उनें भा जे तो वे हमें अपनो वफादार कूकर बना लें। तब पढ़े लिखे आदमी हमें प्रवक्ता केहैं, थिंक टैंक के हैं। बड़े लोगन की बड़ी बड़ी बातें। नेतन को अपनी आत्मकथा लिखबे को टैम तो होत नइयां। वे शरम लिहाज के कारन अपने मों सें अपनी करनी तो बखान नईं सकत। ऐसे में एक काम हो सकत। अगर अपयें इलाके को कौनऊ दूध को धुबो नेता तलाश लओ जाए और फिर ऊकी रासो, विरुदावली या चालीसा लिखी जाए। बामें कछु अकलउ नहीं भिड़ाने। को नईं जानत उनने कहाँ बकैती करी, कहाँ लठैती करी, कहां छिनैती करी, कहाँ डकैती करी, कहाँ रड़याई करी, कहाँ छिनरयाई करी। बस बेई बातें तनक रस ले लेंके लिखने। आदरणीय को जेल रासो, आदरणीय को बेल रासो, आदरणीय को रेल रासो, आदरणीय खेल रासो...। ऐसो कौनउ गुन नइयां, जो उनमें न होए। गांव के जाने कित्ते मोड़ी-मौड़िन की शक्ल उनई पे गई है। ए लेओ! कांख में मोड़ा और गांव में ढिढ़ारे। ईकें लानेअपयें कक्का जू का बुरे हैं, जाने मेले हैं, गांव जवार के है बिरादरी के हैं। बस ऊ के आठ-दस केसई तो और रे गए। इनमें जमानत और मिल जाबे सो वे जेल से बहार। ईके बाद उनने सबको धूर दई जो कोऊ उनकी पछीत दाब पाए। बे कछू बन गए तो हमें छोटो-मोटो मंत्री तो बनबाई दें। और फिर न जाने कित्ते खाऊ कमाऊ पद हैं, बा पे हम अपनी गोरी को बिठवा दें। बऊ तो हमाओ जलवा देख ले के कित्ती दम है हमाई कविताई में। अभे हमें कोऊ भटासेर नईं पूछ रओ। तब हमाई पूछऊ हुए और पूंछऊ। सब जनें हमाए आगें पीछें पुरस्कार ,माला और चैक लएं घूमहें। कक्का जू के आगें किनकी औकात है के के दें के जो पुरस्कार तो फौजियन के लाने है, के जो तो वैज्ञानिकन के लाने हैं। नियम तो गैरन के लाने होत, अपएँ लोगन के लाने नईं। अगर तोऊ जरुरत पर जाए तो वे नियम ईं बदलाव दें। नियम का सरकार के उपर हैं? एक बात औरऊ हैं। ज्यादा कछू न कक्का जू जानत और न अपुन। अपुन कों तो हो हल्ल से मतलब, के इनाम मिल गओ। हमें का फरक पर रओ के इनाम है के घूस पुरस्कार है के तिरस्कार, फौजियन वालो है के डकैतन वालो, कविताई वालो है के छिनरयाई वालो। वैसें हमें अपईं होन वाली साली की सलाह नीकी लग रई। ऊ के रई के जीजा अपुन को खुद की पार्टी बनाएं चइए। इते जिज्जी घर गिरस्ती और तैं उर्त अपुन लोग जमकें नेतागीरी करहें। ईसें जनता को आकर्षनऊ बनो रे और टैम बेटम घूमबे में अपुन को बोरियतऊ नईं हुए। खिचड़ी को घी खिचड़ी में रेहे तो काऊ को कछू केबे को मौका नईं मिल। चुनाव जीतबो कौन कठिन है। राजा महाराजा जनता को डन्डन से हांकत ते और नेता फंडन से। जनता तो हजारन साल सें सपनो देख रई सो आगेंऊ देखत रे। इत्ती बात तो जनता जानतई है कि टीवी, सिनेमा और सपने बस देखबे की चीजें हैं। जौन नेता जित्ती लफ्फाजी करले, जित्ते बढ़िया सपने दिखा ले, उत्ताई बड़ो नेता। आजकल तो खांसन छींकन वाले दमा के मरीज तक नेता बन जात। न पता आज टरके, के कल। साली ने एक अकल और दइती लेकिन के रईती के ऊकी जिज्जी को पता नईं चलें चइय। बा के रईती के आजकल नंबर दो में अलग अलग तरहां की तीन-चार लुगाईं सोऊ रखने परतीं। न जाने कौन तरह की सीट हो जाए। ओवर टाइम वालियन को ज्यादा भरोसो नईं रत। पतो लगे के चुनाव जीतबे के बाद लातई मार दें। वैसे जे काम सब के बुते के नईं होत। जामें अकल, पैसा, बेशरमी के संगे मजबूत खोपड़ी सोउ चइए। जाने कभे और किते बैभाव के परें।

बा के रइती। देखो जीजाजी, बड़ो काम करबे के लाने बड़े सपने देखने परत और दिखाने परत। हमें लैपटोप, मोबाइल, साइकिल, घड़ी, झुपड़िया मुफत बांटबे के आगें सोचने पर, कर्जा माफी और कन्या विवाह अनुदान से आगें सोचने पर। अपनो घोषणा पत्र ऐसो दमदार हुए के सबी आंखें फटी रे जें। हम का नईं केहैं? हम केंहें के हम शपथ लेतनई चन्दमा, सूरज, मंगल और आसपास के गिरहन की जमीनन की नाप जोख शुरू करा दें। उते हर जरूरत मंद को एक बंगला, दस हजार एकड़ जमीन, एक फार्म हाउस, देशी और अंग्रेजी शराब को एक-एक ठेका, दो तौ प्रेमी - प्रेमिका, चार गाड़ी और आठ-दस नौकर चाकर मुफत दए जें। खेतन पे आबे जाबे के लाने और उनकी रखवाली के लाने हर किसान को एक हवाई जहाज, एक हेलीकोप्टर और चार ड्रोन तो खैर बैसेंउ देने पर। जब राजा हाथी देहे तो ऊके खाबे के लाने दो-चार गन्ना के खेत तो देहई देहे। खसम और लुगाई के लाने अलग-अलग गिरहन पे अलग-अलग बंगला दए जे। न देखहें, न भूंकहें। अगर जरूरत परे तो मोबाइल पे बात करलें। और अगर चाएं तो अपओं मोबाइल बंद कर लें। जासें रोज-रोज की चाएं चाएं नईं हुए। जो कोऊ दूसरी जात-बिरादरी के संगे न रहन चाहत होए, उने हवा में नकली गिरह, वाए वैज्ञानिक का कहत कृत्रिम ग्रह बनवा दें। जिने अकेले में शान्ति से रहने होय, उने समुन्दर की तलहटी में बाग बगीचा लगा के बसा दें। सब जगह चाय, समोसा, पड़ा रसगुल्ला, मांस, मुर्गा की फैक्ट्री लगवा दें। जिने जनावर खाने, वे जनावर खाएं। जिने घास-फूस खाने, वे घास फूस खाऐ।

अब बस एकई काम करने। जा घोषणा पत्र कों लीक होबे से बचाने। इने सत्त तालेन में छिपाकें रखबेऊ पे , कोई चुरा ले तो? बैसेंऊ आजकल चोरी चपाटी, बाए का कहत, हाँ हैकिंग खूब हो रई। अब डर रे गओ तो बस उटंगा नेकर वाले को। वो अपएँ घोषणा पत्र में न जाने का का के दे? ऊकी भली चलाई। के रओ तो, के न खाहें, न खानदें। ऐसो आजतक कहूं भओ है? गोव को प्रभाव बन जाओ, तो गाड़ी सन्नान लगत।

अब हमाई भगवान से एकई विनती है के हमाई होन वाली साली की हमपे ऐसियई कृपा बनी रए, फिर गोरी, छोरी और जो जो कछू होत हुए सबै मिल जें। भगवान जी, तुमसे एक विनती और है। अगर तुमाई समझ में आ जाए तो ठीक है। हम अपयें गले में पट्टो डरवाएं बिना तो मानहें नईं। कायसें रडुअन-भडुअन कों सबई जानें शक की निगाह सें देखत। जा पट्टा से निरें ऐब दब जात। सो हम जा आय के रयते के हमें जर्मन शेफर्ड, अल्शेयिन, लेब्राडोर जैसो दबंग कूकर बनाबे की कृपा करियो तो तुमाओ एहसान हम जिन्दगी भर नईं भूलहें। ऐसो न होय के तुम हमें पामेलियन कूकर घाईं बना देओ। जब चाएं लुगाई मोय गोदी में लेके पुचकारे, चूमे चाटे और जब चांय जमीन पे दचक देय और हम कूं- कूं करत रे जाऐ। कविताई करे पे हमाई अभे कौन कम हँसी उड़त है। फिर तो लोग बाग और हँस-हँस के केहें। गोरी को कुत्ता, घर को न घाट को।'

-प्रतापनगर कोंच, जिला जालौन ( उ. प्र.)
मोबा.-9415169992, 8787038870

# बुन्देली लोकनाट्य स्वाँग

- डॉ. आशुतोष त्रिपाठी

नाटक का वास्ताविक जीवन रंगमंच पर ही प्रारम्भ होता है क्योंकि नाटक मात्र शब्दार्थ ही नहीं है,अभिनेयार्थ भी है। अन्योन्याश्रित कलारूप होने के कारण एक का अस्तित्व दूसरे के बिना संदिग्ध है। रंगमंच की अनिवार्यता दृश्यत्व को नाटक की प्रथम और अंतिम लक्ष्य बना देती है। अपनी चाक्षुषता एवं रंगधर्मिता के कारण ही नाटक विभिन्न काव्यरूपों में सर्वाधिक रमणीय माना गया - काव्येषु नाटकं रम्यम्। और पंचम वेद की अमिधा से अभिहित किया गया । रंगमंच सापेक्ष सामूहिकता और सामुदायिकता ही नाटक की सही परख है। यद्यपि नाट्यशास्त्र नाट्यधर्मी रूढ़ियों का विशाल संग्रह-ग्रन्थ है, तो भी वह मानता है कि नाटक वास्तविक प्रेरणाभूमि और वास्तविक कसौटी भी लोक-चित्त ही है। परवर्ती-काल के अलंकार-शास्त्रियों ने इस तथ्य को भुला दिया। परन्तु भरतमुनि ने इस तथ्य पर बड़ा जोर दिया। छब्बीसबें अध्याय में उन्होंने विस्तारपूर्ण अभिनय विधियों का निर्देश किया है। नाटक चाहे वेद या आध्यात्म से उत्पन्न हो तो भी वह तभी सिद्ध होता है जब वह लोक-सिद्ध हो क्योंकि नाट्य लोक-साहित्य से उत्पन्न होता है। इसलिए नाट्य-प्रयोग में लोक ही सबसे बड़ा प्रमाण है-

वेदाध्यांत्मोपपन्नं तु शब्दच्छन्दः समन्वितम्।
लोकसिद्धं भवेत सिद्धं नाट्यं लोकस्वभावजम्।
तस्मात् नाट्यप्रयोगे तु प्रमाणं लोक इष्यते।

उन्होंने यहाँ तक कहा है कि जो शास्त्र जो धर्म जो शिल्प और जो क्रियायें लोकधर्म प्रवृत्त है वे ही नाट्य कहीं जातीं है:-

यानि शास्त्राणि ये धर्मा यानि शिल्पानि याः क्रियाः
लोकधर्म प्रवृत्तानि तानि नाट्य प्रकीर्तितम्।।[1]

आज का नाट्य प्रयोग अपनी प्रेरणा लोकनाट्य से ग्रहण कर रहा है। लोक नाटक, लोक शैली, लोक जीवन, लोक भाषा,लोक समस्या, लोक संस्कृति, लोक भावना को जीता पनपाता और बढ़ाता है। देवलाल सामर के अनुसार-जब तक हम लोकनाट्य के विशिष्ट तंत्र एवं उसकी विशिष्ट पृष्ठभूमि को नहीं समझते, उससे ग्रहण की हुई समस्त सामग्री हमारे नाटक में आत्मसात् नहीं होती। रंगमंचीय सामग्री की अनुपस्थिति, प्रकाश चमत्कार से मुक्ति, कलाकारों की रंगमंचीय अनौपचारिकता, पोशाकों की सादगी, नाट्याभिनय में जीवन-व्यवहार की स्वाभाविकता तथा वाचन, गायन आदि में अभिनेता को खुली छूट लोकनाट्य नहीं है। लोक नाटक, दर्शक-प्रदर्शकों के लिए सम्मिलित जीवन पद्धति है, भावात्मक भागीदारी है तथा प्रदर्शकों की आजीविका के लिए दर्शकों की ओर से सहर्ष अपनाई हुई धार्मिक जिम्मेदारी है। अर्थ लाभ, प्रतिष्ठा - प्राप्ति, ख्याति अर्जन आदि लोक नाट्य का लक्ष्य न होकर उसकी स्वाभाविक परिणति है।"[2]

लोकनाट्य एक ऐसे वृक्ष के सदृश हैं जिसकी जड़ें अतीत की अतल गहराई में है किन्तु जिनमें शाखायें नयी नयी हैं लोकनाट्य जनपदीय संस्कृति के परिचायक है। डॉ. जगदीश चन्द माथुर का कथन है कि लोक रंगमंच लोक समाज की देह का अंग है। नागरिक या साहित्यिक रंगमंच उसका बाहरी आभूषण लोकरंगमंच जीवन की उमंग की स्वाभाविक अनायास अभिव्यक्ति है, नागरिक रंगमंच कलात्मक चेष्टायुक्त अभिव्यक्ति इन शब्दों में लोक और नागर मंचों का अंतर स्पष्ट है और यह भी स्पष्ट है कि शास्त्र भी लोक से जीवन की ऊर्जा प्राप्त करता है।[3] डॉ. त्रिलोचन पाण्डे का अभिमत इस प्रसंग में उल्लेखनीय है। वे कहते कि लोकनाट्य सामूहिक आवश्यकताओं एवं प्रेरणाओं से निर्मित होने के कारण लोकवार्ता के कथानकों लोक-विश्वासों तथा अन्य तत्वों को समेटकर चलते है इसलिए प्रभावपूर्ण होते है।[4]

डॉ. पाण्डेय के शब्दों से इस आशय की पुष्टि हो जाती है कि लोकनाट्य की विशेषता उसके लोकधर्मी स्वरूप में निहित है। लोकधर्मी नाट्यशैली लोक के मनोभावों और प्रतिक्रियाओं के स्वतंत्र विकास में सक्षम होती है। भारत के विभिन्न भागों में अनेक लोकनाट्य रूप प्रचलित हैं। उन्हीं लोकनाट्य रूपों में से 'स्वांग' बुन्देलखण्ड क्षेत्र का विशिष्ट लोकनाट्य है जो सबसे प्राचीन होता हुआ भी नित नवीन रहा है। वह रहस, रामलीला, राई, काड़रा, भँड़ेती और नौटंकी सभी में जुड़ता हुआ अपना योगदान करता रहा है। उसकी वस्तु और शैली में अजीब लोच है जिससें वह हर जाति, हर सांस्कृतिक समवाय, हर वर्ग और हर सम्प्रदाय के करीब बना रहा। उसमें यथार्थ और आदर्श का समन्वय है स्थानीयता के साथ सार्वभौमिकता है तथा समकालीन होने के साथ सर्वकालिक व्याप्ति है।

व्यापक रूप में स्वाँग का अर्थ है - रूपधरना, वेश बनाना, नकल करना, ढोंग रचना, तमाशा करना आदि। लेकिन इनमें स्वाँग की विशेष प्रवृत्तियों को आधार बनाकर उनसे अर्थ निकाला गया है। वास्तव में इन अर्थों से स्वाँग की उत्पत्ति नहीं हुई वरन स्वांग से अर्थों की यात्रा चली है । स्वांग शब्द बहुत प्राचीन है । और आंगिक में सु उपसर्ग लगाकर स्वांगिक बना है जिसका बिगड़ा रूप स्वांग भरना, रचना आदि क्रियायें लाक्षणिक अर्थ प्रदान करने लगी।[5] वस्तुतः बुन्देली स्वांगों को कई भागों में बाँटा जाँ सकता है। प्रथम विषय वस्तु की दृष्टि से -

1. पौराणिक स्वाँग या धार्मिक स्वांग जैसे दूध कौ स्वाँग, माखन चोरी कौ स्वांग, राधा का कनैया के झगड़े कौ स्वाँग।
2. सामाजिक स्वाँग जैसे जातिपरक स्वाँग, ब्याव के स्वाँग, समस्यापरक स्वाँग आदि।
3. त्योहार और उत्सवों के संस्कृतिपरक स्वाँग जैसे होरी के स्वाँग पथरियाऊ चौथ कौ स्वाँग आदि।
4. व्यक्तिपरक रंजन के लिये काल्पनिक स्वाँग जैसे बिच्छू कौ स्वाँग, जेठ दाउजू, भोरी फुआ, छबीली जिजी, मझली कक्को, चटकारी भौजी आदि परिहासपरक स्वाँग।

दूसरे रसपरक दृष्टि से-

1. श्रृंगारिक स्वाँग जैसे ब्याव के स्वाँग।
2. भक्तिपरक स्वाँग जैसे दूध कौ स्वाँग माखन चोरी कौ आदि।

3. हास्यपरक स्वाँग जैसे होरी के स्वाँग।
4. व्यंग्य-विनोदपरक स्वाँग जैसे दहेज कौ स्वाँग, बिच्छू कौ स्वाँग, जेठ दाउजी, भोरी फुआ आदि के स्वाँग।

***तीसरे जातीय वर्गों की दृष्टि से-***

1. धोबी के स्वाँग
2. कोरी कौ स्वाँग
3. कुजरा-कुंजरियन के स्वाँग
4. चुरेरिन कौ स्वाँग
5. कुरमी कौ स्वाँग
6. ब्राहनन कौ नकली ब्याय कौ स्वाँग आदि।

***चौथे व्यंग्य की दृष्टि से-***

1. हास्यपरक स्वाँग जैसे होरी के स्वाँग
2. उपहासपरक स्वाँग जैसे दहेज कौ स्वाँग
3. विरोधमूलक व्यंग्य प्रधान जैसे जेठ जू कौ स्वाँग
4. व्यक्तिपरक व्यंक्तिपरक प्रधान। जैसे जेठ दाऊ जू, मंझली कक्को, छबीली जिजी, के स्वाँग,
5. कटुक्तिपरक स्वाँग जैसे चालौनयाऊ कौ स्वाँग
6. विनोदपरक स्वाँग जैसे बिच्छू कौ स्वाँग, जेठ दाऊजू, भोरी फुआ आदि के स्वाँग।[6]

वस्तुतः बुन्देली स्वाँग आज के बदलते परिवेश तथा उससे उपजी स्थितियों से जुड़ने में पूरी तरह सक्षम है। लिहाजा स्वांगकारों को चहिये कि वह सामयिक समस्याओं को दृष्टि में रखते हुए नये-नये विषयों को उठायें ताकि समाज में इस प्रदर्शनकारी कला के प्रति लोगो में अभिरुचि उत्पन्न की जा सके। डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त का मानना है कि गाँव की प्रगति और जागृति के लिए इन स्वाँगों के माध्यम से समुचित प्रतिष्ठा मिलनी चाहिये। लेकिन स्वाँगों की इस विकास-मूलक स्थिति में एक द्वन्द्वपरक द्विविधापूर्ण पड़ाव आ सकता है। एस तरफ स्वाँगों की मध्यकालीन भावुकता और संस्कारजन्य मूल्य हैं तो दूसरी तरफ आधुनिक बौद्धिकता और परिवर्तित मानों से सम्बद्धता का प्रश्न। ऐसे पशोपेश में यह सतर्कता जरूरी है कि कही स्वाँग की अस्मिता ही खतरे में न पड़ जाय। वस्तुतः स्वाभाविक रूप से आये नये तत्वों और नये सन्दर्भों को स्वीकारने में कोई हर्ज नहीं है। बल्कि स्वाँगकारों और स्वाँगियों को बदले माहौल और नये रंगकर्म के प्रति सजग ही रहना चाहिये।। क्योंकि इसी सचेतना में स्वाँगों की संजीवनी शक्ति छिपी है।[7]

बुन्देली स्वाँग अन्य जनपदों के स्वाँगों से भिन्न अपनी एक खास पहचान रखने के कारण महत्व का अधिकारी है। वह ब्रज के भगत की तरह संगीत प्रधान, राजस्थान के भवाई स्वाँग और गुजरात के भवाइ वेश की तरह नृत्य-प्रधान तथा हरियाणा के स्वाँग की तरह गीतिप्रधान नहीं है। वरन हिमाचल के करियाला और काश्मीर के भाँडपाथर की तरह अभिनय-प्रधान है। करियाला में व्यंग्यों का यह वैभव एवं वैविध्य नहीं है जो बुन्देली स्वाँगों में है और भाड़पथर व्यंग्य के अंत में आदर्शपरक हो जाने पर अपनी यथार्थपरकता खो देते है। अभिप्राय यह है कि बुन्देली स्वाँग अपनी अभिनयमूलकता और यथार्थपरक व्यंग्यात्मकता के आधार पर विशुद्ध स्वाँग की प्रतिष्ठा रखता है इसी खास पहचान की वजह से अन्य जनपदों के स्वाँग लोकनाट्य के बीच उसका व्यक्तित्व सदैव स्मरणीय रहेगा।

**संदर्भ-**


1. नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृथ्वीनाथ द्विवेदी पृ. 26 द्वि. सं01971 राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
2. समकालीन नाटक और ज्ञानदेव अग्निहोत्री की रचनाधार्मिता, डॉ. आशुतोष त्रिपाठी पृ. 218-19 प्र. सं. 2016 निखिल प्रकाशन आगरा।
3. वीणा-अगस्त, 1972 पृ.95।
4. सम्मेलन पत्रिका-लोक संस्कृति विशेषांक वि. सं. 2010
5. रंगभूमि सं. कपिल तिवारी पृ. 40 पृ. सं. 2009 आदिवासी लोककला एवं तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल।
6. उपरिवत् पृ.-42-43
7. बुन्देली लोक साहित्य परम्परा और इतिहास, प्रो. नर्मदा प्रसाद गुप्त पृ.459 पृ. सं. 2001, मध्यप्रदेश आदिवासी लोक परिषद, भोपाल।



-ग्राम-पोस्ट झलोखर
जिला-हमीरपुर (उ.प्र.)२१०५०५


---

## बुन्देली-गजल

**-स्वतंत्र प्रभाकर रावत**

सोनें उपजत खेत उजर गए, का करिये,
पकी, फसल पै ओरे पर गए, का करिये?
पैलाँ बाढ़, परो फिर सूका, आसों ओरे-
बिना मौत के अब तौ मर गए, का करिये?
कर्जा काढ़ करी ती खेती जैसे-तैसें-
बुजवा पै बुजवा से धर गए, का करिये?
दीनबंधु तुम काये रिसाने दीनन सें-
का करने तौ, जौ का कर गए, का करिये?
खोज मिटौना, नाश मिटे, जे बैरी बदरा-
साँसी कयं तो हमें अखर गए, का करिये?
आसमान सें बरसे जे कैसे पथरा-
फसलें सबरी चौपट कर गए, का करिये?
बचे खुचे ते जौन कनूका इन बालन में-
चला अंधूरा बेई बिथर गए, का करिये?
बड़े सावजू न्याँय मांय की कर बातें-
फिर कें आज तगादौ कर गए का करिये?
जिनपै हतो भरोसो हमखां सबसें जादां-
टारो देकें बेई निकर गए, का करिये?
कात हते जो बखत परै पै काम आहें हम-
को जाने, वे कितें पवर गए, का करिये?
रानदेव राहत, की जा झूठी सी मल्हम-
इन बातन सें खीब अफर गए, का करिये?
कैसे हुये गुजारौ अपनो, तुमई बता दो-
बने बना पे काम बिगर गए, का करिये?
सुन कें हाल किसानन कौ मुखलिस के मन में-
पीर उठी, सौ अंसुआ झर गए का करिये?


-प्रभाकर आफसेट प्रिन्टर्स,
कड़ा की बरिया, छतरपुर म. प्र.
मो.-07747963596

# सत्कर्म की जीत

-डॉ. देवदत्त द्विवेदी

बुंदेलखण्ड की एक रियासत के राजा राजपाल बड़े धरमात्मा, दयावन्त और पिरजापालक हते। ई सें उनके राज के सबई अमीर - गरीब हल्के बड़े आदमी ईमानदार पर उपकारी और आज्ञाकारी हते। राजा हर साल होरी (होली) और दसरय (दसहरा) मिलन खों पूरे राज की जनता खों रजधानी में बुलाकें सबई सें मिलत हते। सबखों मान-सम्मान सें राजासाइ भोजन कराकें, पान कौ बीरा दैकें जा प्रतिज्ञा कराउत हते कै सब जनें हर प्रानी की मदत करें। आदमी होंय चाय पशु पंक्षी बखत परे पै सब की सेवा सहयोग करें। उन राजा कौ सब सें कैबौ हतौ कै हम सबके भगवान एकई हैं, उनखों राम कव चाय श्याम कव बे हर जाँगा हैं और हर जीव की मदत करबे बारे हैं। शंकर जू ने रामायन में कई है कै-

"हरि व्यापक सर्वत्र समाना"

ई सें अपुन सबई जनें जो कैउ देबी देवतन और गोंड़-गुरइँयन खों मानत पूजत हौ, उनकी सेबा-पूजा में अपनों कीमती बखत और पइसा खर्च करत आ रय हौ। ऊ पइसा और बखत खों बचाकें गरीब आदमन, की लूले-लंगड़न की, निरासतन की और पशु-पंछियन की सेबा करी जाय तौ भौतई अच्छी बात हुयै। जौ सबसें बड़ौ पुन्य और धरम कौ काम हुइयै। ई सें हमारी राय - सलाय है कै- " ऐकैं साधें सब सधें" के भाव बिचार सें जियै जौन सरुप अच्छौ लगै, जी पै जी खों बिसवास होय बे उनइँ एक भगवान खों पूजें भजें और आनंद सें राबें। बाँकी गाँव गाँव में जो सैकरन देवी देवतन ओ भूत प्रेतन, गोंड़ गुरइँन की पूजा - रचा करबे की चलन चल रइ है, ऊ खों धीरें धीरें कम करके बन्द करो जाय।

अपनें - अपनें बाप - मताई, जेठे स्याँने बूड़े पुरा परोसी और बाल बच्चन की अच्छी देख-रेख और सेबा करी जाय तौ भौतई अच्छौ रैहै। अपनों और अपनें परबार कौ पेट काटकें भूत - पिरेतन खों कुकरा - बुकरा की बलि देबै मैं कोंनउ सार नइयाँ।

जब राजा की बात हराँ-हराँ सबके समज में आई सो पूरे राज में कैउ देवी देवतन, इन्द्र की, और शीतला माई की, खेर-बहेर की गोंड़ बब्बा की, नट बाबा की पूजा कम होत होत पूरी तराँ सें बन्द हो गई। मायँ जब सुरग के देवतन और लोक देवतन नें देखो कै राजा राजपाल के राज में तौ उन सब की सेबा पूजा पूरी तराँ सें बन्द हो गई है। हर आदमी जो हल्के-बड़े सबई देवतन खों खूबइँ मानत तौ, अठवाइ बतेसन सें नरियल चड़ाकें दोइ जोर आरती पूजा करत ते बे अब तौ नामइँ नइँ ले रय हैं। ई बात पै सुरग और धरती के देवतन खों भौतइँ गुस्साँ चड़ी। उनने अकाल खों बुलाकें हुकम दव कै तुम धरती पै जाकें राजा राजपाल के राज में भयंकर अकाल पार कैं पूरी पिरजा खों सबक सिखाब। अपने बिकराल रूप के प्रभाव सें सब खों इतनौ हेराँन परेसान करौ कै बे मजबूर होकें फिर सें हम सबई देवी देवतन की सेबा पूजा करन लगें।

अकाल नें धरती पै आकें राजा के पूरे राज में अपनों बिकट रुप दिखाबौ सुरुँ कर दव। अकाल के कारन पानी की बरसा ना भई। पूरे राज में सूका पर गव जीसें स्यारी की फसल में काउ कें एक कनूका ना पजो। राजा राजपाल के पूरे राज में मजूर और गरीब किसान खों भोजन पानी कौ संकट आन परो। जो देख कें राजा ने सब सें पैलाँ गाँव के कुआ गैरे कराबे और दो चार नय कुआ खुदाबे कों काम लगाव जीसें कितउँ पानी की समस्या ने खड़ी हो पाबै और आदमन खों गाँव -गाँव में मजूरी सोइ मिलन लगै। आँगे चलकें जब दूसरी फसल उनारी की बुबाई खों भी पानी नई बरसो तौ राजा बड़ी चिन्ता में पर गय। राजा ने दूर लौ सोच बिचार कैं राज के अन्नकोष सें किसान मजूरन और गरीब आदमन खों अन्न बटआबौ चालू कर दव। जब राजा के राज कौ अन्नकोष खतम हो परो सो राजा ने अरोस-परोस के राजन सें अन्न मोल लै कें (खरीद कें) फिर उधार लै कें अपने राज की जनता खों अन्न दैबौ चालू राखौ। जब हालत इकदम खराब हो परी तौ राजा ने राज के खजाने कौ सोंनो चाँदी बेंच कें दूर देश सें गल्ला मँगाकें गाँव गाँव में भन्डारे चालू करा दय। सब जनता के प्रान बचाबे खों जी के घर जित्ते आदमी और बाल बच्चे हते सब खो गिनती कराकें रोज एक-एक रोटी दैबौ शुरु करा दव।

ई प्रकार सें जब राजा के पूरे राज में हा हा कार कैसी हालत बन गई सो देवता बड़े खुश भय कै अब आदमी खों पतौ परै कै देवतन कौ अनादर करे सें कैसी दुरगत होत है। नायँ धरती पै अकाल सोई अपनी करतूत पै भारी खुश हतो कै ऊ ने देवतन की बात मानकें राजा खों और राजा के राज की पूरी जनता खो हलाकें कें धर दव। अब अकाल अपनी छाती फुलै कें राजपाल के राज में नायँ सें मायँ चल फिरकें जो देखबे खों फिरन लगो कै कउँ कौनउँ गाँव के आदमी मान्स ऐंसे तौ नइँ रै गय जो भूख - प्यास सें दुखी ना भय होंयँ और आराम सें खा पी रयँ होंयँ।

एक दिना फिरत फिरत अकाल एक गाँव में यैसे घर के दुवारें पोंचो जितै दिन भर कौ भूंखो एक आदमी राज के भन्डारे सें मिली एक रोटी के खाबे खों बिहीं (अमरूद) के पत्तन की चटनी पीस रय तो। ओई बखत एक कुत्ता आकें ऊ के साँमू बैठ कें अपनी पूंछ हला हला कैं कैं कूँ - कूँ करन लगो। ऊ कुत्ता भूँख सें तलफ रव तौ, येसौ लग रव तो कै अगर जल्दी सें ऊ खों कछु खैबै खों नइँ मिलो तौ बौ अब्बइँ मर जैहै। कुत्ता की जा हालत देख कैं ऊ दिन भर के भूखे आदमी ने अपने हाँत की एक रोटी ऊ कुत्ता खों प्रेम सें पुचकार कें तुरतइँ खबा दइ।

जो सब हिल्लौ देख कें अकाल बड़े अचरज में पर गव। अकाल ने ऊ आदमी के ऐंगर जाकें पूँछी, काय भइया, तुमने जो का करो? तुम तौ खुदइँ दिन रात के भूँके हौ।

फिर तुमने अपनी रोटी ई कुत्ता खों काय दै दई? भूखौ आदमी बोलो- सो का हो गव। हमाये जाँन कुत्ता के प्रान बचाबें खो रोटी दैबौ जरूरी हतौ - सो दै दई।

अकाल ने पूँछी - 'पै अब तुम का खैहौ।'

मैं का खैंहों - 'कछू नइँ।'

अकाल फिर सें बोलो - बात हमारे समझ में नइँ आई, तुम खुद दिन रात के भौतइँ भूँक हौ, तुमाय प्रान संकट में हैं, फिर अपनी रोटी ई कुत्ता खों दैबै की का जरूरत हती?

भूखौ आदमी बोलो - अरे भइया बौ कुत्ता आय और मैं

# चन्देल राजा धंगदेव

-सन्तोष कुमार पटैरिया

चन्देल राजवंश के संस्थापक नन्नुक थे। सन् 831 ई. में राजवंश का आरम्भ हुआ। नन्नुक के पुत्र वाक्पति, वाक्पति के पुत्र जयशक्ति व विजय शक्ति हुए। विजय शाक्ति के पुत्र राहिल और राहिल के पुत्र हर्ष हुए। हर्ष के पुत्र यशोवर्मन प्रथम हुए। यशोवर्मन के पुत्र धंगदेव ( सन् 950-1000 ई.) हुए। इनकी माता पुष्पा देवी थी। लगभग 50 वर्ष की अवस्था में सन् 950 में इन्होंने शासन सँभाला। ज्ञातव्य है कि सन् से सम्वत 57 वर्ष अधिक होता है। इनका प्रथम शिलालेख सम्वत 1011 का मिल है जिसमें उल्लेख है कि इनके अमात्य (मंत्री) प्रभास थे जो अंगिरा और न्यायदर्शन के प्रवर्तक अक्षपाद गौतम की परम्परा के थे। इनके शासनकाल में समथर के समीप मड़पुरा में कापिलनाथ मंदिर, ओरछा राज्य के अन्तर्गत महेबा ग्राम में कपिलनाथमठ, पन्ना जनपद के ग्राम नादचाँद पुरा में मंतगेश्वर मंदिर,छतरपुर जनपद के अन्तर्गत मनियागढ़ में स्वर्गेश्वर महादेव मठ, व मऊ ग्राम में महादेवमठ चन्देरी के अन्तर्गत टोला में शिवमठ का निर्माण हुआ। इनके अतिरिक्त जसवंतनगर, भेलसी, नारायणपुर, देरी, कोटरा बड़ागाँव धसान में भी मंदिर बनवाए। धंगदेव के समय चन्देलों की राजधानी खज्जूरवाहक (खजुराहो) थी और कालिन्जर उपराजधानी रहा। इन्हें कालाञ्जराधिपति की उपाधि मिलने उल्लेख सम्वत् 1055 के शिलालेख में किया गया है। खजुराहो में विश्वनाथ मंदिर के समीप लगे सम्वत् 1059 के शिलालेख में धंग के पूर्वजों का उल्लेख किया गया है माँ पुष्पादेवी को इन्द्रपत्नी शचि के समान और राजकुमार धंग को इन्द्रपुत्र जयन्त के समान बताया है। इनके आधीन कौशल, क्रथ, सिंहल, कुन्तल आदि देश थे। इसी शिलालेख में इनके द्वारा मरकतेश्वर (मतंगेश्वर) और कन्दारिया मंदिर बनवाने का उल्लेख है। 64 श्लोकों में 41 श्लोक तक पूर्वजों का वर्णन और 42 वें श्लोक से धंगदेव के व्यक्तित्व व कृतित्व का वर्णन है। इनके दरबार में नंदकवि थे जिनके तपस्वी पुत्र बलभद्र थे। पचपनवें श्लोक में इनकी मृत्यु का उल्लेख है। 101 वर्ष की अवस्था में प्रयाग में ध्यान लगाकर संगम में अपने प्राण छोड़े थे। इनके शासनकाल में श्रीराम नामक विद्वान को साहित्य रत्नाकार की उपधि दी गई। यह शिलालेख किसी कारण क्षतिग्रस्त हो गया जिसे सम्वत 1073 में जयवर्म देव ने पुनः उत्कीर्ण कराया। धंग बहुत ही वीर व साहसी थे। महोबा के खण्डित शिलालेख में उल्लेख है कि धंग ने अपने भुजबल से शत्रुओं का उन्मूलन कर उस शौर्यशाली हम्बीर की समता प्राप्त की जो पृथ्वी के लिए आतंक बन गया था। अरबी शब्द का अपभ्रंश हम्बीर शब्द है। ज्ञातव्य है कि सन् 1000 से सन् 1300 ईं. तक मुस्लिम आक्रान्ताओं को अमीर की उपाधि मिलने का उल्लेख मिलता है। धंग के काल में सुबुक्तगीन अमीर था जिसने शाही राजा जयपाल को पूर्वनिश्चित धन देने को कहा था किन्तु जयपाल ने मना कर दिया था। जिसके फलस्वरूप उसने आक्रमण कर दिया तब धंगदेव ने जयपाल के पक्ष में अपने सामन्तों सहित युद्ध किया था। जिसमें पहली बार विजय मिली किन्तु दूसरी बार आर्यावर्त की सीमा पर विजय नहीं मिल सकी।

सुबुक्तगीन की मृत्यु सन् 997 ई. में हुई थी। कालिन्जर दुर्ग को अजेय दुर्ग की संज्ञा धंग के शासनकाल में ही मिली थी। अपने पिता यशोवर्मन प्रथम की रणनीति का अनुगमन करते हुए धंग ने गंगा के दोआब से विजय यात्रा आरम्भ की थी व ग्वालियर से आगे तक का क्षेत्र अपने राज्य में मिलाया। इनके दो ताम्रपत्र भी मिले हैं। ताम्रपत्र में दान या उपाधि का उल्लेख किया जाता था। जनयौटा का ताम्रपत्र व सम्वत् 1056 का ताम्रपत्र भी मिला है। इनके पुत्र गण्ड ने सन् 1002 ई. के बाद राज्य संभाला। ग्यारवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस क्षेत्र में अलबरूनी पर्यटक आया था। वह खजुराहो गया था। उसने इस क्षेत्र को जुझोति लिखा है और उल्लेख किया है कि खज्जूरवाहक में लम्बे बाल रखने वाले योगी अधिक संस्था में थें। धंग के समय का कोई सिक्का प्राप्त नहीं हुआ है। मध्य भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार सोमदेव ने सन् 1063 ई. से 1081 ई. के मध्य कथासरित्सागर की रचना की। नलचंपू के लेखक त्रिविक्रम भट्ट धंग के समकालीन ही थे। धंग स्वयं तो साहित्यकार नही थे किन्तु इनके शासनकाल में विद्वानों का बहुत सम्मान था। माधव, श्रीराम आदि द्वारा रचित श्लोक हिन्दी शिलालेख में लिखे गए। धंग ने शैव, वैष्णव, व जैन मत के मंदिर बनवाए खजुराहो में जिननाथ का मंदिर इन्हीं के काल में बना जिसमें सम्वत् 1011 का शिलालेख है। इन्हौने जलाशय भी बनवाए।


-रत्नम् ज्वेलर्स

सराफा बाजार, महोबा (उ.प्र.)

दूरभाषः-9956959270


---

सत्कर्म की जीत का शेष

आदमी हों। कुत्ता अपनी बात काउ सें नई कै सकत, और ई घोर अकाल में रोटी उये कउँ सें मिल नई सकत। जब कै में अपनी बात दूसरे सें कै सकत हों, और रोटी की जुगाड़ कर सकत हों।

आदमी होबे के नातें मोरे मन में दया होबौ मोरौ पैलौ धरम आय।

आदमी होकें अगर में दया के धरम करम खों ना निबाउतौ, तौ फिर मौ में और ऊ कुत्ता में का फरक रातौ?

ऊ आदमी की बातें सुनकें अकाल उतइँ सें अपने लोक खों लौट कें चलो गव।

जब देवतन नें अकाल सें पूँछी तुम इतनी जल्दी बिना बतायँ धरती सें कैसे लौट कें आ गय? अबै तौ राजा राजपाल के राज में हमारी सेबा-पूजा काउ ने फिर सें शुरूँ नई करी।

अकाल बोलो - जिते आदमी के मन में दया धरम कौ बास होय उतैअकाल जादाँ देर लौ अपनो चमत्कार नइँ दिखा सकत।

में हार मान कैं अपनें लोक खों लौटो हों। जौ लौ धरती के आदमन में दया और परहित की भावना बनी रैहै तौ लौ एक का सौ अकाल आदमी खों झुका नई सकत, मिटा नइँ सकत, हरा नइँ सकत।


-हायर सेकेन्ड्री स्कूल के सामने

बड़ामलहरा

मोबा. 9584219296

# दतिया की लेद गायन परम्परा

-विनोद मिश्र 'सुरमणि'

छोटा बृंदावन के नाम से प्रसिद्व धार्मिक और सांस्कृतिक नगरी दतिया आज विकसित नगरों की तुलना में भले ही छोटे स्वरूप में हो परन्तु धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण की मूल्यता पर सिद्ध पीठ पीताम्बरा मंदिर के कारण देश भर में इस क्षेत्र की पहचान बनी हुई है। वहीं महाराज विजय बहादुर सिंह बुन्देला नरेश (1839-1943 ई.) द्वारा निर्मित अनेक मंदिर की उपस्थिति से वैष्णव सम्प्रदाय का सम्वर्धन हुआ है। दतिया की संगीत परम्परा शास्त्रीय है इसके प्रारब्ध का तो इतिहास नहीं मिलता परन्तु आचार्य कोहल का कार्यकाल दतिया रहा यह चर्चा परमपूज्य स्वामी जी महाराज किया करते थे। आचार्य कोहल ने संगीत के लिये इस ग्रंथ की रचना की[1] कला की दृष्टि से महाराज भवानी सिंह बुन्देला (1857-1907 ई.) का काल संगीत और साहित्य का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। प्रख्यात पखावज वादक मृदंगाचार्य कुदऊँ सिंह महाराज की पखावज की परम्परा को यहीं संरक्षण प्राप्त हुआ। सारंगी और तबला का अनामित घराना यहां की पहचान रहा है। गायन बादन नृत्य के कला साधकों ने राज्याश्रय पाकर अपनी कला को सम्वर्धित किया था। फलस्वरूप आज भी दतिया में संगीत परम्परा का वातावरण बना हुआ है। विष्णु पद समाज गायन राधावल्लभीय सम्प्रदाय से हित परमानंद नागार्च (18 वी सदि) में प्रारंभ की जो श्री हरिमोहन मिश्र के माध्यम से आज तक प्रवाहमान है। यहां की आल्हागायकी के एक मात्र सूत्रधार गंगोले भड़भूजा ने शास्त्रीय स्वरूप देकर वीररस के इस महाकाव्य की रचनाओं को सभी रसों मे वंधित किया जो यहां के नाम से ही जानी गई। चाचर, रमपुरयाई, धुबियाई और अन्य लोक शैलियाँ गायन तथा नृत्य में जानी जाती है। ढोला मारूके प्रसिद्ध कलाकार भगुन्तीलाल पटवा दतिया के ग्रामीण अंचल से अपनी कला को ऊचाईयों तक ले गये यहां कि लेद गायकी को सम्पूर्ण संगीत जगत में बड़े सम्मान के साथ सुना जाता है।

लेद की उत्पत्ति दतिया की ही देन है इस गायकी का चलन लोक गायन में अत्यधिक होने से वर्तमान में लेद को लोक विधा का एक अंग माना जाने लगा है। बुन्देलखण्ड में कही कहीं ड़िढखुरयाऊ (डेढ़ खूँट वाली) भाग कहते है। भरत व्यास के अनुसार यह बुन्देलखण्ड का लोध (लेद) ठुमकागात है।[2] दरअसल इसके मूल में तो शास्त्रीय के गायन पर आधारित इसकी संरचना हुई है।

विलंबित एक ताल अथवा तीन ताल से प्रारंभ होकर कहरवा ताल तक का स्वरूप लेद गायकी का है। धमार की लेद, झूला की लेद जैसे प्रकार स्पष्ट करते है कि दतिया की लेद शास्त्रीय गायन का एक अंग रही है। मूल लेद के जानकारों का अभाव एवं उसकी गायन पद्धति के गायकों का विलुप्त हो जाना लेद के शास्त्रीय स्वरूप का विलुप्त होने की पुष्टि करता है।

प्रख्यात गायिका पद्मश्री असगरी बाई (टीकमगढ़) ने दतिया प्रवास पर दतिया की लेद की प्रस्तुति देते हुये कहा था कि अगर धमार की लेद को संरक्षण मिलता है तो यह शैली ध्रुपद के समान रूप में पहचानी जायेगी। लेद गायकी के अध्येता पं. महेश कुमार मिश्र मधुकर (1941-2010) का मानना था कि दतिया की लेद शास्त्रीय ख्याल गायकी से पृथक है जो विलंबित एकताल मध्य त्रिकाल और अंत में द्रुत कहरवा की स्थिति में आकर समाप्त होती है। लेद के अंतिम चरण का ठेका उसके लोक स्वरूप में अलग से बजाया जाता है। लेद के तीन प्रकार होते हैं। 1. धमार की लेद 2. ख्याल एवं ठुमरी दादरा गायकी की लेद 3. अद्धा की लेद।

**लेद का गायन समय और प्रस्तुति पद**

मूलत: ऋतु प्रधान यह गायकी फाल्गुन माह में अधिकांश सुनने को मिलती है बुन्देलखण्ड के सांस्कृतिक क्षेत्रों समथर, दतिया, झांसी, टीकमगढ़, शिवपुरी, आदि में आज भी लेद गायन का प्रचलन है लेद की शुरुआत शिवरात्रि से होती है। शिवरात्रि पर गायी जाने बाली लेद इसका पुख्ता प्रमाण है-

*हट पर गई गौरा नार, महादेव मड़िया बना दो बाग में,*
*काहे की मड़िया बनें गौरा, काहे के लगे किवार री,*
*सोने की मड़िया बने बामें रूपे के जड़े किवार री,*
*इसके बाद दूसरे प्रकार की लेद प्रस्तुत की जाती है-*
*तिरसूला पे काशी रच डारी, रच डारी भोलानाथ ने,*
*आधी काशी बम्वन बरुआ तप करन खौं सन्यासी,*
*वेद पढ़न खों बम्बन बरुआ, तप करन खों संयासी।*

मृदंग, सारंगी, हरमुनियम, खड़ताल, आदि लोकवाद्यों के साथ रात - रात भर लोग लेद गायन का आनंद लिया करते थे। लेद की पंक्तिया चार या छै चरण में होती है। स्वरों के विस्तार से कितना भी आगे बढ़ाया जा सकता है। फाल्गुन माह लगते ही लेद गाने का वातावरण समूचे क्षेत्र में निर्मित हो जाता है। व्यक्तिगत आयोजन मंदिरों के उत्सवों और अन्य गम्मतों में लेद ही लेद ही सुनाई देने लगती है। दतिया मंदिरों का नगर है यहां कृष्ण और राम भक्ति दोनों उपासना के मानने वाले हैं। जब राम मंदिर में गायक अपनी प्रस्तुति देते हुये लेद का पद गाता है तो भाव इस प्रकार बनता है-

*हँस पूछें राजा राम , पवन सुत गढ़ लंका कैसे बनी*
*काहेर की लंका बनी, वामें काहे कि जड़े हैं किवार*
*सोने की लंका बनी चंदन के जड़े है किवार*
*या*
*जे होरी खेलें राम लला, जे होरी खेलें राम लला,*
*राम लला की अजब कला, जे होरी खेले राम लला ,*
*राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन जे चारऊ भैया मचावें हला*

कृष्ण रसोपासना के मंदिरों में होली अवसर पर लेद गायन जब होता है तब शब्द और भाव बदल जाते हैं। धमार की लेद का पद-

*मांगत दान दही को*
*बो तो रोकत गैल हमारी कन्हैया............*

यह धमार की लेद कहलाती है जिसको विस्तार पूर्वक गाया जाता है। मंदिरों के अलावा अन्य व्यक्तिगत स्तर पर लोग आयोजन कराते हैं तब लेद गायन का रस शब्दों के आधार पर बदल जाता है। गायन वादन शैली यथावत रहती है-

*लागी लागी खजूरा की हाटरे, अलवेली अकेली न जइओ*
*इक गोरी इक साँवली राजा, वे तो दोऊ बजारें जाये रीं*
*बात बात में ठग लागत वे तो सबई लूट लें जायें री*

सामान्य भाव के शब्दों को सुरों के उतार चढ़ाव से प्रस्तुत करने पर लोग घण्टों लेद का आनंद बड़े चाव से लेते हैं। हास्य विनोद की पवित्रता लेद के पदों पर मिलती है–

*जर जइयो रे पन्ना तेरो बजार*
*मौरी ननद हिरागई बटुआ सी,*
*ननदी की ननदी गई सोलह कली को हार रे*

फाल्गुन की फुहारों के बीच जीवन चर्या की लोक अभिव्यक्तियों को सुनकर लोग आनंदित होते हैं। ननद और भौजी के वार्तालाप का बुन्देली चित्रण लेद के इस पद में व्यक्त किया गया है।

*तुम दूरई से लियो पहचान ननद*
*चले आवैं डगर में दो जनें।*

लेद में गाये जाने वाले गीत या पदों का उल्लेख करना इसलिये आवश्यक था क्योंकि वह आम जन के पारिवारिक संस्कारों की अभिव्यक्ति करते है सामाजिक एवं समयानुसार भाव लेद के पद में आये हैं ब्रिटिश शासन के खिलाफ जन चेतना जागरित करने हेतु लेद माध्यम बनी–

*लोहागढ़ कठिन मुकाम फिरंगी*
*झांसी भरोसे न रइयो। (डॉ. लोकेन्द्र सिंह नागर)*

**लेद के सुर और ताल–**

विलंबित एक ताल और धमार की लेद के साथ बजने वाला ठेका शास्त्रीय गायन अनुसार ही रहता है परन्तु इसके तीसरे चरण में लेद का ठेका निश्चित किया हुआ ही बजता जिसके बोल इस प्रकार है–

*धिं नग धतिं नग धा*[3]

इसमें छै मात्रायें होती है जिनका क्रम एक लघु इ फिर दो द्रुत दो लघु दो द्रुत अंत में एक लघु। लोक संगीत लेद सिर्फ उसके ठेके में गायी जाती है। किन्तु अंतरे का उत्तरार्थ कहरवा में गाया जाता है और उपसंहार में लेद का मूल ठेका बजाया जाता है–

**लेद का ठेका**

धिं नक धा तिं नक धा
धिट धाऽ धिट धाक्ड तिंऽ नंग तिट कता तगिन

**प्रकार (1)**

धिं नक धा धीक धिनक
तिं नक ता तीक तिनक

**प्रकार (2)**

धिं नकड धिंना तिं नकड़ धिना

**संगत का ठेका**

धिं धा धा धिं धा
धिं धा धिं धा क्डध गिन
धिं धा धग तिं नक त्रक

**मोहरा**

तिंऽ नात्रक तिना तिऽ नात्रक तिं ना
तिं ध तिं धा ग ध गिन
तिंऽ नग तिटकिट तग दिंऽ

ठेका और उसके प्रकारों का चलन दतिया क्षेत्र के वादकों के वादन से सुन्दरतम और प्रभावी लगता है लोग वादन परम्परागत कलाकार श्री मथुरा वंशकार एक मात्र कलाकार आज वादन कर रहे हैं परन्तु आर्थिक अभाव में शायद दतिया की मृदंग वादन परम्परा नष्ट होने की कगार पर है।

लेद विलंवित स्थिति पर राग यमन खमाज भीम पलासी व देश में गाई जाती है धमार की लेद इन्हीं रागों में प्रस्तुत की जाती है। तृतीय चरण या लोक लेद में राग प्रधानता न रहते हुये भाव प्रधान हो जाती है फिरभी राग यमन की छाया इसमें दिखाई देती है। दतिया में उस्ताद भीकम खां, पं. लालाराम पण्डा, रामप्रसाद पण्डा, जानकी प्रसाद रावत (जनकू पुजारी) नर्मदा प्रसाद तिवारी धमार की लेद के विशेषज्ञ कला सागर थे। बब्बू खां, रामसेवक बिलगईयां, हरप्रसाद अवस्थी, नारायण लाल भट्ट, एवं महेश कुमार मिश्र आदि ने लेद को वास्तविक स्वरूप से गाया और उसे बचाने हेतु प्रयास किया भोपाल के प्रसिद्ध संगीतज्ञ पं. सज्जनलाल ब्रम्हभट्ट इस विद्या के जानकार एवं विद्वान गायक है। वर्तमान में दौलत सिंह बुन्देला एवं सीताराम भट्ट दतिया की गायकी को संभाले हुये है। लोक गायन के प्रकार की प्रस्तुति हेतु रतनलाल कुशवाहा, विनोद पुरोहित, राधेश्याम तिवारी एवं गोविन्ददास कुशवाहा, श्रीमति उर्मिला योगी व अन्य लोग गीत की मण्डली इस परम्परा को दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के माध्यम से प्रचार प्रसार कर रही है। परन्तु शास्त्रीय शैली की लेद अपनी अस्तित्व खो चुकी है।

**संदर्भः–**


1. साप्ताहिक भारती वर्ष 1967 पृ. 29 लेख – लक्ष्मीनारायण
2. दतिया उद्भव और विकास सं. डॉ. के.बी. एल. पाण्डेय पृ. 228 ले. नारायण भट्ट
3. बुन्देलखण्ड की मृदंग वादंग परम्परा ले. महेश कुमार मिश्र वर्ष 2000 प्रका. म. प्र. आदिवासी लोक कला परिषद भोपाल



– संगीत गुरुकुल, मधुकर मार्ग,
पकौरिया महादेव, दतिया म. प्र.
मोबा.– 9425742748


# गजल


–डॉ. लालजी सहाय श्रीवास्तव
'लाल'


न्यारौ पूत परौसी दाखल राबै तौ।
बखत परै ऊ खबर दबर खौं आबै तौ।।
गल्ती तौ सब पै हो जात जगत्तर में।
पै मानुस गल्ती करकै पछताबै तौ।।
कौनउँ नइयाँ धुलो दूद कौ ई जग में।
ईखौ कौउ झूँटी आज बताबै तौ।।
नई कै हैं हम उऐ महेरी खों न्यारौ।
बुरै बखत में आकें संग निभाबै तौ।।
बैरी खों मन करुना मोरी जग जाबै।
उठत भुंसराँ राम-राम ऊ काबै तौ।।
'लाल' झेल नें लग है सूदौ करबै में।
कौनउँ अब तिगुनी कौ नाँच नचाबै तौ।।


–गंगा सदन, न्यू इंदिरा कालोनी, टीकमगढ़
मो.–9424673449

# बुन्देलखण्ड के आश्विन मास के लोकोत्सव

-आचार्य डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त

महाभारत का बुन्देलखण्ड प्राचीनकाल से ही सांस्कृतिक तथा साहित्यक दृष्टि से सम्पन्न रहा है। इस धरती ने जहाँ रामकथा के दो महाकवि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास दिये है, वहीं खजुराहो, ओरछा, चंदेरी, झांसी आदि की पुरातत्वीय बहुमूल्य विरासत भी प्रदान की। यहाँ के लोक उत्सव भी देव देवियों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की अभिव्यक्ति देते हुये जन जन के प्रिय बने हुये हैं। वैसे तो बारहों मास यह वसुन्धरा लोकोत्सवों से सम्पन्न रहती है, तदापि आश्विन मास के लोकोत्सव यथा मामुलिया, सुअटा, टेसू, महालक्ष्मी व्रत, कथोत्सव, जवारे, दुर्गा महोत्सव एवं तत्ससंबंधित गीत मनोहारी तो होते ही हैं साथ ही जन जन में आध्यात्मिक शाक्ति का उन्मेष संबर्धन करने में अपनी सशक्त भूमिका का निर्वहन भी करते हैं।

मामुलिया आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में मनाया जाने वाला बुन्देली संस्कृति का परम शोभन संस्कार है। इस उत्सव के केन्द्र में लोकप्रसिद्ध मामुलिया नाम की सामान्य परिवार की किशोरी की कथा है, जिस पर तत् संबंधित राज्य का राजकुमार मोह गया था। मामुलिया की सहेलियों ने मामुलिया को विविध सौन्दर्योपादानों से सजाकर उसको चाहने वाले राजकुमार तक पहुँचाया था। तभी से इस जनश्रुति या जनकथा ने भव्य लोकोत्सव का रूप ग्रहण किया, जो आश्विन कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों तक खुशी खुशी मनाया जाता है। मामुलिया के संबंध में सर्वाधिक प्रचलित लोकगीत ''मामुलिया के आये लिबउआ'' इस उत्सव में बडे मन से गाया जाता है। यह उत्सव महिलाओं, बच्चियों और किशोरियों द्वारा ही मनाया जाता है। इस लोकोत्सव के अनेक गीत धरा को गुञ्जायमान करते हुये लोक मे आनन्दोत्साह सम्बर्धन करते हैं। मामुलिया से संबंधित गीत बड़े कोमल और मर्मस्पर्शी होते हैं एवं सामंजस्य सहभागिता के उत्प्रेरक भी। यथा-

*मोरों भइया रखावै खेत,*
*भौजाई खेले मामुलिया।*

मामुलिया से संबंधित गीतों में प्रकृति की छबीली छटा का प्रदर्शन प्रसन्नता प्रदान का परम आधार बनता है। प्राकृतिक उपकरणों से सुसज्जित इसके सम्बद्ध गीतों की मधुर बुन्देली बोली यहाँ दृष्टव्य है। यथा-

*लइयौ-लइयौ रतनगढ़ फूल सजइयो मोरी मामुलिया।*
*लइयौ-लइयौ हजारी के फूल सजइयौ मोरी मामुलिया।*
*लइयौ चंपा चमेली के फूल सजइयौ मोरी मामुलिया।*
*लइयौ घिया तुरइया के फूल सजइयौ मोरी मामुलिया।*

मामुलिया के मसृण गीतों का माधुर्य मानव मात्र के मन को स्पर्श कर एवं उसमें आह्लाद उत्पन्न कर भारतीय संस्कृति के सच्चिदानन्द वैशिष्टय की पुष्टि को प्रमाणित करता है। इस लोक प्रचलित मामुलिया उत्सव से संबंधित सहस्त्रों लोकगीत प्रचलित है, जिन्हें सहेजने की तथा लोकहित में सजोने की आज परम आवश्यकता है।

बुन्देलखण्ड का आश्विन मास का दूसरा लोकोत्सव 'सुवटा' सें संबंधित है। आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से संपूर्ण नवरात्रि पर्यन्त प्रातः काल बलिकायें 'सुवटा' उत्सव गीत गाते हुये मनाती है। 'सुवटा' को लोक में एक राक्षस या दैत्य माना गया है। जिसके प्रतिकार के लिये कन्याओं को गौरी पूजन की प्रेरणा दी गई है। बलिकायें तदनुसार नौ दिन गौरी पूजन करती है। लेकिन 'सुवटा' की दैत्य रूप की अवधारणा उचित प्रतीत नहीं होती। क्योंकि इस उत्सव से संबंधित लोकगीत 'सुवटा' का दैत्येतर अर्थ प्रकट करता है। यथा-

''नाँय हिमाँचलकी कुँवरि लड़ायती नारे सुवटा, गोराओ बेटी नेरा तोरा नाय।''

अर्थात् हे नरश्रेष्ठ सुवटु। हमारे राजा हिमालय की लाड़ली पुत्री गौरी ने आपकी प्राप्ति के लिये (पिता आदि संबंधियो से) नाता (नेह) तोड़ दिया है।

इससे स्पष्ट होता है कि सुवटा का अर्थ ब्रह्मचारी या शिव है। राक्षस या दैत्य नहीं। शिवजी ने पार्वती की परीक्षा के लिये सुवट या ब्रह्मचारी का वेष धारण किया था। इससे स्पष्ट है कि सुवटा महोत्सव शिव पूजन ही है। इस सुवटा महोत्सव से संबंधित अनेक गीत लोक में प्रचलित है जो भारतीय संस्कृति की धरोहर तो है ही भारतीय संस्कृति के प्रमुख तत्व अध्यात्म को भी प्रकट करते है।

सुवटा महोत्सव नारी वर्ग के सौभाग्य को सँजोने का अवसर है। प्रस्तुत गीत के बोल इसी भाव को अभिव्यक्त करते है कि-

*''गौर माँगे इंदिया, मै चढ़ाउँ बिंदिया।*
*गौर माँगे अल्लरी, मै चढ़ाउँ लल्लरी।*
*गौर माँगे अंकना, मै चढ़ाउँ कंगना।*
*गौर माँगे उरिया, मै चढ़ाउँ चुरिया।''*

इस प्रकार सुवटा से संबंधित लोकगीत मंगलायतन है। यह उत्सव नारी-सम्वर्ग में उनके जीवन की सुख शान्ति, निर्विघ्नता और समृद्धि-सम्पन्नता का प्रतीक है।

बुन्देलखण्ड में आश्विन मास में दशहरे से प्रारम्भ होकर शरद पूर्णिमा तक ''टेसू'' उत्सव की भी मार्मिक एवं मनोरंजन पूर्ण आयोजना सम्पन्न होती है। शरदपूर्णिमा के दिन ''टेसू'' के परिणय का विधान है। ''टेसू'' की कथा महाभारत काल से सम्बद्ध है। पाण्डवों की सेना का नेतृत्व करने की इच्छा वाले अमोघ शक्ति प्राप्त घटोत्कच के पुत्र बर्बरीक का श्रीकृष्ण ने शिरच्छेद कर दिया था। फिर भी बर्बरीक के शिर में जीवन था चेतना थी। अतः उसने इच्छा व्यक्त की कि महाभारत युद्ध दर्शन के पश्चात ही मेरा प्राणान्त हो। श्री कृष्ण ने उसकी इच्छापूर्ति के लिये उसके सिर को तीन बाणों से बांधकर एक ऊँचे टीले पर रख दिया। वहाँ से उसने महाभारत का युद्ध देखा। युद्ध समाप्ति पर अपने प्राणान्त के समय बर्बरीक अपने विवाह की इच्छा लिये शिर का रूप सँजोकर बालकों द्वारा गीत गायन से बर्बरीक का विवाह सम्पन्न कराया जाता है। इस उत्सव का टेसू नामकरण इसलिये हुआ कि बरबरीक के शिरच्छेदन पर उसके रक्त से टेसू अर्थात् पलाश के फूलों का प्रस्फुटन हुआ। विवाह में बर्बरीक

स्मृति के लिये ही पलाश या छेवले के मण्डप के निर्माण का विधान है। टेसू उत्सव में भी बड़े मधुर मनोरम गीत गाये जाते है। यथा-

"टेसू राजा यही खड़े।
खाने को माँगे दही बड़े।" आदि आदि।

बुन्देलखण्ड में आश्विन कृष्ण पक्ष में महालक्ष्मी व्रतान्तर्गत अनेक कथाओं की श्रृंखला लक्ष्मी के प्रति निष्ठा और विश्वास के साथ नेक मार्गानुसरण के लिये उत्प्रेरणा प्रदान करती है। ये कथायें लक्ष्मी जी के सदगुणों के बखान से सबके अन्तःकरण में सदगुण सम्पदा का वर्धन कर उन्हें सद्गुण सम्पन्न बनाने की प्रेरक बनती है।

बुन्देल खण्ड के दो महापर्व "जवारे" और "दुर्गा महोत्सव" आश्विन मास में सम्पन्न होने वाले महोत्सव है। सृष्टि के प्रारम्भ में जवा (धान्य विशेष) ही प्रथम खाद्य के रूप में प्रत्यक्ष हुआ था। सृष्टि का प्रथम खाद्धा अन्न होने से 'जवा' का विशेष महत्व है। यज्ञों में भी (आहुतिपंच में) जौ तिल चावल आदि में जौ का ही प्राधान्य मान्य है। जौ या जवा व्यक्ति की कामनाओं की सिद्धि का प्रतीक भी है। आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी या नवमी को जवा धान्य की अंकुरित बालियाँ या पौध को सगुन रूप मानकर उन्हें अपनी समृद्धि की कामना से जलाशयों में विसर्जन की प्रथा सहस्रों वर्षों से बुन्देलखण्ड में रही है। यह जवा यात्रा भक्तिगीतों तथा बाद्यों के मधुर गुंजन से सराबोर एवं मधुरिम होती है।

आश्विन मास में शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तक का बुन्देलखण्ड का दुर्गा महोत्सव तो लोक प्रसिद्ध है। माँ दुर्गा के जागरण के सहस्रों प्रकार के गीत मानों मानव समाज के जागरण का ही माध्यम बनते है। माँ के अनेक मूर्ति विग्रह एवं गीतों के माध्यम से उनके शब्द विग्रह जन जन के मन को लुभाते हैं। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड नव दुर्गा महोत्सव से परम प्रकाशित हो जाता है जो देखने योग्य ही बनता है।

निष्कर्षतः भारतीय संस्कृति और अध्यात्मविद्या के योग क्षेम कारक बुन्देलखण्ड में सम्पन्न होने वाले आश्विन मास के ये सभी महोत्सव हमारी भारतीयता का सुन्दर बाना बनकर सभी जातियों वर्गों सम्प्रदायों तथा सम्पूर्ण मानव समाज को एक सूत्र में पिरोने की मणिमाल है। इन्हें सँजोकर रखना हमारा परम कर्तव्य है।

-श्रीमति लक्ष्मी गुप्ता -भवन
उद्योगविभाग के पास, सिविल लाइन्स
दतिया (म. प्र.) 475661

## दो कवितायें

-पं. डी. पी. शुक्ला 'सरस'

(1)

खनिज खोदवौ बंद जौ कर दौ।
न खोदौ धरती की मॉटी कों।।
खोद कें औड़ों जो कर दव,
मिटा-मिटा के सबरी घाटी कों।।
बसत हती जीमें चिरा चिनगुनी,
ठंडक बेई देत हते हमरी छाती कों।। खनिज ....
बोर कर करकें धरती की खोद दई जा छाती,
गैरे तक पानी नईहै मिलरव, बनके ई मानव को घाती।
गटर के पानी से जे सबरे बोर हो गए खारे,,
रोगन से तड़पत रई देहिया छोड़ ई संपातीकों।। खनिज...
अब कौनऊँ और नहीं रहौ है चारौ,
अनुभूति कर इयै है तुमई सम्हारौ।।
नॉतर बिद जैहै सो फिर नई जाय उबारौ।।
आफत में लेंके परे रव चाय खाटी की पाटी कों।। खनिज....
बिरछा खेतन मेंढ़न पै लगवा लो घर के द्वारे,
हवा चलै ठंडी ठंडी मेघन की परैं फुहारें।।
खूब किसानी हुईहै घर-घर बन जैही घर की रानी,
धरके मूँढ़ पै छवला जैहौ हारन लै साथी कों।। खनिज...
पेड़े काटे धरती खोदे सें घूरन कौ बढ़ गव है राज,
श्वॉस फूल रई मानव रोगंन कौ भुगत रव है आज।।
इयै बचालो सरस तुमई अब, नॉतर बिगरै घरघर की है घानी,
बिन पानी सबरौ है नशा गव, और नशा गई सबरी है किसानी।।
'सरस' भूँखन मरन लगे जब फिर जौ जीवन काहेकौ।
खनिज खोदवौ बंद जौ कर दौ .....

(2)

दद्दा मताई ने खूबई कर लई, तुम्हैं पालवे के लानैं।।
गीलौ परे में करो बिछौना, सूखे में उठा के पारो।
गीले मे परी रई मताई, पेटन में लातन सें तुमनें है मारो।।
अब सेवा करवे को तुम काय रहे चिमानें ।। दद्दा....
टूँका-टूँका जोर उड़ा दव, ठंडन में परी रई बिन ओड़े।।
तुमे उड़ा के ढाँकत रई, मूँढ़ से लेके तक गोड़े।।
दिखाउत फिरी गाँवन गाँवन दै-दै सबै उरानें।। दद्दा...
चँगेर में है तुमें पारके, हॉकत रई रॉट है खूबई।
खड़वा फोरन चली गई, देखत रई, जाके दूरँई ।।
रोउत सुनी दौर कें आ गई छाती लगी लगानें।। दद्दा...
अबई तुमाई जा आ गई बारी, सो लरत काय तुम उर तुमाई घरवारी
रोटी खावे को काय नई दै रय, चढ़ी होय चाय तिजारी।।
तुम्हें दिखावे रातन रात फिरत रई,
अब तुम काय करत धिगानें।। दद्दा...
रोजउँ लरत बातन-बातन में, तोय लयें रात ते हाँतन में।।
पड़ाव लिखाव उर करदव ठाड़ौ,
ब्याव करा दव काढ़ मूँस के लगा छातन में।।
पेट काट कें काटत रई बेई जमानें।। दद्दा....
आज मिलन लगो खावे को, सो हमें काय लगो है तरसानें।।
बुढ़ापे के लानै 'सरस' नें तुमई को है जानाँ।।
मरगटा तक के लानें ना करौ बहानें,
जैसी हमरे संग तुम करिहौ इन लरकन को है देखत रानै।। दद्दा...

-गणपति भवन, मामौन दरवाजा,
टीकमगढ़ (म.प्र.) मो. 9617572350

# बुन्देलखण्ड के इतिहास में कोंच का क्षेत्र

-डॉ. हरिमोहन गुप्त

उरई के माहिल चन्देलों के प्रति मन ही मन विद्रोही रहे उसका कारण था कि न चाहते हुये भी अपनी बहिन का विवाह महोबा के राजा परमाल देव चन्देल के साथ करना पड़ा था। इस अपमान को महिला कभी नहीं भूले और चन्देलों की सत्ता नष्ट करने के लिये कई युद्धों की पृष्ठ भूमि तैयार की उनमें से कुछ कोंच के क्षेत्र में लड़े गये।

अजमेर एवं दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान और परमाल की आपस में शत्रुता थी। माहिल की कूटनीति से सन् 1182-83 में दोनों के मध्य युद्ध हुआ,[1] जो कोंच के पास अकोंड़ी बैरागढ़ में हुआ[2] इस युद्ध में चंदेलों की पराजय हुई और कोंच का क्षेत्र पृथ्वीराज के आधीन हो गया। यद्यपि पृथ्वीराज की सेना को भारी नुकसान हुआ, उसका सेनापति चौड़िया को कोंच में 6 माह से अधिक रुकना पड़ा था उस काल के अवशेष अभी भी कोंच में है मुख्य मार्ग पर चन्दकुआ पृथ्वीराज के कवि और सहयोगी चन्द बरदाई ने उसी काल में बनवाया था। इसी मार्ग पर आगे चोड़िया ताल और बारहदरी पर पृथ्वीराज चौहान के सेनापति चोड़िया ने बनवाया था। आज भी बारहदरी को पुरातत्व विभाग का आलेख अंकित है।

यद्यपि सन 1202-3 में कुतबुद्दीन एबक ने इस क्षेत्र को अपने अधिकार में लेकर मुसलमानों की सत्ता स्थापित की थी[3] लेकिन सत्ता कमजोर होने के कारण यहाँ के हिन्दू राजा अपने को स्वतंत्र मानते रहे।[4] लगभग उसी समय कोंच क्षेत्र के मऊ मिहोनी नामक स्थान पर बुन्देलों का आगमन हुआ।[5] उन्हीं के नाम पर यह क्षेत्र बुन्देलखण्ड कहलाया। जहाँगीर के समय कोंच की जागीर वीरसिंह बुन्देला को मिली थी क्योंकि जहाँगीर के कहने पर वीर सिंह ने अबुलफजल की हत्या कर दी थी। शाहजहाँ के समय कोंच जुझार सिंह के पास रहा परन्तु विद्रोह के कारण उसे जागीर से हाथ धोना पड़ा था।[6] पर कन्धार को घेरने में चम्पतराय बुन्देला ने दाराशिकोह की मदद की थी अतः दाराशिकोह के कहने से शाहजहाँ ने कोंच की जागीर चम्पतराय को दे दी थी।[7]

चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल ने तो कोंच के साथ बड़े क्षेत्रपर अपना अधिकार कर लिया था। उन्हीं छत्रसाल के समय मराठों का आगमन हुआ इलाहाबाद के सूबेदार ने सन 1728-29 में छत्रसाल पर आक्रमण कर दिया जिसमे छत्रसाल नें मराठा पेशवा बाजीराव प्रथम से सहायता मांगी बाजीराव ने कठिन समय में छत्रसाल की सहायता की थी अतः छत्रशाल ने बाजीराव को अपना तीसरा पुत्र मानकर राज्य का 1/3 भाग बाजीराव को दे दिया।[8]

छत्रसाल से जो क्षेत्र मराठों को मिला उसमें कोंच का क्षेत्र शामिल था।[9] बाजीराव के प्रतिनिधि बन कर आये गोविन्दपन्त बल्लाल खेर ने सत्ता सँभाली और अमलदारी लेना प्रारम्भ की, पर स्थानीय लोग मराठ़ों को बाहरी मान कर विरोध करते रहे पर मराठा मजबूती से यहाँ जम गये।

वर्ष 1767 में कोंच पहाडगाँव और विलाय पर भरतपुर के जाटों ने आक्रमण करके विजय प्राप्त कर ली और यह क्षेत्र माधव सिंह गूजर को दे दिया गया पर जाटों का यह आक्रमण भी बाहर का माना गया अतः विरोध हुआ तब मराठों ने पुनः इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

सन् 1776 में कोंच का यह क्षेत्र इन्दौर के होलकर के अधीन हो गया। इन्दौर के तुकोराव जी होल्कर पेशवा के प्रमुख सेनापति थे जो उत्तर भारत में मराठों की शक्ति बढ़ाने में लगे थे, सेना में रख रखाव के खर्च के लिये धन की आवश्यकता थी अतः पेशवा माधवराव ने वर्ष 1776 में कोंच का क्षेत्र जहाँ से 275, 326 रूपया प्राप्त होता था उसे तुकोराव को दे दिया[10] और उसे आलमपुर परगने में शामिल कर लिया इस प्रकार कोंच के 12 ग्रामों में होल्कर का शासन प्रारम्भ हुआ।

18 वीं शताब्दी से ही ईस्ट इंडिया कंपनी इस क्षेत्र में अपने पैर जमाने की कोशिश में रही, यह क्षेत्र कपास और नील की खेती के लिये प्रसिद्ध था। लाल रंग के प्रयोग में पौधा एल यहाँ बहुतायत से होता था, यहाँ का कपास सफेद और टेक्कर बहुत मुलायम था।[11] होल्कर राज्य के प्रमुख अमीटा बिलाय के गढ़ी बंद ठाकुरों को हराये बिना यह कार्य कठिन था अतः 22 मई 1804 को अमीटा बिलाय पर अधिकार करने के लिये कर्नल फाउसेट ने भारी दल बल के साथ चढ़ाई कर दी। पर बरजोर सिंह के पिता जी कीरत सिंह उर्फ रुकमानंद और उनके साथियों ने मीर खाँ पिण्डारी की सहायता से अंग्रेजों के उस आक्रमण को विफल कर दिया[12] इस युद्ध में बहुत से अंग्रेज मारे गये जिसमें केप्टन फीड, लेप्टीनेन्ट मोरिस, गलेप्सी, सर्जन हूपर प्रमुख थे। बाद में जब अंग्रेजों का अधिकार हो गया तब कोंच के कब्रिस्तान में उनकी याद में पत्थर लगाया गया जिसमें लिखा है-

(Secred in the Memory of Capt Faed, lt Moris Artiliry Lt Gallapsy 1st Batalian, 18th Rigimints Assis Surgion Hooper and Other Men Who Felt in action with Meerkhan Pindari near Konch 22 May 1804)

इनकी कब्रे कोंच में अभी भी बनी हुई है।

3 जुलाई 1858 को बरजोर सिंह और दौलत सिंह ने कांच को चारों ओर से घेर लिया भयानक युद्ध हुआ और इस क्षेत्र पर बरजोर सिंह का कब्जा हो गया इससे बरजोर सिंह को बहुत लाभ हुआ पूरे क्षेत्र में टेक्स की उगाही होने लगी उसी के साथ माधोगढ़, रामपुरा और जालौन से भी टैक्स वसूली बरजोर सिंह के पास आ गई।

जालौन के डिप्टी कमिश्नर ने बरजोर सिंह की सारी सम्पत्ति, जमींदारी को जब्त करने का आदेश उच्च अधिकारियों से प्राप्त कर लिया 17 जनवरी 1859 को उस उस प्रोपर्टी को गुरसराय के राजा के पुत्रों ने खरीद ली क्योंकि और कोई इस प्रोपर्टी को लेने नहीं मिला गुरसराय के राजा पहिले से ही बरजोर सिंह के विरुद्ध थे और अंग्रेजों के भक्त थे। केप्टन लॉइन ने गुप्तचरों से सूचना इकट्ठी की ओर बरजोर सिंह के परिवार के गुप्त ठिकानों पर धावा बोल कर उन्हें बन्दी बना लिया पर बरजोर सिंह पकड़ में न आ सका और 21 जून 1859 में टोरिया गांव में लू लग जाने से बरजोर सिंह की मृत्यु हो गई और ठाकुरों ने वहीं उनका दाह संस्कार किया।

अब इस क्षेत्र पर अंग्रेजों का शासन था। वे मन ही मन बहुत डरे हुये थे कि न जाने कब इस क्षेत्र पर फिर आक्रमण हो जाये इसी रणनीति को ध्यान में रख कर पेशवा बाजीराव द्वितीय से सन्धि कर ली यद्यपि इस सन्धि से इन्दौर के राजा जसवंत राव होल्कर बहुत नाराज हुये और अंग्रेजों के विरुद्ध आक्रमण कर दिया पर सिंधिया और भोसले अंग्रेजों के साथ हो गये और होल्कर को हार

स्वीकार करना पड़ी। पंजाब में व्यास नदी के किनारे 24 दिसम्बर 1805 को दोनों पक्षों ने सन्धि पर हस्ताक्षर किये जिसके द्वारा कोंच क्षेत्र के 93 गाँव अंग्रेजों को देना पड़े।[13]

अंग्रेजों ने नरमी दिखाते हुये कोंच क्षेत्र की आमदनी में खर्च काटकर जसवन्त राव होल्कर की पुत्री भीमा बाई को देने का फैसला लिया ताकि समय से जनता से टेक्स की वसूली हो सके। कोंच क्षेत्र कपास नील एल पौधे के कारण प्रसिद्ध था इसका लाभ मान चेस्टर को मिल सके। सन 1806 में जहाँ केवल एक लूम था वही सन् 1835 में 8500 लूम लग गये और 15000 लूम स्काटलेण्ड में लग गये। भारत से रुई जाती थी और उसका कपड़ा बनकर यही बिकने के लिये आता था।

कोंच का प्रशासन कंपनी ने अपने हाथ में लिया और उसे बुन्देलखण्ड जिले में शामिल कर लिया जिसका मुख्यालय बाँदा में था। उस प्रकार कोंच में अंग्रेजी शासन प्रारम्भ हो गया।

**संदर्भ-**


1. पी जी व्हाइट, फाइनल रिपोर्ट ऑफ परगना कालपी, पृ.41,
2. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, चंदेल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, पृ. 16
3. सेनलीपूल मेडिकल इंडिया अण्डर मोहम्डन रूल, पृ. 51
4. पी. जी. व्हाइट, पृ. सं. 43
5. बुन्देलखण्ड केसरी छत्रसाल, पृ. 8
6. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इंडिया, भाग 14 पृ. 43
7. डब्लू. आर.पोगसन हिस्ट्री आफ बुन्देलाज पृ. 27
8. बी. जे. दिघे, पेशवा बाजीराव प्रथम खण्ड मराठा एक्सपेक्शन, पृ. 103
9. आर. के. लघाटे एवं आर. बी. हीरालाल, मध्यप्रदेश का इतिहास, पृ. 103
10. बी. आर. अंधारे, बुन्देल खण्ड अण्डर मराठाज, पार्ट 2 पृ. 12
11. ब्रोकमेन-जालौन गजेटियर, पृ. 22, 23
12. डी. एल. ड्रके ब्रोकमेन, जालौन गजेटियर, पृ. 131-32
13. बलवन्त सिंह जालौन गजेटियर 1989 पृ. 41



-अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्बर्धन संस्थान,
कोंच (जालौन) उ. प्र


## धरती बुन्देली को बंदन


-डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार
'अभय'


धरती है बुन्देली न्यारी, हम खाँ जी सैं प्यारी।
ई पै भय केशव पद्माकर, भूषण और बिहारी।।
तुलसी ने, रामायन रचकैं, बानी इतइं निखारी।
अभय प्रान ऐसी धरती पै, अपने है, बलिहारी।।

धरती बुंदेली ली जा मानी, आगी जाको पानी।
भए जई पै छत्रसाल जू, मधुकर शाह, भवानी।।
जनम लओ जइ पै गामा नें, कर लइ अमर कहानी।
एक एक सें बढ़कें हो गय, ई पै ज्ञानी ध्यानी।।

अनुपम जा बुन्देली धरनी, पाप ताप की हरनी।
जा पै अनगिन बाग बगीचा, अनगिन झरना झरनी।।
कल कल करत इतै पै बैरइ, बेतवती बैरनी।
जय हो तेरी अभय लाड़ली, मोद भाव मन भरनी।।

धरती बुन्देली की सानी, अबलौ नोइं दिखानी।
मेंड़न मेंड़न इतै देवता, गावन सिंह भवानी।।
बहे बेतवा जौं गंगा सी अमरित जाकौ पानी।
अभय, बुन्देली बोली ई की, है जग जानी मानी।।

धरती बुन्देली को बंदन, माँटी ई की चंदन।
कूड़ा देव ओरछा ई के, तीरथ पाप निकंदन।।
चित्रकूट चित को दुख मैटे, सिउढ़ा काटै बंधन।
'अभय' हमें ई की महिमा खों धरने गाकें छँदन।।


-स्वामी विवेकानंद इण्टर कालेज
ईगुई बँगरा, जालौन उ. प्र.
पिन कोड- 285121
मो- 789704952


## बुंदेली गीत


-अश्विनी चतुर्वेदी


चिहूँ - चिहूँ रहचकुआ बोले, झूले चईंया-मईंयाँ।
कक्का अम्मा टेर लगावें, फिकर इने है नईंयाँ।
गभवारी कोरी पाटी की, जिनने पढ़ लई पोथी।
उनके लाने जगत शास्त्र की ज्ञानी बातें थोथी।
ककर धूरन दौड़ लगा रये, कमल पाँखुरी पईया
चिहूँ - चिहूँ रैहचकुआ बोले........

दुनियादारी बड़मानस खों होवे बुहतक भारी।
करहा डोरा मांथ डिढ़ौना सबसे है बलहारी।
लेवे नजर उतार लला की मईया पाँछे भागे।
लीला दरस दरस की बाँकी भाग सबई के जागे।
बब्बा-बऊ नाती खों टॉगे अपनी-अपनी कईंयाँ।
चिहूँ - चिहूँ रैहचकुआ बोले.....................

इनमें बस रये सिया है उनमे कान्हा राधा।
इनकी एक मधुर मुस्किन में दूर सबई हों बाधा।
जिनने दरस बालपन कर लये, उनकी जै जै राम।
चऊदा भुवन, तीन लोक है, इनमें चारउ धाम।
मन की पीर, ताप देह को हर लेवे किलकईंयाँ।
चिहूँ - चिहूँ रैहचकुआ बोले....................

धन्य सूर हैं बिन आँखन जिन, प्रभुपद ठुमकत देखे।
मगन भई ममता बस 'पद' सहज भावना लेखे।
जेई अब सूरज बनके चमकें, जेई चन्दा उजियारे।
जग को प्रेम बसा आँखन में बन गये राज दुलारे।
निठुर कौन है संग चले न, थामे इनकी बईंयाँ।
चिहूँ - चिहूँ रहचकुआ बोलें झूले चईंया मईंयाँ।


-टिकुरिया मोहल्ला, पन्ना
मोबा. 9300198042

# अमरीका बारी

-डॉ. दया दीक्षित

"काए बिन्नू कैसी निब रई ऊ अमरीका बारी के संगै?" हमाए नंदेऊ महाराज तौ छिन भर विलग न होत हुइयें बा सें।" कुड़ई बारी ने सासरे सें आई अपनी लौरी नंदबाई और लड़कपन की गुइयां बेटीराजा के पाँव परत परत पूँछई तौ लई! इतेक सबर उनमें न हतो कै गैल गली चलकें आईं थकी मांदी नंदबाई तनक सुस्ता लेता कै चायपानी कर लेतीं राजी खुशी की खैर खबर लेती देतीं सो आँहाँ। राम कौ लेओ नाँव अक्क न धक्क, एकी एका ऐसें पूछ बैठीं जैसें बिल्कुल तैयार आ बैठीतीं, कै कबै, बिन्नू ऑय औ कबै उनसें अमरीका बारी के हाल चाल मिल जाबें। जब से कुड़ईबारी ने जा खबर सुनीती, तबई सें जी अखल बखल और हो रओतो! अफसोस भी कम नईं कै इतै की बिथा नंदबाई के इतै ठबेर दई सबनें। जा न सोची, कै लौरी बिन्नू पै कैसी बीदहै! इतै तौ भौत जनें हते साज समार के लाने औ उतै बिन्नू के नगीचे तौ चिरैया लौ नइयां.... कै बिन्नू और कै बिन्नू के भतार पाऔने महराज! न सास न ससुर न दओर जेठ......! कैसी सूक सीं गईं मइना भर में! चुखरिया जैसौ मों निकरयाओ! साँसऊँ तौ बड़ी अनीत भई इनकी संगै! ओ तोरी अमरीका बारी की! जाँखों जात उतई अपने ढंग बगरा देत इतै रई सो इतै जान खाई सबकी और अब उतै नंद कौ खून पी रई पनमेसुरी!

"भौत पिरैम है का अमरीका बारी सें?" लौरी बिन्नू बेटीराजा नें कुड़ईबारी की कुदांई मों करकें कई और हँस परी!

"आँहाँ बिन्नू! हमें काए खों प्रैम है बा नासगई, लूहरलगी सें। जब सें इतै सें पबरी, तबसें बखरी की आवाज द्वारे तक न सुनी कोऊनें। हमें इतै रातन न जान पाओ कोऊ, नईंतर जा घर के जनी मान्सन की किलकिल दांती सें पूरे पुरा के पाले में एसौ कोऊ घर न हतो जौन बीच बिचौआ कराकें परेसान न होगओ होय। इ सब किलकिल की जर जा अमरीका बारी आ हती।

बेटीराजा, - जा बात तौ है! तुम सई कै रईं मन्नू! इस फिरंगन में लड़ाई लगवाने का गजब का हुनर है! हम तौ बरकाएं आ रत, नईंतर रोज कटाजुज्झ होबे में कौनऊ कसर नई रै गई! जइसें तौ हम आज एकीएका चले आए! अच्छौ बदला दओ दद्दा ने। अपनी बियाद खों हमें ढबेर दओ, जौ न सोची कै मौड़ी कितेक आफ्त में पर जैहै! परै तौ परत राय, उनकी बलाय सें, उनकौ जी साजौ बनो राय बस! हैं कां दद्दा ?घरैं नईयां का? दिखा नईं पर रए? औ माताराम कां खों कड़ गईं! न कुसमाबारी भाभी दिखानी?

कुड़ईबारी- बिन्नू अबै तौ हमई अकेले हैं, सो निछक्के में सोची कै पूँछ लइये तुमसें, नईंतर सब जनन के सामने तौ हाँत भर घूँगट काड़े काड़ें प्रान निकरनलगत, ऊपर से दुनियां भर के कामदन्द उसार पात! अम्मा दद्दा टैक्टर सें गए हैं भांडेर! कुसमा बारी जिज्जी खों अस्पताल में दिखाबे के लानें। आज कैऊ दिना हो गए उनें ठंड दैकें जूड़ीताप चढ़ जातई नितरोज। अब तौ हम खुदई मैमान हो गए जा घर के।

बेटीराजा- हओ, एनतौ! पता चल गईती हमें कै तुम ड्यूटी बारी हो गईं, रावतपुरा में नौकरी लग गई तुमाई! हमें तौ भौतई नोंनी लगी तुमाई ड्यूटी मन्नू!

कुड़ई बारी जिनकौ नांव मानकुंवर हतो, जिनें सबरे मन्नू मन्नू कतते, बे बोलीं- एकई बुराई है कै छुट्टी नई मिलत! काल टिरौआ आओ तो हमाए नगीचें दद्दा ने किना भेजीती कै बराई पिर रई है, ऐसे में खेत खरयान में कोऊ तौ भओ चाइये घर कौ! हमाई तैयारी बन गई है भांडेर की, सो खबर सुनतईं कड़याऔ उतै सें। सो हल्की बिन्नू, कैसऊँ रो गा कें छुट्टी मिल पाई आज औ कल्ल की।

तेईसों बिन्नू तुमाऔ आबो हमें भौत पुसानो नियामत सी मिल गई हमें तौ।

बेटी राजा- जई सें तौ जेठी भाबी जरती भुंजती हैं। हममें एसौ का लगो तुमें, जौन इतनों हिया हिलोर है हमसें। अच्छी सें अच्छी दोस्तीं, मेल मिलाप टोर देतईं नंद भौजाई कौ नातौ।

कुड़ईबारी- जा तौ मेल मिले की सौदा है लौरी बिन्नू! तुम हमें नंद कम गुइयां जादां लगतीं हौ, पैलां भी और आज भी, सोईमें हमाऔ का कसूर?..... तुमई बता हेरौ तनक!

कुड़ईबारी अबै और कछू कार्ती कै दोरे की कुंडी खरक परी! संगै संगै बिल्गैयां जू की रुआबदार आवाज सोई सुना परीं- गोविंद....., ओ गोविंद..... खोलो किबारे बेटा!

गोविन्द की मालकिन कुड़ईबारी ने ऐंन बड़ौ घूंगट काड़ो और तुरत किबारें खोलबे के लानें उठ परी! किबारे खोल दए। भीतर आउतई आउत बेटीराजा दिखा परीं बिल्गैंया जू खें "ओऽऽ बिन्नू बाई, तुम कबै आईं। बिल्गैयां जू ने बेटीराजा सें पूंछी, और गोड़े परबे खों हाँत बढ़ाए। उनके ठीक बाद, जेठी भाबी और अम्मा ने भी बेटीराजा के पाँव परे!

राजी खुसी कौ बतकाव हौन लगो! कुसमां बारी अपनी कुठरिया कोद चली गईं। जूड़ी ताप तौ न हतो, ठीक हो गओतो, मगर कुल्ल दिनन की बीमारी सें बिल्कुल तथा न रै गईती तनकई में थकान हो परत ती, सो बिन्नू के पाँव परकें, उनै सूदी कुठरिया की खटिया दिखा परी! घरी घंटा सुस्ताने के बाद भलाऊँ उठबे बैठने लायक हो जायँ सो हो जाँय। एक तौ कमजोर सरीर और उससे जादां लरम नाजुक मिजाज, सो राईं भर रोग उनें पहाड़ जैसौ लगतातो। अबै भी, जौलों दोरे की कुंडी खुलती, तौ लौं तौ बे लाज मरजाद छोड़कें दोरे की चोंतरिया पै लंबलेट हो कें लोट परीं। फि चाय कीच गिलारे में धुतिया भिड़ गई होय सो भलें भिड़त राय। जांगर कों आराम मिलो चाइये बस।

**** **** **** ****

चाय पानी की खटर पटर हौन लगी। बिल्गैयां जू की घरैतिन नें बड़ी बऊखों कमरा कुदांई जात देख लओतो, सो तुरतईं घुटनन पैं हाँत धर कें उठीं औ चोंका तरपीं चलीं गईं, वे उन सासों में न हतीं जो बऊअन बिटियन सें हिस्का लगाएँ, कै पूरौ काम दंद उनई पै छोड़ कैं अपुन नोंने गलगल दम्में उड़ाएं भलाऊँ चाए बऊबिटियन कौ कचूमर निकरयाए...... इसके बिल्कुल उलट बे बऊ बिटियन की हरतरां की बढ़त की हामी थीं छोटी बऊ कौ फार्म तौ उनईं ने भरवाओतो, हालाँकें बड़ी बऊ नें कैबे में कौनऊ कोर कसर नईं लगाई कै जे ड्यूटी बारी हो जैहें, सों दबांएं न दबहें, गोविंद की कदर न करहें, क्याऊँ एसौं न हो परै कै खेती किसानी बारे गोविंद कों छोर कें कौनऊ और करलें ड्यूटी बारौ गबरु ज्वान........ सास नें सब सुन तौ लई, मगर कुछ न कई, बड़ी बऊ कम न हती थी तौ घूंगट में, मगर ससुर ढिगां पोंच कें इन बातन में चार और जोर कें ऐसी ऐसी बेपर्द बातें कईं कै सुसर कों जई कानें परो..... बेटा हमने सब सुन लई।

तुमाई सास सें इस मद में सलायसूत करेंगे, तुम जाऔ, कामदंद देखौ अपनों।

बिल्लैंयां जू नई सोच के सूदे सज्जन मनईमानुस थे। उननें बड़ी बऊ कौ बतकाव अपनी धना सें कओ, बोले का होंय चाइये। ईपै उनकी धना राजरानी बोलीं- बड़ी बऊ की नईं, तुम अपनी मंसा बताऔ। बिल्लैंयां जू-''हमाई तौ जई राय है कै जो ठीक होय, बई करें चइये, अगर कुड़ई बारी कौ मन है, तौ हम काए भांजी मारें।''

राजरानी-कुड़ईबारी डेढ़ गोड़े सें तैयार आ बैठीं ड्यूटी के लँय। हालाकैं मैनत भौत परहै बाऐ, मगर जित्ती जा कुसमां बारी तुमाई बड़ी बऊ कामचोट्ट है, उत्तई कुड़ईबारी फुर्तीली औ सुकरतन है।

- ड्यूटी बारी होजै, तौ रुतबा तौ हम सबकौ आ बढ़नें। अपनों गोविंद अगर कछू नईं कर पाओ, तौ न सई, बऊ तौ कर पाहै।
- कुसमाबारी भौत जरऊ है, जब सें उसनें जा खबर सुनी, तबई सें मों फुलाएं फिर रई।
- प्राण निकरे जा रए उसके, जा सोच कें कै अगर कुड़ई बारी चली गई, तौ घर कौ कामदंद बई के ऊपर परनै।
- असल कारन तौ जई है उस बिजत्तर बेला कौ।
- पैलां हमसें कई, हमें भड़काउत रईं, मगर हम चुप्पी सादें रए सो देखलो तुम तक चली आई फत्तचट्टयाऊ।
- तुम इन बातन में न परौ, अपनौ बैटका औ बायरे के काम देखौ।

सो ई तरां सें उननें अपनी बऊ कौ संग दओ। कुड़ई बारी के जैबे के बाद जादा सें जादा भरसक कोसस जईती उनकी कै रुगैलयाऊ बड़ी बऊ कों कम सें कम काम करनें परै! बड़ी कों और का चइयेतौ। हारी बीमारी के नाम पै मनयाई छूट लेती रतीं। कछू खास और काम बारे मौकन पै उनकौ पेट कै पीठ कै कमर पिरान लगै, भोर भुंसारें पढ़ैया बालकों को दूद पानी टिपन के बखत, कै फिर सरी संजा ब्यारी बनबे के बखतई जे सबरे पिराते होतते, नौंय जा बेरा खतम मांय उनकी दर्द पीर खतम.....। एसौ न हतो कै राजरानी, कै बिल्लैंयां जू बड़ी बऊ के लच्छन जानत न हते, मगर ई तरां की बातों की बजां सें लड़ाई बरकांए रत ते, जितेक बे सूदे सज्जन थे, उतेकई उनके लरका पनमेसरे जानें की पै गएते कै तन तन सी न कछू की बातन पै मूड़ाफेरी हो परतती बिनकी। कभऊँ कभऊँ तौ हवाहवाई बातनई पै अच्छी हो परतती बिनमें। ऐसे सेर हो गएते मै क्या बताई जाय! तन तन पै अमरीका बारी निकरयायें। .......... राजरानी चोंका में गईं, देखौं कै एक तरपीं चाय चढ़ाकें, दूसरी तरफके गैस के चूले पै करैया में तेल डार रईती कुड़ईबारी। तुरतईं परांत उठा कें उननें बेसन निकारो, फेंटन लगीं, कुड़ईबारी ने फुर्ती सें आलू, गोभी औ धना मिर्च काट कें फिट्त बेसन में मिलाए। छिनभरे में चाय पकौड़ियन की टिरे तैयार हो गई।

**** **** **** ****

नास्ता पानी हौन लगो। इतै उतै की बातन के बीचां बिल्लैंया जू एक बात पै गौर कर रयेते कै बिटिया के मुख पै बौ पानी नईयां जीमें हौंस हुलास औ मायके आबे की उमंग होत, कछू रीनी रीनी सी अनमनी सी दिखा परी उनें बेटीराजा.....। एन तबई बगल बारे घर सें नाउनबाई आ गईं, छैमाटी कौ बुलौआ तौ दुपरै दै गईतीं, अबै जा कैबे आईतीं कै छैहमाटी में खास उनई के मारें इत्ती अबेर हो गई, सो अब देर न करें, चली चलें। सो बेटीराजा की अम्मा तुरतई नाउन के संगै संगै चली गईं। चाय बे पियई चुकीतीं! बिल्लैंयां जू भी जैबे कों उठन लगे।

बेटीराजा - दद्दा तुम कां चले?

बिल्लैंया जू - बेटा बराई पिर रई अपनी, सो मई जा रए। काए का बात है?

बेटीराजा - हम भी चल रए।

बिल्लैंयां जू मुस्क्यान लगे, बोले हओ चलौ, ताजौ रस हुहयै अबै, आज करैयां चढ़नेंती, अगर चढ़ गईं हुहयैं तौ बढ़ियल राब चींखियो बई में मूंगफ्ली डरवा देंगे...।

**** **** ****

जाँ बराई पिरत है, उतै आदमी मांस एसें चले आउत, जैसें गुर पै चींटा चिटियां। फिर बिल्लैंयां जू एक तौ कास्तकार अच्छे थे, दूसरां बड़े जीदार आदमी थे। स्यातई आय कै गाँव कौ कौनऊ घर छूटो होय, नईतर सबरे घरन में रसयाउर के लानें रस गओतो उनके थान पै सें। कोउनें डेकची तौ कोऊ नें लुटिया तौ कोउ नै बाल्टीं भरी रस सें, कोऊ तौ बराई लौ ले गए चोंखबे के लानें......। बेटीराजा कों देखतई जै जनीमान्सहते, सबरे जुरयाए आ कें, सबनें बिन्नू के पाँव परे, कोउनें रस कौ गिलास,तौ कोऊ नें केला के पत्ता पै ताजी राब तौ कोऊ तौ गड़ेरीं बना कें लै आओ....। बिल्लैंयां जू नें देखो, कै इतै आ कें बिटिया के मुख पै रौनक छा गई.....। चलौ जौ अच्छौ भओ। चहल पहल में रम गई बिटिया। धीरे धीरे भियड़ कम भई। बिल्लैंयां जू नें भी काम देखने तकबे के बाद घरै चलबें कौ डौल बिठारो औरतात करबे सें का फायदा? बेटीराजा सें बोले, चलौ बेटा चलनें नइयां घरै?

बेटीराजा - दद्दा हम एकीएका भगे चले आए, सो कारन है! घरै नई इतई बैठकें तुमें कछू बताउने है!

कतईकत गरौ रुंधन लगो! आगें बोल न निकरे आवाज भारी हो कें जैसें गरे में फंस गई...... मुसकल सें कै पाई, दद्दा हमनें भौत निभाई, पै अब पानी गरे सें ऊपर आ गओ, दद्दा हमें बचालो, नईतर हमाऔ निस्तार नईयां अब...... अमरीका-बारी कों हमाए इतै से लँय आऔ!

बिल्लैंया जू - बेटा, तुम पढ़ी लिखीं बुद्धिमान हौ! मोंग जाओ बेटा, रोबे सें बनत कऊँ काम! हमें साँची साँची बताऔ का बात है?

बेटीराजा - आज पाँच सालें हो रई धीरें धीरें पी0सी0ओ0 बंद होबे कों! तुमाए लालाजू तबई सें जानें कैसे हो गए। रात रात भर जगें, औ खीब रोएं कभऊँ तौ कीका काड़ कें रौउन लगें। दद्दा हमनें भौत कई, भौतऊँ समझाई सो मान जाबें पै, तनकई देर बाद फिर कऊँ ऊसंई करन लगैं......।

- जा सोच कें कै खर्च खूंट कैसें चलहै! आज कौं जमानों एसौ नइयां कै खेती पाती सें पूरौ पर जाए। फिर, आधी तौ बटाई पै उठी रत! आधे में से आधी है हमाई!
- चार हींसा हो गए दद्दा! नंद, जेठ, अम्मा पिताजी, और हमोरें.......
- नंदबाई के इतें सें अम्मा पिताजी नई आ रए, कानपुर में इलाज हो रओ पिताजी कौ!

बिल्लैंयां जू - हओ बेटा हमें मालुम है, बीमारी तौ एसी बुरई है कै का बताई जाए, भागई अच्छौ होय तौ बच जात आदमी, नईतर अपने संगै लै जातई पनमेसरी...।

बेटीराजा - अब तौ देखौ दो सालें हो गईं, तीज त्योहार लौ एसई

निकर गए और आए लौ नईया। अपनी विपदा के आगें हमाई कुआ देखत?

नंदबाई सें फोन पै कईती, सो बोलीं, पिरथमेस तौ जनम के एसई हैं, तुम तौ पढ़ी लिखी हों, निभालो जैसें बनें... ।

हम कां लों निभाँय बताऔ तुम! चार ट्यूसनें कर रए, तीन घंटा कोचिंग में जा रए दद्दा! हमतौ प्रथमेस सें पूंछ कै,उनकी राय लैं कें काम रएते।

मगर अबजानें काए, हमाए आबे जाबे पै सक करन लगे। कत हैं कै तुमें भगबे की इतेक जल्दीं काए परत! घड़ी देखी नई, औ भगी नई.....

दद्दा कोचिंग तो बंदे टैम सेंई जानें परहै न!

जिन बालकों की ट्यूसन है, उनके इतै टैम सें न पोंचें तो कैसें चल है!

पता परी, कै हमाए जाबे के बाद चोरी लूका जुआ खिलन लगो, ऊ पी.सी.ओ. बारे कमरा में।

बई औरन के कहे में चल रए हैं प्रथमेस।

उनोंरन में सें जिन एकाद की जनीं ड्यूटी बारी हैं, बे भड़काउत रत मनमानों।

कत हैं, ड्यूटी तौ हमाई जनी भी करतीं, पै जब चाय जब छुट्टी कर लेतीं हपतन नई जातीं..... औ तुमाई जनी कौ पाव तौ घर में टिकतई नईयां.....

इन बातन कौ हम का जवाब दें! का करें। जानें कैसे होत जा रए प्रथमेस!

हमाई सरकारी ड्यूटी तौ आय नोंई, कै जब चाय तब छुट्टी मिल जाबें, हमाऔ तौ बोलबई बोलबे कौ पइसा है......

अब एक नओ रावला पाल लओ, कत हैं कै ट्यूसनें औ कोचिंग सब कुछ छोड़ छाड़ कें घरै बैठौ। बे कत औ संगै उनके बे यार दोस्त भी इनकी सै पा कें जई कत कै अपने आदमी की बात मानो चाइये।

दद्दा हम कैसें छोड़ दें, बिजली कौ बिल भरबे के लानें, सबसें एडवांस लँय बैठे हैं! खेती किसानी के कामन में बीजबाड़ी सें लै कें निराई गुड़ाई तक में नगदी की कितनी दरकार है, जौ तौ तुम जानतई हौ, सो हम तौ जरमूल सें कर्जदार हैं।

बिल्लैंयां जू – बेटा हम सब जान समुझ रए हैं, पै बात इतनी बढ़त रई औ तुमनें हमें न बताई बेटा! हम इतने गैर हो गएते तुमाए लानें?

औ तुमें ट्यूसन नईं छोड़नें जो करतीतीं सो करौ। बे औरें तौ चाउतई जौ हैं, कै तुमाऔ हांत कौ काम छूट जाए, तौ फिर है का इनकम के लानें? फिर तौ बहानौ हो जै है कै जुआ न खिलवाएँ तौ पैसा कां सैं आहें......

बेटा हम सब चाल समझ रए उनकी, मगर अब तुम फिक्कर न करौ।

"फिक्कर कैसें न करें। एक तौ जो कोढ़ पैलऊँ सें हतो, ता में तुमाई अमरीका बारी नें तौ एन खाज कौ काम कर दओ हमाए संगै। हम का बताएं ? अपनी बिथा की एक एक बात, हिलक–हिलक कें रो–रो कें कै दई बेटीराजा नें।

अबै बिल्लैंयां जू बिटिया खों समझा बुझा रएते ढाड़ंस बंदा रएते कै मोटरसाइकिल की आवाज सुना परी। गोविंद सें बड़े नवलमुरारी चले आ रएते। बोले घरै गए सो पता परी कै हल्की बिन्नू की अबाई भई है। सो सूदे इतई आ गए, लो बैठौ मोटरसाइकिल पै औ घरै चलौ। खा पी कें इतै कौ हम देख लैबी तुम घरईं बने रइयो। गोविंद सें बात भईती सो कै रएते–भैया कम सें कम चार दिना हैं अबै हमें इतें सें निकरबे में। अबकी बेर इस पशुमेला में खास पंजाब की बढ़ियल जर्सी गैंयां कह्न लौ आबे की पता चली है। बिनई में सें तंदरुस्त दुधारु माल ढूंढ़ कें सौदा निस्तारेंगे। सो अबै तीन चार रोज तौ हम नईं आ रए। बिल्लैंयां जू नें सुन लई चुपचाप बोले कछू नई।

****     ****     ****     ****

'बिन्नू इतेक रात में अब न जाऔ भोर भुंसारें चलीं जइयो।' बिल्लैंया जू नें बड़ी कोमताई औ हेज सें कई बेटीराजा सें ।

बेटीराजा–दद्दा अबै मुसकल सें आठ कै नौ कौ टैम हुहयै, ऐसी अबेर नईं भई, हमें जान दो, घरै कोऊ नइयां सिवाय उस अमरीका बारी के! ओई कौ डर जादा है, नईं तौ हमाए लों एसों हैई का, कै भड़याई कौ डर होय!

अम्मा–बेटा इतेक मईनन बाद दिखा परीं, रूक जातीं तौ साजौ रातो, भुनसारें बेर बूँट टुरा देते बढ़ियल ताजे ताजे उतै काँ धरे जे गाँव देहात के मेवा,औ किलो खांड घर कौ घी लै जाऔ बेटा, हम अबईं दही भांए लेत! ना जाऔ, रातइ भर की तौ बात है! न रोटी न पानी,एसें कैसें भूकों जान दें कत कत उनको गरौ भरयाओ, आँखन सें अँसुआ ढ़रन लगे। जातौ बे बाप बिटिया कौ मों देख कें जान गईतीं, कै कौनऊ गहरी बात है? पै अंदाजौ न लगा पायीं। उठीं औ रोटी करबे कों चौंका तरपीं चली गयीं।

अम्मा की बातन सें पक्के जी की बेटीराजा की तरैयां भरयाईं। भरे जी कों समार कें कछु कैबे जा रईंती मगर कत कत चिमां गई। चुपचाप रै गईं।

सूनी आँखन सें बैठका के चारऊ तरपीं हेरन लगीं। सामनें की भींत पै हिरना और बारासिंगा के मुखौटा ऊसई के ऊसई टँगेते। बड़ी अल्मारी में पुरानौ सीसा औ सिंगार पटार कौ सामान जईं कौ तईं हतो। बड़े बारे तक्का में रहल पै रामायन धरीती। बड़े बक्सा के ऊपरै घर भर के ओढ़बे बारीं रजाईं जाँ की तां धरींतीं। अपनी अपनी जगां सब कुछ ऊसई हतो, बस न हतीं तौ एक बेटी राजा! जई घर में कैसें लाड़ लड़ाए जातते बेटीराजा के एक दिना बौ हतो, जब बेटीराजा कौ भी जई घर द्वार हतो, घर के जनी मांस सबसें बडे हितू मीत संगी संगाती थे। उसके पेट कौ पानी लौ न हलन देत ते! और आज...............आज सब कुछ पराऔ...........ईसें ज्यादा ब्याईबरी बेटीराजा सें न सोचो गओ! बगल की बखरी सें गवनारियन के बोल सुना परे–कच्ची ईंट बाबुल देरी न धरियो, बेटी न दइयो परदेश मोरे लाल........माई के रोएं से गंगा बहत है, बाबुल के रोएं बेलाताल भइया के रोए सें छतिया फटत है, भाभी के जियरा कठोर मोरेलाल, हमरे खेलत की पुतरा पुतरियाँ, नदिया में दइयो सिराय मोरे लाल.................। सुनतईं सुनत गंगा जमुन की धारा लग गई आँखन सें। बिधना कैसौ बनाओ तुमनें बिटियन कौ भाग! काए खों बना दई बिरानी गावँ गिराँव की ससुरार! बनाई दईती तौ एसौ न बनाऔनें तो लोकाचार कै पली पुसी बिटिया खास मताई बाप तक के लानें पराई हो परत!...........ससुरार में निराट अनचीनें जनीं मांसन की अजब गजब सीं टेब–आदतें!.........संगै जीबे मरबे की बातें घातें!

''हल्की बिन्नू, चलौ बियारी करलो। कुड़ईबारी नें कई, औ बेटी राजा खें रोउत देखकें तुरतईं उसकौ मुख अपने हौंतन में लै कें मोंगाउन लगीं। बेटीराजा तौ का मोंगती, कुड़ईबारी और सिसकन लगीं। कन लगत कै खग जानें खग ही की भाखा......... ससुरार कौ तौ नामई बुरऔ होत। भलाऊँ सुख सेज पै पौढ़ी रौंय, मगर कष्ट कलेस भी कम नई थे। ससुरारबारी दोऊ जनीं की पीर एकईतीं! माँय, दुगई में धरी थारी सिरात देखकें दद्दा ने टेर लगाई............

आ रए ''दद्दा'' कै कें बेटीराजा नें अँसुआ पोंछे, अपने औ कुड़ईबारी के! फिर एक रीनी सी मुस्क्यान सें बोलीं-चलौ बिन्नू बाई! रोबे गाबे सें काम नईं चलनें। दोऊजनीं हँसती मुस्क्यातीं दुगई कोद निकर गईं। दुगई में गुरसी में बढ़ियल दगर दगर आगी जर रईती। कुड़ईबारी चोंका में गईं माँय सें भोजन की थरिया गुरसी के अँगाऊँ धर कें एक ठइया बोरी बिछा दई। बेटी राजा बोरी पै बैठ गईं। अम्मा नें खास बेटीराजा की मन भाउन चनन की भाजी और धुबी जुंडी की बढ़ियल मैंदा सी सफेद पतरी-पतरी रोटी पईं तीं। घर कौ नैनू हतो भटन कौ बढ़ियल भर्ता घर के कैंथ के कैंथा की खट्टी चटनी। चिरोंजी कारी मिरच डार कें बनाईती रसयाउर! अपने मन भावते बिंजन थारी में देख कें बेटीराजा की भूंक खुल परी। खूब अफर कें बियारी भई उनकी।

कछू सोच कें बेटी राजा नें कई-दद्दा बजाय परों के तुम कल्ल हमाए संगै चलौ! उनें पुटया पोंछ के अमरीका बारी खों उतै सें लँय आइयो। बिल्कुल एसें कै उनैं जा बात की भनक तक न परो चाइये कै बा अमरीका बारी हमेसां के लानें जा रई, तुमाए संगै।''

बिल्लैयां जू- जैसौ तुम कऔ बेटा! अब तौ ऊसई करबी जा में तुमाई औ लालाजू की भलाई होबै।

हमें पैलऊ अगर जे बातें पता होतीं तुम कछू इसारौ देतीं तौ काए खों हम अपनी बियाद तुमाए मूड़ै मड़ते!

-औ तुमनें कभऊँ न बताई बेटा, कै लाला जू में इतने ऐब हैं।

-हम तौ जानत ते कै लालाजू तौ बिरकुल सज्जनताई के पूतरा आंए हमें का पता हती कै असल के गुड़ के बाप कुलुआ आहें जे। हम तौ जानतते क जैसईं हमाई बिटिया है, बिना सींगन की सूदरी गैया, ऊसई दमादराजा हैं भोंम कैसे कोंरे जी के पूतरा, शांत इतने कै जैसें बिना मों के होंय।

-चारमईना पैलां हमाई बिथा सुन कें तुरतई हरां के बोलेते दद्दा इतैई अमरीका बारी के मारैं तुमाई खाई रोटी नईं पच रईं, तौ एसौ करौ कै हमाए संगै पठै दो, इतैरे चली जेहै तो तुमें सुभीतौ हो जैहै!

-सो बेटा, हमने अक्क न धक्क तुरतईं हामी भर दई, औ लो छिन भरे में अमरीका बारी उनके संगै काड़ दई!

-मगर अब तुम बेटा जाऔ परौ नोंनें। निंदारी हो रई हों, सो अम्मा ढिगां, जाऔ परौ कल्ल भोरईं भोर निकर जायेंगे हमोरें राठ के लानें!

बेटीराजा-हओ दद्दा! ठीक है।

बिल्लैंया जू- ओ मौड़ी अब तें आ गई है बेटा, तौ रामायन बाँच कें सुना दे मोय! रोजीना तौ खुदईं बाच लेत, जैसी बनत ऊसई।

-बेटा जब सें तुम पराए घरै गईं, तब सें गुरीली तान सें कोऊ नें न बाँची रामायन न तुमाई अम्मा नें ................ और न कौनऊ पनमेसरी बउअन नें!............... बिल्लैंया जू की बातें सुनकें हरख कें उठी बेटीराजा, तक्का में सें रहल समेत रामायन निकारी और बिल्लैयां जू के पाछें पाछें निंगन लगी! बियाव के पैलां नित्तनियम सें बेटीराजा सोबे सें पैलां दद्दा की खटिया के नगीचें बैठ जाबें औ अपनी सुरीली तान सें ऐसें गा कें रामायन सुनाबें कै बा भा! अम्मा दद्दा नोंनें हात जोर कें पूरी सिरधा भक्ति सें सुनतते, कभऊँ तौ मारे प्रैम के उनके अँसुआ लौ ढरकन लगत ते। प्रैम कै औ भक्तिभाव के अँसुआ। हालांकि बेटीराजा नैनू की नाई कोंरे जी की लड़की थी। बेटीराजा की लड़कबुद्धि जौ मानबें कों कभी तैयार न हती कै प्रैम अँसुआ काड़देत इतनी मस्त और खिलंदड़ी कै रोबो गाबो बिन्नू खों तबऊ आ परै, जब पुरापाले की कौनऊ बेटी बिटारू की बिदा के टैम पै का घर औ का बायरे की जनियन के तलैया भरे अँसुआ कड़न लगत ते। मगर अँसुआ तौ दूर रोउत गाउत जनियन खों देख कें एसें ठठा कें खिल खिलातीं कै का बताएं!

आज इन सब बातन की सुध हो परी बेटीराजा खों आज समय दूसरा था, हालियत दूसरी थी। बालपन की मौजमस्ती की जागां सासरे के दुख थे आँख सें टप्प सें एक अँसुआ रामायन पै गिरो, झट्ट सें एक हाँत सें अँसुआ पोंछो, दूसरे हाँथ सें रहल धरी, बोरी सरका कें बैठ गईं रामायन बांचन लगीं............ बिल्लैंया जू हाँत जोर कें सुनन लगे। कूलती कांखती अम्मा भी रामायन सुनबे आ गईं। हाँथ जोर कें रामायन सुनन लगीं।

रामायन सुनाकें, बेटीराजा नें रहल उठाई। दद्दा अम्मा असीसन, की बाड़ लगा रयते- जै होतोरी बिन्नूराजा, जीतीं राओ बेटा। एबाती पुनौती राऔ! दूद करूला करौ अपने घरै! साजे जी सें सुखसंतोख भरी बेटीराजा नें रहल धरी औ अम्मा कोद के पलका पै परबे के लानें बखरी पार बारे कोठा खों कड़ रईतीं कै कुड़इबारी नें खींच लई अपनी तरपीं! बिन्नू अपने कोठा में अकेली नई परनें हमें, तुमाए भैया न सई, तौ तुमईं सई, सो चलौ नोंने. ............ कत कत हँस परीं कुड़ईबारी! चाँदनी रात के उजयारे में खील मखाने सी हँसी में पूरी बखरी खिल परी, कुड़ईबारी के मकई के दाने कैसे दूधिया सुफेद दाँत ऐसें दिख परे ज्यों बादर बीच बिजली! की दमकन। बेटीराजा भी हँस परी। बोली-हओ, ठीक है! अम्मा सें कै कें आ रए तुमाए ढिगां, चलौ तुम!

**** **** **** ****

रामायन सुन कें भी आज बिल्लैयां जू कौ जी साजौ न हो पाओ। बिटिया की चिंता में नींद तौ का आउती बिल्लैंया जू खों! जब कैसऊँ कल न परी सो उठ बैठे। एसें जतन सें पली पुसी, बिटिया की जा गत हुइयै, उननें सपने में लों न सोचीती! बे तौ भौत संतोप में हते कै अच्छौ घर बर मिल गओ बिटिया खों। पी0सी0ओ0 खुलो है, इतैक बड़ौ निजू मकान है, बिरोबिरी के कास्तकार हैं............. कन लगत कै दूर के ढोन सुहाने, सो भई दसा अई। ढोल में ऐसी पोलम पट्टी है, जौ जानकें उनकी नींद औ चैन दोऊ बिला गए।

भौत देर लौ बखरी में फिरत रए! बारबार सोचें, प्रथमेश तौ भौतऊ साजौ लरका हतो! पै बेकारी में आदमी का सें का हो जात् फिर प्रथमेस तौ पैले सें करनारे हते। करत काम बिलुर जाय, कै छूट जाय, कै बंद हो जाय तौ अच्छे सें अच्छौ आदमी भी पगलया जात। सिर्री हो जात। सो जई दसा इस लरका की भी हो गई! घर में कोऊ बड़ौ बूढ़ौ कै भैयाबंद! कोउ नइंयां कै बेई समझाउते कछू। मगर अपनी सोची ई

बात सें खुदईं कन लगे कै एन तौ हैं हम अपने घर के कर्ता औ बड़े बूढ़े। पै क्या मजाल कै हमाए दोऊ लरका तनकऊ गम्म खाएं कै बात मानें कै समझाए बुझाए सें समझ जाँयें, सो काय खों! एसें चिल्लया कें दौड़त जैसें हमाए बाप होंय............। कन लगत कै ऐसे होते कंत, तौ काय खों जाते अंत। अगर जे संतानें सूदी सीदरी होतीं, तौ काय खों अमरीका बारी खों बाहर काड़नें आउतो। सो जा बात तौ साँची है कै आजकल के लरकन की गतमत कोऊ नईं जान सकता। फिर रोजी रूजगार कामदंद छूटबे के बाद आदमी कों समझाबो टेड़ी खीर है।

सोला आना साँची है भाई! कां रोज के रोजीना नगदी कल्दार आ रएं, औ कां एक दम सें सबयार आमदनी बंद! मगर खरचा तौ बंद नई.! कां सैं आऐं पैसा कैसे होय गुजर............? सासऊँ मुसकल बखत है बिटिया दमाद कौ।...

सोच विचार करत रए! कुछ विचार करकें, बंडी पैरी औ लोई ओढ़कें घर के बायरें कढ़याए! रात जादां हो गईती, बगल के ब्याऔ बारे घर में भी खटर पटर नईं सुना परी। पैलां तौ कछू सकुचे, फिर अगारूं हो कें धीरे सें उननें अपने बगलगीर बबेले जू के घर की सांकर खड़खड़ा दई। स्यात् बबेले जू सोये न हते अबै। कुंडी खोल, बिल्गैंयां जू खों देख कें हरख कें बोले- आऔ भैया! बड़ी उमर है तुमाई! अबै लडुअन की डलिया खास तुमाए इतै के लानें संगो रएते, भले आए! बबेलन कों टेर कें कुछ कई। छिन भरे में बबेलन जू लडुअन सें भरी पलेट औ पानी कौ लौटा धर गईं। बबेले जू नें कई- भैया कानपुर बारौ बई मिठया बुलाओ है, जीनें गोविंद के ब्याव में मिठाई बनाइती! जे खास तरां के बुँदी के लडुआ देखौ, चींखौ तनक कितेक अच्छे बने, बिल्कुल अमरित! बिल्गैंयां जू नें एक संगै चार पांच लडुआ खा लए, पानी पियो डकार लै कें बोले- सांसऊ एन एम्दा हैं! कल्ल नईं, तुम अबै दै दो हमाई डलिया, बेटीराजा आईं हैं, उनकी पठौनी में भी धर देंगे। बबेले जू नें उनके नांव की डलिया भीतर सें ल्या कें उनके नगीचें धर दई। तनक देर लौ सन्नाटौ खिंचोरओ। फिर दोऊ जनन में हरां हरां के कछू बात चीत भई। घंटाक के बाद जब बिल्गैंयां जू घर के लैंय चले, तब भौतकछू उनकौ जी हल्कौ हतो। का जानें कै सक्कर के बीमार खों, लडुअन की मुन्यात मिलने सें या फिर चिंता फिक्र सें निजात मिलने सें? जौ तौ कै बिल्गैंयां जू जानत हुइयैं, कै फिर बौ नटबर नागर जौन ऊपर बैठो बैठो सबरे पुतरा पुतरियन की डोरें घुमाउत रत।

**** **** **** ****

डबलबैड पै परीं नंद भुजाई बातन में इतनी मस्त कै पतई न चल पाओं, कबै बारा बज गए! एकीएका कुड़ईबारी उठी, और बोली-काए बिन्नू चाय पीनें तुमें, हमें तौ लो तलब सी लगयाई।

बेटीराजा-पीनें तौ भलाऊँ है,पै इतनी ठंड में जैहौ कैसें! औ सिलेंडर की गैस भी तौ खतम हो गयी है, हम दुगई में हते जब तुम सिलेंडर खों पार कें ऊकी सटक मरोर रईंती! जौ सब देखकें हमाई तौ भाई हिम्मत नईया कै चूलौ जरा कें चाय बनें........... अरे आहां! एसौ कछु नइयां, जैसों। तुम सोच रईं हौ बिन्नू! तुम तौ जा बताऔ, पीने कै नईं पीने! कुड़ईबारी बोली।

बेटीराजा-पीनें काए नइयां! मगर गुरसीं की आसा कर रईं, सो बेकार है, अब लौ तौ गुरसी में आगीयई न बची हुइयै! अबै हम बाथरूम गएते, सो देखयाए कै अम्मा कंडी गाड़ रईंतीं। इसकौ मतलब कै आगी सिरा गई हुइयै सब यार!..........

''रामधई बिन्नू तुमोंरन की घरभर की जा आदत भौतई बुरई है, कै अपने अंगारें बातई नईं सुननें कोऊ की! तनक हमाइयई सुन लेतीं तौ इतनों जोर न डारनें परतो दिमाक पै। मगर आंहां ................. काए............. खों।''

बेटीराजा-मन्नू भौत बुरई आदत है जा तुमाई भी और आज की नईं छोटेपन सें एसई हौ तुम, असल बात कैहौ न, और दुनियाभर की लंबी लंबी तानें खिंचवा लेओ बस! औ जौ का निकार रईं अपने सूटकेस सें, लैपटॉप आय का?

कुड़ईबारी-आँ हाँ बिन्नू, लैपटॉप नईं, तुमाऔ जवाब आ निकार रए, अच्छी तरां से देख लेओ एई पै बनेगी अपनी चाय।

बेटीराजा-आहा! इंडक्सन चूलौ! अरे वा ................।

कुड़ईबारी-हओ बिन्नू इंडक्सन चूलौ, औ देखौ जा है ई पै चढबे बारी बोंगनियां! तुम जब बाथरूम में गईती, तबईं हम लोटा भर दूद लैंय आएते चोंका सें। अब इतेक दिनन बाद मिली हौं तो रतजगा तौ पक्कौ है फिर बिना चाय के रतजगा कौ क्या मजा! काए सई कै रए हम।'' तुम औ गलत! होई नईसकत मन्नू! बेटीराजा नें कई।

कुड़ई बारी नें इंडक्सन कैं पिलग लगाकें स्विच खटका दओ, सो देख लो कै छिन भर में बढ़ियल चाय बन गई। कुड़ईबारी नें चाय पियत पियत बताई कै जां ड्यूटी है, उतै दूर दूर तक न जनी मांस हैं, औ न कौनऊ बजार हाट कै दुकान कै चाय पानी कौ सामान ...................। सो अपने बैग में इंडक्सन औ चाय कौ सामान धरें रतीं, जब सुबीता परो, तबईं दै बनाई, कभऊँ निब्बू की, तौ कभऊँ पाउडर बारे दूध के पैकट की .............। बढ़िया शुद्ध अपने हाँत की अच्छी ताजी चाय। बेटीराजा-हम तौ सोऊ धरै इंडक्सन चूलौ, तुमाए लालाजू की जिबिया बड़ी चटोरू है, न दिन देखै न रात ..........। सो कभऊँ उनें चाहिये है मैगी, तौ कभऊँ चाउमीन ....................सो हम तौ खुदईं इंडैक्सन पै बना देतईं! को जाय उतने बड़े घर के एन बड्डे चौंका में मुसरया तौ इतने बड़े हैं कै बिलैया खों मात करें अपनी उन्हार में। उनकी खटर पटर औ धमाचौकड़ी रात में देखतई बनत है। सो हम तौ बैडरूमई में एक तरपी मेज पै धरें है सबरौ सामान इतै उनके मों से निकरीं, औ लौ उतै छिन भर में बन गई.........।

बातें करतीं चाय पीतीं दोऊ जनीं अपनी अपनी जांगां और कछू कैबे सुनबे कों उतावलीतीं। कुड़ईबारी ने जादां देर अबेर होतन देख कें पूंछई तौ लई-काए बिन्नू! इतै तौ चलौ मान लई.कै आदमन की गुस्सां नाक पै धरी रत, सो कौनऊ ठिकानों नइयां कैकोऊ अमरीकाबारी कौ घोड़ा दाब कें अन्होनी कर दे, मगर तुमाए ढिगां तौ न लराई न रार न झगड़ा झंझट, फिर काए न गसी फ्सी।

बेटीराजा- का बताएँ भाबी .....................

कुड़ईबारी-भावी तौ हम हैंहयई, पै तुमाई गुइयां सोई हैं लड़कपन सें ! हम सें या तौ सच्ची कइयो, कै फिर कछू बात बतकाव करबे की जरूरतई नइयां!

बेटीराजा- न चाह कें भी बताऔने तौ परियई है, जब दद्दा सें कछू न छिपाओ तौ अब तुमसें कां तौ औ का छिपाएं मन्नू .............? बस जौ जान ल्यों कै एसौ कौनऊ दिना नई रओ, जब तुमाए लालाजू कै उनके दोस्तयारों की निगा अमरीका बारी सें हटी होय ................ इसके पीछें, हमने एक एक पाई लुटा दई, जे देखौं

कान, जौ देखौ गरौ, जे देखौ, हाँत, उंगरियां, एसी कौन सी जांगा थी इनमें, जौं पसेरन सौनों न पैरें रत होंय हम, औ आज देखलो नंगे बूचे तुमाए सामनें बैठे हैं। अमरीका बारी को बचाने के लैंय एक एक चीज गिरो धर कें उनें रूपैया देत गए।

–तुमें याद है मन्नू, जब चार मईना पैलां हमोंरें आएते, सो एइके लानें कै कानपुर बारी नंद के इतै ब्याओ है उतै जावे के लैंय हमाई चीज बसत अम्मा ने काड़ कें दै दईतीं तौ तबई दद्दा ने अपनी बा मुन्यात अमरीका बारी इनें दईती।

–जिदिना सें इतै सें गए ओई दिनां से तुमाए लालाजू की एकई रट कै बंदूक चलाना सीखेंगे, बंदूक चलाना सीखेंगे ..........।

–अब तुमई बताऔ कै आज कितेक सालन सें पी0सी0ओ0 बन्द हो गओ इनकौ, मोबाइलन के आंगे अब कुआ पूँछ्त पी0सी0ओ0! खेतीबारी की बटाई सें जो कछू आ रओ, बई सें कैसऊँ गुजारौ चल रओ लौ दै कें। चार ठइया ट्यूसन पढ़ा रए, और एक कोचिंग में पढ़ा रए हम, बोलत बोलत मों पिरान लगत दोऊ गाल टीबन लगत तब कहूँ जाकें दो पइसा दिखा परत!

–तुमई बताऔ हमने का गलत कई, कै पैलां ई के कारतूस पूंछौ बजार में, कितेक के आउत, बंदूक सींख रए हौ, तौ सीखबे घालबे के लानें कारतूस तौ चइएई चइये, खपरा पथरन सें तौ सींक न पाहौ ..................

–सो काँए कै बंदूक चलाना तौ हर हाल में सीखेंगे, भलाऊँ चाय खेती बेंचनें परै सासकी!

–कुड़ईबारी–काए, बिन्नू तुमाई नंद नें नईं समझाई अपने भैया खों!

–बेटीराजा–बीच में न बोलौ, सुनौ तौ, नंदई आ बन गईती भगवान। भात माँगबे आईतीं, सो हमने सब कछू उनसें कईतीं साफ साफजा भी कै बे तौ कत कै दस दस रूपयईयन में मारे मारे फिरत कारतूस, मगर हमें बिस्वास नई होत, एकादबार दद्दा हरन के बतकाव में सुनीती कै तीस रूपया कौ एक कारतूस है इस अमरीकाबारी कौ जा भी समज लेओ कै निरेबालपन की बात हती जा दसियन साल पैले की ...........अब तौ और मांगे हुइयें।

–एकीएका हमनें अपनी नंदबाई सें कई कै जिज्जी हमें अपने संगे कानपुर लै चलौ, उतै हमाऔ काम बन जैहै।

–तुम जा समुज लो मन्नू, बस कैसऊ हमनें उनें मना पथा लओ, उनकी बात तुमारे लालाजू टार नई पाए। सो हम पोंचे कानपुर!

–किस्मतई आ हतीं कै हमाए पूछें बिना हमें बा गैल मिल गई, जिसकी हमें तलास थी। भओ जौ, कै नंदबाई के संगै गए हम उनकौ बजार काराबे के लानें बजारै, ब्याव के सामान की थोक खरीदारी के लैंय। मन्नू उतै तौ हर चीज के थोक के बाजार हैं कपड़ा उन्ना, बासन भाँडे, जूता चप्पल, सिंगार पटार, सोने चाँदी और जाने काए काए के ..............।

–सो हमोरेपोंचे मेस्टन रोड़, नंदबाई लांगा चुनरिया और सिंगार पटार के सामान के लानें गईती। खास तौ गईती बैग अटैची और अपने टांगने बारे और हतउवा पर्स के लानें, सो बे तौ जई जब देखबे लैबे में लगीतीं औ हमें दिखा परी बंदूकन की दुकानें ............ बस तुम जौ समुझलो कै अंधा क्या चाहे दो आंखें ...।

मगर नंद सें काते तौ का काते! एक बार हरां कै कई भी कै बंदूकन की दुकानन कोद चलौ। जिज्जी ............। सो हंस के मना कर दई कन लगी कै अपुन औरन कौ जाबो ठीक नईयां फिर इतै हमाई जान चिन्हार के कुछ जनें हैं, सो कैसऊँ ठीक नई लगत। कोउ का कैहै कै बंदूकन की दुकान में जंनीं कैसे घुसयाई।

–मन्नू, जा के पांव न फटीं बिंबाई, सो का जानें पीर पराई! ठीक भी हतो। बे औरें अपनों ब्याव देखते, कै हमाई जा बियाद! मगर हम भी कम नइयां। दूसरे दिनां जब खैबे पीबे कौ चोंका कौ काम दंद निपटा लओ, तब हमनें जिज्जी सें कई, कै जिज्जी हमें फ्ल वालौ लांगा चुनरिया भौत जँच गओ, कम तौ करधोंनी भी नई लगी, मगर हम पइसा नई लैंयते, आप सें कैबे में सकोच लग रओतो। कऔ तौ हम चले जाँय, और लैंय आँय, रस्ता गैल गली तौ हमनें देखई-लई है।

–सो मन्नू, हमाई बात सुन कें नंदबाई बोलीं कै अकेली नईं किसी के संगै चलीं जाऔ, हमतौ चलते, मगर न्यौते हकारे के मारें टैम नइयां, आज तौ लो लखनऊ की तैयारी है हमाई। ई पै हमनें उनें कैसऊँ समझा बुझा कें राजी कर लओ, औ हम चल परे उ मेस्टन रोड़ के बजारै।

कुड़ई बारी– बिन्नू और बातें तुम बाद में बताइयो, मगर जौ अबई बताऔ के बा करधौनी औ लांगाचुनरिया तुमनें हमें काय न दै दई, जब हम अपने ममयावरै जा रयेते जग्ग में। तुमसें कई भी हती कै उ जग्ग में असपेर भरे के बीसन गाँवन के जनीमांस जुड़े हैं। बढ़ियल कपड़ा देओ पैरबे खों। तुमने अपनी चड़ाए बारी लाल साड़ी दै कें टिरका दओतो हमें। अरे अपने नए कपड़ा दै देतीं तौ हमाई सोभा भी बन जती। मगर तुम इतनी बड़ी .चीजें छुपाएँ रईं हमसें।

बेटीराजा– मन्नू भाबी कां की करधौनी और कां के लांगा लुंगरी। हमनें तो इनकौ बहानों आ बनाओतो! नईंतर कैसें कड पाउते। हमाएलों कां धरे इतने रूपैया। औ जौन जोड़ रए पेट काट काट कें सो पैरबे ओढ़ने में उड़ाबे के लाने नईं। पी–एच.डी. के फार्म के लानें जोड़ रए।

– तुम का जानौ कै कितेक डरा रएते हम उतै आदमन के जंगल में। जहाँ जियै देखौ ओई दौरत भगत फिर रओहै मोटर लारियन की नाई! फिरउ राम कौ नाव लै कें हम निकरई तौ परे!

– मन्नू सरम भी खूब लगै हमें, जब हम 'इकबाल आर्म्स' की एन बढ़ियल सीसा जड़ी दुकान में गए, तब उतै जितेक आदमी थे, बे सब हमें एसें देखन लगे, जैसें कौनऊ हउआ देख लओ होय उनन नें।

– तौ हम गएते सो जी करों करकें बोले कै हमाए घर के आदमी भूमिगत हैं, जा सें हमें जनी होकें भी बंदूकन की दुकान में आउनें परो, हम जा पूँछबे आए कै कारतूस कितेक के मिलत!

दुकानदार ने पूँछी– कौन सी बंदूक है?

हमनें कई– अमेरिकन सैरेज!

बौ बोलो, बहन जी जा तौ भौत उम्दा और अंग्रेजन के इस्तेमाल वारी बंदकू है भौतई मांगी है इतनी जान लो कै औसत बंदूकन के कारतूस आउत है तीनेक सौ के मगर इसका एक कारतूस है कम सें कम तीन हजार कौ। इसके खोका नई भरे जात। बाकी बंदूकन के कारतूसन के खोका चाय जै बार भरा लो, मगर इसमें ऐसा कुछ नहीं है।

औ इतै कौनऊ दुकान पै आपखों इसके कारतूस न मिलेगें, हाँ कचहरी के सामने कानपुर की सबसे बड़ी दुकान है उतै जरूर ई बंदूक के कारतूस मिल जैहें!

- कनलगत कै सुनौ सबकी, औ करौ मन की, सो भाबी हमनें सुन तौ सब लई, मगर उतै की जितनीं दुकानें हतीं सब पै हम गए और कारतूसन कों पूछो मगर कऊँ न तौ कारतूस मिले, न कोऊ नें कछू और बताओ।

हार कें हम कचहरी बारी दुकान पै गये। उतै सांसऊ इस अमेरिकन सैरेज के कारतूस हते। उनने उल्टी हमई सें दै पूंछी- अमेरिकन सैरेज तौ आज की तारीख में ईद का चाँद हो गई है, बहुत पुराने लोगों के पास ही है। वो भी अंग्रेजों से ली हुई.... आपके यहाँ पुरानी है या फिर............. हमने कई, भैया हमें नई मालूम कुछ जब सें पैदा भए तब सें सुनत रए कै पिताजी और नाना जी सिकार खेलन जातते। 1947 में जब अंग्रेज अपने साज सामान बेंच कें भग रएते सो तब एक अंग्रेज ने कईती पिताजी सें कि पाँच हजार की बंदूक है तुम कितने दै सकत! पिताजी ने तीन हजार उसके हात पै धरकें जा बंदकू लईती। दुकानदार बोलो, हाँ बहन जी 1947 की जा बंदूक आज लाखों में बिक रइ है।

कुड़ईबारी- काए बिन्नू फिर तुमने कितने कारतूस लए?

बेटीराजा- तुमाई बातें मन्नू! हम लेते तीन हजार कौ कारतूस? इतेक पइसा कौड़ी होते तौ का कानेंती! हमें तौ बस जौ पता लगाउने तो कै आखिर इसके कारतूस कितेक के हैं, हमाई उतनी बिसात है भी कै नईयां। ऐसौ सौंखवो कौन काम कौ कै कंगाल कर दे। घर फूंक तमासौ देखबे बारी बात है जातौं। दुकानदार सें फिरकऊँ आबे की बात कह कें हमनें घर की गैल धरी! नंदबाई अबै लौ नईं निकरपाईती लखनऊ के लानें। हमें देखकें बोली- लै आईं चीजें?

- हमने कई, आँ हाँ जिज्जी गए तो बड़े सौक सें हते, मगर बे चीजें तौ कल्लई बिक गईंती, कनलगत कै जाँ जाय भाग, तई लगै आग सो बई दसा हमाई है। ई पै बे बोली- चलौ मॉय रान दो ऊसें अच्छी जांगा लिवा चलबी उतै सें कर लियो खरीदारी और भाग खों दोस न देओ, अबै कम कमा रई का, देख लइयो एक दिना अपनी लियाकत सें करोड़न कमाहौ। सो हमनें कई हंओ जिज्जी तुमारे आसीरबाद सें एसई हुइयै।

- मन्नू राठ में आ कें तुमाए लाला जू सें एक एक बात बता दई, जा भी कै अमरीका बारी कौं निस्तार हजारन की रकम माँगत है, कां सें ल्याएं? बात उनकी समझ में भी आई, मगर अब नओ रावला सुरूं। पैलां तौ चोरी लूका खेलतते अब तौ एन धर की पौर में खिल रओ जुआ। का बताएं तुमसें बे तौ नितरोज अमरीका बारी खों दांव पै लगाबै की बात करत हैं, उनके संगी सगाती नासिया उनें पानी धरबे सें नई चूकत फिरी फंढ में इतनौ बड़ौ सामान को नई चाउत औ हम बन्दूक बचाबे के लानें एक एक चीज उनें गहाउत रए। औ बे दांव पै दांव खेल कें हारत रए। हमनें जी जान लगा दओ कै कैसऊ जा मायके की चीज बची राय मगर ओई बात है कै बुकरा की दाई कै दिना लों खैर मनाए।

- हमनें तौ भरसक पूरी कोसस कर लई! परों उन जुआरियन के खास घरै जाकें कै आये कै हमाए इतै आने की कौनऊ जरूरत नईयां।

- कै हमाऔई घर मिलो बिगारबो कों। मगर संजा बेरा फिर कऊँ जब जनें जुरे, जुआ खिलो, जानें का का खबो पिबो मन्नू, हम चिल्लया कें दौरे सो हमाई तौ देखौ का गत बना दई। रोउती जाँय औ पीठ और कूल्हन के नील और गूमरे दिखाउती जांय बेटीराजा।

ओऽऽऽ रज्जू ऽऽ हे ईसुरनाथ आ रा रा रा..............।

रज्जू जौ का भओ तुमए संगै.... हे राम.... कुड़ईबारी इतनी कहकें जैसें गूंगी हो गईं, मों सें बोल न कड़े। अपने हांतन सें अपनी नंनद और गुइयां की पीठ सौराउतीं जाँय औ रोऊती जाँय।

- रोउतई सिसकत बेटीराजा नें बताई कै कल्ल कौ पूरौ दिन कड़ गओ, सोसत समझत! कल्ल संजाबेरा जब फिरकऊँ चंडाल चौकड़ी जुरी, सो हमनें एलानिया कई कै खबरदार जो हमाए घर कों जुआड़खाना बनाओ! हमें कोई और न समझियो सौ नंबर डाइल करकें खड़े खड़े पुलिस बुलवा लेयोंगी जुआ खेलबे के इल्जाम में बंदे बंदे फिरहौ सब जनें....। जा रए कै करें फौन....।

- मन्नू हमाई इस धमकी सें जब वे औरें टस सें मस न भए, सो सांसऊ हमनें पुलिस दै बुलाई! जैसई दोरे मोटरसाइकिल रूकी, ऊसई सबरे कुबड्डु पाछें के दोरे सें दै भगे।

पुलस बारे दो जनें हते! मन्नू! उननें हमसें ऐसें पूरी बिथा पूंछी जैसें बाप भैया होंय। हमें उननें समझाई, कई कै हमोरें भी घर दोर बारे हैं। आप बिल्कुल न घबड़याओ न परेसान हो। कऔ तौ एक पुलिसबारो दोरें बिठा दें आपके।

- मन्नू हम तौ अपने आपे में न हते जैसें! बार बार दिमाक में जई-चलै कै पुलस आ गई, पुलस आ गई दोरें... एसौ तौ कभऊँ सपने तक में न सोचीती कै अपने ई आदमी के लँय पुलस बुलावनें परहै खास ओइके घर में! रुबाई रोंकें न रूकी! रो रो कें उनसें मुसकल सें कै पाए हम कै कौनऊ और उपाय जतन न देख कें हमें जा कदम उठाबे खों बेबस होनें परो!

कुड़ईबारी-रज्जो, तुम बेकार की बातें सोच रईतीं। जब आदमी कैसऊ गर्राट नईं छोड़ रओ, कोऊ की नई मान रओ! अनीत पै चल रओ औ तुमाऔई खा-खा कें उल्टौ तुमई पै सेर हो रओ, तौ फिर तुमनें जो करो, बिल्कुल ठीक करो।

- जौन बातें आपुस की राजीबाजी से नईं सट पाउतीं उनई के लानें बनी थाना पुलिस कचैरी।

- जे सब आदमन की सुवधा के लानें हैं, अंत में इनई कौ सहारौ रै जात। सो तुमनें बिल्कुल ठीक करो।

राजाबेटी-मन्नू जैसौ तुम कै रईं, ऊसई उन पुलसबारों ने हमसे कईं। अपने प्राइवेट नंबर दए मोबाइलन के। बोल कें गएते कै जैसई कौनऊ बात होय, हमें फोन करियो, हम सुबह फिर कऊँ आयेंगे।

- बे औरें चले गए। पै पूरी रात हम जौई सोचत रए कै का सें का हो गओ। मगर करें भी का। ई के अलावा कौनऊ और चारौ भी तौ न हतो।

- औ फिर असर तो इसी कदम कौ भओ। जौन काम बिनती, चिरौरी सें न बनो, न भओ। बोई पुलिस की एक गश्त सें हो गओ। कन लगत कै लातन के भूत मानत क्याऊँ बातन सें।

कुड़ईबारी हँसपरी बोली- संसकिरत में सोऊ कई है- सठे साठ्यं समाचरेत। सो बिन्नू जो जैसौ होय, ऊ के संगै ओई तरीका सें निपटनें चइये।

बेटीराजा- मन्नू सच्ची बताएं तुमें। सबेरें जब पुलिस बारे आए। सो हमें ऐसें लगो, जैसें कैउ गुना ताकत बढ़ गई होय हमाई। जी बिल्कुल सांत औ निर्भय सौ हो गओतो। हालांकै बे औरें भीतर नई आए, बायरें से हाल पूछकें चले गए। एक गिलास पानी तक न पियो,

हमनें तौ कही भी। बोले ड्यूटी पै हैं बहनजी, फिर कभी आएंगे....।

– पहली बार लगो कै हम कैसे साजे राज में, साजे देस में, साजे प्रजातंत्र में रै रए हैं। हमाऔ भी कोऊ है, जो सबसें ऊपर औ सबसें बढ़ कें हैं। नियम कायदे कानूनन कौ बड़कपन एन दिखा परो हमें। जौ भी कै राज औ देश हमाये लानें हमाई रक्षा के लानें कितनौं कछू करत रत, औ गाफिली में हम औरें इतने बड़े तत्त कों कभऊँ देखतईं नइयां। ओई बात है कै घर की मुर्गी दाल बिरोबर।

कुड़ईबारी हंस परी– हओ बिन्नू, तौ अब मुस्क्याऔ कै हम उत्तर पिरदेश में हैं।

सुनकें बेटीराजा भी हंस परी बोली, जा और जोर ल्यो– मुस्क्याऔ कै हम लोकतंत्र बारे भारत में हैं।

पुलस बारे हमें दिलासा दै कें चले गये। तुमाए लालाजू तौ फिर रात तक में घरै न आए। भुनसारें आए तौ मगर कछू बोले नई हमसें। हम भी चुप्प रए। भौत सोच समुझ कें हमें जई जँची कै दद्दा सें साफसाफकै दें कै अपनी अमरीका बारी अपनेई पास धरौ! जई हमने कै भी दई।

– कुड़ईबारी– बिन्नू का बताएं तुमें, तुम तौ सासरे की हो गईं। औ इतै नित्त रोज कभंऊ भइयन भइयन में तौ कहूँ अम्मा दद्दा में तौ कहूँ हरवाए से कौनऊ न कौनऊ बात पै अनुआ हो परै और बात बात पै बा परमेसुरी अमरीका बारी निकर परै! जी के हांत में परै सो बंदूक लै कें ऐसें खांय खांय दौरै जैसें बस अब घली कै तब घली।

– इनई सब बातन सें उबया कें दद्दा तौ इयै बेचने के लानें आदमी लगाउन लगेते। इ कारन से भी कै बंदकू है एक, औ धन जायदाद के हींसा हौने दो।

जियै न दई, ओई खों मलाल। फिर ऐसी गुस्सैल संतानों खों
साक्षात् काल कैसे सोंप दई जाए।
आपसई में मर मिटेंगी जे तौ।
जई सब सोच कें दद्दा बेंच रयेते जाखों।

आदमन की बातें आदमन सें भईं, सो लालाजू खों पता पर गईं। जब दद्दा नें कई कै एसौ कोऊ नईयां कै इयै लै जाबै तौ कम से कम पुरखन की चीज घरई में बनी राती। लालाजू तुरंत आगे आ गए, दद्दा सें लैबेकी कई, सो देख लो छिन भरे में दद्दा नें लालाजू कों सोंप दई। बे का जानत ते कै बंदकू नई जा तौ सीदी बरबादी आ जा रई बिटिया के इतै......।

बेटीराजा– तुम जा जान लो कै हम तौ उनसें जौ बहानों बनाकें आयेते इतै, कै अम्मा के पास हमाई अँगूठी है, बा लैबे जा रये। अपने लानें नई तुमाए लानें। उए बेंच के कुछ दिनन कौ खरचा तौ मिलई जैहै तुमें। सो बोले हओ, जाऔ मगर रातई में आ जइयो।

कुड़ईबारी– सो अब का कैहो लालाजू सें?

राजाबेटी– कानें का है जई कै सबरौ गानों गुरिया बैंक के लॉकर में रक्खो है सो अबै तौ नई मिली..........। कह कें हंस परी।

**** **** **** ****

दूसरे दिना दोऊ बाप बिटिया पौंचे राठ। एन हंसी खुशी कौ माहौल, एसौ जैसे कभऊँ कछू भओअई न होय, काय की रार तकरार और काय कौ झगड़ा झंझट! बिल्लैंयां जू नें रई सई संका मिटा दई, दमाद सें बोले– ''भैया हमाए मिड़ोइया बबेले जू तुमारा मानपान अपने दमादन सें बढ़कें करत हैं। हमसें कैरएते कै ब्याव कौ न्यौतौ देने हैं राठ बारे लालाजू कों। सो भैया हमनें उनसे कै दई कै तुम अपनों काम दंद देखौ, मौड़ी के ब्याव में जौ लों बिदा नई हो जातई, तौ लों सौ काम दंद होत करबे के लानें, हम चले जैहें। सो भैया तुमें और बेटीराजा को ब्याव में तौ आउने परैं, भींत से भींत लगे हमाए घरन की दोऊ बिटियन में भारी हेलमेल है उर्मिला ने हांत जोर कें किवा भेजी– जीजाजू जरूर आइयो ब्याऔ में।

दामाद– दद्दा हम तौ सोऊ उर्मिला कों सारी से बढ़कें मानत हैं, तुम निश्चिंत राऔ हमोरें जरूर आयेंगे।

बिल्लैयां जू– बड़ी अच्छी बात है बेटा, उनै भौत नोनों लगहै। बेटा तनक बा अमरीका बारी तौ लाइयो। बाके कारतूस धरे थैला में, सो तनक तुमई लगा हेरौ बा में। कारतूसन की बात सुनकें दमादराजा अपनी जांगां सें ऐसें उचके जैसे करेंट लग गओ होय। फुर्ती सें उठे औ लो

छिन भरे में अमरीका बारी बंदूक हाजिर हो गई। बड़ी हुसयारी से बिल्लैंयां जू नें बंदूक अपने कब्जे में लै कें दमाद कों चाबी पकरा दई, बोले–सूटकेस में कारतूसन बारौ करिया थैला है, बायरें तौ काड़ियो तनक!

दमाद ने सूटकेस में चाबी लगाई, पूरौ सूटकेस ढूंढ़ मारो कारतूस नई मिले। होते तौ मिलते! बड़ी दीनता से बोले– दद्दा जा में नईया!

बिल्लैंयां जू– अरे बेटा जई में धरेते हमने! मुजान में तुमाई अम्मा ने बौ थैला निकार लओ, लड्डुअन के धोके में। असल में हमाई सक्कर इतनी जादा बढ़ गई है बेटा कै मइनन से कम होबै कौ नांव नई लै रई। खूब दवाई दारू कर लई मगर कायखों ठीक हौने, तुमाई अम्मा नें जा जान लो कै मईनन सें हमें तरसा डारो, एक चिंटी बिरोबर मिठाई कै मीठ के हकदार नई रै गए बैन...............।

– अबै कल्लई बबेले जू समद्याने के टुकनिया भरे लड्डुआ दै गएते। हमनें ससुर अपनेई घर में चोरी लूका सें एक करिया थैला में किलोख़ांड़ लड्डुआ भर लयेते! हमें का पता हती, कै हमाई चोरी पकर लई गई है......।

अब समुज में आइ कै काए खों तुमारी अम्मा हमें देख देख कें खूब चौड़ी मुस्क्यान सें बार बार बौ गाना गा रइती– लाख छुपाओ छुप न सकेगा, राज हो कितना गहरा.............।

मुजान में उनई ने लड्डुअन के धोके में बौ कारतूसन कौ थैला निकार लओ....

– बेटा, कछू बात नईयां, ब्याव में तौ तुम आइ रए हौ, तौ लों हम इसकी साज समार तेल पानी कर लेंगे। औ हाँ, इसकौ लाइसेंस तुमाए नाँव टिरांसबर करनें है, सो बेटा एक एप्लीकेसन लिख कें दै दो, तैसीलदार के लाने कै इस अमेरिकन सैरेज कौ लाइसेंस हमाए नांव कर दओ जाय।

बिल्लैयां जू की बात सुनकें दमादराजा फूले न समाने! अब तौ बंदूक कौ लाइसेंस उनके नाम होबे जा रओतो! बोले– दद्दा हम अबई लिखें दै रए।

बिल्लैंया जू– बेटा अब ई बात कौ ध्यान राखियो कै कोउ सें उरजनें बिदनें नइयां तुमें। इतै के थाने बारे सोई आहें तुमाए पास खानापूरी के लाने। सिरकारी नियम है बेटा, अस्त्र–शस्त्र कौ तबादला होय औ चाय खरीद फरोख्त होय, सबमें पुलस थाने की रपोट लगत है।

बिल्लैंयां जू की बात सुनकें सनाका खा गए दमाद जू। मन में सोची कै ल्यो, गओ आज सें जुआ। हर्र लगै न फ्टिकरी, जुआड़ी

ससुर के खबाउत पियाउत हते सो अब बौ भी गओ! मगर उनकौ आबो एकीएका कैसें हम बंद कर सकत। फिर हम भी तौ खेलतते! बढ़ियल टैम कट रओतो, मगर इस अमरीका बारी ने सबरौ बिलोर दओ! ओ तोई जै हो जाय महामाई ! एकीएका खियाल आओ कै जबसें पुलस आईतीं, तबई सें सबरे जुआड़ी यारों ने खुदई हमसें कन्नी काट लई। सो जौ तौ एन साजौ भओ।

बिल्लैंया जू के बार एसई सफेद न भएते दुनियादार हते, पटवारी रै चुके थे आसमान की चिरैया के पंख गिनबे कौ हुनर हतौ उनमें। वे ताड़ गए दमाद कौ दुचितापन, सोचविचार और परेसानी। बिटिया की दुर्गत सें तौं भौतई जादा दुखी थे। बे उन मानसन में थे जो बिदी खों निबेरबे में दते रत। कछू सोच कें उनने जेब सें दो दो हजार के पांच नोट निकारे, बोले-बेटा कैऊ दिनन सें तुमसें कानेंतो, मगर टैमई न मिल पाओ। पै चलौ आजई सइ।

– बेटा तुमारौ इतनों भारी घर है। लिखे पढ़े हौ। खेती किसानी बारे हौ। अगर घर बैठें रुजगार करनें होय तौ जैसी बताऔ जे पइसा ओई के लानें हैं।

दमाद जिनकौ नाँव प्रथमेस हतो, थे तौ जुझारू। बौ तौ अगर पी0सी0ओ0 मद्दौ न हो गओ होतो, तौ लो आज अच्छे मस्त रोजी रूजगार बारे होते! जौई आ कहाउत बखत! बखत ने तौ अच्छे अच्छन खें धूरा चटा दई, और गिरे से गिरे हकीर-फकीरन के दीन दुखियन के भाग जगा दये! सो ओइ बखत आज प्रथमेश के संगै हतो स्यात।

तुरन्त बोले प्रथमेश-दद्दा हम तौ बैठेई हैं रूजगार के लँय, तुम बताऔ तौ कैसो का है!

बिल्लैंया जू- बेटा बबेले जू की हिरदय से कामना है कै उनके खाद की एजेंसी तुमें मिल जाय। हमसें मईना भर पैलां कै रएते कै अपने पिरथमेस लाला जू अगर राठ जैसी जांगां में अपने घर के एक कमरा खों हमारौ एजेंसी ऑफ्सि बना दें तौ कितनौ अच्छौ राय।

– बेटा उनकौ खाद सरकारी जौसौं नइयां, उनके बड़े दमाद एग्रीकल्चर में भौत बड़े एहलकार हैं। बिननें कौनऊ ऐसी खोज करी है, कै अपनी देसी चीजें लगती बा में और इतनों बढ़ियल खाद तैयार होत है, कै कैसऊ फसल होय, दुगनी तिगनी पैदावार तौ निश्चित जान लो होनई हौने हैं।

– हमाए रोकत रोकत पै उनने हमाए हांत में जे पइसा कोंड़ी धर दये कै पिरथमेस अगर मान जँयें तौ दुकान और आफिस बनवाबे के लँय हमाई तरफसें उने जै दै दइयो।

कनलगत कै अंधा क्या चाहै, दो आँख! सो बई दसा प्रथमेश की हती! तुरतई मान गए। तै हो गई कै खैबे पीबे के बाद दुकान और ऑफ्सि के लानें तैयारी करी जै है, घर के कमरन में से कौन सौ बढ़िया रैहै, कमरा छाँट कें फिर चलबी बजारै..................

**** **** **** ****

साम कें जब ट्यूसन और कोचिंग पढ़ा कें बेटीराजा घरैं गईं सो दद्दा कों देखकें ताज्जुब में पर गईं। दूनौ ताज्जुब तब भओ जब ऐन बड़ी मेज, घूमबे बारी कुर्सी और रकम रकम की चीज......। कछू न बोलीं, भीतर चली गईं थकी मांदी थीं। हांत पांव धो कें कपड़ा उन्ना बदल कें चोंका तरपीं गईं। बेटीराजा खों देख कें प्रथमेश ऊसई मुस्क्याने, जैसें पैलऊँ पैलां बाए देखबे गएते और मुस्क्यानेते! ऐसी सुंदर मुस्क्यान देखकें बेटीराजा नें गौरगनेस सुमरे, भगवान इनके मुख कों एसई सजाएं रखियो ईसुरनाथ....। आँखन में खुसी न समानी, पानी बनकें ढरकन लगी।

बड़ी लगन सें प्रेमनैम सें प्रथमेश ने बेटीराजा के हातन में चाय कौ कप पकरा दओ, उए रोउत देख कें खुद रुआंसे हो आए बोले- माफी दै दो, रज्जो अब इस जीवन में तुमपै कभी हाथ नई उठायेंगे!

– रोऔ न, देखौ आज कितनों सुहावनों दिन है, आज सें जिंदगी बदल गई अपनी तौ!

बेटीराजा- ऐं ऽ ऽ ऽ

प्रथमेश- हओ।

फिर तौ प्रथमेश ने अपनी औ दद्दा के बीचां भई बातें, बबेले जू की खाद बारी एजेंसी.... सबरी एक एक राई रत्ती बात बता दई। बोले कै दद्दा नें जिंदगी बदल दई हमाई तौ।

खुसीमन बेटीराजा सोच रईतीं-दद्दा नें कै अमरीका बारी नें!

न अमरीका बारी आउती न जौ सब रावला होतो औ न दद्दा बबेले जू कौ बौ काम, जौन बे कोउ और खों दै रएते, इनें देते! जै हो तोरी अमरीका बारी। हमाई सच्ची हितू मीत निकरी तें तौ।

-एसोसिएट प्रोफेसर-हिन्दी
128/387 वाई वन ब्लाक
किदवई नगर, कानपुर, उ.प्र.
मो.नं. 9415537644

## बुन्देली ग़ज़ल

-पन्ना लाल 'असर'

खेलो जम कें खेल, कका जू धीरें धीरें
धन,बल, दल को मेल, कका जू धीरें धीरें
बखत परे पे चाय गधा खों बाप बनालो
ठेलो, ठेलम, ठेल, कका जू धीरें धीरें

बन जावे जब काम, किनारें सबखां कर दो
डारो नाक नकेल कका जू धीरें धीरें
जब जी, चाहो मार, कुलइया काटो छांटो
चढ़ जावे जब बेल, कका जू धीरें धीरें

आलू, प्याज, टमाटर, जब सस्ते हो जावें
महगों कर दो तेल, कका जू धीरें धीरें
लूटो खाओ बाबा बनके खूब तिजोरी
भरलो पेलम पेल, कका जू धीरें धीरें

हो रए एक्सीडेंट, मरी जा रई जा जनता
फिर भी चल रई रेल, कका जू धीरें धीरें
धीरें, धीरें, भीतर,भीतर पोलें खुलने
होने है फिर जेल, कका जू धीरें धीरें

आ जे हो जब छूट, जमानत पे तुम जिदना
लूटो, हार, हमेल, कका जू धीरें धीरें
असर सियासत में केवल तुम झंडा बदलो
सब खों देव धकेल, कका जू धीरें धीरें

चलत चलत में असर किते कब जो रूक जाने
जीवन की जा रेल, कका जू धीरें धीरें

# जोधराज कृत हम्मीररासो में निहित इतिहास

-उमेश कुमार गुप्ता

भारतीय काव्य परम्परा के आलोक में रासों काव्य की विधा का स्वयं में विशिष्ट स्थान है। मध्यकाल में काव्यकारों ने नायकों को केन्द्र में रखकर कथात्मक काव्यों की सर्जना की। इन काव्यात्मक ग्रन्थों की रचना की पृष्ठभूमि में रचनाकार का मुख्य उद्देश समकालीन परिदृश्य में अपने नायक, संरक्षक को केन्द्र में रखकर घटनाओं-परिघटनाओं का वर्णन करना था। रासो पुल्लिंग संज्ञा है, जिसमें किसी शासक के चरित्र, प्रेम, युद्ध आदि का वर्णन किया गया है।[1] रासो ग्रन्थ सामान्यत: चरित्र काव्य होते हैं। इनकी विषयवस्तु-चरित्र-नायक से सम्बन्धित हुआ करती थी, जिसमें उसके वंश आदि का वर्णन होता था। इसके अतिरिक्त काव्यकार द्वारा नायक के चतुर्दिक घूमती सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं का बौद्धिक वर्ग के समक्ष काव्यकला के माध्यम से प्रदर्शन किया जाता था।

चरित्र काव्यों के लेखन की यह परम्परा संस्कृत-काल से आई प्रतीत होती है। संस्कृत साहित्य में लिखित रघुवंश, कुमार संभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नैषध-चरित्र एवं श्रीकंठचरित आदि ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। इनके अतिरिक्त पूर्व-मध्यकाल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं को केन्द्र में रखकर कई चरित्र-काव्यों की रचना की, जिनमें विक्रमांकदेव-चरित्र, कुमारपाल-चरित्र, पृथ्वीराज विजय, हम्मीर-महाकाव्य एवं सुरजन-चरित्र आदि प्रमुख हैं।[2] विशेषत: पृथ्वीराज रासो की प्रसिद्धी के कारण अन्य रासो लिखे गये। भारत में सन् 1296-1316 ई. तक खिजली वंश के अलाउद्दीन मुहम्मद शाह का शासनकाल रहा। इसी मध्य रणथम्भौर के हम्मीर सिंह का युद्ध अलाउद्दीन खिलजी से हुआ। युद्ध का कारण यह था कि हम्मीर सिंह ने अलाउद्दीन द्वारा निष्कासित मीरजाफर को शरण दी थी। जिसकी रक्षा करने का संकल्प भारतीय संस्कृति के अनुसार राजा हम्मीर सिंह ने किया था।

यह बात निश्चित है कि हम्मीर सिंह का काल भी 12 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 13 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के मध्य होना चाहिए। इस प्रकरण को हम्मीर महाकाव्य में भी लिखा गया है। यह महाकाव्य तोमर वंश की नवीं पीढ़ी के गोपांचल (ग्वालियर) के शासक तोमर नरेश वीरम के काल में लिखा गया। सम्वत् 1688 का रोहतास (जिला झेलम, पंजाब) से प्राप्त तोमर नरेश मित्रसेन के काल के शिलालेख में नवीं पीढ़ी में वीरम का स्थान दिया गया है।[3] हम्मीर महाकाव्य में हम्मीर सिंह के राज्याभिषेक का सं. 1330 वि. दिया है, जो कि युक्ति संगत लगता है। अस्तु नीमराणा के राजा चन्द्रभान की आज्ञा से जोधराज कवि ने सं.1785 वि. में हम्मीर रासो की रचना की। कवि जोधराज आत्रि ऋषि गोत्र के बाह्मण थे। इन्होंने रणथम्भौर के राजा हम्मीरदेव और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुये युद्ध का वर्णन हम्मीर रासो में किया है। यद्यापि हम्मीर रासो में हम्मीर सिंह की जन्मतिथि सम्यक् प्रतीत नही होती, किन्तु नैनचंद्र सूरि कृत संस्कृत में रचित हम्मीर महाकाव्य की कथावस्तु से समानता मिलती है। दोनों कृतियों में हम्मीर सिंह द्वारा की गई आत्महत्या का वर्णन है। इसका कारण यह था कि हम्मीर सिंह ने युद्ध में विजय प्राप्त की। अलाउद्दीन पराजय का अनुभव करते हुये रणक्षेत्र से वापस चला गया; तब शत्रु सेना के अस्त्र-शस्त्र और ध्वज आगे रखते हुये हम्मीर सिंह सेना सहित वापस लौटे। किले से क्षत्राणियों ने इसे शुत्र सेना का आगमन समझ स्वयं को अग्नि में समर्पित करते हुये जौहर कर लिया। इससे दुखी होकर हम्मीर सिंह ने आत्महत्या कर ली। हम्मीर रासो में हम्मीर सिंह के जन्म के विषय में लिखा है-

*''ससि बेद रूद्र संबत गिनो, अंग खाभ्र षित साक।*
*ताही दिन रणथंम गढ़, जन्म हमीर सु आय।।''*[4]

इस दोहे में निहित सम्वत् इस प्रकार निकलता है; शशि-1, वेद-4, रूद्र-11। इस प्रकार सं. 1141 हुआ। जबकि यह अलाउद्दीन खिलजी का काल नही था। ज्ञातव्य है कि हम्मीर सिंह को पृथ्वीराज चौहान का वंशज पृथ्वीराजरासो में बताया गया है।

राजस्थान में अलवर के समीप राठ के निवासी बालकृष्ण के पुत्र जोधराज द्वारा हम्मीर रासो लिखा गया। हम्मीर रासो में मीरजाफर को मीरमहिमा शाह लिखा गया है और रहस्य, रोमांच युक्त वह कारण भी दिया गया है जिसके फलस्वरूप अलाउद्दीन ने उसे निष्कासित किया था। इतिहास इस कारण के विषय में मौन है। अलाउद्दीन खिलजी की एक पत्नी का नाम रूपविचित्रा था। एक बार यह जलक्रीड़ा कर रही थी तभी तीव्र तूफान आया जिससे वह भटककर जंगल में पहुंच गई और शीत से इतनी ग्रसित हुई कि उसके प्राण संकट में पड़ गये। संयोग से उसकी भेंट महिमाशाह से हो गई, महिमाशाह से प्रणव निवेदन करने पर महिमाशाह ने विनम्रता पूर्वक मना कर दिया तब रूपविचित्रा ने शीत से कांपते हुये पुन: आग्रह किया-

*''तब महिमा कर जोरि हुरम कूं सीस नवायौ।*
*चढ़यौ अस्व की पिट्ठिठी दैव पहुँचाव सुभायौ।।*
*कहै हुरम सुन सेख देह कंपत है मोरी।*
*छिनक बैठि यहिं ठोर सरन मैं लिन्री (लीनी) तोरी।*
*कहै सेख यह बात नहिं, तुम साहिब मैं दास तुव।*
यह धरम नाहि उलटी कहो, सरन सदा सेवक सुभुव।। ''[5]

अंत में महिमाशाह संसर्ग के लिये उद्धत हुआ; इतने में ही एक शेर आया तब महिमाशाह ने सहज में ही शेर को बाण मारकर ढेर कर दिया जिससे रूपविचित्रा बहुत प्रभावित हुयी। महिमाशाह को रूपविचित्रा ने इस प्रसंग की गोपनीयता बनाये रखने के प्रति आश्वस्त किया। कुछ दिनों बाद जब अलाउद्दीन ने चूहे को बाण संधान करके मार दिया-

''हजरत हरिष तीर तिहिं दिन्नौ। चूहौ प्राण-हीन तब किन्नौ।। तबहीं साहि हरषि मुसकाए। तिय कौ ऐसे बचन सुनाए।।[6] और गर्व से रूपविचित्रा से कहा कि स्त्री स्वाभावश कायर होती है ऐसा हम जानते है। अत: देखो मैंने इसे मार डाला-

''कायर जाति तिया हम जानी। तातैं यह हम प्रथमहिं ठानी।।''[7]

तब रूपविचित्रा ने मुस्कुराकर कहा कुछ ऐसे वीर भी होते हैं जो अवसर पर शेर को मारकर भी गर्व नहीं करते हैं। तब

अलाउद्दीन विस्मित हुआ और ऐसे वीर को अभयदान का वचन देते हुये रूपविचित्रा से महिमाशाह के बारे में जान लिया और बाद में महिमाशाह को बुलाकर उसे अपने साम्रज्य से निकाल दिया। तब महिमाशाह कई राजाओं के पास शरण के लिये गया पर कहीं उसे शरण नहीं मिली, किन्तु हम्मीर सिंह ने उसे शरण दे दी। हम्मीररासो के अनुसार शरणागत की रक्षा के लिये लम्बे अंतराल में वर्षो तक युद्ध हुये। शरणागत रक्षा का ऐसा उदाहरण अन्यत्र नहीं मिलता। तभी से हम्मीर हठ उक्ति अस्तित्व में आयी-

*''हठ तौ राव हमीर को, औ रावण की टेक।*
*सत राजा हरिचंद को, अर्जुन बाण अनेक।।''*[8]

तब अंत में अलाउद्दीन ने कूटनीति का सहारा ले जगरा के भोज को अपनी ओर मिलाकर नई रणनीति बनायी, क्योकि अलाउद्दीन भी निराश हो चुका था। हम्मीर-महाकाव्य में भी यह प्रसंग मिलता है। इससे पता चलता है कि व्यक्ति स्वार्थ में कितना अंधा हो जाता है। अलाउद्दीन ने विश्वासधाती को सुरा और सुन्दरी का रसास्वादन कराया-

*''अंतरंत:पुरं नीत्वा शकेशस्तमभोजयत्।*
*अपीप्यत्तद्भगिन्या च प्रतीत्यै मदिरामपि।।*
*प्रतिश्रुत्य शकेशोक्तं तत: सर्व स दुर्मति:।*
*विरोधोद्बोधिनीर्वाचो गत्वा राज्ञे न्यरूपयत।।''*[9]

हम्मीररासो में 969 पद्य है, चौपाई, दोहरा, पद्धरि, मुक्तादाम, छप्पय, लघुनाराच, अर्द्धनाराच, भुजगप्रयात, मोतीदाम, त्रोटक, कवित्त, दातार, बियक्खरी, हनूफाल, रसवाल, त्रिभंगी छन्दों का उपयोग किया गया है। यदापि भाषा बहुत कठिन नही, किन्तु कवि राजस्थानी भाषा का मोह नही छोड सका है। कहीं-कहीं पर वाचनीक के अन्तर्गत गद्य भी दिया है। कवि ने स्वयं को अत्रि वंश से उत्पन्न बताया है। अत: ऋषियों का भी उल्लेख किया है। हम्मीररासों में वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ऋतुओं का वर्णन अलग-अलग छन्दों में किया है। प्रकृति-चित्रण भी मनोहर है। अथ तुलसीदास पूर्व पक्ष शीर्षक के अन्तर्गत तुलसी का दोहा- ''का नहिं पावक जरि सकै, का न समुद्र समाय''।[10] आने से यह कृति निश्चित ही 16 वीं शताब्दी के बाद की है। एक अन्य हम्मीर सिंह के होने के भी प्रमाण मिले हैं। सन् 1301 ई. में अजयसिंह के पुत्र हम्मीर सिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। इनका देहावसान सन् 1365 ई. में हुआ।

रासो काव्य परम्परा में हम्मीर रासो शीर्षक से कई कृतियों का उल्लेख मिलता है। सं. 1357 का शार्गधर कृत हम्मीररासो, सं. 1425 का जज्जल कवि कृत हमीर रासो, सं. 1872 का महेश कवि कृत हम्मीर रासो का उल्लेख मिलता है।'' संभव है इन हम्मीर सिंह के जीवनवृत्त का इन्ही किसी रासों में उल्लेख किया गया हो। यद्यपि कवि जोधराज ने हम्मीररासो में सं. 1440 में अपने जन्म होने का उल्लेख किया है-

''सौ चौदह सै चालीस च्वार। जन-सासन-सागर अति उदार।। अब सब को किंकर मोहि जानि। ऋषि अत्रि मैं जन्म मानि।।[12]

किन्तु तुलसीदास के दोहे का उल्लेख होने से यह बाद की कृति लगती है, या तुलसीदास का दोहा बाद में जोड़ा गया है। कृति के समापन पर उल्लेख किया गया है कि यह ग्रन्थ सं. 1785 में पूरा हुआ-

''चंद्र नाग बसु पंच गिनि, संबत माधव मास।
सुक्ल सु त्रतिया जीव जुत, ता दिन ग्रंथ प्रकास।।''[13]

मध्यकालीन शौर्य एवं शासक वर्ग की मानसिकता (Mentality) के अध्यन के लिये रासो साहित्य आधारभूत स्रोत हो सकता है। इस प्रकार के साहित्य का मध्यकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों एवं व्यवहारों के अध्ययन के लिये महत्तवपूर्ण योगदान हो सकता है। इस वर्ग की मूल्य -व्यवस्था के अध्ययन का तो यह एक उल्लेखनीय स्रोत है। अन्त में कहा जा सकता है कि इतिहास के विभिन्न पक्षों के अध्यन के लिये रासो साहित्य एक अमूल्य निधि है। सरकारी दस्तावेजो एवं शिलालेखों मे सामग्री उपलब्ध नही हों सकती वह इस प्रकार के काव्यमय साहित्यक-इतिहास ग्रन्थों में प्रचुरता उपलब्ध होती है।

**संदर्भ संकेत-**


1. रामचन्द्र वर्मा-सक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1958 पृ. 847
2. प्रो. भँवर भदानी-रासो त्रैमासिक शोध पत्रिका, अजमेर में मुद्रित लेख, भाग-1 वर्ष-1-2005 पृ. 3
3. सम्पा, माताप्रसाद गुप्त-पृथ्वीराज राउस, साहित्य सदन चिरगांव, झाँसी सं. 2020 पृ. 119
4. कवि जोधराज-हम्मीररासो, सम्पा, श्यामसुंदरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2006 पृ. 30
5. वही-दोहा 221, पृ. 39
6. वही-चौपाई छंद 247, पृ. 44
7. वही
8. वही-दोहा 660 पृ. 116
9. हम्मीर-महाकाव्य सर्ग 13, श्लोक 81, 82, पृ. 58
10. कवि जोधराज-हम्मीररासो, सम्पा., श्यामसुंदरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2006, दोहा 158 पृ. 28
11. डाँ. विजय कुलश्रेष्ट-पृथ्वीराज रासो का लोक तात्विक अध्ययन, मंगल प्रकाशन, जयपुर-1 प्रथम संस्करण 1985 पृ. 26, 27, 48
12. कवि जोधराज- हम्मीररासो, सम्पा., श्यामसुंदरदास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2006 छप्पय 9 पृ. 3
13. वही दोहा 968 पृ. 163



-विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म. प्र.)
मो. नं.-8960972198

# नशा कौ रोग

-डॉ. दुर्गेश दीक्षित

अपने देस में जौ रोग आज काल भौतई फैलत जा रओ है। सिहरन की तौबातई अलग है, हर गाँव में ई रोग के रोगी, गलिन-खोरन में लुड़कइयाँ लेत दिखान लगत। गाँवन में तौ दिन-बूड़ई सें बऊँवन बिटियन कौ बायरै-कड़बौ मुश्कल हो जात। ई रोग नें कैऊ घरन खौं धूरा में मिला दओ। जीखौ ईकौ चिखों लग जाय, वो ईखौ कैसउँ नई छोड़ सकत। ऐसी कानात कई जात कै 'लबकी गाय गुलेदे खाय, बेर बेर मौआ तरे जाय'। जैसें मिलें तैसे, उयें तौ दारू चानें। कनलगत कैं 'आग लगै चाय धुआँ धुदांय, टूटी पलकिया सरगै जाय'। हमाये परोस में एक जनें कनई कक्का रतते। ऊसै तौ वे भौतई भोरे-भारे उर सूदे दिखात ते। उनके बोल चाल सै तों फूलई से झरतते सबई काऊ सैं उनकौ भौतई अच्छौ व्यौहार हतो। कोउ उनसै कैसंऊ नाराज नईं हो सकत तो। थोरे भौत पढ़े लिखे सोऊ हते सोऊ उनखौं हल्की सी सिरकारी नौकरी मिल गई ती। ऐईं से वे जात-बिरादरी के पटिया माने जात ते।

भइयां बंद जात-बिरादरी के उनके आंगै-पाछैं फिरन लगेते। उनें ना जानें कैसे दारू कौ चिखों लग गओ तों। उनकी ऐंसी आदत बिगारी कै जब देखों जब दारू के लानें पूछ हलाउत फिरत रतते। दारू बिना उने कैसऊ चैन नई परत तौ। पैलां तौ वे दिन में एकाद दार एकाद पौवा डार लेतते। हरां-हरां ऐसी आदत बिगरी कैं वे चौबीसई घंटा ओई में धुत्त रन लगे। घर-परवार कौ चाय जौ बिगर जाय उनें तो परती बेरां दारू जरूरई चानें। कनई कौ भौतई बड़ौ परवार हतो। चार बिटियाँ उर एक लरका, फिर दोई जनें वे।

अब बताव, घर-परवार में का का नईं चानें आऊत। नाज-पानी, नौन-तेल, उन्ना-लत्ता, साग-सब्जी, दार-चावर, दूद-घी, सबई कछू तौ लगत घर गिरस्ती में। उनकी बिटियाँ ब्याव लाख सियानी होत जा रईती, उर उनके ब्याव-काज की चरचा होंन लगीती। पगन्यण पै उनें पइसा-टका के बिबूचन होंन लगीती। थोरक सी चारक एकड़ खेती किसानी की जमीन बची ती। ऐसी कानात कई जात कै उन्नों काजर नई हतो सो लुअरई आंज लओ। घर में कछू गुंजास नईं रइ सो भइया नें वा जमीनई बेंच डारी। भाग सें उनें दसक लाख रूपइया मिल गये। इत्ती बड़ी रकम उनें कबै देखबे धरीती। कन लगत कैं 'बाप राज खाये न पान' दाँत निपोरें कड़ गये प्रान। अब का कनें रात दिना पौवन के दौर चलन लगे। चार-छै ठलुआ भइया उनके आगैं-पाछैं चक्कर काटन लगे। कन लगत कैं मै उर मोरों पाँवनौ। खूबई छक्कें पंजे उड़न लगे। घर में बन्न-बन्न कौ सामान आ गयो।

एक नओ मकान सिहिर में मोल लैकै, ठाट सैं रन लगे। ऊ बेरा वे अपनें आपखौं कोनऊ अच्छे खौं सें कमनई मानत ते। गेरंऊ मूँछै उमेतें फिरतते कनई कक्का। अकेलैं उनकौ जौ साकौ कछुईई दिना कौ रओं। उनकी आदतें तौ पैलां सै तौ बिगरिअई हतीं। भइया खौं तौ पौवा चलतई हतो। भइया सेर तो उनकी घरवारी रामकली पसेरी हती खरच करबे में। ऊकी जीब चटोंनिया के लानें चौबीसई घंटा ऊकी चारई बिटियाँ दुकानन-दुकानन फिरतई रततीं। कन लगत कै 'खाँय-खाँय पहाड़ बड़ा जात'। ऐसऊ हाल उनकौ भओ हरां-हरां पूरी की पूरी रकम बिलागई उन की उर ऊपर सैं लाखन कौ करजा अलग हो गऔ उनपैंइ ऐसी बीच में उनें एक बिटिया उर एक लरका कौ ब्याब करजा लैकैं करनें आव। कन लगत कैं 'दूबरी उर दो अषाढ़, चरन गई दूर कौ हार' अब बताब कैसे चुकें उनकौ जो इत्तौ बड़ौ करजा? दैबे बारे रात-दिना देरी कूचें डारें ते। उनकौ खाबौ-पीबौ हराम हो गओ तो। ऊ बेरां उन्नें ऐसी सोस लई कैं भीक छोड़ी उर कुत्तन सैं बचे कछू जनें जा सोऊ कन लगत कैं बा भीक छोड़ी उर कुत्तन सैं बचें'।

कनई कौं जिऊ लोगन खौं टार-टारकैं उकरायदें हो गओ तो। साव-ककन नें कैऊ गुनों ब्याज त्याज अपनें-अपनें रूपइया तिगुने उर चौगुनें करलये ते। अंत में उनें सिहिर कौ मकान बेंच कैतुरतईं सावन कौ करजा चुकावनें आव। उनकी घर गिरस्ती कौ सामान उर मौड़ी-मौड़ा अले मैदान में ठाँढे हो गये। जो कछू मिलो सो वौ तुरतई चुट्ट-पुट्ट हो गओ। वे हो गये जई के तई कोरम कोरे। कन लगत कै 'मूँढ़ मुड़ाये ओरे पर गयें'। अब बताव इतनें बड़े लगदानें रूकबे खौ अब कितै है ठौर रकवे वे दर-दर की ठोकरें खात फिरन लगे। तोऊ उन्नें खाबौ-पीबौ नई छोड़ो अले मैदान में एक बड़ों सों टपरा डारकैं रन लगें। तनखा तो बीसक हजार मिलतई हती, सो चाय जौंन दुकानदार उनें उदार दै देत तो उर वे तीस-तारीक की बाट हेरैं रतते। पैली तारीक खौं उनके दोंरैं तगादे बारन कौ मेला सौ लगो रत तो। उनकी पूरी की पूरी तनखा एकई दिना में साफ हो जातती।

अब इत्ते जनन कौ खाबौ-पीबौ नौंन-तेल, दार उर उन्ना लत्ता काँसें आऊतते। फिर दोई-जोर कनई कक्का खौं पौआ चानें। उनें तौ ऊबेरां ऐसै लगत कै 'मोरी तो धानी पिर जाबै, चाय कोलू कै बैल खौ नार खाबै' उनके परवार खौ चार-चार दिनाकी लांगन होंन लगीं। भइया सोऊ मौ-हाँत धोकै भुंसरा सैं डूँटी पैकड़ जातते। उर उतै तौ मोसैं जुगाड़ करकै पौआ डारकै लौलइया लगै गिरत-उठत धरैं पौंचकै नाटक करन लगतते। ऊबेरां उनकी तो ऐसी किसा हती कै घर में नइयां चून चनन कौ ससुरें बरी करावैं, मोदुखिनी खौं लांगा नइयाँ। कुत्तें झूल सुमाबैं, कछू जनें जा सोऊ कन लगत कै 'पौदन पै नइयाँ लत्ते उर पान खाँय अलबत्ते' जेऊ हाल कनई को हतो कै मोड़ी-मौड़ा तौ भूंकन मर रयेते उर उनें पीबे की परी ती।

वे दूरई सें बड़ बड़ात चले आउतते। मुहल्ला भर कौ पतों चल जात तो कै कनई कक्का की अवाई हो रई। उन्ना उतार कैं मांय मेंक दये उर अकेले चड्डी पैरें उगारे चले आउत ते। गॉव भर के लरका उनके पाछैं पाछैं हल्ला करत चले जात ते। कभंऊतों भइया इतनें बेसुर्त हो जात ते कै ओदें मौ होकें धरती पकड़न लगतते। अबईसैं वे एकाद छटाक डार लेत ते। सोऊ बेभूल होकै आय-बाय बकन लगतते। ऊबेरा वे अच्छे खाँकी ऐसी-तैसी करबे खौं तैयार हो जात ते। ऊ बेरा उनें 'हाती मकौरा सों सूजन लगततों' दारू पियत-पियत उनके दोई फेफड़े सड़ गये ते उर शरीर में खून की जगा पानी बन गओतों। हरां-हरां बे बुरई तरा सें ढिलया से गयेते। कछू दिनां में खाबौं पीबौ छूट गओ, उर एक दिनां डरे-डरे संसार छोड़ कैं चले गये। घर में रोबा-पोकीं मच गई, अकेले सब ने गंगा सी अनाई सबने सोसी कै ई दुष्ट सैं पिंड़ तौ छूँटो। परवार की नाक में दम करें तो वौ पानी। ऐसी कानात कई जात कै 'घरी भर कौ बुरवासना, सब दिन कौ आराम'। का बतायें भइया उनकै। लरका गुबिन्दा किलकिला कैसी बाठ हैरै तो कै बाप की नौकरी हमें मिल जैय उर भओ बेऊ। नौकरी मिलबे की बेरां बड़ी बिटिया उर लरका में लराई होंन लगी। अंत में लरकई खौं बाप की नौकरी मिल गई।

अब का कने ती गुबिन्दे फूल कैं कुप्पा हो गये ते। वे अपनें बाप की गत तो देखई चुकेते। कै हमने नशा के रोग सैं हमेशई कोस भर दूर बने रैंये। उनकी तनखा सें। परवार भर को पालन-पौसन होंन लगो। हर मइना थोरे-थोरे पइसा बचा-बचा कैं पक्कौ घर बन गओ। उनकौ खान-पान, चाल-चलन उर ब्यौहार भले आदमियन जैसों दिखान लगो। बाप-बेटा में मौर कौंड़ी कौ अंतर दिखान लगो। लरका ने हरां-हरां हजारन रूपइया जोर कैं आलीशान पक्कौ घर बनवा कैं ठाट सैं रन लगो। सबई बैंनन के साके से ब्याव करके दूद करूला करन लगो। मताई खौं दस-लर कौ करदौना उर रोंननदार पायलें उर कानन खौं सोने के ऐंरन बनवा दयें। रमधनिया मताई खौं बुढ़ापे में ज्वानी कौ नसा सौ चढ़न लगो।

जौ होत पइसा कौ खेल। ऐई सैं जा कनात बन गई है के 'चाँदी की मेख तमासौ देख' कनई तौ अपनीं बुरई आदतन के कारन हमेसई फटेहाल बनें रये। उनके हतैं रोजऊ किड़ी कौं मची रतती। ऐसी कानात कई जात कै 'सम्पत सैं तौ भेंट नई उर दालुद्दुर सैं लठालठौ। उन दिनन रमधनियाँ ने रो-रो कें दिन काड़े ते। दारू-खोरन की औरतन की ऐसिअई हालत होत है। अब लरका के राजन राजा के रामकरन लगीं तीं। गाविन्दे में कोनऊ ऐब नईं हतो। दारू की तो बातई अलग हैं बिड़ी-तमांखू, सुपारी-पान, गुटका खौं तौ कभंऊ हाँतई नई लगाउत ते। अब बताव उनकौ पइसा किर्तैं जैंय?

आज काल गाँव-गाँव सिहरन में दारूखोरन की भरमार है। ऐई सैं समाज में हत्या, हराम, चोरी उर जेबकतरा भरे धरे हैं। साँसी कई जाय तौ दारू सारे अपराधन की जर है। कजन, अपनों भलों चावनें होय तो ई छूत की बीमारी सै दूर रैबे में सार है। कविवर रहीम दोहा में ई विचार की पुष्टि कर गये है।

***खैर, खून, खाँसी, खुशी, बैर, प्रीत मद पान।***
***रहिमन दाबे न दबे, जानत सकल जहान।।***

-कुण्डेश्वर (टीकमगढ़)
मोबा. 963079222

# पैसा कौड़ी साथ न जानें, सब इतई रै जाने

**-डॉ. जय प्रकाश मिश्र**
**-डॉ. दीप्ती मिश्रा**

बुन्देलखण्ड के लोक कवि ईसुरी ने अपने लेखन से बुन्देली को काफी समृद्ध किया है। ईसुरी ने अपनी चौकड़ियों के माध्यम से जीवन के हर क्षेत्र के लिये लिखा है। इनकी दृष्टि बहुत व्यापक थी उनके लेखन में श्रृंगार, आध्यात्मिक के साथ जीवन के अंतिम सत्य को भी उजागर किये है और आदमी को जीवन जीने के प्रति उपदेश देने का प्रयास किया।

लोक कवि ईसुरी के लेखन में अर्थ चिंतन भी देखने को मिलता है। उनकी यह पंक्तियाँ " पैसा कौड़ी साथ न जाने, सब इतई रह जाने" में उद्धृत होता है। उनका कहने का आशय था कि दुनिया आखिर पैसे के लिये इतनी व्याकुल क्यों है? जो कभी किसी की नहीं हुई और न ही इसे साथ जाना है। आज की इस अति उपभोक्तावादी संस्कृति में लोग पैसे की ओर ही तेजी से भाग रहे हैं, इस आपाधापी के युग में ईसुरी प्रासंगिक से लगने लगे है। आदमी के पास आज वक्त नहीं है, अपनों से बात करने की फुरसत नही है। अपने विचारों, भावनाओं एवं सोच को एक दूसरे को लोग सैर भी कम कर पाते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिये कवि ईसुरी की प्रेम विभोर कर देने वाली ये पंक्तियाँ देखिये-

" ऐगंर बैठ लेव कछु काने, काम जनम भर राने। इन पक्तियों का आशय है कि अपनो से पास बैठकर बाते करने का मन है, साथ में आगे ईसुरी में पक्तियाँ है, काम जनम भर राने, इन पक्तियों का आशय है कि काम तो हमको जीवन भर करना ही है। ईसुरी जी ने काम को प्राथमिकता से करने के साथ अपने भावों और विचारों को एक-दूसरे में बांटने को भी प्राथमिकता दी है। विचारो के आदान-प्रदान से भी ज्ञान एवं अनुभव को दूसरों तक पहुँचाया जाता है जो व्यक्ति की कार्यशैली को गुणवत्ता प्रदान करता है। ईसुरी की इन दोनों पक्तियों का निष्कर्ष यह है कि उन्होंने व्यक्ति को पैसे के पीछे घूमने को वरीयता नहीं दी। बल्कि जीवन में सत्य का साक्षात्कार करने का उपदेश दिया जिससे व्यक्ति का लोक एवं परलोक दोनों सुधरता है। आज के संदर्भो में यदि देखा जाये तो पैसे वाले लोगो के पास ही सबसे जादा अनीति, अन्याय, भष्ठाचार आदि का बोलबाला देखने को मिलता है जिस कारण व्यक्ति सद्मार्ग से वंचित हो रहा है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अभी हाल में विमुद्रीकरण की घटना को अंजाम देकर पैसे के फैरे में पड़े व्यक्तियों की ही चेताया। कहने का अभिप्रय है कि ईसुरी का यह अर्थ चितंन सार्थक हो गया।

इसी तरह दूसरी पक्तियों में भी काम जनम भर राने, से आशय था कि आप काम में इतने मशगूल मत हो जाईये कि आप अपने जीवन मूल्यों को ही भूल जायें जो आपकों संस्कृति, सभ्यताओं और समाजीकरण की प्रक्रिया से जोड़ता है। आज सारे विश्व में संस्कृति को सत्यानाश करने का प्रयत्न हो रहा है। प्रथम, आज हर व्यक्ति से आप यह सुनते होंगे कि " हमें क्या फायदा, " इन पक्तियों का यथार्थ यह कि व्यक्ति "लाभ केन्द्रित मानसिकता, का हो गया है। वह अर्थ प्रधान पुरूष है, भावना की प्राधनता व्यक्ति में समाप्त होती जा रही है इसी कारण ईसुरी को कहना पड़ा कि ऐगंर बैठ लेव कछु काने जब व्यक्ति पास में बैठकर अपने भावों, विचारों का आदान प्रदान करेगा तभी तो भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़ेगा। यही भावनात्मक जुड़ाव व्यक्ति को अर्थ की प्रधानता से ऊपर ले जायेगा।

दूसरा, समाज मे प्रचलित कथन टाईम नईयाँ। प्रत्येक व्यक्ति के पास समय की कमी है जिस कारण व्यक्ति आज अपने परिवार समाज, बच्चों बुजर्गों को समय नहीं दे पा रहा है। परिणाम स्वरूप समाज में जितनी भी अरोजकतायें देखने को मिल रही हैं वह सम्पूर्ण मानव जाति को ही कलंकित कर रही हैं क्योंकि संस्कार तो बचपन से ही व्यक्ति में आतें है। जो समयाभाव के कारण व्यक्ति दे नहीं पाता।

कहने का अभिप्राय यह है कि ईसुरी ने अपनी लोक भाषा बुन्देली में जो संदेश विश्व को दिया उसके अनुकरण की जरूरत है। साथ ही ईसुरी का लोक साहित्य लाभ केन्द्रित मानसिकता , एवं चलने की नसीहत देता है कि समाज देश और विश्व सदगति पर चल सके। यही वर्तमान संदर्भ में ईसुरी के साहित्य की प्रासांगिकता है।

-शास. महाराजा छतरपुर
विद्यावती शिक्षा महा. छतरपुर

# पंडित हरि विष्णु अवस्थी, एक व्यक्ति नहीं संस्था

-डॉ. जवाहर लाल द्विवेदी

बुन्देलखण्ड की पावन मांटी को अनेकानेक रत्नों को पैदा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह वीर प्रसूता भूमि - असि, मसि, ऋषि और कृषि के लिये भी जगत विख्यात है। इस रत्नगर्भा पावन धरती में जनमे महापुरूषों ने अपने श्रेष्ठ अवदान के द्वारा भारत की कला, संगीत, साहित्य और संस्कृति को सदा नूतन आयाम प्रदान किये है। चाहे राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त हो, ऐतिहासिक उपन्यास सम्राट डॉ. वृन्दावन लाल वर्मा हो, ध्रुपद गायिका पदमश्री श्रीमती असगरी बाई हो या हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द हो इनके योगदान से यह अंचल सदा गौरवांनुभूति करता है तथा संपूर्ण विश्व में इस माटी में जनमे सपूतों से प्रत्येक बुन्देलखण्डवासी अपने को गरिमा से युक्त मानकर आनन्द विभौर होता है। महाराजा छत्रसाल की शौर्य पराक्रम ओर बलिदान की अमर गाथाएँ जन जन के स्मृति पटल पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है। कुँवर गनेशी बाई की भक्ति परम्परा में श्री रामराजा सरकार उनके निश्छल प्रेम के कारण श्री अवध धाम को त्याग कर श्री ओरछा में विराजमान होकर भक्ति की अविरल धारा प्रवहमान किये हुये है। वेतवा की नित निरंतर कल कल और छल छल की स्वर लहरी से समूचा ओरछा अंचल उपकृत है। उसकी प्राकृतिक शोभा और हरीतिमा पर्यटकों का मन मोह लेती है।

इसी रत्नमालिका के अनुक्रम में पंडित श्री हरि विष्णु अवस्थी का जन्म टीकमगढ़ नगर के कुलीन विप्रकुल में 15 फरवरी 1933 ई.वीं (फाल्गुन कृष्ण पंचवी संवत 1990 विक्रमी में हुआ। आपके पूज्य पिता श्री पंडित राम किशोर अवस्थी ओर माता श्रीमती काशीबाई दोनों ही धार्मिक विचारों से संपन्न दंपत्ति थे। जिसकी छाप पंडित हरि विष्णु अवस्थी के समूचे जीवनवृत पर परिलक्षित होती है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय विद्यालयों में पूर्ण हुई एवं एम. ए. इतिहास की उपाधि का अर्जन समीपस्थ विश्वविद्यालय से किया। तदोपरांत 27 जुलाई 1949 को सहायक शिक्षक के रूप में पदस्थ होने का सुयोग बना और पदोन्नत होकर उच्च श्रेणी शिक्षक हेडमास्टर तथा सहायक जिला निरीक्षक पद पर कार्य करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। आपने अपने शिक्षकीय कर्तव्यों के साथ अन्य प्रशासनिक दायित्वों को भी पूर्ण कौशल से संपन्न किया। जिससे उन्हें शिक्षक समाज में आज भी पूरे सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। आप सेवा पूर्णता के पष्वात 31 मई 1994 से पूर्ण रूप से सामाजिक दायित्वों के प्रति नित्य सिद्धता के साथ जुटे है।

श्री हरि विष्णु अवस्थी में कविता के संस्कार और साहित्य के प्रति अभिरूचि का अंकुरण विद्यार्थी जीवन से ही हो गया था। आपकी प्रथम रचना सितम्बर 1951 में प्रकाशित हुई तथा गद्य रचना ''सोचा करता मेरी पत्नि मंत्राणी आज हुई होती'' गाजियाबाद से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र ''नया संसार'' में वर्ष 1960 में प्रकाशित हुई। इसके साथ ही धार्मिक विषयों पर भी आपके आलेखों का प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित कल्याण में प्रायः होता रहा है। आपको इसी कम में बुन्देली बसंत, संधि बेला तुलसी मानस भारती (भोपाल) स्मारिकाओं तथा पत्रिकाओं में भी स्थान मिलता रहा है। आप का ''लोधी राज्य के ध्वंसावषेश'' खौज परक आलेख 15 जून 1978 को प्रकाशित हुआ। इसके अलावा बुन्देलखण्ड की लोक परम्पराएँ, लोक साहित्य में जीवन मूल्य, बुन्देलखण्ड का इतिहास और पुरातत्व विषयों पर सारपूर्ण आलेख देश की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे है। आपके द्वारा मधु घट बुन्देलखण्ड जनपद की धरोहर, बल्देवगढ़ विविध संदर्भ एवं महक बुन्देली माटी की आदि की खौज परक साहित्य कृतियों की रचना में आपकी संपादन कुशलता को देखने का अवसर मिला। आपका कृतित्व संत कबीर, कहत कबीर सुनो भई साधो, बुन्देली वीरांगना लक्ष्मीबाई और बुन्देलखण्ड के अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, बुन्देलखण्ड की कवियित्रियां मूल्यवान कृतियां है।

आपको अनेक अवसरों पर साहित्य और पुरातत्व क्षेत्र के प्रदेय पर सम्मान पत्र तथा सम्मान निधि प्रदत्त की गई। इसमें प्रमुख रूप से व्यास सम्मान झांसी (2003) सारस्वत सम्मान प्रयाग (2006) दीवान प्रतिपाल सिंह सम्मान बसारी (2007) बुन्देली साहित्य सम्मान झांसी (2012) उल्लेखनीय है। आप बुन्देलखण्ड की भाषा संस्कृति इतिहास और पुरातत्व पर शोध करने वाले शोधार्थियों को मूल्यवान साहित्य पांडुलिपियां, प्राचीन सनदें, राज घराने के पत्राचार, मधुकर लोकवार्ता, बुन्देलभूमि, जवारा, ईसुरी आदि के पुराने अंक उपलब्ध कराने का सराहनीय कार्य अनेक वर्षो से कर रहे है। आपका स्वयं अपने पितामह और पिता श्री की स्मृति को अक्षुण रखने के लिये पुस्तकालय स्थापित है। जिसमें शोधार्थी को अपने कार्य करने में काफी मदद मिलती है। यद्यपि टीमकगढ़ एक कस्वाई नगर है फिर भी ऐसे शोध को समर्पित व्यक्तित्व का होना बहुत बडी बात है। वर्तमान दौर में व्यक्ति अपने न्यस्त स्वार्थ की प्रतिपूर्ति में ही सदैव लगा रहने से अवकाश प्राप्त नही करता तथा साहित्य के गलियारों में खेमेबंधी और गुटबंधी के कारण आपसी खींचतान और अहमन्यता के चलते प्रतिभाए कुठित हो जाती है ओर कालजयी शोध तथा साहित्य का सृजन दूर की बात हो जाती है। बुन्देलखण्ड के अनेक नवोदित साहित्यकारों को श्री अवस्थी जी का स्नेह सामीप्य सहज सुलभ होता है। आपकी आयुगत विवशता के बावजूद भी विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय आयोजनों में गरिमामयी उपस्थिति से युवा पीढी को नवीन उर्जा, प्रेरणा और संवल प्राप्त होता है। ऐसे सुधीजन समाज में निष्चित रूप से एक व्यक्ति, एक देह और एक इकाई के रूप में दृष्यमान होते है। लेकिन सच्चे अर्थो में उन्हें देखा जाए, परखा जाए तथा माना जाए तो एक प्रभावपूर्ण संस्था के रूप में होते है। उनका मार्गदर्शन कालजयी सृजन का आधार स्तंभ बनता है। इतना ही नही जिन युवाओं में साहित्य की संस्कृति की और पुरातत्व की किंचित भी समझ और ललक है उन्हें अवस्थी जी जैसे महापुरूष सही पथ का दिग्दर्शन कराने है। इसीलिऐ अवस्थी को एक चलता फिरता पुस्तकालय कहना शायद अतिश्योक्ति नहीं होगी।

श्री हरि विष्णु अवस्थी की साहित्यिक, पुरातत्व और सामाजिक सेवा की त्रिवेणी से बुन्देली समाज रस विभोर है। आप पूर्ण स्वस्थ एवं प्रसन्न चित्त रहकर सदैव हम सब साहित्य प्रेमियों का पथ आलोकित करते रहे। यही श्री राम राजा सरकार से नित निरंतर कामना करते है।

-प्राचार्य

शासकीय महाविद्यालय, राघौगढ़

# लोक नाट्य : एक दृष्टि

-डॉ. एम. एल. प्रभाकर

बुन्देलखण्ड में बोली जाने वाली भाषा बुन्देली कहलाती है। यहाँ का लोक साहित्य बुन्देली लोक साहित्य कहलाता है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है बुन्देली या बुन्देलखण्डी वस्तुतः बुन्देलखण्ड जनपद की भाषा है। बुन्देला राजपूतों की प्रधानता के कारण इस जनपद का नाम बुन्देलखण्ड पड़ा है। इस जपनद की भाषा का नाम बुन्देली है। बुन्देली लोक साहित्य के दो रूप प्राप्त होते हैं गद्य एवं पद्य। गद्य में लोक नाट्य एवं लोक कथायें आती हैं तथा पद्य के अन्तर्गत लोक काव्य आता है। मोटे रूप में बुन्देली लोक साहित्य की पाँच विधायें हैं:

1. लोक गीत
2. लोक गाथायें
3. लोक कथायें
4. लोक नाट्य एवं नृत्य
5. कहावतें मुहावरे एवं पहेलियाँ

इन विधाओं में मन का उफान लोक गीत बनकर के बनता है। मन की अनकही प्रवृत्ति लोक कथायें बनती है। भुजाओं के पड़कने का स्वरूप लोक गाथायें बनती हैं। गागर में सागर भरने का प्रयास एवं कोतूहल जाग्रत करने की प्रवृति बुन्देली कहावतों मुहावरों एवं पहेलियों को जन्म देते हैं, किन्तु मानव की आदिम प्रवृत्ति प्रदर्शन लोक नाट्य की सर्जना करती है।

नाट्य सहज रूप से बिना साज सज्जा शास्त्रीय नियमों से परे लोक मानव की कृति होता है, इस सम्बन्ध में श्री जगदीशचन्द्र माथुर का निम्न कथन दृष्टव्य है-''लोक रंगमंच और नागरिक अथवा साहित्यिक रंगमंच में मुख्य अंतर यह है कि लोक रंगमंच जनसाधारण विशेषतः देहाती जनता के दैनिक जीवन की एक प्रक्रिया ,एक अंग रहा है और सामाजिक उद्देश्यों का एक माध्यम, नागरिक रंगमंच वर्ग विशेष के लोगों के मनोरंजन का साधन उनकी फुरसत के क्षणों का मन बहलाव। दूसरे शब्दों में लोक रंगमंच लोक समाज की देह का अंग है, नागरिक या साहित्यिक रंगमंच उसका बाहरी आभूषण, लोक रंगमंच जीवन की उमंग की स्वाभाविक और अनायास अभिव्यक्ति।''[1]

जितना पुराना मानव जीवन है उतना ही पुराना लोकनाट्य है। शब्द कोश के आधार पर यह शब्द लोक और नाट्य दो शब्दों से बना है। डा. रवीन्द्र भ्रमर ने लोक शब्द के सम्बन्ध में कहा है-

''इस शब्द के प्रचलित अर्थ दो हैं- एक तो विश्व अथवा समाज ओर दूसरा जन सामान्य अथवा जनसाधारण। साहित्य अथवा संस्कृति के एक विशिष्ट भेद की ओर इंगित करने वाले एक आधुनिक विशेषण के रूप में इस शब्द का अर्थ ग्राम्य या जनपदीय समझा जाता है किन्तु इस दृष्टि से केवल गाँवों में नहीं वरन नगरों, जंगलों, पहाड़ों और टापुओं में बसा हुआ वह मानव समाज जो अपने परम्परा प्रथित रीति, रिवाजों और आदिम विश्वासों के प्रति आस्थाशील होने के कारण अशिक्षित एवं अल्प सभ्य कहा जाता है, लोक प्रतिनिधित्व करता है''।[2]

आचार्य रवीन्द्र भ्रमर का कथन

सीमित हो जाने के कारण डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के सम्बन्ध में कहा है- ''लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नही हे बल्कि नगरों और ग्रामों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियां नहीं हैं[3] ''इस लोक शब्द की परिभाषा देते हुए डा. कृष्णदेव उपाध्याय ने यह मत प्रकट किया है कि ''जो लोग संस्कृत या परिष्कृत वर्ग से प्रभावित न होकर अपनी पुरातम स्थितियों में रहते हैं वे लोक होते हैं''।[4] लोक शब्द के संबंध में नूतन प्रयोग को लेकर के डा. श्याम परमार ने भी कहा है- ''आधुनिक साहित्य की नूतन प्रवृत्तियों में लोक का प्रयोग गीत, वार्ता, कथा, संगीत, साहित्य आदि से युक्त होकर साधारण जन समाज जिसमें पूर्व संचित परम्पराऐं, भावनायें, विश्वास और आदर्श सुरक्षित हैं तथा जिसमें भाषा ओर साहित्यगत सामग्री ही नहीं अपितु अनेक विषयों के अनगढ़ किन्तु ठोस रत्न छिपे हैं के अर्थ में होता हैं। [5]लोक शब्द की व्याख्या करते हुए डा. श्रीराम शर्मा ने कहा हैं-''यह शब्द उस विशेष जन समूह का वाचक हैं जो साज सज्जा, सभ्यता, शिक्षा, परिष्कार आदि से दूर आदिम मनोवृत्तियों के अवशेषों से युक्त परिधि को समाविष्ट करता है।[6] लोक शब्द के सम्बन्ध में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यह शब्द उस मानव समूह का द्योतक है जो आडम्बर से दूर प्रकृति की गोद में पवन के झखोरों के साथ स्वतन्त्र विचरण कर नर्तन करता है।

लोक शब्द की चर्चा करने के उपरान्त नाट्य शब्द को लेते हैं। जब जन समूह संवादों के माध्यम से किसी कथा को प्रकृति की गोद में सहज ही व्यक्त करने लगता है उसे नाट्य कहते हें। इसमें नृत्य, संगीत, अभिनय तथा साज-सज्जा आदि का योगदान रहता है। डा. श्रीराम शर्मा ने कहा भी है- '' उसी जन समूह की कृति जब नाट्य रूप में कथोपकथनों के माध्यम से किसी कथावृत को उपस्थित करे तो उसे लोकनाट्य कहकर पुकारा जाता है। इस कथोपकथन के माध्यम से इस विधा के स्वरूप को निखारने के लिए नृत्य संगीत अभिनय तथा वेशभूषा आदि का योगदान रहता है।[7] डा. श्याम परमार ने भी लोकनाट्य के सम्बन्ध में कहा है- ''लोकनाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है जिसका संबंध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्वसाधारण के जीवन से दो और परम्परा से अपने-अपने क्षेत्र के जन समुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो''।[8] डा. महेन्द्र भाणावत ने भी लोकनाट्य के ऊपर अपना मत प्रकट करते हुए डा. श्याम परमार के कथन की आलोचना की है।

डॉ. श्याम परमार ने अपना लोकनाट्य की परिभाषा में नाट्य की सीधी परिभाषा न करके उसके सम्बन्ध में और स्वरूप का उल्लेख मात्र कर दिया है। इस दृष्टि से उनकी परिभाषा भी अधूरी लगती है- डॉ. महेन्द्र माणावत का कथन हे- लोकधर्मी रूढ़ियों की अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियों का वह नाट्य रूप जो अपने-अपने क्षेत्र के लोक मानस को आल्हादित उल्लसित एवं अनुप्राणित करता हे, लोक नाट्य कहलाता है। इन विद्वानों की परिभाषाओं को देखते हुए कहा जा सकता हैं-जब मानव बंधन बिहीन होकर प्रकृति की गोद में रंगमंच पर अपने काभिक प्रदर्शन द्वारा स्वयं गदगद होकर दूसरे का मनोरंजन करने लगता है, वह लोकनाट्य है।

मनुष्य प्रकृति का अनूठा खिलौना है, वह प्रकृति से चिर-परिचित है, उसका उससे अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। प्रकृति मानव है।

मानव प्रकृति है। जब प्रकृति उल्लसित होकर के अँगड़ायी लेती है तो मानव के मन में भी अँगड़ाई लेने की ललक उभरती है, जब हृदय में प्रकृति के प्रवाहित रूप का आनन्द उछाह के साथ फूटता है तो गीत जन्मता है । मन का कुछ कहने सुनने का आवेग लोक कथा को जनम देता है और जब प्रक्रति का नर्तन, बादलों का गर्जन, सरिताओं का अल्हड़पन, फसलों का झूम-झूम कर धरा का चुम्बन एक विकलन भरता है उस समय मन की स्थिति का प्रस्फुटन प्रदर्शन के रूप में लोकनाट्य बन जाता है। लोकनाट्य में प्रकृति समाज, व्यक्ति, परिवार सब एक साथ व्यक्त होते है जिसमें मानव की जिन्दगी किलोल बनकर के प्रकट होती है, यों कहें जीवन के सुख-दुखों की अभिव्यक्ति ही लोकनाट्य है।

डा. नगेन्द्र ने कहा भी है'' लोक नाट्य सामूहिक आधर यत्कावों और प्रेरणाओं के कारण लोक कथानकों, लोक विश्वासों और लोक तत्वों को समेटे चलता है और जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। ''[10] इस तरह से कहा जा सकता है कि लोक नाट्य का उद्भव प्रकृति के पालने में हुआ है। डा. के.एल. वर्मा ''बिन्दु'' के अनुसार ''यह सत्य प्रकट होता है- प्रकृति की चिरगोद मनुष्य का आदिम पालना है इसकी मृदुलता मानव को मुस्कराहट देती रही है तो भयंकरता भय प्रदायिनी रही है, अतः आदिम मानव इसकी उपासना करने को विवश हुआ है, भय निवारण हेतु उपासना का ढंग, वीर भावों के प्रति श्रद्धा का अर्पण, आदिम नाट्य रूपों का प्रथम कायिक प्रयास है जो मानव द्वारा प्रकट होते रहे हैं ।[11]

इस तरह से बुन्देली लोकनाट्य सहज ही भावों की अभिव्यक्ति करते रहे हैं। यह इनका प्रारंभिक रूप है जहाँ से इनका जन्म हुआ हे। डा. वेदपाल खन्ना का कथन लोक नाट्यों पर बड़ा ही सटीक है ''संसार के प्रायः सभी देशों में नाटक के आदि रूप का उदय किसी न किसी धार्मिक भावना अथवा चेतना के फलस्वरूप हुआ है। वीर पूजा की भावना अथवा धार्मिक आवेश जो कि प्राणी मात्र के हृदय में किसी न किसी अंश में निहित रहता है, धीरे-धीरे नाटक का रूप धारण कर लेता है। यद्यपि अपने आदि रूप में यह नाटक बड़ा ही साधारण और अपरिमार्जित होता है।[12] इस तरह से कहा जा सकता है कि बुन्देली लोक नाट्य शौर्य प्रदर्शन, वीरों का कथागान, भय के समाधान हेतु नाना प्रकार के बुन्देली स्वांग बनकर जन-जन में बुन्देली नाट्य अभिनीत होते रहे हैं। डॉ. वर्मा ने कहा भी हैं- '' चांचल चपलता के साथ किलक कर किलकारी करता हैं, आँख मिचौनी का खेल रचता हैं, आँख मिचौनी चाहे प्रकृति की हो या मानव की, लोक नाट्य का आदिम रूप हैं या यों कहिए बुन्देली लोक नाट्य हैं।''[13]

**संदर्भ-**


1. सम्मेलन पत्रिका (लोक संस्कृति विशेषांक) 201वि. पृ. 353
2. हिन्दी भक्ति-साहित्य में लोक तत्व ( भारतीय साहित्य मंदिर दिल्ली 1965)
3. जनपद पर्व अंक 1, पृ. 65
4. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास सोलवां भाग, पृ. 4
5. मालवी लोक साहित्य, पृ. 2
6. लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग-डॉ. श्रीराम शर्मा, पृ. 4
7. वही- पृ. 99
8. लोकधर्मी नाट्य परम्परा-डॉ. श्याम परमार, पृ. 30-31
9. लोक नाट्य परम्परा और प्रवृत्तियाँ-डॉ. महेन्द्र भाणावत पृ. 3
10. भारतीय नाट्य साहित्य पृ. 84, डा. नगेन्द्र
11. बुन्देली लोक साहित्य एक अनुशीलन, पृ. 291, डा. के. एल. वर्मा'' बिन्दु''
12. हिन्दी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ. 15, डा. खन्ना
13. बुन्देली लोक नाट्य एक अनुशीलन, पृ. 292, डा. के. एल. वर्मा '' बिन्दु''



-प्राचार्य शास. पी.जी. महाविद्यालय, दतिया


---

*लघुकथा-*

## पछयाउर


**-डॉ. हरिशंकर शर्मा**


अमर जू अपने सारे के ब्याव में सजधज कें जा पोंचे। ससुरार में उनकी भौत आवभगत भई। संजा भई तौ मड़वा की पांत होंन लगी। हेती-बैहारी आकें बैठ गै। परस होंने लगी। दौना, पत्तल, पानी के पीछें कढ़ी, दार, भात, बरा - बूरौं और ऐंन चिपरी फुलकियाँ। परस पूरी भइ तौ जिवइया आज्ञा लगवे की वाट हेरन लगे । बूढ़े-पुराने बोले लाला अमर जू आज्ञा देवें। अमर जू ने ठाड़े होकें हात जोर कें कई ''लगन दो लच्छमी नारान।''

जिवइया भोजन पै टूट कें परे और परसइया परसवे में लग गै। खूबई भोजन कराये और अखीर में कालोनी बनी खबी। सब छक गै। अब पछयाउर केऊ दौना भराकें पियन लगे तौ कैऊ जनन नें 'बस्स' कई। अमर जू ने दोऊ हांत उलटे करकें दौंना ढांक दौ, पछयाउर उनके हांत पै टपक गई। जिवइंयन परसंइयन की आँख बरका कें अमर जू नें हांत परी पछयाउर चाख लइ। पछताने तौ पै शरमाभीरें मांग न पाये।

रात हो गई तौ नातेदारन के बिछौना लगन लगे। पर अमर जू बोले कै हम तौ भतौर वारे घर में सो है। सबनें समझाये कै सबके संगै परौ। अकेले कां डरे रैहौ। पर लाला जू न माने। खटिया बिछवा कें भतौर में जापरे । सोनें कौन कों हतो वे तौ पछयाउर ढूंढ रै ते।

पछयाउर कौ पसन्ना ऊचें सींके पै टंगौ तौ। अमर जू के हांत सींके तक नई पौंचे। उनकों एक हँसिया डरौ दिखा गौ। अमर जू नें हँसिया कौ बेंट उसेल कें बाकी डस सें पसन्ना में टोंका कर दौ। धार मौं में जान लगी। मन भर कें पछयाउर गटकी। पै उनकी देह भींज गई। अमर जू कों देह पोंछबे कपड़ा न मिलौ तौ उननें उतई धरी एक डहार में सें पहला काढ़ो और पछयाउर से चिपचिपात देह पोंछी।

पहला अमर जू की देह भरे में चिपक गौ। भोर भएं पांउनिन कों कलेऊ करावे कों भतौर गै। जीजा जू कौं टेरे। न जीजा जू बोले न किबइया खुली। सारिन कों किबइया टोरनें परी। अब भतौर में जीजा जू नईं दिखाने। जीजा जू शरम के मारें डहार में दुके ते।

डहार में देखे तौ अचरज में परगै। सारे बोले जौ बिज्जू है। जई नें जीजा जू कों खा डारे। सास-ससुर बोले अब का देखत मारौ जाय। लाठी-लुहांगी उठ गई। अब अमर जू आफत में बोले- हम अमर जू हैं। जा पछयाउर के पसन्ना नें प्रान खा लए।


-शंकर कालोनी, सेंवढ़ा, जिला दतिया म. प्र.
मो. नं.-9926042127

# लोक साहित्य में स्वास्थ्य

-डॉ.वीरेन्द्र 'निर्झर'

"सौ डंडी एक बुन्देलीखंडी" कहावत से स्पष्ट है कि बुन्देलखंड के लोगों का स्वास्थ्य सराहनीय रहा है। स्वास्थ्य के लिए यहाँ एक कहनूत और प्रचालित है- काया राखे धर्म है। अर्थात धर्म की रक्षा के लिए शरीर को बनाए रखना आवश्यक है।। महाकवि कालिदास ने इसी तथ्य को- शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम- कहा है। क्यों कि शरीर को स्वस्थ और निरोगी रखने से ही जीवन के उद्देश -धर्म ,अर्थ, काम और मोक्ष-पुरूषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति सम्भव है। इस हेतु लोक व्यवहार में अनेक स्वास्थ्यपरक मार्गदर्शक कहावतें, गीत और दोहे मानव जीवन को राह दिखाते हैं। प्राप्त कहनूतों को हम आहार-बिहार या भोजन विचार , औषधि जन्य और व्यायाम वर्ग में अलग-अलग कर सकते है।

स्वस्थ तथा निरोगी रहने के लिए लोक नें आहार-विहार के कुछ नियम और वर्जनाएँ स्थापित की है। ऋतुओं महीनों आदि के प्रभावों को सूक्ष्मता से देखा परखा और अनुभव किया है और मनुष्य की प्रकृति पर भी विचार किया है। तदोपरान्त कब क्या खाना चाहिए तथा क्या नहीं खाना चाहिए को एक गीत में प्रस्तुत किया है, जो लोक में एक कहनूत के रूप में प्रचलित है।

चैत गुर बैसाखै तेल, जैठै मउआ असाढ़ै बेल।<br>
सावन भाजी भादौं मही, क्वाँर करेला कातिक दही।<br>
अगनै जीरो पूसै धना, माघै मिसरी फागुन चना।<br>
इतनी खैहौ जभी, मरहौ नहीं तौ परहौ सही।।

उक्त पद्यात्मक पंक्तियों में किस माह में क्या नहीं खाना चाहिए स्पष्ट है। बुन्देलखंड की संस्कृति और साहित्य में श्री रामचरण हयारण मित्र ने यही गीत अगहन से शुरू करके इस प्रकार दिया है-

अघनैं जीरो, फूसै चना, माऔ मिसरी, फागुन धना।<br>
चैत गुर, बेसाखै तेल, जेठै मउआ, असाढ़े बेर।<br>
सांवन दूद उर भादों दई, कुंवार करेला, कातिक मई।<br>
जो इतनी नईं माने कई, मरहै नई तौ परहै सई।।

इस के अनुसार पूस में धना की जगह चना, तथा फागुन में चना की जगह धना खाने में रोक है। इसी प्रकार भादों में मही के स्थान पर दही और कातिक में दही की जगह मही शब्द का प्रयोग है। सावन में भाजी के स्थान पर दूध और असाढ़ में बेल के स्थान पर बेर खाने से रोका गया है। विशेष बात यह है कि मित्र जीने इन वस्तुओं के न खाने के कारण का भी उल्लेख किया है। किन्तु इसमें चना और धना का विपर्यय तथा भाजी की जगह दूध और बेल की जगह बेर शब्द का प्रयोग मौखिक यात्रा के कारण हुआ है। स्वदेशी चिकित्सा सार में यह कहनूत निम्नानुसार है-

चैत गुड़ बैसाखे तेल, जेठ में महुआ असाढै बेल।<br>
सावण साग न भादौं दही, क्वाँर करेला कार्तिक मही।<br>
अगहन जीरा पूसै धना, माधै मिसरी फागुन चना।

मेरे विचार सें स्वदेशी चिकित्सा सार की ये पंक्तियाँ और वर्जनाएँ सही है। लोक में इस प्रकार के उलट फेर अजानता वश कई बार हो जाते हैं। खाने-पीनें के विषय में लोक में कहावतें पग पग पर सचेत करती हैं। वे बताती हैं कि हमें क्या और कैसे खाना चाहिए और किसके बाद क्या नहीं खाना चाहिए ,जैसे-

पैलें ताप खीरा में बसी देख भुंटिया खिलखिल हँसी।<br>
फिर खाई कदुआ की भुँजी, तुरतईं ताप झड़झड़ा उठी।।

एक तो खीरा शीतल होता है दूसरे उसके बाद मक्का के भुट्टे का सेवन, जो बातयुक्त और गरिष्ट है और फिर उसके पश्चात कद्दू का साग खाया, जो वात और कफ दोंनों को कुपित करता है, ऐसे में ज्वर आना तो स्वाभाविक ही है। इसी प्रकार रात्रि में सत्तू खाने के लिए भी कहावत रोकती है-

रात में सतुआ करै बिआरी,<br>
घाघ मरै तिनकी महतारी।

एक अन्य कहावत में किसी को बिना मारे और बिना घाव दिये मारने के लिए घाघ कवि कहते है-

जाको मारा चाहिए बिन मारे बिन घाव।<br>
वाको घाघ बताइये घुंइयाँ पूरी खाव।।

घुँइयाँ और पूड़ी का भोजन विशेषकर वर्षा ऋतु में अजीर्णकर होता है। इसलिए उससे बचना चाहिए। बासी रोटी खाना भी बुद्दि विनष्ट करने वाला है, इसलिए कहते है-घघ्घा उनकी बुद्दि विनासैं खायँ जो रोटी बासी।

जहाँ बहुत सी कहावतें क्या नहीं खाना चाहिए को व्यंजित करती हैं वहीं कुछ कहनूतें ऋतु और मास के अनुसार पथ्य सेवन संबंधित भी हैं। चार पंक्तियाँ देखें-

सावन हरें भादों चीत, क्वाँर मास गुड़ खायउ मीत।<br>
कातिक मूली, अगहन तेल, पूसै करै दूध से मेल।<br>
माघ मास घिउ खिचरी खाय, फागुन उठि कै प्रातै न्हाय।<br>
चैत मास में नीम बेसहती , बैसाखे में खाय जड़ हथी।

जेठ मास जो दिन में सोवैं, ओकर जुर असाढ़ में रोवै तात्पर्य यह कि सावन में हरड़, भादों में चीता, क्वाँर में गुड़, कार्तिक में मूली, अगहन में तेल, पूस में दूध, माध में खिचड़ी और घी, फागुन में प्रातः स्नान, चैत में नीम और बैसाख में जड़हन का भात का सेवन करेगा और जेठ में दोपहर में सोएगा उसे असाढ़ में होने वाला ज्वर नहीं होगा।

शरीर की अपनी प्रकृति भी कई बार स्वास्थ्य में साधक सिद्व होती है। जो चीज एक के लिये हानिकारक है दूसरे के लिए भी वह वैसी ही हानिकारक हो ऐसा नहीं है। वह हितकर भी हो सकती है। कहावत साख भरते हुए कहती है- "काऊ खों भटा वायले, काऊ खों पित्त करें" अथवा "काऊ कों भटा बायले, काऊ खों पत्थ करें।"

भोजन के बिषय में कहा जाता है-"अन्नई तारै अन्नई मारै।" अन्न (भोजन) से ही जीवन की रक्षा होती है और अन्न ही प्राण घातक भी होता है। इसलिए-

आहारे व्यौहारे लज्जा न कारे।

चाणक्य नीति में भी कहा गया है - "आहारे व्यवहारे च त्यक्त लज्जा सुखी भवेत।" भोजन और लेनदेन में संकोच नहीं करना चाहिए। यदि संकोचवश पर्याप्त भोजन नहीं किया और भूखे रह गए तो-जागै जी कों लागी भुक्ख-भूख के कारण नींद नहीं आएगी, और यदि संकोच के कारण अधिक भोजन कर लिया तो भी दुख-अफरा, अजीर्ण, पेट दर्द आदि की बेचैनी घेर लेती है। इसीलिए भोजन पर्याप्त तो हो पर इच्छा से एक निवाला कम ही खाने की कहावतें सलाह देती हैं। वे कहती हैं- रहिए भुक्ख तौ रहिए सुक्ख।

इस बात की पुष्टि करते हुए एक और कहावत कहती है कि जब स्वादिष्ट भोजन देखकर असमंजस की स्थिति हो- ''खायें कि न खायें, तो ना खायें और जायें कि न जायें, तो जायें'' अर्थात खाने के असमंजस में और भोजन न करना तथा शौच के असमंजस में जाना ही उत्तम है।

रात्रिकालीन भोजन ब्यारी को बलवर्द्धक कहा गया है किन्तु यदि वह अवगुण करती हो तो दोपहर में कम भोजन लेना चाहिए। कहावत है-

ब्यारी कभऊँ न छाँड़िए, ब्यारी सें बल जाय।
जो ब्यारी अवगुन करै, दुपरें थोरो खाय।।

इस पर यदि अवगुण करे तो-

सावन ब्यारी जब कऊँ कीजे, भादों ब्यारी नाव न लीजे।
क्वाँर के दो पाख, जतन जतन सें राख।
कातिक मास दिवारी, ठेलम ठेल करौं ब्यारी।

औषधि संबंधी:- औषधि संबंधी कानूतें लोकज्ञान और लोकानुभव प्रभाव रखते हैं। फिर भी एक रोग अथवा किसी एक अवस्था में सफल सिद्ध हुआ प्रयोग उसी के समान या समान प्रतीत होने वाले रोग में शतप्रतिशत सफल होगा यह नहीं कहा जा सकता। कहतें है- काऊ कों भटा बायले काऊ कों पथ्य करें। अर्थात रोगी की वातादि प्रकृति, आयु, बल, रोगी की स्थिति, काल आदि में भिन्नता के आधार पर कोई नुक्खा किसी के लिए लाभदायक नहीं भी हो सकता, या कम लाभदायक हो। इसीलिए जानकार व्यक्ति (वैद्य) नुस्खों में यथोचित परिवर्तन भी करते हैं। कहावतें इसी बात को - ''लगै बई को नाव औषद'' -औषधि वही जो गुणकारी सिद्ध हो के रूप में व्यक्त करती है। कहावतों में जहाँ कुछ औषधियों के प्रयोग बताए गए हैं वहीं रोगों के निदान के लिए आचार संहिता या कुछ क्रियाओं को औषधि के समान गुणकारी बताया गया है।

औषधि संबंधी कुछ कहावतें-

1. जीको पेट पिरात सो अजबाइन ढूँढत।
2. हर्र बहेरो आँवरो, घी सक्कर सें खाय।
हाथी दाबै काँख में सात कोस लों जाय।।
3. साबुन ,सज्जी, निबुआ नोन, और दाद की ओषद कौन।
4. चना चून को नोंन बिन, चौंसठ दिन जोखाय।
दाद,खाज, उर सेंहुआ, जरा मूर सें जाय।।
5. तोला एक कपूर लें, पाव नारियल तेल।
सीसी में रख लीजिए, कर दोनों का मेल।
त्रिपला से सिर धोयकें, तेल लगावै जोय।
केस बढ़ें अरु नरम हों, सिर में ठंडक होय।।
6. खाय कागजी नीबू को जो, तुलसी बिरवा रोपै। बैद पसारी करम कों झंखें, घर में मौत न कोपै।।

उक्त नुस्खों में पहली पेट दर्द के लिए दूसरी बलवर्द्धक तीसरी और चौथी दाद खाज आदि के लिए, पाँचवी रूसी या सीकरी के लिए और छठी दवा संक्रामक बीमारी हैजा से बचाव के लिए है।

निरोगी रहने के लिए कुछ क्रियाओं का भी उल्लेख कहावतों में मिलता है, जिनका प्रयोग करने से औषधि लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती और रोग कमजोर पड़ जाता है या फिर पास ही नहीं फटकता। कुछ प्रयोग देखें-जैसे ज्वर के निदान के लिए उपवास के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहावत कहती है।

जुर, जाचक उर पाउनो, चौथो माँगन हार।
लंधन तीन कराय दे, फेर न आवे द्वार।।

ज्वर, भाट, पाहुना और भिखारी इनको तीन दिन यदि भूखा रखा जाय तो ये फिर दरवाजे पर लौटकर नहीं आते। ऐसे ही और भी कहावतें कुछ नियम पालन का सुझाव देती हैं जिनकें करने से बैद को बुलाने की आवश्कता नहीं पड़ती। कुछ कानूतें देखें-

1. निन्रे पानी जे पियें, हर्र भून कें खाँयँ।
दूदन ब्यारू जे करें, तिनघर बैद न जायँ।।
2. आँते तीता, दाँतें नोन, पेट भरन कों तीनें कोन।
आँखन पानी, कानै तेल, कहै घाघ बैदई गेल।

(ताजा खाने, दाँतो में नमक लगाने, पेट को एक चौथाई खाली रखने, आँखों में शीतल जल के छींटे देने और कानों में तेल डालते रहने से वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती) इसी संदर्भ में बुन्देली कहावत भी है-ठंडो नहाय, तातो खाय, ता घर बैद कभऊँ न जाय।

3. खाकैं मूतै सोवै बायें, ताके बैद कभऊँ न जायें।
4. पाँव गरम, पेट नरम, सिर ठंडा,
बैद हकीम घर आवै तौ मारौ डंडा।।

जीवन में कुछ ऐसी भी आदतें और कार्य हम शमिल कर लेते है। जो जाने-अनजाने हानिकारक होते हैं और रोगों को आमंत्रित करते हैं। इस संदर्भ में दो कहावतें देखें पहली नजला बढ़ाने वाली, दूसरी सफेद बालों संबंधित-

1. जूता, चप्पल रबर की, करबै नित्त प्रयोग।
सोच न जाबै प्रात उठ, जौ नजला को रोण।।
2. धोबै जो सिर को सदा, साबुन सोडा डाल।
कछुक समै के बाद में सेत होंय सब बाल।।

व्यायाम संबंधी:- बिना औषधि के सदैव स्वस्थ, सुन्दर और कार्यक्षम बने रहने के लिये व्यायाम, आसन प्राणायाम आदि का बहुत महत्व है। नित्य प्रात: दस-पंद्रह मिनट भी इन्हें नियमित करने से शरीर में हल्कापन, स्फूर्ति, कार्यक्षमता, जीवन शाक्ति तथा रोग निरोधक शक्ति बढ़ जाती है, किन्तु जो नियम पूर्वक कसरत नहीं करते, दो-एक दिन छोड़कर कसरत करते हैं ईश्वर को उन्हें मारने की आवश्कता नहीं पड़ती। तात्पर्य व्यायाम की प्रक्रिया स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक नहीं, हानिकारक है। कहावत है-

आँतरे रोज कसरत करें, राम न मारें आपुई मरें।

खेल भी एक प्रकार का व्यायाम ही है-चुखइयाँ दुलत्ती खेलती। किन्तु यहाँ गरीबी और भूख की व्याकुलता को व्यंजित करती है। सौ डंडी एक बुन्देलखंडी कहावत में हाथ पैर के पंजों के बल झुककर दण्ड लगाने के व्यायाम का उल्लेख शाक्ति वर्द्धन और स्वास्थ के अर्थ में ही हुआ है।

कुल मिलाकर लोक साहित्य में स्वस्थ और निरोगी जीवन को लेकर बहुत कुछ बिखरा पड़ा है, जिसे संकलित करने की आवश्कता है। आज के समय में बढ़ रहे प्रदूषण और पार्श्व प्रभावों को बढ़ाती दवाओं के सापेक्ष स्वदेशी दबाओं और घरेलू नुखों को प्रश्रय देना अधिक हितकारी है।

-एम. बी.-120 पार्ट बी. (पानी की टंकी के पास)
न्यू इन्दिरा कॉलोनी, बुरहानपुर-450 331 म. प्र.
मो. 09425951297

# " नऔ भुन्सरा "

-शकूर मोहम्मद

कानात है कै "**बाप की मरन और काल की परन**" चिन्तामन खो दिन रात जौई घुनीतौ लगौ रय कै अब का करै उर का ना करै।

बाप की जियत जिन्दगानी में कोनऊँ टउका काज नइ करो घर में सातउ सुक भगवान नें दय ते। खेती किसानी भैसें, गइयां, घी-दूद की कौनउँ परेशानी नइ हती। उर तौ उर गाँव परोस के जनी मान्सन कौ अटकाकाज चलत रत ते। घर में हल्को सो परवार एक बैन और भइया। चिन्तामन की मताई देखौ तौ खुसी के मारें फूली न समावे। हराँ-हराँ ई घर की तरक्की देख कैं लोग मनई मन जरन-भुनन लगे।

काल कौ पइया घूम रऔ तो सरकार ने किसानन की उन्नती के लाने दुनियाँ भर में हल्ला करा दऔ के अब सब किसानन खो बैंक सैं सस्तो बैंक रिन मिलन लगै। किसानन में होड सी मच गई। आय दिना बैकन की किरसी साका में भीड़ मचन लगी। चिन्तामन के लल्ला खाँ कछु लेने देने नई हतो काय सें उनकी तौ हर बैल उर बैलगाड़ी सें नौनी चैन की बाँसुरी बज रई ती।

एक दिना लल्ला कौ मिडौइया थोवन टेक्टर लेकैं भर भरात आओ उर चिन्तामन के दोरे पे आकें ढाँडो कर दओं। भारी देर नो टेक्टर की पीं-पीं बजाउत रओ । कन लगत कै मर गई किल्ली काजर खों। जनी मान्स टेक्टर की आवाज सुनकैं भगत आय उर टेक्टर खों घेर कैं ढाँड़े हो गय। थोवन भइया टेक्टर पै बैठे-बैठे मूँछन पै ताव दैत रय। तनक झेल में चिन्तामन उर लल्ला बियाई कर कैं स्वापी सैं माँ पौछत भय बायरै कड़ें। देखत का हैं कैथोवन टेक्टर पर बैठो-बैठो रोव जमाउत रवै। लल्ला ने मनई-मन सोसी कै होय ना होय जौ थोवन हमें दिखावे आओ जीसैं जे जरैं भुनैं उर जे सौसैं कै देखौ इये, जौ न तौ अपने घरे गओ उर ना टेक्टर मंदिर पूजा के लाने लै गओ। जौई सोस रय तै कै, थोवन ने लल्ला खौ देखौ उर टेक्टर सैं उतर कै इनके लिंगा आ ठाँड़ो भओ।

थोवन लल्ला सैं कभऊँ बातचीत नई करत तो बात करवै से कन्नी काटत तो, वो आऔ उर लल्ला के पाँव परे उर कन लगौ कै लल्ला हमने तौ अपनी घर गिरसती गाँनि धर कैं जौ टेक्टर उठा लओ, अच्छी नौनी टेम टेवल सैं किसानी कर लैं उर किराय सै टेक्टर चलैं सो पूरौ करजा ऊरन हौ जै। थोवन के मन में लडुआ ढड़क रयतै। जी किलकारी लै रऔ तौ।

लल्ला नें सोसी कै हाँजू-हाँजू कइये न बात बिरानी कइये। थोवन हमाय द्वारै आओ कायखों अगर हमने कछू कई तौ मौसी कौ काजर भऔ जात। अब लल्ला थोवन से बोले-देखौ थोवन बडौ नौनौ लगो, खूब फलौ फूलौ हमाऔ तौ जौई आसीर्वाद है। फिर बोले-तुम नै हमें अपनौ बडो मानौ तौ कबै- हमतौ जा जानत कै बैंकन सें रिन लैवो तौ भारी सरल हो गओ पै चुकारौ कैसो का हुइये जा सोसबे की बात पैले है। हम तौ जा सोसत कै काय खों काऊ की चड़त बेल उतारें। चड़त बेल उतारवो पाप कौ काम आय । सो तुमें दिन रात मैंनत करनै तबई तुम ईसैं पार हो पाओ।

थोवन ने कई कै लल्ला-बुरई न मानों तौ हम एक बात कवै। लल्ला बौले-कऔ का कन चाउत। थोवन बौले कै-देखौ लल्ला, तुम सौऊ एक टेक्टर उठा लियाऔ। अबै गाँव में कोनऊ टेक्टर नइया, सो तुमाऔ टेक्टर आजेय सो अपने दो टेक्टर हो जैयँ। अपन दोई जने गाँव असपेर में जुताई बुआई थ्रेसर करैं जीसैं, भगवान चाय तौ अपनौं रिन छैई मइना में चुकता हो जैय सो अपुन मोरी बात मानो। थोवन ने सोस राखी कै हो बैन मोइसी।

देखौ लल्ला अबै अपनी बैंक के हाकम अपसर नौने हैं तुम कऔ तौ काल अपन टेक्टर उठा लियायें। लल्ला ने केवल हूँका भर दऔ फिर बोले-देखो थोवन भइया-तुम टेक्टर उठाबै की कै रय सो सब ठीक -ठाक है। हम तौ जा बात मानत कै असाड़ कौ चूकौ किसान उर डार कौ चुकौ बन्दरा, इनकी बुरई गत होत। एक दिना बैंक के हाकिम हमाय खेत पै सौऊ आय ते। उनने नौनौ समझाओ तौ। टेक्टर, थेसर, ट्राली उठावे कि कै रये ते। अकेलें हमाय गरै उनकी बातै नई उतरी। फिर बैंक हाकिम ने दबी डाड़ सैं कई ती कै-लल्ला, हम आँय बैंक के अपसर बैंक उर सरकार कौ जोई खियाल है कै किसान तरक्की करै, किसान की तरक्की सै गाँव, देश की तरक्की हुइये। कोऊ नई चाउत कै किसान कौनऊ बिवूचन में परे उर खेत पटिया नीलाम हाँवे की नौवात आवै। आखिरी में बै जात-जात जा कै कैं गये ते कै जा बात लल्ला हम तुमसे कै रय कै अबै तुमाऔ लरका हल्कौ है उर तुमाई उतरती अवस्ता सो तुमाई बसकी टेक्टरबाजी नइया। तुम अबै घी चुपरी खा रय-जा कत भय बे चले गय। सौ थोवन भइया-हमाई जा अवस्ता, कोट कचेरी उर बैंकन के चक्कर काटवौ हमाई तौ बसकी बात नइयाँ।

थोवन बोला-लल्ला, अपुन की तौ हमसें जाँदा धरती है। कोनऊ दिक्कत नइया। अपुन खों बैंक सें टेक्टर नइ लेने सो ना लो, कम्पनी बारे दे रय। बस अपुन खों कुआ की बन्दी भर देने परै। कऔ तो काल येई बैराँ टेक्टर अपने दोरे पै ठाँड़ो हो जेय। अब लल्ला गुर भरो हँसिया हो कैरै गय, न तो लीलत बने उर न उगलतन बने। हऔ उनके दिल के एक कौने में बीज पर गऔ उर दूसरौ मन कबै जबर मारे उर रोन न देय। इतनी कत भव थोंवन ने टेक्टर स्टाट करो उर जात कत गऔ कै राते सौस विचार कर लिइयो मै भुन्सरा फिर सें आऔं।

चिन्तामन उर ऊकी मताई दुगई के लिंगा ठाड़े-ठाड़े सब बातें सुन रय ते इन दोइ मताई बेटन खों थोवन की बातें नौनी लग रई तीं।

टेक्टर घेरैं ठाड़े जनी मान्स हराँ-हराँ अपने घर खो चले गय। अकेले रै गय ते लल्ला। बे सोऊ खाँसत-खखारत बखरी में चले गय। बियाई सब की हो गई ती, लल्ला ने बिड़ी सिलगाई उर खाट पै बैठे कोनऊँ घुना बीती में लग गय ते। जे दोऊ मताई बेटा करोंटा लँय चिमाई सादें परे ते। औरी उठ कैं बैठ गई उर कई कै काय परे नइयाँ-नींद नई आ रई। लल्ला चिन्तामगन हतै औरी कि बात अनसुनी हो गई। फिर उनने जोर सें कई, काय सोय नइयाँ। लल्ला झट सें बोले। यैं, हाँ, अबै नईं। ओरी बोली-थोवन भइया

ठीक तौ कै रय ते। चिनतामन खों मौका मिलौ- हऔ लल्ला, ओरी साँसी तौ कै रई अपुन सोऊ टेक्टर उठवा लो, हम टैक्टर चलावो सीक जैंय सो स्कूल सें आकें उर छुट्टी के दिना टैक्टर चलात रै । लल्ला खिसया परै -मोंगजा! तुमे पढ़ने है कै टैक्टर चलाने। जो करम हम करत आय बेई तुम करौ। जौ तो ठीक नइया। किसान कौ लरका किसान, जा बात ठीक नईयाँ। हमाई तौ जा मन्सा है कै तुम मन लगाके पढ़ौ-लिखौ उर बैंक जैसे हाकिम बनौ। औरी ने सोऊँ कई कै बेटा-अबै तुम पढ़ो लिखौ अबै तुमाय पढबे लिखवे के दिन हैं, तुम

किसानी की सोसौ तुम तौ अपने काम पै ध्यान दो, बस। फिर औरी लल्ला से कन लगी कै दुनिया तरक्की कर रई अपन काय पाछें रवे। तुमाऔ बुड़ापो आ रऔ, चिन्तामन खो पढ़ावे बाहर भेजने, घर कौ खरचा बड़े ऊ की पूर्ती के लाने अपने लिंगा जमीन जाँगा भौत है, तुम चिन्ता ना करौ। अपुन न हुइये तो हजार दो हजार रूपइया मइना पै टैक्टर चलावै के लानै एक ड्राइवर राख लैं। अपुन देखाभाली खौं हौ। अब लल्ला खौं कछू-कछू मन में लगन लगी कै हम चाय तौ टैक्टरवारे वन सकत। औरी ने फिर कई-तुमे तौ मालूम है कै हमाय मायके में दो टैक्टर हैं, उतै कभऊँ कौनऊ बात नई भई।

अब लल्ला खिसया परे उर बोले-मायको-मायको जब देखो रट लगाय रत उते उर इते में मौर कोड़ी कौ अंतर है। तुमाय मायके में सब के सब करत धरत हैं। कौनऊ नौकर चाकर नई लगायें। सो तुमें उते कौ नौनो दिखात कायसें कै पराई पातर को बरा बड़ो लगत है। हाँ-तुमे अगर चिन्तामन की कोनऊ चिन्ता न होवे तो कालई टैक्टर उठा लियायें । हमाई दूसरे गाँव के एक दादा जी सें जान पैचान है। उनकी दो गाड़ी वजन ढोवेबारी और एक टैक्टर है। उनके दोई लरका बीदे रत, उनको सोवो जगबो हराम हो गऔ। बे कन लगत कै हम ड्राइवर राखें। गाड़ी धरी रवे सो जा लगत कै जा काय धरी, उर नईं आई सो काय नई आई। चलावे वारन खों जब जिते मौका मिलत बे अपनौ बनता पैलें बनात, डीजल बैंच देवै टूट-फूट बता देवें उर नइंया तौ पंचर बता देवें। वे जौ सोसत कै अपना काम बनता और भाड़ में जाय जनता। सो तुम इन बातन मैं ना परौ सब चूले की खाँई माजौटें होके कड आती। आज अपुन भगवान की कृपा सें भौत सुकी हैं, सौ हमाऔं तौ जी थर-थर कापत। देर रात नौ दोई जनन में बहसा-बहसी होत रई उर आखिर में औरी की बात की जीत भई।

दूसरे दिना संजा कें लल्ला के दोरे में टैक्टर कंपनी से धड-धडात आ गऔ। नौनौ पूजन भऔ चिन्तामन देखो तो खुसी के मारें फूलौ ना समाबै।

टैक्टर के भरोसे लल्ला ने दस एकड़ धरती ठेका पै ले लई उर ठेका के पइसा पैलां चुका दय। टैक्टर चलावे ड्राइवर बुला लऔ नौनी जुताई हो गई। असाढ़ को मइना कड़ गओ, रोजउँ बादर गरजें पै पानी की बूंद ना आवै। सोसाइटी सें खाद बीज आ गओ। एक दिना संजा कें अच्छौ पानी बरसौ। किसानन के मौ पै खुसयारी फैल गई। मौका मिलौ बिधी विधान सें बौनी भई। कछु दिनन तक बाट देखी दानो नईं जमो। लल्ला को थूक सूक गओ अब का करें । जनबा लोगन खों दिखाऔ पतो चलो कै बीज नकली हतौ। अब का करैं का न करैं। दूसरे किसानन ने हिम्मत बँदाई उर फैसला भऔ कै बीज को दूसरो इन्तजाम करकें फिर सें बोनी कराई जाबे । दूसरों कें बोनी भई तब कई जाके मन खों साता परी।

जा लगे भाग उतई लगे आग ई साल सूका पर गई। सोयाबीन सूक गऔ। कुल मिलके लल्ला उर लल्ला जैसे किसानन पै मौसम उर करजा की सूकी गाज गिरी। ऐसी मुसीबत की घरी में साथ दिवइया कोऊ नई मिलत। बैंक वारे टैक्टरवारे तगादो काड़वे दौरे पै आन लगे। हाहा विनती सौ नौ गिनती करकैं चैत तक कौ टिया धरो गओ।

लल्ला के ऊपर करजा कई लाखन में हो गओ, घर को सुक चैन बगर गओ अब कोउ धीरज कौ धरइया ना हतो। लल्ला ओरी में रोज ई वेरा नई तो ऊ बेरा किलकौंद होन लगी। चिन्तामन घर में हतो तो हल्को पै समज आ गई ती जीसैं रीनौ रीनौ रन लगौ।

लल्ला को करजा हल्को होवे की बजाये भारी होत गऔ जीसें लल्ला सूक ठठेरौ हो गये। उनै कौनऊ जुगत समज में नई आ रई ती। उने रात में बुखार चड़न लगौ। अस्पताले दिखावे ले गये, कौनऊ आराम नई लगो । डाक्टर ने बताई के इने टी. बी. हो गई। एक दिना लल्ला ने चिन्तामन खों बुलाऔ उर समजाओ के बेटा- हम तुमाये लाने कछु नई कर पाय। तुम येसौ करियो अगर तुमे अच्छौ लगै तौ जौ टैक्टर बैंच डारियो उर एकाद खेत बैंच बाचकें उरन हो जाइयो जीसें तुम सुकी रेऔ उर अपनी मताई की सेवा टाल करत रईयो। बात पूरी नई कै पाई कै लल्ला के पिरान पखेरू उड़ गय। चिन्तामन अकेलो और पीछो करत भई अन गिनत मुसीबतें फिर भी ऊने बीती ताही बिसार दे आगेकी सुध लेय।

रात बीत गई। नऔ भुन्सरा भऔ उजयारे ने पांव पसारे चिरई चुनगी ने डैला पसारै, बउत भई नदी सें प्रेरना ले कें चिन्तामन खों अगाऊँ बड़बे की जुगत मिल गई ती।

-कुण्डेश्वर

मो. 7898640061

---

## गाँव पै गाज

**-लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'**

गाँवन के सुख चैन में, आगी ना लगवाव।
गाँवन सें ना हाँक दो, गौ कौ बंश बचाव।।

लाठी लै - लै निकर रये, कर रये गौ की नाश।
पैरीं लौ दुख भोग हैं, ऐसौ हुये विनाश।।

जौन घरन सें गाँव सें, जौ गौधन हँक जात।
लक्ष्मी रूठत उतै की, सौ की सूदी बात।।

गौ के दुश्मन न बनौं, मान जाव तौ ठीक।
गौ की परै शराप तौ, माँगत फिरहौ भीक।।

जौंसें हाँको होय धन, लौटा कै लै जाव।
गौ-संस्कृति जा गाँव की, इयै चबा ना खाव।।

फसलें धरती सें कड़ें, बेड़ा बगर बनाव।
लावारिस गौधन चरै, मिलजुर भुसा डराव।।

जौन अबै लौ नइँ लिखो, अब ऊ लिख रओ, आज।
अपने-अपने गाँव पै, ना गिरवा लो गाज।।

प्रकृति रूठ जैहे अगर, बचा लैव का खेत?
अधिकारी अँदरा भये, जो लिख कैं दै देत।।

जंगल पौचाबे लिखत, गौशाला पौचाँयँ।
नैयाँ गौशाला अगर, गाँवन में बनवाँयँ।।

पथरा पर गये, अकल पै, जिला-प्रशासन सून।
गौ की रक्षा राज्य कौ, है न्यायिक कानून।।

नाहर तिंदुआ नौंईं जे, जो जंगल में रात।
बंजर हो जैं खेत जो, मिलै ना गोबर खात।।

गौ कौ इमरत दूद है, धरती पै वरदान।
गबवारन की जिन्दगी, देश धरम की शान।।

गोरक्षक कानून कौ, करत मान सम्मान।
न्यायालय जू तुमईं अब , लेव कछु संज्ञान।।

-ईशानगर, छतरपुर म. प्र.

# "नाँग-पाँचें की कँनियाँ"

-कु. रामकिशोरी गुप्ता

भारत जहाँ उत्सव - त्यौहारों का देश है, वही भारत का हृदय कहलाने वाला बुन्देलखण्ड पर्व-उत्सव त्यौहारों का गढ़ है। यहाँ सूर्योदय शंख, झालर रामधुन के साथ होता है। भोर होते ही मंदिरों से नगाड़े, शंख घंटों की ध्वनि के साथ आरती की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। सड़कों पर ढोलक मंजीरों की तान पर संकीर्तन ( हरे राम, हरे कृष्ण) करते हुए प्रभात फेरियों के दलों की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है।

बुन्देलखण्ड में लोक-विश्वास और उसमें गुम्फित मान्यताओं की विशिष्टता जन-मानस में रची-पची है। यहाँ पर महिलाएँ अपने रीति-रिवाजों के अनुसार पर्व-उत्सव उल्लास और उत्साह के साथ मनाती हैं। ऐसा ही एक पर्व है- "नाँग-पाँचें" (नागपंचमी)।

नाँग-पाँचें का पर्व श्रावण शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में नाँगों का विशेष महत्व है। बिष्णु भगवान शेष नाग को अपनी सैया बनाए हुए हैं, तो देवाधिदेव महादेव बाबा अपना आभूषण बनाए हैं। समुद्र मंथन के समय बासुकी नाग की रस्सी बनाई गई थी। लक्ष्मण और बलदाऊ जी शेषनाग के अवतार ही हैं।

इस पर्व पर नाग दर्शन पूजा अर्चना के अतिरिक्त कुश्ती, दंगल, अखाड़े, मेला आदि के आयोजन क्षेत्रानुसार होते हैं। बुन्देलखण्ड में पर्व उत्सव के दिन घर कें मुख्य दरवाजे पर गाय के गोबर से उरेन डालने की प्रथा अनूठी है। महिलाएं उरेन डालकर रंगोली आदि बनाती हैं। इस प्रकार नाँग-पाँचें के दिन महिलाएँ घर गृहस्थी के प्रात: कालीन कार्यों से निवृत होकर, नहा धोकर नागदेव की पूजा करने हेतु तत्पर रहतीं हैं। नाँग-पाँचें आने के कुछ दिन पूर्व सपेरे जंगलों से नाँगो को पकड़कर चुलिया (पिटारी) में रखते हैं। नाँग पाँचें के दिन भोर होते ही बीन बजाते हुए मुहुल्लों में चक्कर लगाते हैं। बीन की आवाज सुनते ही महिलाएँ घरों से बाहर आकर पूजन करती हैं। नागदेव की पूजनथाली में हल्दी, चावल, रोरी, फूल, प्रसाद के अतिरिक्त नागबाबा को पिलाने हेतु कच्चा दूध अवश्य रखती हैं। पूजन करती हैं, उनके दर्शन कर वे नाग देवता से प्रार्थना करती हैं कि -'हे नागदेवता बाल-गोपालन पर रक्षा करिओ, कभउँ अँधेरे - उजेरे में न दिखाइओ।' पूजन करने के बाद सपेरों को अन्न, वस्त्र इत्यादि भेंट के रूप में देती हैं।

नाग-देवता की पूजन-विधि में कुछ भिन्नताएँ हैं। किन्ही परिवारों में साक्षात् नागदेव का पूजन किया जाता हैं अर्थात् सपेरों द्वारा लिये हुए नांगों की पूजा करना। किन्ही परिवारों में बामी पूजन जाने की प्रथा है। ऐसे परिवार जहाँ बामी की पूजा की जाती है वहाँ की महिलाएँ पूजन-थाली में पूजन-सामग्री के अतिरिक्त आटा को गूंथकर नाग-नागिन के आकार बनाकर रखती हैं। बामी पूजन के बाद नाग-नागीन वही बामी पर रखती हैं। क्षमा प्रार्थना करती हैं कि पूजा में जो गल्ती हुई हो क्षमा करें। किन्ही परिवारों में घर के दरवाजों पर गोबर से, गेहूं से ,कोयले से नाग-नागिन बनाकर पूजन किया जाता है।

एक ओर जहाँ पूजन विधि में भिन्नता मिलती है वहीं दूसरी ओर रसोई-विधि में भी कहीं -कहीं विविधता मिलती है। किन्हीं परिवारों में पक्की रसोई बनाई जाती है अर्थात तवा नहीं चढ़ाया जाता है। किन्हीं परिवारों में चूल्हा नहीं जलाया जाता, छोंका बघारी नहीं होती। ऐसे परिवारों में गोबर के उपलों पर बाटी बनाने की प्रथा है। किन्तु आधुनिक परिवेश में कुछ-कुछ बदलाव हुआ है शाम को कच्चा खाना बना लिया जाता है।

नाँग पाँचें को कही जाने वाली काँनियाँ:-

ऐंसे-ऐंसें मताई बिटिया हतीं। घर में गरीबी तो हती, काय सें बिटिया कौ बाप भौतई जल्दी सुरग खों सिधार गओ तो। बिटिया खाँ अपने बाप की सूरत शकल की खबरइ नईंयाँ। मताई कूटा-पीसी, काम-दाम करकें गुजर-बसर करत ती। तनक-मनक बिटिया खों संगे लुवा जातती काम करावे। कछु दिना बाद बिटिया खाँ पढ़वै खाँ पोंचा दओ। काय सें कें बिटिया चिठिया लिखवे पढ़बे लाक तो हो जावे। मताई काम करबें, उर तनक-तनक बचत सोउ करत ती । अब बिटिया सियानी होन लगी। सो मताई खों रात - दिना चिन्ता के मारें नींद न आवें कै बिन्ना कौ ब्याव कैसें हुइये। मताई नें अपने भइयन सें कईं कैं -"भइया हरो, जे बिन्ना के लानें घर-वर ढूढो। ससरार में अपने देउर-जेठन सें चरचा करी कें इनें बिन्ना खों तुमईं सब जनन खों पार लगाउनें, मैं का कर सकत? मताई के मायके, ससरार बारन नें जुर-मिलकें घर-द्वार देखं-दाख कें अच्छे खाते पीते घर में ब्याव कर दओ।" बिन्ना ससरार में खूबई में खूबई आराम सें रन लगीं। ससरार में बिन्ना की चार-पाँच देवरानी-जिठानी हतीं। सब जनीं मिल-जुल कें काम करवें, संगे-संगे खाँय-पियें। हंसी-खुशी सें दिन कड़न लगे। बिन्ना की सास ने नाव धरो "रानी दुलइया"। रानी दुलइया जल्दी जल्दी काम करें सो सब जनें भौत बड़वाई करें। अब सावन को मइना। सबरीं देवरानी-जिठानी के मायकें सें खबर आन लगी बैन खों लुआबे आरये। बिन्ना की देवरानी-जिठानी, पुरापाले की बहुएँ अपने-अपने मायके चली गईं। गाँव की बिटियाँ अपने भइअन खों राखी बाँधबे ससरार सें आ गईं। बिन्ना मन में सोच करबें कैं हमाय भैया होते तो हम सोउ राखी बाँधवे जाते । जे घर में उदास रन लगीं, काउ सें कछु कहबें सुनबें नईं। इनें रात में नींद न आबें। जैसे-जैसे राखी पास आन लगी। तवई एक दिना घिनौची में पानी भर रई उर रो -रो कें केहवें लगीं हमायँ भैया नइयाँ। आज हमाव भइया होतो तौ वौ सोउ मोय लुआवे आउते। रोवे के मारे इनकी हिलकी न समावे। घिनौची में नाग बैठो तो। इनको रोबो देख कैं उए दया आ.गई, उर वो अपनी बामी में वापस आकें नागिन सें कन लगो कि आज एक जनी कें भैया नइँ होवें सें वो बिसूर-बिसूर कें रो रइती। ऊको रोवो मो सें देखो नईं गओ। हमाय मन में आरइ कें हम ऊके नाते-गोते के भइया बन जायँ उर उए लुआ ले आवें। नागिन कन लगी तुमने सोची तो अच्छी बात है तुम उए लुआ ले आओ वा इतें कछु दिना रहलेहै ऊको मन बहल जैय। अकले जे छोटे-छोटे सपेलुआ फिरत हैं इनें देख कें वा डरा जे है। नाग ने कइ इनन को चुलिया में धरकें ढक्कन बंद कर दैंवी। नागिन कन लगी जब तुमाए मन में है तो लुवा ले आव। नाग कन लगे अपन दोउ जनें मान्स को भेष धर लें।

नागदेवता बामी सें बाहर आकें मान्स को रूप धर कें ऊ की ससरारे मिठाई को डब्बा लेकें पोंच गए । ससुर से राम-राम भई। सास-ससुर के पाँव परे उर कन लगे हम अहार सें अपनी बैन

खों लुआबे आय हैं। जे बैन हमाईं फुआ की बिन्नू आयँ। हमाई मताई कन लगी की जा बेटा बैन खों बिलात दिना सें देखो नइयाँ उर ऊनें राखी नईं बाँधी, सो वा काल राखी बाँध लेहै दो चार दिना में हमई पोंचा देहैं। सास ने कइ कै रानी दुलइया तुमाये भइया आगए तुमें लुआबे। भइया के आबे की खबर सुन रानी दुलइया फूली न समानी। मन में सोसन लगीं काल मोय सोउ राखी बाँधबे के लाने मायके जानें उर झटईं रोटी पानी ख्वाव-पेआव कें जाबें के लोने तैयार हो गईं। आती बेरा सास के पाँव परकें भइया के संगे मायके खों चल दईं।

बैन-भैया गाँव के बहार आ गए। बस्ती निकर गई, थोड़ी दूर तक चले सुनसान जंगल दिखान लगो। जैसई बामी आगई सो भइया ने सांप को रूप धर लओ उर कई कें तुम डरैओ नईं। हमाइ पूँछ पकर कें घसटत -घसटत बिल में सें आ जइओ। पैंला तो बैन डरानी फिर करों जी करकें बामी से पोंच गईं भीतर। उतें पोंचतनईं नागिन जनी मान्स के रूप में बैठी हती। उनने छाती से चिपका लओ, मूड़ पै हाथ फेरो, खबर-दबर पूँछी। आव-भगत सत्कार कर अच्छौ ख्वाव पेआव। दूसरे दिनाँ राखी को त्यौहार हतो। राखी बाँधी। राखी बँधाई में भइया-भौजाई न लहर-पटोरे उर मोतियन कौ नौलखा हार दओ। लहर-पटोरे और झुमका हार पैर बिन्ना भाइ खुश हती। नाग-नागिन ने पूरी गिरस्ती सौंप दईती। खूब खाव पियो। ऐसें दो चार दिन कड़ गए। एक दिन नाग-नागिन खों बायरें जानें तौ। उनने सबरे सपेलुआन खों एक चुलिया में धर दये। जाती बेरा कन लगी, हम तो जा रये हैं। घर में तुम आराम से रहिओ, खइयौ पिययौ। एक बात की खबर राखियौ, आँगन में जा चुलिया ढकी धरी ईयै न छियौ। दो-तीन दिना में हम आ जेहैं। ऐसी कह कें वे दोइ जनें चले गए। बैन हँसी-हँसी खुशी सें खायें-पीये सबरे में घूमें। एक दिना ऊकै मन में आइ कैं आँगन में धरी चुलिया में का धरो जियें छीबे के लाने नाई करी ती। उनने ऊ चुलिया उगारदई। ढक्कन उगार तई ऊमें सपेलुआ किलबिलात दिखानें। डर कें मारे बैन के हाथ से ढक्कन छूट गओ सो एक सपेलुआ की पूँछ कट गई, अब बो बूँचा (वाडा) हो गओ। दूसरे तीसरे दिना नाग-नागिन वापस लौट आये। बैन न सच्ची-सच्ची बात कै दई। पैलां तो नागिर खों भौत गुस्सा आ गईं। नाग देवता ने उनें समझा दओ सो वे शान्त हो गई। कछु दिन बाद नागिन नें कईं कें इनें ससरार पोंचा आव। उननें बिदाई में खूब डलिया टिपरिया, कपड़ा-लत्ता, सोनों चाँदी उर हीरा, जवारात कौ नौलखा हार पैरां कें बिदा करी। नागदेवता जैसें लुआ लै आयते ऊसई पोंचा आये।

रानी दुलइया की बिदाई को सामान देख कें सास-ससुर खों भौत खुशी भई। गाँव भर में चरचा हो रई कें रानी दुलइया के भैया- भौजाई धन वारे हैं। देखो तो ऊके कानन के झुमका उर गरे को नौ लखा हार हीरा कौ है। उन कीं का कनें? अब गाँव में कछु जनी सोसें कें कैसे कें रानी दुलइया को नौ लखा हार देखवें खों मिलै अब तो पूरे गाँव में रानी के मायके वारन की बड़वाई हो रईती।

जौंन सपेलुआ की पूंछ कट गई ती उयै दूसरे सपेलुआ अपने संग में नईं खिलाबें उर ऊसें पूँछ कटा कहवें। ई से बो भौतइ गुस्सा में रहवे। एक दिना ऊ ने नागिन सें पूछी कें तुम सच्ची-सच्ची बताओ हम बूचा कैसे भए। नागिन ने कईं कें तुम पेटई से बूचा भये ते। ऊ ये विश्वास नईं भओ उर वो तो जिद्व पकड़ गओ सो नागिन खों बताने परी कि तुमाई पूंछ कैसै कें कटी। अब बूचा खों बहुत गुस्सा आई उर ऊ नें मन में बदला लेवे की ठान लई। नागिन ने भौत समझाव, , अकेलें वो न मानों उर बोतो रानी दुलइया कें पौंच गओ। अब वो सोचवें के जैसई रानी दुलैया पानी भरवें आय सोई हम उये डँस लैय।

रानी दुलैया के नौ लखा हार कीं चरचा तो गाँव में हती। सेठ साहूकार के लरका को ब्याव हतो सो वो नौ लाख हीरा को हार अपनी बहू के लाने चढ़ाव में चढ़ाने तो। उननें रानी दुलैया के ससुर के पास खबर पोंचाई कें नौ लखा हार हमें चढ़ाय खों दे दो। हार की सुनत रानी दुलैया ने कन लगी औराम मैं बूचा भैया की सों खाकें के रई मोरौ नौलखा हार टूटो डरो। मोरे भइया भौजाई भतीजे जुग-जुग जिएँ। मोरो बूचा भइया तो मोय बहुत चाउत है मोय ऊ कें बिना अच्छो नईं लगत। जे सब बातें बूचा बैठो-बैठो सुन रओतो। वो समझ गओ कें हमाई बैन तो हमें भौत चाउत और लाड़ करत, हम ऊए काट केंका करें? वो अपनी बामी में बापस पोंच गओ। नागिन बोली काट आए अपनी बैन खों। बूचा ने पूरी बात सुना कें कन लगो कें हमाई बैन हमें भौत ज्यादा चाउत है। ईसें हमें अपनी बैन कौ ख्याल राखनें है। इस प्रकार सांप को भी अपने पराये का ज्ञान होता है।

समयाभाव के कारण आज के समय में त्यौहारों पर कही जानी वालीं कहानियाँ बिलुप्त सी होती जा रही हैं, जब कि हमें आवश्कता इस धरोहर को सुरक्षित रखने की है।

मधुबन, म.नं. 43 फेस-3
डॉ. राय के नर्सिंग होम के पीछे,
इन्द्रपुरी कॉलोनी, टीकमगढ़

## तुलसी की रामायन

-डॉ. गौरी शंकर उपाध्याय 'सरल'

घर-घर तुलसी की रामायन, रोजऊँ बचतन हमने देखी।
मर्यादा पुरूषोत्तम की महिमा, बढ़ चढ़कें सब जग ने लेखी।।
उठतनई भोरईं सें जो मिल गव, झट राम राम हँस कें कीनी।
रामचरित मानस खों पढ़कें, सुमति सीख सबने लीनी।।
बिपदा में जब देश फँसौतौ, भईती, डगमग भारत नैया।
खेवनहार, भये ते तुलसी, मच रईती जब हा हा दैया।
बिन बाती तेल दिया उजियारौ, घर घर में रामायन कर गई।
दीन दुखी दलितों के दुखहर, धीरज बल बा सब में भर गई।।
पौरूष साहस भर जन जन में, देशधर्म सत पथ दिखलाऔ।।
म्लेच्छन सें लड़बे के काजें, इकता करके सुयश कमाऔ।
वर्गभेद की खाई पाटकर, समरसता की गंग बहाई।
हिन्दु धर्म संस्कृति रच्छन को, मंत्र दये जीवन - सुखदाई।।
अमर काव्य मानस को रचकर, संत महाकवि अमर हो गये।।
स्वाभिमान खों जगा जगा कैं साहस शौर्य भरौ जन जन में।
आँक्रान्ताओं से लोहा लेने, ओज तेज भरौ हर मन में।
जब से भूले उनकी सीखें, सुख शान्ति घर घर की छिन गई।
पापचार बढ़ौ दिन दूनौ, नीति न्याय घटती दिन दिन गई।
रामराज सौ सुख चाहौ तौ, अबई भूल सुधार लो भइया।
तुलसी की रामायन नित पढ़, ई भव-सर सें तर लो भइया।

-97/17 सिविल लाइन, सरल साहित्य संगम, झाँसी
मो.-9452921298

# सीता-स्वयम्बर

– पं. रति भानु तिवारी 'कंज'

(1)

चारन सें फिर कई जनक ने, डोंड़ी पीटौ जाकें।
रंग भूमि में जाकें बोलो, चारन भुजा उठाकें।।
जौ धनुष घरौ है संकर जू कौ, है कठोर बज्जुर सौ।
इयै देखकें भगौ चपोला, रावन-वानासुर सौ।।

(2)

जो जोधा वीर धनुष खों टौरै, बरन करै सुकुमारी।
जनक नतैत बनें ऊके फिर, ब्याहें सिया दुलारी।।
मिथला पति कौ जौ पन सुनकें, आपुस में बतयानें।
खलबल सी मच गइ राजन में, कछु उठकें गर्रानें।।

(3)

अपने तन कौ बल अजमाबे, धनुष टोरबे दौरें।
ढका भऔ ना मूरछित हो गय, रैगय दांत निपोरे।।
दस हजार नृप  लगे उठावे, तौउ टरै ना टारौ।
धूरा बकडूरें धरती में, उनखों आव तमारौ।।

(4)

अपनी हार मानकें बैठे, मन मारें दुख भारी।
अरौ करौ सो कूत परौ अब, भई विटभना भारी।।
बन्न-बन्न कीं बातें सोसें, खल राजा अन्तस में।
नग-नग पिरा रये जोधन के, टूटन-सी नस-नस में।।

(5)

ढका करौ ना कछु भूपन नें, वे अकतां सें बरके।
सज्जन राजा गये न ऐंगर, दूरई से धर छरके।।
टोर न पाऔ धनुष काउनें, संत करें उत हाँसी।
मों उपकायें रैगय जोधा, चोट करेजें आंसी।।

(6)

तेज हीन हो गय सब राजा, बीर बहादुर बांके।
बिन विराग ज्यों वैरागी नें, अचला से मों ढांके।।
कोनउं बीर धनुष ना टोरो, लख विदेह अकुलानें।
असुआ धर टपके आंखन सें मनई मन उखतानें।।

(7)

पटकन लगे पांव धरती पै, हात मूड़ सें मारें।
चित्त भंग से हेरें घेरां, पैने बचन उचारें।।
देस-देस सें राजा आये, रंग भूमि सिंगारी।
टोर न पाऔ कोउ धनुष खों, सबने हिम्मत हारी।।

(8)

देब दनुज धर रूप मनुज कौ, धनुष जज्ञ में आये।
एक-एक सें बड़कें राजा, आकें इतै लजाये।।
अब जिन कइऔ कबहुं कोउ हम हैं जोधा बलसाली।
हमनें सबखों परख लऔ है, इतै जुरे सव जाली।

(9)

अरे विधाता ने मति मारी, बूड़ी बुद्धि नसाई।
अनुआं बेजां करौ उपतकें, जगमें भई हँसाई।।
पैलउँ सें सोसी ना कोनउँ, अब कैसें पन टोरें।
आन घटै मरजाद मिटै सब, कुल कलके में बोरें।।

(10)

पीर पिता की कोउ न जानें का सीरी का ताती।
क्वांरी विटिया रये गेह में, फटै बाप की छाती।।
फसे बुढ़ापे में दुविधा में, अपजस माथें धारौ।
गिरी चटान मूड़ पै आकें, नग-नग भऔ टरारौ।।

(11)

जीकी बिटिया क्वांरी घर में, ऊकी आँख लगै ना।
सुरसा सीं फिकरें तन जारें, ना पल झपै जगै ना।।
जीके इतै ब्याव खों मौड़ी, ऊके मनसें पूंछौ।
भई बिबसता भारी मोखों, भऔ मनोरथ छूंछौ।।

(12)

आस टोरकें घरै जाव सब, हमें सोक क्वांरी कौ।
अबै ब्याव न रचो विधाता, सिया लली बारी कौ।।
अकतां सें ना चेते मिठुअइं, ईसें परी अचीती।
कूत परो जानी बीरन सें, धरती हो गइ रीति।।

(13)

खिचो सनाकौ रंग भूमि में, बीर लखन रिस्यानें।
घलो तीर सौ तनमन भेदो, बैठौ बान निसाने।।
पाँव पटक्कें  बीर भाव सें राजा कोंदीं हेरें।
भोहें टेड़ी भइं ठाकुर की, ठांड़े नैन तरेरें।।

(14)

रघुवर के डर सें कुचिआनें भीतर घाव छरोले।
सीस झुका प्रभु के चरतन में वीर लखन धर बोले।।
जोधा बीर बहादुर बांके, कउं अपमान सऐंना।
घायल करो हिया खों ईसें, बोले बिनां रऐं  ना।।

(15)

बोल कुबोल अति भाखे हैं मिथलेस जू नें,
काटे सौ कसक उठौ हिया बीच आंसो है।।
छाती सी दरक उठी, धर चीरो करेज खों,
तिलगा से परच उठे, पीरा नें गांसो है।।
निरोंना जनक जू नें धरौ है जौ इतै आन,
सटका सौ चटकादें बीर बोल सांसो है।।
धरती निखन्नी ना बीरन सें आज कितउँ,
मारकें निसाचर खों सोक-ताप नासो है।।

(16)

हुइयै निखन्नी जब ओली बीरवांकन सें,
धरती पै पिरलै सीं उठें जरें लपटें।
तारे चाँद-सूरज सब टूट गिरें नैचें खों,
खलहू गर्रात फिरें दौर-दौर झपटें।।
अकुलाकें सेसनाग सीस उठा डोल उठें,
ढूढें सुरठौर खों इतै-उतै सरपटें।।
सामें रघुवीर वीर बैठे धनु धारें हात,
तौउ मिथलाधिराज जोधन खों डपटें।।

# शहीद की विधवा

-दिव्य यादव

बिलख रही विधवा शहीद की, लुटै देश के लानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
सपनो हतौ राज अपनौ जब आहै हो खुशहाली।
हर चेहरा मुसकाहै, हो हैं, हर चेहरे पे लाली।
पर भव उल्टौ और गरीबन, की बढ़गइ कंगाली।
देश भक्ति कुतका धर नेता, करै कमाई काली।
विधवा रोई आजादी की, अब कीमत का जानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
बिनकी कब जिनने आजादी, की शुभ लड़ी लड़ाई।
सुख त्यागे घी की माछी से, हसकें गोली खाई।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख अनुयाई, बनकें भाई-भाई।
देश हेत मर मिटे सबइ ने मन सें आन निभाई।
एकइ टेक किसी कीमत पे, आजादी है पानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानै।
आइ याद अपने गौने की, तन पे बमकै पानी।
छरी छबीली छल-छल छलकै मलकै मस्त जुआनी।
भौर भऔ साजन जब सज गए, तब मैंने कउें जानी।
जारय लड़न देश के लानै, मोरी रू थर्रानी।
गिगया-गिगया बिनती करबै, पर बे एक न मानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, परव है पछतानैं।
मानै नहीं बलम जब मैंने, रोके पग डड़यावौ।
कितै चले कछु दिन तुम साजन, अपने घर रुक जावौ।
बारी लरक उमरिया मेरी, कछु तरस तौ खाबौ।
जल बिन मछरी नर बिन नारी, कैसे रहै बताऔ।
ठान लई ती चाहे जैसें, साजन खौ पतयानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
छाती से चिपकालव उनने, बोले सुनौ प्यारी।
एक जुआब हमावो दै दो, मानै बात तुम्हारी।
छुट्टा साँड़ घाँई गोरा है, करै उपद्रो भारी।
माँ, बहिनन की लाज लूटरय, काटें नाक हमारी।
दबे-दबे जब लौ हम रै है, सठ गोरन गरानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
रँगरलियन में हम खो जैहैं बढ़त रहै अन्यावौ।
होय शिकार एक दिन हम तुम पीछे रत पछतावौ।
पर हित में मरवौ अच्छौ है ऐसौ मैं सुनयावौ।
तुम अर्धांगिन आदौ हक है अपनौ भाव बतावौ।
हीरा भरै खजाने लो या, काँच किरच अपनानै।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानै।
पिय बानी सुन, सुन्न भई मैं, घिघ्घी बँधी हमारी।
कछु देर खौ गुँगी होगइ, नैनन बरषै बारी।
पछतानी ती हाय देवता, सें कैसी कै डारी।
कपा ओंठ हँस कई जाव पिय, मैं आरती उतारी।
भूलौ नाव हमारौ मन सें, पीछें पग न हटानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
चले हृदय में लिए वीरता, देख भक्ति बानी में।
पहुँचत कइयक गोरा पौले, आग इतै पानी में।
आजादी मिलगइ बनगइ मैं विधवा भर ज्वानी में।
लेकिन जाकौ दुखनइ भव तौ, मन में जा मानी में।
करे दान अपने सुख शाके सबके सुखके लानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानै।
लहर-लहर लहराय तिरंगा, देख हिया लहराये।
सूनी माँगो की लाली को केसरिया महकाये।
हरी-भरी जो उजर गई है, गोदी, हरौ दिखाये।
और सफेद वही राखी जो कर में बंधा न पाये।
है शहीद बहिनों की बिंदिया, कहै चक्र गुनगानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।
बदल गऔ है भाव आज कल, हो गए है मनमाने।
देश भक्ति को चोला पहनै, पइसा लगे कमाने।
मीठी-मीठी बातें करते, केवल कुर्सी पाने।
चीथ रहे हैं जनता का हक, करके नए बहाने।
अपनी-अपनी ढपली बजरइ, अपनौ राग जमानैं।
लेकिन आज देख बरबादी , पररव है पछतानैं।
मोय आज के स्वारथ पन को बैधव से दुःख भारी।
उजर रही उजरा ढोरन सें सिंची लोउ सें बारी।
बड़ौ सोच जो मोरे जी में सोचत चढ़त तिजारी।
स्वारथ पै ले पराधीन कर, कीमत दई करारी।
दिव्य देश कौ आज होत का, जातौ रामइ जानैं।
लेकिन आज देख बरबादी, पररव है पछतानैं।

-799/ए, कोंच तिराहा, एट-जालौन
उ. प्र.-285201
मो.-9450295164

## सीता-स्वयम्बर का शेष भाग

(17)

तजकें अभिमान ना गुमान कछु मोखों है,
आयुस रघुनाथ जू ई बेरां पाओं मैं।।
मरोर दें अकास खों टोरें दिग दंतन खों,
गेंद सौ ब्रह्मांड अबै हात कें उठाओं मैं।।
माटी के लोंदा सौ धर मसकें पहारन खौं,
धरती रसातल खों छिनमें पठाओं मैं।।
प्रभु के पिरताप सें फूल सौ उठाकें चाप,
खंड ना करैं तौ आज वीर ना कहाऔं मैं।।

(18)

लखौ लखन कौ रोस जनक जू मन में कछु कचियानें।
दिग्गज डोले धरती कांपी, मुनि, रघुवर हरसानें।।
जनकलली मसकउँ मुसकानी, डरे भूप मन मारें।
नेह भाव सें बीर लखन खों, प्रभु ऐंगर बैठारें।।

-बुन्देली धाम
नैगुवाँ टीकमगढ़ (म.प्र.)

# बुंदेलखण्ड की मूर्तिकला

-डॉ. श्रीमती वन्दना जैन

भारत जैसे धार्मिक देश में 'मूर्ति' जैसे शब्द से तत्काल मंदिरों में प्रतिदिन देवमूर्तियों की ओर ध्यान जाना स्वाभाविक है। वेदकाल में मिट्टी, पत्थर और लकड़ी की मूर्तियां देवशिल्पियों द्वारा बनवाये जाने की चर्चा की गई है, साथ ही बृहदारण्यक का कहना है कि "विश्वकला का समस्त शिल्प इन्ही शिल्पियों की अनुकृति मात्र है"। विद्वज्जन ऋग्वेद की समस्त कलाओं का स्त्रोत मानते हैं। ठीक भी है, वेद धर्म प्रधान ग्रन्थ होने के साथ ही साथ भारतीय संस्कृति के समस्त अंगों पर प्रभाव डालने वाला विश्वकोश भी है।

देवमंदिरों में आज का मूर्तिशिल्प मुख्यत: हिन्दू, जैन, एवं बौद्ध इन तीन विभागों में विभक्त दिखाई देता है। अनुमानत: ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभ में जब हिन्दू जनता निराकार ब्रह्म की उपासना में तल्लीन हुई तब एक समस्या बनी होगी कि उनकी उपासना का आधार क्या हो? क्योंकि उस समय निराकार ब्रह्म चित्रित नहीं किया जाता था। ऐसा भी हो सकता है कि उस युग में सांसारिक बन्धनों से विरक्त महापुरुषों को मूर्तियाँ बनाने को शिल्पीगण सहमत न होते हों।

कालान्तर में ईसवीं पूर्व पिछली शताब्दियों में जब धार्मिक विकास हुआ और विचारों में परिवर्तन हुए, साथ ही एकेश्वरवादी हिन्दू शिव और विष्णु को साकार-सत् चित् आनन्द रूप (सच्चिदानन्द) ब्रह्म मानने लगे तब परमात्मा की साकार मूर्ति बनाना संभव हो गया। यहीं नहीं इस वातावरण को "कृष्णस्तु भगवान स्वयं" के भागवतधर्म की प्रभावशाली लहर ने और भी सरल बना दिया। शिव एवं विष्णु की कथाओं ने जनजीवन को प्रभावित किया और उनकी भी प्रतिमा बनने लगीं

इस प्रकार हिन्दू, जैन और बौद्ध धर्म में मूर्तिपूजा प्रारंभ हुई जिनका अपना अपना पूजा साहित्य है।

विधि-विधान भी अपने अपने हैं, परन्तु सभी का एक ही लक्ष्य है- परमात्मा स्वरूप की प्राप्ति के लिये भगवान की उपासना।

श्री रायकृष्ण दास ने मूर्ति की परिभाषा करते हुए लिखा है कि - भारत में जहाँ अधिकांश निवासी मूर्तिपूजक हैं, यह बताने की विशेष आवश्यकता नहीं कि मूर्ति क्या है? सोना, चांदी, तांबा, कांसा, पीतल, अष्टधातु आदि सभी धातु तथा कृतिम धातु पारे के मिश्रण, रत्न, जवाहर,कांच कड़े और मुलायम पत्थर मसाले, कच्ची-पक्की मिट्टी, मोम, लाख, गंधक, हाथी दांत, शंख, सीप, अस्थि, सींग, लकड़ी एवं कागज के कुट आदि उपादानों को उनके स्वभाव के अनुसार गढ़कर, खोदकर, उभारकर, कोरकर, पीटकर, हाथ से या औजार से जैलियाकर ठप्पा करके व सांचा छाप के (अर्थात जो प्रक्रिया जिस उपादान के अनुकूल हो एवं जिस प्रक्रिया में जो खिलता हो) उत्पन्न हुई आकृति को मूर्ति कहते हैं। मूर्तिकला को हम दो भागों में विभक्त कर सकते है --

1) लोक मूर्तिकला।

2) परिष्कृत मूर्तिकला।

जिन मूर्तियों में स्पष्ट सौंदर्यबोध और पूर्ण कलात्मकता का बोध न हो तो वे मूर्तियाँ 'लोकमूर्तिकला' अन्तर्गत आयेंगी और इनके विपरीत जो मूर्तियाँ स्पष्ट सौंदर्य बोध और कलात्मक हैं वे परिष्कृत मूर्तिकला के अन्तर्गत मानी जाऐंगी। खजुराहो की मूर्तियाँ परिष्कृत मूर्तिकला और भरहुत की कला लोकमूर्ति कला के उदाहरण हैं।

भरहुत के कलाकारों ने अधिकांश प्रतिमाओं में मथुरा संकिबसा और तक्षशिला में प्राप्त मोर्यकालीन प्रस्तर-चक्रों तथा विपराव एवं लोरिया नन्दनगढ़ के स्वर्णपत्रों की परम्परा एवं शैली का अनुसरण किया है। कोने के स्तम्भों पर बनी कुछ मूर्तियाँ सादी पृष्ठभूमि से पृथक और बनावट मे भद्दी हैं। गहराई के अभाव एवं शरीर रचना संबंधी यथार्थता की उपेक्षा के कारण शरीर मोटा तथा कुरूप हो गया है। हाथ पैर बिल्कुल कोण जैसे और भक्तों के पैर तथा जोड़े हुए हाथ एक ही समक्षेत्र पर होने के कारण रिछे पड़े हैं । कुछ मूर्तियाँ अधिक स्वाभाविक मुद्रा में है, जो सौम्यतापूर्वक पृष्ठभूमि से झाँक रही है और जिनकी आकृतियाँ सुकुमार एवं गोल हैं, तथा नक्काशी में अधिक दक्षता है, लेकिन कलाकार कहीं भी शरीर के विभिन्न भागों में स्वभावनुसार रूपान्तरित गहराई का क्रम नहीं ला सके।

इन्हीं सब कमियों के कारण भरहुत की कला को लोकमूर्ति कला के अन्तर्गत माना जाता है। श्री रायकृष्णदास ने भी कहा है कि "भरहुत की कला में वह सुथरापन नहीं है, जो अशोकीय खंभों व सांची के तोरणों में है, किन्तु भरहुत की यह विशेषता वहीं तक सीमित हो सो बात नहीं। मथुरा, बेसनगर (ग्वालियर राज्य) भीटा, बोधगया, काशी कौशाम्बी तथा सुदूर दक्षिण में जगम्मा पेय आदि में जहाँ कहीं भी शुंगकाल की पत्थर या मिट्टी की मूर्ति मिली है, वहाँ लोककला विद्यमान है।" इस प्रकार शुंगकालीन मूर्तियों को शैली के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं -

1) पूर्ववर्ती- जिसे मौर्य शुंगकालीन कह सकते हैं, प्रमुख उदाहरण साँची के तोरण हैं इस शैली में अशोकीय राजकला की झलक बनी हुई है।

2) शुंगकालीन लोककला - जिसके अन्तर्गत भरहुत की प्रधानता में अन्य सभी उदाहरण जाते हैं ।

प्रदेश में बाहर भाजा (पूना) में भीतों पर सूर्य और इन्द्र की भरी तथा दलबलसहित मूर्तियाँ चिपटे उभार में बनी हैं, जो लोककला के विशाल उदाहरण हैं। भरहुत की कला की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए श्री वासुदेव शरण ने कहा है कि "भरहुत के शिल्पी भारतीय लोक हृदय के अधिक सन्निकट थे। यह बात कई प्रकार से प्रकट होती है। लोकधर्म के जो देवी देवता थे, उनका अंकन जैसा भरहुत के वेदिका स्तम्भों पर पाया जाता है, भारतीय कला में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। यक्ष यक्षिणी और नागों की मूर्तियाँ जैसे लोक-धर्म की जीवित परम्परा से उठ कर किसी नये धार्मिक आन्दोलन में सम्मिलित होने के चली आ रही हैं।"

भरहुत के स्तूप को प्राचीन भारतीय कला का महान् तीर्थ कहा जाता है। भरहुत के स्तूप में जिन दृश्यों की कल्पना है, उनमें मानों उस समय का सारा संसार ही आ गया है। लोक देवताओं के अतिरिक्त जीवन में जितने भी पक्ष थे, उन सबका स्वागत किया गया है। मानव, पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति, राजा, प्रजा, तपस्वी, भिक्षु, आचार्य, शिष्य इन सबका अंकन भरहुत शिल्प में यथा स्थान हुआ है, जिसमें उस समय के समाज का परिपूर्ण चित्र हमारे सामने आ जाता है।

भरहुत के कुशल शिल्पी अलंकरण के धनी थे। हृदय की पूरी उमंग से उन्होंने एक-एक वेदिका-स्तम्भसूची, और उष्णीष को

सौंदर्य विधान से परिपूर्ण कर दिया है। यह सब कला की अभूतपूर्व सामग्री बन गयी है।

भरहुत और साँची के विशाल स्तूप प्राचीन कला के दो तेजस्वी नेत्र हैं इन चक्षुओं की सहायता से संस्कृति की गहराईयों में जो अर्थ छुपा हुआ था उसका देखना हमारे लिये सुलभ बन गया है। शुद्ध भारतीय लोक कला और धार्मिक कला का जैसा पूर्ण रुप भरहुत के स्तूप में विकसित हुआ, वह कला के इतिहास की दृष्टि से विशेष अध्ययन की वस्तु है। जैन धर्म का मूर्ति विधान यद्यपि प्रतिमा विज्ञान के अनुसार शास्त्रीय पद्धति पर ''समचतुर-संस्थान''। (सुडौल, सौम्य आकृति) का द्योतक होता है, फिर भी मूर्तिकला के प्रारंभिक युग में निर्मित जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ बुंदेलखण्ड के लोक मूर्तिकला के आदर्श को प्रस्तुत करती है। श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौरा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.) के दो-तीन मंदिरों में मूर्तियाँ देखने को मिलती है।

पपौरा की ही तरह लोकमूर्ति कला को उदाहरण् स्वरूप सोनागिरि के प्रमुख मंदिर में स्थित चन्द्रप्रभु स्वामी की विशाल मूर्ति को देखा जा सकता है। यहां के अधिसंख्य मन्दिरों में जैन लोक मूर्तिकला के अनेक उदाहरण हैं। महोबा जिला हमीरपुर (उ.प्र.) में आल्हाऊदल की उपास्यादेवी-बड़ी चन्द्रिका एवं विशिष्ट नाट्यमुद्रा युक्त महादेव की मूर्ति बुन्देली लोकमूर्ति कला के अन्तर्गत आती है। बड़ी चंद्रिका के पार्श्वभाग में स्थित चन्द्रगिरि की विशाल चट्टानों पर उत्कीर्ण अनेक जैन मूर्तियाँ जिनमें, भगवान आदिनाथ उनके पुत्र भरत बाहुबली, अन्य तीर्थंकर तथा देव, शास्त्र, गुरु समवेत गुरु-शिष्य के पठन-पाठन रत समुदाय आज से एक हजार वर्ष पूर्व के जैन लोक मूर्तिकला के स्मारक हैं।

श्रीनगर जिला हमीरपुर (उ.प्र.) की बनी हुई पीतल की मूर्तियाँ आज भी प्रसिद्ध हैं। ग्रामों के बाहर छोटे-छोटे देवालयों ( मंदिर और मढ़ियों ) में विराजमान गांव के संरक्षक हरदौल आदि ग्राम देवताओं की मृणमयी मूर्तियाँ, देवीमायी, हनुमान तथा सत्तीमाता की प्रस्तरों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ और विविध प्रकार के मिट्टी तथा काष्ठ के खिलौने लोकमूर्तिकला के अन्तर्गत परिगणित किये जाते हैं।

यही नहीं दीपावली के दिन कुम्हार द्वारा बनाई गई सरस्वती, लक्ष्मी, गणेश, हरदौल, आदि की मनोहर मूर्तियाँ, गाँव के बढ़ई द्वारा दीपावली पर नगरवासियों के दरवाजों पर आरोपित काष्ठ की चिरैयाँ भाँवर के खाँम (स्तम्भ) की शाखाओं पर बैठाई गई चिरैयाँ, संक्रान्ति के काष्ठ और मिट्टी के घोड़े, महालक्ष्मीपूजा के दिन बनाया गया मिट्टी का हाथी, नौरता की पूजा के लिये बनाई गई पार्वती की मूर्ति और खिलौने (जो मानवाकार होते हैं) मूर्तिकला के प्रारंभिक रुप को सूचित करते हैं, साथ ही अपनी परम्परा की कड़ी को प्रागैतिहासिक पुरातात्विक अवशेषों से जोड़ देते हैं।

इस प्रकार मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश के जो जिले बुन्देलखण्ड में आते हैं, उनमें हमें श्रवण एवं वैदिक लोकमूर्ति कला के जीवन्त उदाहरण यत्र तत्र-सर्वत्र देखने को मिलते हैं।

-प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शास. कालिदास कन्या महाविद्यालय उज्जैन (म.प्र.)

# तीन बुंदेली ग़ज़लें

- डॉ. वर्षा सिंह

(1)

गिटर-पिटर अंग्रेजी बोलें, भूले अपनी बानी।
कदम-कदम भासा की खाई, कैसे कहें कहानी।
एक दिना के लाने हिन्दी, मंचन बीच पुजानी
बुंदेली की खबर राखबे, मिलतइ नईयां दानी।
हम चाहत 'लमटेरा','सैरा',उन्हें पोसारई 'पोयम'
'मॉम-डैड' की पड़ी छांयरी, अम्मा भयीं बेगानी।
लैगी, जींस पहर रई बिन्ना, भूली धुतिया हुन्ना
टिकुली, माउर, करधोनी की बतियां भई पुरानी।
बिसर गए का कबे होत हैं, संस्कार सब अपने
रोज नओ 'डे' मना मना के कर रए हैं मनमानी।
पढ़े-लिखे हैं हम भी भैया, तुम खों लगें गवांरू
नोनी हमें लगत है 'वर्षा' अपनी बोली बानी।

(2)

नाबालिग बा हते कुकर्मी, सजा मिली ने बाको।
भोग रई जा मोड़ी ऊको जीवन भओ अँधियारो।
अपनो बुरौ-भलो समझत है,को का कैसो कर रओ
गांव-गमई को बासिंदा भी, अब तो भओ सयानो।
निजता को अधिकार मिल गओ, न्यायपालिका जागी
भारत के भविस्य के लाने, रस्ता नओ निकारो।
हमें बुरो न देखो चइये, बुरो न करबो चइये
जहां बुराई फलत-फूलरई, जड़ से चलो उखाड़ो।
मुस्किल से घबराने नईयां, पांछे पांव ने हट हें
मिल-जुल के मजबूत बनाल्यौ 'वर्षा' सबई इरादो।

(3)

भली कही जू बुरै दिनन में, कोउ न देत सहारो।
रिस्ते-नातेदार पराए, हर छिन राम पुकारो।
संगवारन ने मों फेरो है, जब से बिपदा आई,
भाई-बंद की भली कही जू, घर से हमें निकारो।
सावन सूखो गओ, टेम पे भादों बरसो नइयां
बीजा ब्यर्थ भए सब भू पर, अंकुर नांय उछारो।
छूंछे धरे कनस्तर सारे, जलत नांय है चूल्हो
धूरा उड़ रई है खेतन में, सूनो परो उसारो।
देह हो गई कूरा-माटी , धेला एकउ नइयां
हुन्ना-कपरा फटे अंगारे, फटी ने और उघारो।
कैसी बिकट घड़ी आई है, समझत कोऊ नइयां
बिथा कृषक की समझो 'वर्षा', सबने काज बिगारो।

-एम-111, शांति विहार, रजाखेड़ी
मकरोनिया, सागर-470004, मध्य प्रदेश
मोबाइल: 9926641706

# बुन्देली काव्य में नारी-अस्मिता

-राजकुमार अहिरवार

पौराणिक काल के भौगोलिक क्षेत्र 'चेदि जनपद' को वर्तमान में बुन्देलखण्ड के नाम से जाना जाता है। भूगर्भीय दृष्टि से बुन्देलखण्ड दक्षिण के पठार और उत्तर के मैदानी क्षेत्र का संगम प्रदेश है। इस संगम प्रदेश में आमजन की अभिव्यक्ति का मौखिक माध्यम बुन्देली बोली है, जो आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के अपभ्रंश समूह के शौरसेनी शाखा की एक उपभाषा है। बुन्देली बोली की गणना पश्चिमी हिन्दी के अंतर्गत की गयी है। वस्तुत: यह हिन्दी भाषा की एक सशक्त और साहित्य-सम्पन्न उपभाषा है। इस उपभाषा का नामकरण भले ही बुँदेला जाति के नाम पर मान लिया गया है, लेकिन इस क्षेत्रीय बोली का लिखित प्रमाण हमें चंदेल कालीन कवि जगनिक द्वारा प्रणीत महाकाव्य 'परमाल रासो' के समय से प्राप्त होने लगता है जो बारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध के कवि हैं। जगनिक से लेकर वर्तमान तक के कवियों ने अपने-अपने काव्य-सृजन में नारी के किसी न किसी चरित्र का अंकन अवश्य किया है।

एक सीमित भौगोलिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में रचित साहित्य लोकसाहित्य के नाम से विख्यात होता है। बुन्देली साहित्य भी बुन्देलखण्ड का लोक साहित्य है, क्योंकि इसमें अति क्षेत्रीयता समाहित है। रहन-सहन, रीति-रिवाज, खान-पान, वेष-भूश, भाषा-बोली, आचार-विचार, शिक्षा-दीक्षा, संस्कार, रिश्ते-नाते, राजनीति आदि अनेकानेक पहलू सभी लोक में समाहित होते हैं, इसीलिए जब लोक की भाषा में उक्त सभी क्रिया-कलाप अभिव्यक्ति पा जाते हैं, तब वह लोकसाहित्य की उपाधि धारण कर लेता है। बुन्देली काव्यकारों ने भी लोक की भावनानुरूप काव्य-सृजन किया है। यह अलग बात है कि तद्युगीन परिस्थितियों और लोक की भावनानुकूल लिखा गया साहित्य वर्तमान दशाओं और सोच के विपरीत हो, पर बुन्देली रचनाकारों ने अपना धर्म बखूबी निभाया है। कहा जाता है कि कवि बुद्धिजीवी प्राणी होता है और निरपेक्ष होता है, तब फिर वह एक पक्षीय या सबल पक्षीय अभिभाषक क्यों बन जाता है ? क्या वह भी लोकभय, समाजभय, राजभय या दैवभय से आतंकित होकर यथार्थ सत्य से किनारा कर लेता है? अथवा समाज से जूझे बिना तार्किक युक्तियों को तिलांजलि दे देता है? उक्त सवाल विचारणीय और अन्वेषणपरक हैं। चूँकि धर्मनीति और समाजनीति ने अपने को सदैव राजनीति के लिए गिरवी रखा है, जिसके परिणामत: भारतीय समाज जातियों, उपजातियों, वर्गों और धर्मों सम्प्रदायों, पंथों आदि में सदैव से विभाजित रहा।

कितनी विचित्र बात है कि नारी और पुरुष प्राकृतिक रूप से एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, फिर भी सामाजिक धार्मिक और राजनीतिक स्वार्थियों ने एक पहलू (नारी) को निरीह बना दिया है। यह सब किसी एक लोक भाषा-बोली अथवा सीमित क्षेत्र में नहीं हुआ, बल्कि भारत में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक निरंतर होता रहा है। यदि पौराणिक ग्रंथों, धर्म-शास्त्रों में नारी को शूद्र (निकृष्ट) का दर्जा न दिया गया होता, तब बुन्देलखण्ड में भी किसी भी लोककवि की इतनी औकात नहीं होती कि वह नारी का जब चाहे जैसा चाहे अपनी रचना में उल्लेख करता। पर दुर्भाग्य ऐसा कि नारी समाज को यदि महिमा मण्डित भी किया गया है तो दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, चण्डी, रानी, राजकुमारी, पुत्र-प्रसूता के रूप में, न कि उस महिला के रूप में जो समाज के सभी पक्षों (सुख-दुख, यश-अपयश, लाभ-हानि, शिक्षा-दीक्षा, धन-सम्पत्ति) की अधिकारिणी है। हम और हमारा समाज लोक से लेकर शास्त्र तक नारी की वास्तविक अस्मिता को नकार कर मात्र स्वार्थी महिमा मण्डन करता है, अन्यथा उसे (विशेषकर पुरुष समाज को) भय है कि यदि हाथी ने अपने सम्पूर्ण शरीर का अवलोकन कर लिया, तब वह किसी भी दशा में किसी का भी अंकुश स्वीकार नहीं करेगा। इसीलिए कवि महाशय भी नारी की सौंदर्य-श्लाघा में खूब रमते पाये जाते हैं। यदा-कदा उसे दैवीय शक्ति-सम्पन्न घोषित कर वाह-वाही लूट लेते हैं, लेकिन नारी-मुक्ति के तथाकथित हथियारों में धार बिलकुल नहीं रहने देते हैं।

बुन्देली के कवियों में जगनिक, पद्माकर, बोधा, आलम, ठाकुर, ख्यालीराम, गंगाधर, ईसुरी, बिहारीलाल, लाल कवि, पजनेश, संतोष सिंह, आदि अनेक कवियों ने लोक साहित्य बुन्देली का सृजन किया है। परन्तु नारी अस्मिता पर वे मौन साधे रहे। जब कवि समसामयिक विषयों और संदर्भों को अपनी लेखनी मे स्थान देता आया है, तब फिर मात्र नारी सौदंर्य के मांसल या उसके कामुक व्यवहार ही उसे क्यों आकृष्ट कर सके? वह स्त्री-बोध और स्त्री-अस्मिता से क्यों भागता रहा है? कारण साफ है कि लोक की चित्तवृत्ति पराजित और अंधानुकरण की रही है। बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक नायकों ने नारी स्वातंत्र्य को पिंजड़े में कैद रखा है। मन बहलाने के लिए मात्र ही उसे पिंजड़े से बाहर किया गया। इस तरह की राजसी-सामंती मानसिकता और व्यवहार का अंधानुकरण आम जनता ने परवर्तीकाल तक निरंतर किया है, जिसके परिणामत: बुन्देली नारी शृंगार और भोग का खिलौना बन गयी। राजा-महराजों, सामंत-जमींदारों ने युद्ध की जय और पराजय से अपने हरम खानों की शोभा नारियों से बढ़ाई, और कवियों ने नारी सौंदर्य का बखान कर अशर्फियाँ लूटीं । लोक की भावना पुरुषत्व-पूर्ति और सौंदर्य-भोग के लिए बलवती होती चली गयी।

लोककाव्य बुन्देली में सास-बहू, देवर-भौजाई, प्रेमी-प्रेमिका, देवरानी-जेठानी, सौत, देव-देवी-आराधना आदि विषयों के गुणगान में सभी लोक कवियों ने दिलचस्पी दिखायी है, लेकिन नारी-स्वाभिमान, उसके नैसर्गिक अधिकार, उसकी आवश्यक सुविधाओं की तरफविचार करना मुनासिब ही नहीं समझा गया। मात्र नारी की बेबशी के गीत गाये गये हैं। सांत्वना और स्त्री-प्रशंसा में कमी नहीं छोड़ी गयी है। अपनी निजी कामुक अभिव्यक्तियों को राधा-कृष्ण प्रसंग से जोड़कर कवि बेदाग बरी होते चले गये हैं और रतिदान की कामना में स्त्री के मौलिक अधिकारों पर पर्दा डालते रहे हैं। कोई कवि नायिका की कदली सम पीठ पर मोहित है तो कोई नायिका के अंत:वस्त्रों पर होली की पिचकारी चलाता पाया जाता है। कोई पाँव पैजना पर रीझ रहा है तो कोई गालों की गुराई पर मोहित है। किसी रचनाकार ने इतनी हिम्मत नहीं दिखायी कि निरक्षर नायिका को साक्षरता का पाठ पढ़ा सके। अभावों और बीमारियों से ग्रसित नारियों

की सुध नहीं ली गयी। बस पुरुष-सेवा, देव-सेवा और रतिदान-सेवा ही नारी धर्म बताया गया है। इससे बड़ा अपमान नारी जाति के लिए और क्या हो सकता है। शृंगार, प्रेम, भगवदाराधना, नाच-गाना, रीति-नीति जैसे विषयों को आधार बनाकर भले ही बुन्देली कवियों की प्रशंसा की जाये, लेकिन समसामयिक वास्तविक समस्या के उद्घाटन और समाधान के लिए कोई कवि सामने नहीं आया है।

पुरुष-समाज अपनी वासनापूर्ति के लिए, आर्थिक एकाधिकार के लिए, स्त्री समाज में रौब गाँठने के लिए अनेकानेक कुचक्र रचता ही रहा है। बुन्देली जनमानस भी उक्त कुवृत्तियों की पालना में पीछे नहीं रहा है। जितने भी संस्कार गीत हैं, ऋतुगीत हैं, पर्वगीत हैं, सभी में कहीं न कहीं पुत्र-कामना, पति-कामना इंगित है। लोककवि, आदर्शवादी साहित्यकार, मुखापेक्षी इतिहासकार, आदर्श महिला-महिमा-मंडन तो खूब करते हैं, लेकिन पुत्र-जन्म, विवाह आदि सामाजिक अवसरों पर राईनृत्य (बेड़नी नृत्य जो अश्लीलता का एक नमूना है) का आयोजन किये बिना नहीं मानते हैं। होली के हुरयारे मद-मस्त होकर नारी-शरीर पर क्यों टूट पड़ना चाहते हैं ? इसलिए कि हमारी परम्पराएँ, जिन्हें हम गर्व के साथ पालन करते हैं, हमें इजाजत देती हैं, जो कहीं न कहीं स्त्री अस्मिता-बोध के लिए घातक हैं और रही हैं- अन्यथा आर्थिक, सामाजिक बौद्धिक और शैक्षणिक दृष्टि से जितना सबल पुरुष समाज रहा है उससे कमतर क्या हमारा महिला समाज रह पाता? नहीं। बिल्कुल नहीं। सिर्फलिंग की प्राकृतिक असमानता से सजातीय विषमता उत्पन्न नहीं होती हैं, बल्कि जानबूझकर वैषम्य पैदा किया जाता है। बुन्देली काव्य में नारियाँ- आदर्श-नारी, सेविका, प्रेयसी, मजदूरनी, व्यभिचारिणी, सौत, पतिव्रता, सुहागिन, आदि के रूप में तो खूब स्थापित और प्रोत्साहित की गयी हैं, लेकिन उन्हें शासिका, शिक्षिका, धर्माधिकारिणी, पुरोहित, अर्थ-नायिका, समाज-सुधारिका, पुत्री-अभिलाषी, तर्क - शीला, प्रगतिशीला के रूप में कभी चित्रित नहीं किया गया। और आज जब बुन्देली नारी अपने अधिकारों को पहचान कर उन्हें पाना चाहती है, तब बुन्देली पुरुष-समाज ऐसी नारियों को कुलटा, विधर्मी, डायन और न जाने कितने अपमान भरे सम्बोधनों और उपमानों से नोंचता हैं ताकि पुरूष-समाज की कुचेष्टापूर्ण करतूतें नंगी न हो सके। महिलाओं, किशोरियों, बालिकाओं को लक्ष्मीबाई, अवन्तीबाई, दुर्गावती, चम्पावती, सोमकुँवरि, लाड़कुँवरि के आदर्शनारी पाठ तो पढाये जाते हैं, लेकिन उन्हें सावित्री बाई फुले (शिक्षिका) इंदिरा गाँधी (शासिका), मीरा कुमार (लोकसभा अध्यक्ष), कल्पना चावला (अंतरिक्ष विज्ञानी), पी.टी. ऊषा (धाविका), लता मंगेशकर (गायिका) श्री देवी (फिल्मी नायिका) और मेधा पाटकर (समाज सेविका), पुष्पा मैत्रेयी (लेखिका) जैसे सफल चरित्रों के चरित्र से अवगत नहीं कराया जाता है। जिस दिन से भारत गणतंत्र हुआ है, उसी दिन से नारी दुर्दशा कम होने लगी है, क्योंकि भारतीय लोकतंत्र निरपेक्ष है, जिसमें स्त्री को प्रतिनिधित्व और अवसर की पात्रता है। अवसर की पात्रता ने स्त्रीबोध को दिशा दे दी है। पुरातन पंथी पुरुष समाज और खुद महिलाओं का एक समूह भी उन महिलाओं के उस सामाजिक व्यवहार से शख्त नफ़रत करता है जो स्वेच्छा से वैवाहिक प्रस्तावों को मंजूर-नामंजूर करती हैं, शिक्षा-दीक्षा एवं नौकरी पेशा के लिए पलायन करती हैं, संतानों में लिंग भेद नहीं करती हैं, समाज की दकियानूसी धार्मिक मान्यताओं, रूढ़ियों, प्रथाओं, परम्पराओं को त्याग रही हैं।

बुन्देलखण्ड में जब तक बुन्देली संस्कृति के नाम पर लोक-व्यवहार में राजसी ठाठ-बाट में गिरावट नहीं आयेगी, रूढ़िवादी पोंगापंथ नहीं मिटेगा, उच्च शिक्षा के साथ-साथ तर्क-बुद्धि विकसित नहीं होगी, जातियों-उपजातियों में खण्ड-खण्ड विभक्त समाज जातिविहीन नहीं होगा, तब तक न तो बुन्देलखण्ड विकसित होगा और न ही नारी का यथोचित सम्मान होगा। इतना बड़ा पुरुषार्थ लोककवि ही कर सकता है, क्योंकि वह जन-जन की भावना से सम्पृक्त रहता है, पर लोक कवि को मध्यकालीन विचार और संस्कृति से बाहर निकलना होगा। अन्यायपूर्ण, औचित्यहीन पौराणिक सिद्धांतों से किनारा कर मंगलकारी, समतावादी, समन्वयवादी लोक दृष्टि को अपनाना होगा। नारी के मांसल सौंदर्य, कामलिप्सा की आकांक्षा से मुख मोड़कर स्त्री (नैसर्गिक प्राणी) को स्त्री के रूप में देखना होगा। परिवर्तन में समय अवश्य लगेगा, पर होगा। वर्तमान संदर्भों में नारी की वस्तु स्थिति को समझे बिना नारी केंद्रित रचा गया लोक-साहित्य रसिक प्रिय ही कहा जायेगा, उसमें वह सत्यता और संवेदना नहीं होगी जिसकी अपेक्षा समाज से, पुरुष से, एक लोक-कवि से बुन्देलखण्ड की नारी को है, सभ्य समाज को है। अतः बुन्देली लोक कवि को लोक के सनात व्यवहार से बगावत कर समसामायिक संदर्भानुसार लोक-काव्य सृजित करना होगा, जिसमें सामूहिक रूप में अश्लीलता, तिरस्कार, असमानता का अंष मात्र भी न हो।

बुन्देलखण्डी परिवेश में नारी-चरित्र-हनन पग-पग पर व्याप्त है। अनेकानेक अपमान जनक गालियाँ, भद्दी टिप्पणियाँ गली-चौराहों पर आसानी से कर्ण-प्रवेश कर जाती हैं, क्योंकि आम जनमानस सामन्ती मनोवृत्ति का षिकार और पौराणिक कल्पित मिथ्या कथाओं का पोषक है। उसमें नारी के प्रति उदार दृष्टिकोण उस हद तक नहीं पनपता है, जिस हद तक नारी स्वाभिमान ऊँचा हो सके। बालिका और किशोरी पिता के अधीन है, युवती पति के अधीन है और वृद्धा पुत्र के अधीन है। उसे मनुष्य होने का भान हीं नहीं हो पाता है। वह तो अपनी लिंग बोधता या सौंदर्य-साधना में ही प्रसन्न है। वर्तमान का बुन्देली काव्य साहित्य अपने मध्ययुगीन काव्य से थोड़ा सा हटकर अवश्य है, लेकिन नारी चित्रण में वह ज्यादा सफल नहीं है। ले देकर वह यौवन पर ही टूट पड़ता है। उसे अषिक्षा, गिरता लिंगानुपात, स्वास्थ्य और रोजगार, बलात्कार, अग्नि-स्नान, अग्नि-परीक्षा, यौन-शोषण, यौन-अत्याचार, देह-पूजा जैसे ज्वलन्त मुद्दे दिखाई नहीं पड़ते हैं। वह तो उन्नत-उरोज और लचकती कमर पर न्यौछावर है। बुन्देली कवि उच्चता और महानता के पायदान पर पहुँचने के लिए आदर्शवाद का लबादा ओढ़कर ओरछा-प्रसंग में कुंजा (हरदौल की बहन) और चम्पावती (हरदौल की भाभी और जुझार सिंह की पत्नी) पर गीत गाता है, राजा भर्तृहरि के गीत गाता है लेकिन ऐसी (लोक भावना जो जानबूझकर स्वार्थ के लिए गढ़ी जाती है) के विपरीत देवर-भाभी (हरदौल और चम्पा) के बीच पनपते आंतरिक सम्बन्धों पर निर्भीक होकर वास्तविक एवं नैसर्गिक प्रेम का उद्घाटन नहीं करता है, बल्कि पुरातन लीक पर चलता हुआ आदर्श प्रेम करार देता है। अतः बुन्देली कवि को आंख-कान खोलकर निडर

और निरपेक्ष भाव से तार्किक और समकालिक विषयों पर केन्द्रित नारी के भिन्न-भिन्न चरित्रों का उद्घाटन अवश्य करना चाहिए अन्यथा इस बुन्देली पुरुष-समाज के मन-मस्तिष्क का कचरा ज्यों का त्यों बना ही रहेगा। बुन्देली बालिका कितनी ही उच्च शिक्षा क्यों न प्राप्त कर ले, वह पति की आज्ञाकारिणी बनी ही रहेगी। घूँघट की आड़ लिए अपने हक़-हुकूक को छिनते देखती रहेगी और सामंतों, जमींदारों के सामने दरवाजे से निकलते समय अपनी चप्पलें उतारकर नंगे पाँव चलती ही रहेगी। इसलिए बुन्देली लोक साहित्य नारी स्वातंत्र्य और खोयी हुई नारी-अस्मिता की माँग करता है ताकि समरस समाज बन सके और बुन्देली नारियाँ हिरनी और बछिया से ऊपर उठकर सिंहनी और सावित्री बन सकें। उन्हें दुर्गा, लक्ष्मी, काली और कुलटा बनाने की आवश्यकता नहीं है।

– सहा.प्राध्यापक,शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर
उत्कृष्टता महाविद्यालय,सागर (म.प्र.)
मो.नं. 9424346942

## दो गज़लें

-डॉ. राघवेन्द्र उदैनियाँ 'सनेही'

(1)

हेरौ तौ आजकल के, बाबा जे गजब ढा रए,
दिन में फरार कर रए, रातें मछरियाँ खा रए।
भगवान कौ भजन तौ इनसें कबउँ भओ ना,
जे भजन के बहानें, रंगरेलियाँ मना रए।।
प्रवचन औ नाच गाबौ पाखंड है इननकौ,
प्रवचन के मिस नई-नई जे चेलियाँ फसा रए।
डेरा हो चाय आश्रम तलघर सबइ में पबरत,
इन तलघरन में जानें का का जे गुल खिला रए।।
कैऊ तौ नोट लैकें, बेंचत टिकट सुरग कौ,
जिनने जिला न देखो उनखाँ सुरग दिखा रए।
का-का कयें 'सनेही' इन ढ़ोंगियन के लानें,
पानी पुड़ी खबाकें, प्रभू की कृपा करा रए।।

(2)

आजकल अनपढ़ गर्रा रए, बोलौ है कै नईं,
पढ़े लिखे जूता चटका रए बोलो है कै नईं।
आरक्षण के मारें सबकी, हो रई ऐसी तैसी,
अच्छे-अच्छे भट्टे खा रए बोलौ है कै नईं।
चार मंजिला बिल्डिंग ठाँड़ी तोऊ गरीब बिचारें,
कन्ट्रोल की पिसिया खा रए, बोलौ है कै नईं।
ए.बी.सी.डी. जानत नइयाँ,हैं इग्लिस के टीचर,
ऊना मासी धम्म पढ़ा रए, बोलौ है कै नईं।।
नेतन की तौ कानेंईं का है, उनकी लीलइ न्यारी,
आलू की फैक्ट्री लगवा रए, बोलौ है कै नईं।
केउ डाक्धर बने 'सनेही' आरक्षण कोटा के,
दस बारा रोजइ चटका रए, बोलौ है कै नईं।।

-शारदा विद्या मंदिर छतरपुर म. प्र.
मों-9406762156

## बुन्देली के तीन पद

-स्व.डॉ. रामस्वरूप खरे

*( आदरणीय रामस्वरूप खरे जी ने यह रचना मुझे डाक से प्रेषित की। डाक मिलने के दो दिन उपरांत उनके स्वर्गवासी होने का दुखत समाचार प्राप्त हुआ। वे एक सहृदय सहयोगी, बुन्देली के वरिष्ठ आलोचक, श्रेष्ठ शिक्षक रहें। उनके इस तरह आकस्मिक निधन से हम सबको गहना आघात पहुँचा है। उन्हे विनम्र श्रद्धांजलि-संपादक )*

### जाड़ौ

निकरे पल्ली और रजाई।
घरन-घरन में प्यौंर बिछो है, जी सें है गरमाई।।
ऐसी ठण्ड परी ई सालें, रै गइ आग सहाई।
गरम कोट मफलर सब हारे, बरबस करे ढिठाई।।
सीरौ पानी छुअत न बनबै, सिसया रये सब भाई।
उतर धरन में आइ उरइयाँ,धाम लगै सुखदाई।।
बरां-मगौरा और मगौरी, स्वाद बरन ना जाई।
'रामस्वरूप' खाट पै खाँसें , रो रये बाप-मताई।

### गर्मी

भइया, गरमी की रितु आई।
ताता तइया तपै ततूरी धरती तबा दिखाई।।
ढोर -परवेरू प्यासे मर रये, दिखे न सीतलताई।
बगरू रे उड़ रये पहार से, लपट चले दुखदाई।
छाया खों खुद छाया तरसै, कोंनन रही लुकाई।
चुयै पसीना हवा सुन्न भइ, तलफत लोग लुगाई।।
सहरन-सहरन फ्रिज कूलर की, पंखन की बन आई।।
'रामस्वरूप' मजूरी कैसे होवै राम दुहाई।।

### बसकारौ

गुइयाँ अब लग गऔ बसकारौ।
ताल-तलैया सबरे भर गये, छायौ जग अँधियारौ।।
मेंड़न-मेंड़न परे केंचुआ, पानी और गिलारौ।
ज्वार मका के भुट्टा झूमें खेत मड़इया वारौ।
सकरौंदा हो रइ कड़वे खों, अँधयारौ भुनसारौ।
उरबतियाँ चू रईं कच्चे घर, नइयाँ और सहारौ।।
बीर बहूटी और गिजाईं, हरौ मेंदुरौ कारौ।
'रामस्वरूप' बदरिया छा रइ, हो रव जग मतवारौ।।

-राठ रोड ,उरई, जालौन उ. प्र. 285001
मो.-9532084627

रचनाकारों से निवेदन है कि बुन्देली बसंत हेतु मौलिक शोध परक रचनायें भेजें। वे रचना वर्ष में कभी भी संपादक के पते पर प्रेषित कर सकते हैं। रचना उत्कृष्ट होने पर प्रकाशित की जायेगी।

-संपादक

टिप्पणी-

# बुन्देली भाषा की खोयी ताकत को याद कराती सुगम की गज़लें

-वीरेन्द्र जैन

मुझे प्रभु जोशी की हिन्दी पढ़ कर खुशी मिलती है। वे हिन्दी की ताकत को बतलाते हैं कि वह कितनी सक्षम भाषा है। जिन विषयों पर लिखने में हिन्दी के दूसरे नामी गिरामी विश्वविद्यालयी प्रोफेसर और पत्रकार खिचड़ी भाषा का प्रयोग करने को विवश होते हैं उसी विषय पर प्रभु जोशी के लेख सहज समझ में आने वाले हिन्दी के शब्दों से अपनी बात साफ-साफ समझने में सफल होते हैं। हो सकता है कि कुछ दूसरे हिन्दी लेखक व पत्रकार भी ऐसे ही सक्षम हों, किंतु अपने सीमित अध्ययन के आधार पर मैं उपरोक्त निष्कर्ष पर पहुँचा हूं। महेश कटारे 'सुगम' की गज़लें पढ़ कर वैसी ही ताकत का आभास बुन्देली भाषा के प्रति होता है। वे अपनी गज़लों में जिन बुन्देली शब्दों उसके परिवेशए स्वभाव, संस्कृति, व प्रवृत्तियों का चित्रण करते हैं उससे बुन्देलखण्ड के मूल निवासियों की स्मृतियां 'लड़िया' कर लिपटने लगती हैं।

जो भाषा अपने समय को अभिव्यक्त करने में जितनी सक्षम होगी उसका भविष्य उतना ही दूरगामी होगा। भाषा को मरने से बचाने की जिम्मेवारी उसके लेखकों व पत्रकारों की होती है। जो लोग अपनी भाषा की ताकत को नहीं जानते वे अपनी अलग पहचान के लिए लोकभाषा में सप्रयास लिखते हुए पौराणिक काल और सामंती युग में चले जाते हैं जहाँ उनके श्याम आज के कानुन की परवाह किये बिना पनघट पर राधाओं को छेड़ने लगते हैं, या उनके वीर योद्धा हाथी घोड़ों पर सवार होकर तलवारों से नये दुश्मनों के सिर काटने लगते हैं। अनेक लेखक भले ही अपने मुहल्ले में भी न जाने जाते हों किंतु उनके सपने अखिल भारतीय पहचान बनाने के होते हैं और ऐसी ही महत्वाकांक्षाओं ने लोकभाषाओं का बड़ा नुकसान किया है। लोकभाषा का लेखन सबसे पहले अपनी भाषा के व्यवहार करने वालों की पहुँच में संतुष्ट रहने की शर्त रखता है। आज भले ही हिन्दी गिने चुने नगरों में पैदा हुए बच्चों की भाषा बन गयी हो किंतु आज से तीस-चालीस वर्ष पहले प्रत्येक के दिल में एक लोकभाषा और संस्कृति धड़कती थी, व कहा जाता था कि सरकारी भाषा हिन्दी किसी की मातृभाषा नहीं है। आज भले ही कालेज शिक्षित महानगरों में नौकरी करने वालों के बच्चों ने स्कूली, सिनेमाई और टीवी भाषा से सीख कर एक खिचड़ी हिन्दी को मातृभाषा मान लिया हो किंतु उनके माँ-बाप को अभी भी उनकी लोकभाषा की ध्वनि गुदगुदा देती है।

बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में बुन्देलखण्ड पर लिखने वालों में कुछ नाम विशिष्ट हैं। सबसे पहले स्पष्ट कर दूं कि खड़ी बोली हिंदी के सबसे महत्वपूर्ण कविए बुन्देलखण्ड के गौरव, मैथली शरण गुप्त अपने क्षेत्र में सबसे बुन्देली में ही बातचीत करते थे किंतु उन्होंने न तो बुन्देली में कोई यादगार रचना लिखी और न ही उनके विस्तृत लेखन में बुन्देलखण्ड का परिवेश ही झलकता है। वृन्दावन लाल वर्मा ने बुन्देली क्षेत्र की चर्चित इतिहास कथाओं को रचनाबद्ध करने का महत्वपूर्ण काम किया जिसे ऐतिहासिक खाते में डाल दिये जाने के कारण साहित्य में समुचित महत्व नहीं मिला। बुन्देलखण्ड के हरि शंकर परसाई हिन्दी के बड़े लेखक थे। उनके दृश्य पटल पर राष्ट्रीय राजनीति और विश्व रहता था इसलिए जबलपुर के आसपास के बुन्देलखण्ड का बहुत थोड़ा हिस्सा उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है, पर जो भी है वह बुन्देलखण्ड को अपने असली रंग में जीवंत करता है,। बुन्देलखण्ड का गाँव सबसे पहले राग दरबारी उपन्यास में झलका जिसमें लंगड़ अंडरवियर की बत्तियां बनाता हुआ मिलता है। राग दरबारी के नोट्स श्रीलाल शुक्ल ने राठ में पोस्टिंग के दौरान लिये थे जो ठेठ बुन्देलखण्ड है। इस ऐतिहासिक कृति के सारे पात्र आज भी आज़ादी के बाद के बुन्देली गाँवों में देखने को मिल जायेंगे जो अपनी ऐंठ, उपहास की प्रवृत्तिए और निरंतर आलोचना के स्वभाव के साथ मौजूद हैं। इसके बाद दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास वीरेन्द्र जैन दिल्ली वाले, का 'डूब' है जिसमें ललितपुर के आसपास का उजड़ता, साहूकारी शोषण से लुटता, पिटता बुन्देलखण्ड का ग्रामीण है जो कथित विकास का शिकार है। मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम' स्मृतियों और कटु यथार्थ के सहारे झांसी से कानपुर के बीच बसे गाँवों के सामाजिक सम्बन्ध व आज़ादी के बाद बदलने में अपना बहुत कुछ खोते जा रहे गाँवों की मार्मिक कथा है। एक और महत्वपूर्ण कृति ज्ञान चतुर्वेदी की 'बारामासी' है जिसमें न केवल श्रीलाल शुक्ल वाला व्यंग्य मौजूद है अपितु परम्परा और आधुनिकता के बीच पिसते बुन्देली कस्बों और गाँवों के समाज का चित्रण है जो करुणा भी पैदा करता है। वैसे तो पढ़ी जाने वाली मंचीय कविता में अनेक लोगों ने बुन्देली में लेखन किया है जो किसी भूले बचपन की नादानियों को याद करने की तरह हास्य की ओर मुड़ती चली गयी, किंतु किसी समय चतुरेश जी ने बुन्देली हास्य के सहारे सार्थक रचनाएं दीं थीं। बाद के कवियों में मुझे सीता किशोर खरे का नाम सबसे ऊपर नजर आता है जिन्होंने चम्बल सेंवढ़ा जनपद में डकैतए पुलिस, दबंगई की राजनीति का गठजोड़ असहाय जनता का शोषण करती रहती है। टकसाली बुन्देली गीत रचनाओं का एक और अच्छा नाम मुझे याद आता है, वह जयकुमार जैन का है जो टीकमगढ़ के निवासी थे व म.प्र. के नापतौल विभाग में अधिकारी थे। कई वर्ष पहले वे किसी गम्भीर बीमारी का शिकार हो गये थेए उन पर कम काम हुआ है। झांसी के लक्ष्मी नारायण 'वत्स' ने बुन्देलखण्ड के आदिवासियों के जीवन पर कुछ अच्छे गीत लिखे हैं। छतरपुर के सोशल एक्टविस्ट रामजीलाल चतुर्वेदी ने भी कुछ यादगार रचनाएं दी हैं। बुन्देली में लिखने वाले सैकड़ों समकालीन रचनाकारों में से उपरोक्त वे लोग हैं जिन्होंने अपने समय को चित्रित किया व रचना के नाम पर पुराण कथाएं या इतिहास नहीं लिखा।

महेश कटारे सुगम की पहचान इससे ही है कि उन्होंने इस दौर की सबसे लोकप्रिय विधा गज़ल के माध्यम से टकसाली बुन्देली में ऐसी रचनाएं दी हैं जो अपने समय को अभिव्यक्त करती हैं, और सम्प्रेषणीय हैं। कह सकते हैं कि उन्होंने दुष्यंत कुमार और अदम गोंडवी की परम्परा को बुन्देली में आगे बढाया है। स्थानीय राजनीतिक कुचालों, पुलिस , प्रशासन, भ्रष्टाचार व सामंती समाज के अवशेषों ने किसान मजदूर को निचोड़ कर रख दिया है जिसकी शिकायत को बुन्देली मुहावरे में अभिव्यक्ति मिली है। सुगम की गज़लों में शोषित पीड़ितों की पुकार नकली नहीं लगती। ऐसा लगता है कि पीड़ितों को अपने छुपाये हथियार मिल गये हों।

जो कविता आम आदमी से दूर हो गई थी वह सुगम जैसे कवियों की रचनाओं से वापिस मिल सकती है।

-2/1 शालीमार स्टर्लिंग, रायसेन रोड
अप्सरा टाकीज के पास भोपाल (म.प्र.) 462023
मो. 0942567462

# बिन्नू

-महेन्द्र भीष्म

"मोए रो लेन दो मराज्। मोखाँ रोए से न रोको......... सालन बाद इन आँखन से अँसुआ निकर रए...... ऊ बब्बा मरे हते, तब रोइती मैं। ऊके बाद आज जे असुआँ निकल रए .......... मोरे जैसी अभागिन ई संसार में दूसरी कोऊ न हुए ...... पैदा होतई मोरे.... बाप-मताई चल बसे, बूढ़े बब्बा ने पाल-पोस कर जवान करो ...... फिन ब्याओ करो, पर ब्याओ के चौथे रोज मोरो मनई करंट से चिपक के मर गओ, .......... तबहूँ मोरी आँखन से असुआँ नई निकरे ते। मोखाँ देवर के संगे बैठा दओ गओ। वो भी एक मोड़ा एक मोड़ी पैदा कराके ट्रैक्टर के तरे दब के मर गओ.... तबहूँ मोरी आँखें न पसीजी तीं। मोड़ी अपने सासरे चली गई ...... तबहूँ न रोई मैं .....। मोड़ा ने अपनी लुगाई के कहे से मोखाँ घर से निकार कर, दर-दर की भिखारन बना दओ .......... तबहूँ मोरे आँखन से असुआँ न टपके ......... पर मराज्। आज तुमाई जा दशा देखके, मोरो करेजो फटो परत।.......... जे असुआँ रुके हाँ मानतई नइयाँ ........ मराज् मौसे जी-जीने सम्बन्ध रखो सबहाँ मौरी अभागिन सूरत ने विपदा में डारो ......... मैं बोत अभागन हो मराज!......"बिन्नूँ रोए जा रही थी।

उम्र के अन्तिम पड़ाव में वह वर्षों बाद मुझसे आज मिली थी। आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व की चौदह-पन्द्रह साल की दुबली-पतली, तीखे नैन-नक्श वाली अल्हड़ बाला बिन्नूँ और आज गाँव-भर की बिनई काकी बन चुकी बिन्नूँ में जमीन-आसमान का अंतर आ चुका था, उसके खिचड़ी बाल, मोटा किन्तु कमजोर-सा शरीर, निस्तेज चेहरा, बुझी हुई आँखें ........ आज से चालीस साल पहले वाली बिन्नूँ से एकदम अलग थी, मेरे पास बैठी गाँव भर कीं बिनई काकी .....।

मैं जब तक नौकरी में रहा, बीसियों तरह के लोग मेरे आगे-पीछे रहते थे, परन्तु नौकरी से रिटायर होने ........ फिर तुरन्त ही एक्सीडेंट से अपनी दोनों टांगे खो देने के बाद मेरी जिंदगी धीरे-धीरे नरक बनती चली गयी। अपनी पत्नी और अपने बच्चों के लिए मैं बोझ बन गया था। अपमान और तिरस्कारपूर्ण जिंदगी जीते रहना मेरी नियति बनती जा रही थी। अपने ही खून से पल-पल अपमानित होकर उनके द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार को सोचने मात्र से ही यह संसार बेमानी लगने लगता। पद, प्रतिष्ठा और वैभवपूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्ति् को सोचने मात्र से ही यह संसार बेमानी लगने लगता। पद, प्रतिष्ठा और वैभवपूर्ण जीवन जीने वाले व्यक्ति को एकाएक परिस्थिति वश अपने दैनिक-कार्यक्रमों के निष्पादन में भी दूसरे के सहारे की जरूरत ने संसार के लोगों का स्वार्थी चेहरा सामने ला दिया। अपने सगे संबंधियों के स्वार्थपूर्ण व्यवहार और तिरस्कार से संसार में जीने की इच्छा मर जाती है और इच्छा की समाप्ति के बाद पल-पल का जीवन बोझ बनता जाता है। इस समय घुटन महसूस होती है, मन में आत्महत्या का विचार प्रबल होता जाता है।

आत्महत्या करने से अच्छा है .... आत्महत्या की परिस्थितियों और वातावरण को एकदम से छोड़कर कहीं दूर चले जाना।

.......... और ऐसा ही मैंने किया।

गाँव में अपनी पुश्तैनी जमीन, खण्डहर होता हवेलीनुमा मकान, जहाँ मेरा बचपन बीता था, मुझे उस नरक से खींच लाया। आत्महत्या के कटघरे से अपने आप को मुक्त कराकर मैं अपने गाँव की स्वतन्त्र और ताजी हवा में शेष जीवन जीने के लिए किसी को भी बताये बिना कल यहाँ चला आया था।

गाँव के मेरे बचपन के तमाम हम-उम्र साथी और मेरे पिता के समय के लोग मुझसे मिलने आये।

पिताजी के विश्वासपात्र पंडित, जो पिताजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद सारी कृषि उपज और हवेली की देखरेख कर रहे थे, मेरे एकाएक गाँव आने पर प्रसन्न और आश्चर्यचकित हुये। मेरे अपाहिज होने और परिवार के दुर्व्यवहार पर उन्हें अत्यंत दुःख भी हुआ। उनसे भी ज्यादा दुःखी थी मेरे सामने बैठी बिनई काकी, मेरे बचपन के स्वर्णिम दिनों की बराबर की हिस्सेदार 'बिन्नूँ'।

'मराज् अब इते से जइयो न! ........... मै करो तुमाई उसार मोए तुमाए गाड़ी के डराइवर ने सब बता दओ..... तुम तनकऊ दुःखी न हो ...... ऊने मोय जो भी ......... बताओ कि तुम सब कुछ बेंच बाच के तीर्थन हाँ निकर जे हो ........ नई ....... तुमे, अब कहूँ भी जाए की तनकऊ जरुरत नईयाँ ....... तुमाई ई बिन्नूँ के रातन तुम्हें अब कोनऊ तराँ की परेशानी न उठाने परहै। मैं जीतन-जियत तुमाई सेवा उसार करो ........... अब मौरे मरे के बाद ही जा पे हो मराज् ......"कहते-कहते बिन्नूँ हिचकियाँ लेती सुबकने लगी।

गाँव में अच्छी खेती और प्रतिष्ठा के बावजूद मेरे पिता ने अपने इकलौते पुत्र को नौकरी के आकर्षण के व्यामोह में डालकर मुझे शहरी जीवन जीने पर मजबूर कर दिया। मुझे अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष कुछ हजार रुपये माहवार की गुलामी करके सीमित दायरे में बँधे रहकर बिताने पड़े। इन वर्षों में मुझे न केवल अपनी अभिरुचियों को दबाये रखना पड़ा, अपितु अपनी लाखों रुपये सालाना की उपज देने वाली कृषि भूमि के प्रबन्ध से भी वंचित रहना पड़ा। जब तक पिताजी थे। सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। उनके देहावसान के तुरन्त बाद माँ का भी स्वर्गवास हो गया था, तब पण्डित जी के बार-बार आग्रह करने के बावजूद मैं गाँव नहीं आया था। उस समय मैं अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए शहर में पूर्णतया संतुष्ट था। मैंने तब सोचा भी नहीं था कि मुझे गाँव में रहने के लिये आना पड़ेगा।

गाँव अब गाँव नहीं रह गया था, उपनगर बन चुका था। कच्चे घरों के स्थान पर ईट के पक्के मकान बन चुके थे। चाय-पान की दुकानों की बाढ़ सी आ चुकी थी। पहले जहाँ पर ढंग की कच्ची सड़कें भी नहीं थी, वहाँ अब डामर रोड पर बसें चलने लगी थी। अधनंगे फटेहाल लोगों की जगह पर रंग-बिरंगे कपड़े और पहले से ज्यादा खुशहाल लोगों का गाँव बन चुका था। मेरे बचपन के उस गाँव से अबके इस गाँव में बहुत सारे बदलाव आ चुके थे ठीक बिन्नूँ की तरह। कुछ चीजें बूढ़ी हो चुकी थीं। और कुछ बूढ़े से जवान हो रही थी।

बिन्नूँ की हिचकियाँ थम रहीं थी। मैं भी उसके अन्दर की सारी भड़ास निकल जाने देना चाहता था। मैंने उसे रोने से रोकने का प्रयास नहीं किया।

"......... का बताओ मराज्! मोय तुम कबहूँ नहीं बिसरे ........ तुम्हें मोरो मन हमेशा याद करत रओ .......... तुमने हमाए पीछे को ....... का नहीं करो .......... तुमाओ एहसान हम मरतन-मरत न भूल पेहे ........... काए मराज तुम्हें हमाये बब्बा की याद है

.... कि बिसर गए वे ........?''

बिन्नूँ ने मेरे मस्तिष्क के किसी कोने में बंद अतीत की किताब के पहले के पन्नों को टटोला था। एक तेज निःश्वास के साथ अतीत के पन्नों पर पड़ी गरदा बाहर निकल आयी।

बिन्नूँ ने पास रखे थूकदान को मेरे मुँह के पास बढ़ाया। खाँसी स्वतः अगले पल रुक गयी।

ठंड जोरों की थी। मैंने बिन्नू को सीने पर ब्राण्डी मलने को कहा। बहुत देर तक मौन वह मेरे सीने पर ब्राण्डी मलती रही। ब्राण्डी का एक पेग ले लेने के बाद मैं उनींदा हो चला। इसी अर्द्धनिद्रा की अवस्था में, मैं सोते-जागते अपने अतीत के उन दिनों में पहुँच गया, जब मैं बारह-तेरह वर्ष का निपट किशोर था।

गुरुजी मुझे पढ़ाकर जा चुके थे। नित्य की भाँति मैं हवेली के पिछवाड़े आ गया। जहाँ पर पहले से अकेले ही कटिया-मशीन पर परशू बब्बा जानवरों के लिए करबी काट रहे थे। हमारे खेतों में दिनभर काम करने के बाद वह गोधूलि के समय बैलगाड़ी पर करबी का बड़ा-सा गठ्ठर रखकर लाते, फिर कटिया-मशीन से उसको छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर गाय, भैंसों के खाने के लिए चिरई पर डालते। इस प्रकार दिया बत्ती के समय ही वह अपने घर जा पाते थे।

''परशू बब्बा! .........हम भी कटिया मशीन चलायेंगे।'' मैंने कटिया मशीन के पास खड़े होकर परशू बब्बा से आग्रह किया।

''नई बैटा। तुमाए बस की नईयाँ जा ......... तुम एक कुदई बैठके देखो!'' परशू बाबा ने कटिया मशीन चलानी रोक दी और सुस्ताने लगे। गले पर पड़ी साफी से माथे पर फैल चुकी पसीने की बूँदे पोंछने के बाद वह पुनः कटिया मशीन चलाने लग गये।

''परशू ........बब्बा ....।'' मैंने पुनः आग्रह किया।

''मान जाए करो......... मैंने केदई न तुमाए बस की नईयाँ जा।'' थकान से हाँफ्ते-हाँफ्ते परशु बब्बा बोले। हाँफ्ने से उनकी आवाज कुछ तेज हो गई थी।

''नहीं ........ हम चलाऐंगे।'' मेरे शब्दों में विनम्र हठ था।

''अच्छा ......... बहुतई जिद्दी हो हल्के मराज् तुम! आओ ........''

मेरे हठ के सामने परशू बब्बा लाचार थे। वह मशीन के डण्डे पर मेरे हाथ अपने दोनों हाथों के बीच में रखाकर कटिया मशीन धीरे-धीरे चलवाते हुए बोले, '' आओ ............ मराज् एसई मजे-मजे।''

मैं बहुत जल्दी थक गया। यद्यपि तब बारह-तेरह वर्ष की उम्र में अच्छे स्वास्थ्य की वजह से मैं अपनी वास्तविक उम्र से दो वर्ष अधिक बड़ा लगता था परन्तु ; शारीरिक श्रम करने की आदत ने होने के कारण मुझे थकान जल्दी आ गयी। मैंने डण्डे पर से अपने हाथ हटा लिये और ज्वार की कटी छोटी-छोटी नरम मीठी गाँठों को छीलकर खाने लगा।

''काए, मराज् थक गए का?''

मैंने सिर झुकाए ही कहा, 'हाँ।'

दुबले-पतले किन्तु गौर-वर्ण के परशू बब्बा कोई साठ-पैसठ साल के बूढ़े थे। ढलती उम्र में भी इतनी अधिक मेहनत क्यों करते हैं, परशू बब्बा? मैंने जिज्ञासावश उनसे प्रश्न किया-''क्यों परशू बब्बा, आपके घर में कौन-कौन है? आप इतना काम क्यों करते हैं? आपको तो अब आराम करना चाहिए....।''

''हओ मराज् ...... अगर काम न करें तो खाएँ का ........ एक राई-भरी बिन्नूँ है, हमाए ...... तुमाए कित्ती हुए या फिन साल खाड़ हल्की हुए।'' परशू बब्बा के हाथ जल्दी-जल्दी चलने लगे। संभवतः बिन्नूँ की याद आने पर उन्हें घर पहुँचने की जल्दी होने लगी थी।

''बहुत छोटी है ..... आपकी लड़की।'' मेरा प्रश्न अपने स्थान पर ठीक था।

''बिन्नूँ हमाई मोड़ी नइयाँ मराज्! नातिन आए वा मोरी।'' ऊके बाप-मताई हैजा से मर गए ते। तब बा दो महिना की हती। ऊखाँ कछू याद नइयाँ, हमई हाँ अपनो बाप-मताई जानत।'' परशू बब्बा की आँखें अपने इकलौते बेटे और बहू की याद में सजल हो गयी थीं।

''बिन्नूँ के अलावा अब कोऊ नइयाँ मोरे ......।'' खो गये परशू बब्बा दूर कहीं अपने अतीत में।

स्थिति भाँपकर मैंने परशू बब्बा से अगला प्रश्न नहीं किया, ....... जबकि उनसे और बहुत कुछ जानने की इच्छा मेरे मन में जन्म ले चुकी थी। बिन्नू के नाम से तभी मेरा प्रथम परिचय हुआ था। एक दिन-जब मैं अपने स्कूल से वापस आया था, तब मैंने देखा कि हमारे खेतों की देख-रेख करने वाला और पिताजी के आगे-पीछे बंदूक लेकर चलने वाला हाकिम सिंह नीम के पेड़ से बँधे परशू बब्बा को बेशरम की छट्टइया से पीट रहा था।

मैं यह दृश्य देखकर अवाक् रह गया। दर्दीली चोटों से परशू बब्बा की कारुणिक चीखें वातावरण में गूँज रही थीं। देखने वाले सहमी आँखों से असहाय परशू बब्बा को दुष्ट हाकिम सिंह के हाथों पिटते देख रहे थे। मैं दौड़कर हाकिम सिंह से भिड़ गया।

''क्यों मार रहे हो परशू बब्बा को?'' मैं पूरी ताकत के साथ चीखा। हाकिम सिंह का हाथ रुक गया। उसे एकाएक मेरे इस तरह बचाव में आ जाने की उम्मीद नहीं थी। बोला-''भैया, ई ने खेतन से जुंड़ी चुराई है। तुम एक कुदई हाँ हो जाओ। मोखाँ ई सारे भड़या की अकल ठिकाने लगाऊन दो।''

''जुंडी चुराई?'' ...... मुझे विश्वास नहीं हुआ। परशू बब्बा चोरी नहीं कर सकते।''कितनी जुंडी चुराई?''

''पसेरक''

''तुम झूठ बोल रहे हो। ........ परशू बब्बा चोर नहीं हो सकते ....... और फिर थोड़ी सी जुंडी के पीछे क्या तुम इनकी जान ले लोगे, ....... दूर हटो।'' मैंने हाकिम सिंह के हाथ से बेशरम की उधड़ चुकी छट्टइया छीन ली। परशू बब्बा मार खाकर बेदम हो चुके थे। मैंने उनके शरीर को टटोला-अर्द्ध-नग्न बूढ़े शरीर पर बेशरम की छट्टइया से पड़ चुकी नीली धारियों ने मुझे तुरन्त रोष से भर दिया। अगले पल ही मैंने उसी बेशरम की छट्टइया से दुष्ट हाकिम सिंह के ऊपर वार पर वार करने शुरु कर दिये .. '' तुम जल्लाद हो!........ तुमने परशू बब्बा पर हाथ उठाया? कितने बूढ़े और कमजोर हैं ये .......... इन्हें पीटते तुम्हें शर्म नहीं आयी? अपने पिता की उम्र के बूढ़े आदमी को तुमने मारा? तुम राक्षस हो। ........... तुम जानवर हो!कसाई हो! ......। रोते-रोते पता नहीं कितनी चोटें मैं हाकिम सिंह पर करता रहा। पता नहीं और क्या-क्या बकता रहा, ........। मैं अपना आपा खो चुका था, किन्तु एकाएक पैर फिसल जाने के कारण स्वयं सिर के बल गिर कर बेहोश हो गया। बेहोशी की हालत में भी मैं अंट-शंट बकता रहा। उस दिन मेरे किशोरमन को बेहद ठेस पहुँची थी।

उस समय पिताजी व माँ घर में नहीं थे। दोनों लोग कहीं गये हुए थे। उन्हें तुरन्त सूचना की गयी। जब मेरी बेहोशी टूटी, मैंने उन्हें सारी बातें रो-रो कर बतायीं।

पिताजी ने मेरे सामने हाकिम सिंह को बहुत डाँटा और मेरे आग्रह पर परशू बब्बा के इलाज के लिए शहर से डॉक्टर को लेकर आने के लिए एक आदमी भेज दिया।

डॉक्टर के आ जाने पर उसके साथ मैं भी परशू बब्बा को देखने उसके घर गया। गाँव के अन्तिम छोर पर बने कच्चे घरों की पंक्तियों में एक घर परशू बब्बा का था।

परशू बब्बा के घर की कुंडी खट-खटायी गयी। कुछ देर बाद दरवाजा खुला। ........ दरवाजा एक लड़की ने खोला था ..... मेरी हम उम्र गौर-वर्ण, अति सुन्दर। सौंदर्य जैसे उसके शरीर से फूटा पड़ रहा था। हुष्ट-पुष्ट, गोल-सुडौल उसके हाथ थे। बड़ी-बड़ी हिरणी जैसी आँखें, काली और घनी भौंहे, जैसे ब्रह्म ने उसे एकांत में गढ़कर तराशा और संसार में सौंदर्य का एक आदर्श प्रस्तुत करने के लिए भेजा हो। गौरी, सुन्दर और बड़ी-बड़ी हिरणी जैसी नेत्रों वाली लड़की बिन्नूँ थी।

डॉक्टर परशू बब्बा को देख रहा था और मैं बिन्नूँ को एकटक निहारे जा रहा था। मेरा किशोर मन यह मानने को तैयार ही नहीं हो रहा था कि इतनी सुन्दर लड़की परशू बब्बा की नातिन कैसे हो सकती है? वह कितने मैले और गंदे कपड़े पहने थी। उसे अपने बब्बा के पास जाते घिन नहीं आती होगी। यह स्कूल भी नहीं जाती होगी। मैंने बिन्नूँ से जानना चाहा-"क्यों तुम्हीं बिन्नूँ हो न?"

'हओ मराज्, एई आए हमाई राई-भरी....... बिन्नूँ। बिन्नूँ जेई आए हल्के मराज! जा तुम्हें पूछत रत।' परशू बब्बा कराहते हुए बोले। बिन्नूँ ने स्वीकृति में अपना सिर हिलाते हुए अपनी आँखें भूमि पर गड़ा दीं।

परशू बब्बा के घर से वापस आने पर मेरे किशोर मन में खलबली मच गयी। बिन्नूँ की सुन्दर मनोरम छवि मेंरी आँखों से एक पल के लिए भी अलग नहीं हो रही थी। उसको पुनः देखने की इच्छा बलवती होती चली गयी। सच तो यह कि उस दिन से ही मेरे किशोर मन के किसी कोने में बिन्नूँ के प्रति उसकी सुन्दरता और आकर्षण के हवा पानी से दया-मिश्रित प्यार का बीज अंकुरित हो चला था। और फिर परशू बब्बा के घर किसी ने किसी बहाने पहुँच जाना .......... बिन्नूँ को अपने घर बुला लेना, ........ साथ-साथ घूमना-फिरना, बैठकर देर तक उससे बातें करने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। उसका सानिध्य मुझे अच्छा लगता। निश्छल प्रेम हम दोनों के मध्य अपना स्थान बना चुका था। किशोर उम्र होने के कारण हमारे मिलने पर किसी को कोई खास आपत्ति नहीं होती थी। ऊँच-नीच और बड़े-छोटे की सोच वालों को जरुर हम-दोनों का सानिध्य पंसद नहीं आता था।

बिन्नूँ को मैं मन ही मन चाहने लगा था। वह भी मुझे बहुत चाहती थी। मैं जब कभी उसे सताया करता, तो वह रो पड़ती थी। मेरे चुप कराने पर वह भोली बाला बहुत जल्दी चुप हो जाती थी। मैं उसे अपने साथ अक्सर नदी, पहाड़ और जंगल की ओर घुमाने ले जाता। वह मेरी हर बात सहज में मान जाती थी।

बिन्नूँ को देखे बिना मेरे मन को चैन नहीं पड़ता था। बुन्देली बोली में उसकी बातें मनमोह लेने वाली होती थीं। उसे बहुत बातें करनी आती थी। वह बहुत तेज और मुझसे अधिक हिम्मती और ताकतवर थी।

हंसने से उसके गालों पर गड्ढे पड़ जाते थे। उसकी उन्मुक्त हँसी बहुत प्यारी लगती थी। मुझे सबसे सुन्दर लगती उसकी श्वेत दंत-पंक्ति जो उसके गुलाबी होठों के खुलते ही चमक उठती थी।

लगभग दो वर्ष हम दोनों का साथ रहा। मैंने इस बीच हाई स्कूल पास कर लिया था।

आगे की शिक्षा के लिए मुझे शहर में मामाजी के यहाँ भेजने की तैयारी शुरु होने लगी।

बिन्नूँ का बिछोह मेरे लिए असहनीय हो रहा था। मैं तब सोच रहा था कि बिन्नूँ मेरे साथ शहर क्यों नहीं चल सकती? क्या मेरा पढ़ना आवश्यक है? इत्यादि, इत्यादि।

बिन्नूँ से बिछुड़ने की बात किसी से कह पाना भी मेरे लिए मुश्किल कार्य हो गया था क्योंकि, अब मेरे किशोर मन में समझ ने अपने पैर पसार लिये थे। और फिर वह दिन आ गया, जब मुझे गाँव छोड़ना पड़ा। गाँव छोड़ने से कुछ समय पूर्व मैं बिन्नूँ के घर गया। बिन्नू ने रो-रोकर बुरा हाल बना रखा था। तब मैंने आवेश में कहा था- 'बिन्नूँ' मैं पढ़ लिखकर लौटूँगा और बड़ा होकर तुमसे ही विवाह करूँगा।

भोली बिन्नूँ मेरे द्वारा कहे सीधे-सपाट शब्दों को सुनकर ऐसे मान गयी, जैसे भोले नन्हें बच्चे अपनी माँ के समझाने पर मान जाते हैं और तब अन्तिम बार हम-दोनों बहुत देर तक आलिंगनबद्ध रहे थे। कच्चे अमरूदों का वह चिर-स्मरणीय, सुखद आलिंगन आज भी मेरे स्मृति-पटल पर अच्छी तरह से अंकित है।

मेरे विचारों का क्रम लड़खड़ाया। निद्रा बाधित हुई। बिन्नूँ मेरी पहिएदार कुर्सी के पायताने सिर रखकर सो रही थी, जहाँ पर मेरे दुर्घटना की भेंट चढ़ चुके पैर होने चाहिए थे।

नींद में डूबी निश्चित बिन्नूँ के चेहरे पर मैंने दृष्टि जमायी। आज की बिनई काकी के चेहरे पर मैंने वर्षों पहले की बिन्नूँ की छवि ढूँढने की बहुत कोशिश की, पर वह मुझे कहीं दिखायी नहीं दी। हम सभी समय के फेर में हैं। मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और बिन्नूँ गाँव-भर की बूढ़ी बिनई काकी बन चुकी है।

गाँव में बनी हमारी पुश्तैनी हवेली, उसके फर्नीचर सब थोड़े परिवर्तन के अलावा यथावत है। बदलाव आया है, तो हम दोनों में। इसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी लोग आगे आते रहेंगे। ........ कहानियाँ बनती-बिगड़ती रहेंगी। सदा के लिए हम जैसे लोग नहीं रहेंगे, जबकि जड़ व प्राकृत थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ सदैव बनी रहेंगी। समय अपनी गति से आगे खिसकता रहा।

मेरी पत्नी ........ मेरे बच्चे, गाँव के कुछ लोग मेरे विरोधी होते चले गये...... लोगों ने तरह-तरह की काल्पनिक कथाएँ गढ़नी शुरू कर दी। व्यंग और परिहास के तरी जब-तब मेरे व बिन्नूँ के आसपास आकर गिरने लगे। परन्तु वह अटल, अविचलित मेरी सेवा में निःस्वार्थ भाव से समर्पित बनी हुई है। उसने मुझे कभी यह आभास भी नहीं होने दिया कि मैं अपाहिज हूँ। इस जीवन में बिन्नूँ सामाजिक दृष्टिकोण से मेरी जीवन संगिनी तो नहीं बन सकी किन्तु, वह मेरे शरीर के अंगों के रुप में मेरे हाथ, पैर, आँखें बन चुकी थी ....... और अधिक कहूँ तो वास्तव में वह मेरी सब कुछ बन चुकी थी।

-डी-5, बटलर पैलेस,
आफीसर कॉलोनी, लखनऊ
226001

# व्यक्ति नाम : संस्कृति के संवाहक

-अजित वडनेरकर

शेक्सपीयर के प्रख्यात प्रेम-कथानक की नायिका जूलियट के मुँह से रोमियो के लिए निकला यह जुमला इस क़दर मक़बूल हुआ कि आज दुनियाभर में इसका इस्तेमाल मुहावरे की तरह किया जाता है। चूँकि ये बात इश्क के मद्देनज़र दुनिया के सामने आई और इश्क में सिवाय इश्क के कुछ भी ज़रूरी नहीं होता....तब रोमियो के इश्क में मुब्तिला जूलियट के इस जुमले को ज्यादा तूल नहीं दिया जाना चाहिए। इस उक्ति का उल्लेख लगभग सार्वजनीन सत्य की तरह होता है जबकि व्यावहारिक तौर पर नाम से जुड़े किसी विमर्श को अस्थायी विराम देने के लिए अथवा बेनतीजा उपसंहार तक पहुँचाने के लिए ही प्रबुद्धजन इसका प्रयोग करते हैं।

दुनियादारी में तो नाम ही सबकुछ है। यानी "बदनाम हुए तो क्या, नाम तो हुआ" जैसा नकारात्मक आशावाद आज ज्यादा चलन में है। ये नाम की महिमा है कि हर आशिक रोमियो, फरहादए मजनू जैसे नामों से नवाज़ा जाता है और हर माशूक को जूलियट, शीरीं, लैला का नाम मिल जाता है। नाम दरअसल क्या है? हमारी नज़रों के सामने, समूची सृष्टि में जितने भी पदार्थ हैं उनका परिचय कराने वाला शब्द ही नाम है। इसे संज्ञा भी कहा जाता है। संज्ञा हिन्दी का जाना पहचाना शब्द है । प्राथमिक व्याकरण के ज़रिए हर पढ़ा.लिखा व्यक्ति इससे परिचित है । संज्ञा के दायरे में हर चीज है। जड-गतिशील, स्थूल-सूक्ष्म, दृश्य-अदृश्य, वास्तविक-काल्पनिक, पार्थिव-अपार्थिव इन सभी वर्गों में जो कुछ भी हमारी जानकारी में हैए उसे संज्ञा कहा जा सकता है। संज्ञा के मूल में सम+ज्ञा है। सम अर्थात बराबर, पूरी तरह, एक जैसा आदि। अर्थात जिससे किसी पदार्थ के रूपए गुण, आयाम का भलीभाँति पता चले, वही संज्ञा है। संज्ञा यानी नाम।

सागर जिले से सटे ललितपुर जनपद के सन्दर्भ में "स्थान-नाम: समय के साक्षी" जैसा महत्वपूर्ण शोधकार्य करने वाले डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी की प्रस्तुत कृति 'व्यक्ति नाम रू संस्कृति के संवाहक' भी नाम गाथा में नया अध्याय जोड़ने वाली कृति है। पुस्तक की शुभाशंसा प्रोफेसर चित्तरंजन कर तथा विस्तृत आलोचनात्मक भूमिका 'हिंदी को मिला नया आयाम' कोशकार अरविन्द कुमार ने लिखी है। लेखक ने इस बार समूचे बुंदेलखण्ड को अपने शोध के दायरे में रखा है। हिन्दी में व्यक्तिनामों पर छुटपुट काम होते रहे हैं मगर विशिष्ट भौगोलिक-सामाजिक क्षेत्र में नामों पर व्यवस्थित काम नहीं हुआ। डॉ.राकेश नारायण द्विवेदी का यह शोध इसलिए भी महत्वपूर्ण है और इसी वर्ग में आता है।

नामकरण के पीछे जो सहज प्रवृत्ति काम करती है वह होती है 'स्व' अर्थात निजता की स्थापना। विभिन्न परिस्थितियों में इस निजता के आयाम भी अलग अलग होते हैं। जैसे जाति,धर्म, रंग, क्षेत्र, बोली अथवा अन्य कोई विशिष्ट पहचान चिह्न जो समूह या व्यक्ति की निजता से जुड़ता हो। जाति.धर्म के आधार पर मानव.समूहों की पहचान सरनेम या उपनाम के जरिये सामने आती है। नामकरण की परिपाटी आश्रय का निर्माण होने तक चली आती है। यह आश्रय चाहे राष्ट्र हो प्रांत होए नगर हो अथवा ग्राम, हर आश्रय का एक नाम जरूर होता है। हर काल में लोगों ने अपने निवास-ठिकाने बदले हैं और नई स्थिति में उनका नया नाम भी रख दिया गया। यह प्रक्रिया राष्ट्रों के नाम बदलने से लेकर मकानों के नाम बदलने तक जारी रहती है।

दुनियाभर की विभिन्न संस्कृतियों में स्थान के नाम से अपनी पहचान को जोड़ कर चलने की परम्परा रही है। इसे शायरों के नाम से आसानी से समझा जा सकता है। शायर अक्सर एक तख़ल्लुस लगाते हैं जैसे फिराक़ गोरखपुरी साहब का असली नाम रघुपतिसहाय था। इसी तरह प्रसिद्ध शायर शीन काफ़ निज़ाम का असली नाम है शिवकिशन बिस्सा और उनका ताल्लुक राजस्थान के प्रसिद्ध पुष्करणा ब्राह्मण समुदाय से है। एक शायर का नज़रिया जाति या सम्प्रदाय से ऊपर होता है। तख़ल्लुस के साथ एक खास बात उस शायर के मिजाज़ को समझने की भी होती है। शायर का स्वभाव, जीवन-दर्शन जैसा होगा, वह उसी किस्म का तख़ल्लुस रखेगा।

प्रसिद्ध रूसी जनकवि रसूल हमजातोव के पिता का नाम था हमज़ात त्सादासा। गौरतलब है, रसूल पूर्वी सोवियत संघ से अलग हुए दागिस्तान गणतंत्र के निवासी थे। उनके गांव का नाम था त्सादा इसीलिए उनके पिता हमज़ात त्सादासा कहलाए। दुनियाभर में पिता का नाम पुत्र के नाम से जोड़ने की परम्परा है सो हमज़ात के बेटे रसूल का नाम हुआ रसूल हमज़ातोव यानी हमज़ात का बेटा रसूल। असदुल्ला खां गालिबए मीर तकी मीरए मोमिनए शेख इब्राहीम ज़ौक़, मिर्जा हादी रुस्वा जैसे नामों के पीछे जुड़ी पहचान ही उनका तख़ल्लुस रहा है। तख़ल्लुस दरअसल शायर अपने मिजाज की पहचान करते हुए रखते थे। इससे अलग अधिकांश शायरों में तखल्लुस के साथ मूलस्थान का नाम जोड़ने की परम्परा ज्यादा रही है जैसे अदम गोंडवी, वसीम बरेलवी, हसरत जयपुरी, क़ैफ़भोपाली, राहत इंदौरी, शकील बदायूंनी आदि। इस परम्परा का उत्कर्ष वाराणसी के पास मछली शहर से जुड़े शायर सलाम साहब के पूरे नाम में नजर आता है। वे फख्र से अपना नाम सलाम मछली शहरी लिखते थे। शायराना तबीयत का कोई व्यक्ति शायद अटपटा सा मछली शहरी उपनाम न रखना चाहे।

संस्कृत की 'ज्ञा' धातु में जानने, समझने, बोध होने, अनुभव करने का भाव है। बेहद लोकप्रिय और बहुप्रचलितशब्द नाम के मूल में यही 'ज्ञा' धातु है । अंग्रेजी के नेम Name का भी इससे गहरा रिश्ता है । संस्कृत में ज्ञ अपने आप में स्वतंत्र अर्थ रखता है जिसका मतलब हुआ जाननेवाला, बुद्धिमान, बुध नक्षत्र और विद्वान। 'ज्ञा' क्रिया का मतलब होता है सीखना, परिचित होना, विज्ञ होना, अनुभव करना आदि । संज्ञा में चेतना का भाव है और होश का भी। ये दोनो ही शब्द बोध कराने से जुड़े हैं। अचेत और बेहोश जैसे शब्दों में कुछ भी जानने योग्य न रहने का भाव है। संज्ञाशून्य, संज्ञाहीन यानी जिसे कुछ भी बोध न हो। 'ज्ञ' दरअसल संस्कृत में ज+अ के मेल से बनने वाली ध्वनि है। इसके उच्चारण में क्षेत्रीय भिन्नता है। ज+ज के उच्चार के आधार पर ज्ञान शब्द से जान अर्थात जानकारी, जानना जैसे शब्दों की व्युत्पत्ति हुई। अनजान शब्द उर्दू का जान पड़ता है मगर वहां भी यह हिन्दी के प्रभाव में चलने लगा है।

अब आते हैं नाम पर। संस्कृत में भी नाम शब्द है। इसका आदिरूप 'ज्ञाम' अर्थात ग्नाम 'ग्याम नहीं' रहा होगा, ऐसा डॉ रामविलास शर्मा समेत अनेक विद्वानों का मत है। ग्नाम से आदि स्थानीय व्यंजन 'ग' का लोप होकर सिर्फनाम शेष रहा। 'ज्ञाम' से नाम के रूपान्तर का संकेत संस्कृत रूप 'नामन्' से भी मिलता है। अवेस्ता में भी यह नाम/नामन् है । फारसी में यह नाम/नामा हो जाता है। इसका लैटिन रूप 'नोमॅन' है जो संस्कृत के 'नामन्' के समतुल्य है। नामवाची संज्ञा के अर्थ में अंग्रेजी का नेम Name का विकास पोस्ट

जर्मनिक के नेमॉन Namon से हुआ। वाल्टर स्कीट के मुताबिक इसका सम्बन्ध लैटिन के नोमॅन और ग्रीक ग्नोमेन से है। लैटिन नोमॅन, ग्रीक ग्नोमेन Gnomen से निकला है। मोनियर विलियम्स नामन् के मूल में 'ज्ञा' अथवा 'ना' धातुओं की संभाव्यता बताते हैं। विलियम व्हिटनी जैसे भारोपीय भाषाओं के विद्वानों के मुताबिक 'ना' चिन्तन, मनन, दर्शन का भाव है। गौर करें कि 'ज्ञा' और 'म्ना' दोनों की अनुभूति एक ही है। नाम शब्द 'ज्ञा' और ष्नाष् शब्दमूल से बना है ऐसा डॉ रामविलास शर्मा का मानना है। 'ज्ञा' ही लैटिन GNA है। इसका एक रूप JNA भी बनता है और Kna भी Know में। ख्यात प्राच्यविद थियोडोर बेन्फे संस्कृत नामन् का एक रूप नामन भी बताते हैं जो पूर्व वैदिक ग्नामन की ओर संकेत करता है। नाम का पूर्व रूप ग्नाम रहा होगा, यही बात डॉ रामविलास शर्मा भी कह रहे हैं। वाल्टर स्कीट की इंग्लिश एटिमोलॉजी डिक्शनरी में भी ये दोनों रूप मिलते हैं। रूसी में इसका रूप ज्नामेनि, है।

उपनाम के लिए हिन्दी में सरनेम शब्द अपना लिया गया हॉ। इसमें 'नेम' वही है जो नाम है और अंग्रेजी के 'सर' उपसर्ग में ऊपरए परे, उच्च वाला आशय है। सरनेम से आशय कुलनाम या समूह की उपाधि से है जो उसके सदस्यों की पहचान होती है। डॉ. राकेशनारायण द्विवेदी भारत के विभिन्न प्राचीन जातीय कुलनामों तक भी पहुँचते हैं। पुस्तक में अम्बष्ठ, अयस्कार, कैवर्त, कायस्थ, किरात जैसे प्रचलित (जातीय) उपनामों के साथ साथ वे कुक्कुट (शस्त्र शिल्पियों की एक जाति जो मुर्गों की लड़ाई का प्रबन्ध भी करती है), चीन (पूर्व क्षत्रिय जिसे शूद्रों में गिना जाता है) जैसे दिलचस्प वर्ग भी बताए गए हैं। इसके अलावा, सोनकर, गूजर, कमरिया, दांगी, रावतए जाट, किरार, बेड़िया, सहरिया, कुचबंदिया जैसे अनेक जातीय उपनामों का दिलचस्प ब्यौरो दिया गया है। हालाँकि अनेक नामों का व्युत्पत्तिक आधार पता नहीं चलता जिसकी वजह से इसका भाषा वैज्ञानिक पहलू उपेक्षित जान पड़ता है। इसके बावजूद शोधकार्य का समाजशास्त्रीय महत्व है।

'नाम' से बने अनेक शब्द हिन्दी में प्रचलित हैं मसलन 'नामक' का भी खूब इस्तेमाल होता है जिसमें नामधारी अथवा नाम्नी का संकेत है। नामधारी यानी उस नाम से पहचाना जाने वाला। नाम रखने की प्रक्रिया 'नामकरण' कहलाती है। गौर करे, 'संज्ञाकरण' का अर्थ भी नाम रखना होता है। किसी सूची या दस्तावेज़ में नाम लिखवाने को 'नामांकन' कहते हैं। मनोनयन के लिए 'नामित' शब्द भी प्रचलित है। इसका फारसी रूप 'नामज़द' है। 'नामराशि' शब्द भी आम है यानी एक ही नाम वाला। ष्नामवरष् यानी प्रसिद्ध। 'नाममात्र' यानी थोड़ी मात्रा में। नाम शब्द की मुहावरेदार अर्थवत्ता भी बोली-भाषा में सामने आती है। नामकरण तो नवजात का नाम रखने की क्रिया है पर 'नाम धरना' या 'नाम रखना' में नकारात्मक अर्थवत्ता है जिसका अर्थ होता है बुराई करनाए निंदा करना आदि। 'नाम उछालना' या 'नाम निकालना' में भी ऐसे ही भाव हैं। 'नाम रोशन' करना यानी अच्छे काम करना। कीर्ति बढ़ाना। प्रसिद्ध होना। 'नाम बिकना' यानी खूब प्रभावी होना। 'नामो-निशां' मिटना यानी सब कुछ खत्म हो जाना। 'नाम जपना' यानी किसी का नाम रटना। किसी के प्रति आस्था जताना।

डॉ. राकेशनारायण द्विवेदी की किताब में अध्याय दर अध्याय नामों की महिमा उभरती जाती है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नाम निर्धारण के विभिन्न आयामों का विवेचन किया गया है मसलन नामकरण के आधार, नामों का लिंग तय होना, नामों के विभिन्न स्रोत आदि की किताब में समीचीन व्याख्या की गई है। पूरी दुनिया में पदार्थों के लक्षणों के आधार पर संज्ञाओं का निर्धारण हुआ। व्यक्ति अगर संज्ञा है तो प्रत्येक व्यक्ति का संज्ञानाम उसके निजी लक्षणों पर आधारित होगा। किन्तु प्रायः नामकरण शैशवावस्था में ही हो जाता है और तब व्यक्ति में शिशुता के अलावा और कोई लक्षण प्रकट नहीं होता। किन्तु भारतीय जनमानस धार्मिक रहा है। पुनर्जन्म में विश्वास करता रहा है। पूर्वजन्म के आधार पर इस जन्म की जगबीती को पहले से जान लेने के लिए जातक जन्मकुण्डली बनवाता है। इसके लिए धर्मसम्मत विज्ञान के रूप में ज्योतिष सर्वमान्य है।

प्रायः सभी समुदायों में पण्डित, मौलवी, पादरी आदि गुरुवर्गीय लोग ही बच्चों का नामकरण करते हैं। नामकरण की यह प्रक्रिया लक्षणों पर आधारित होती हैए ज्योतिषीय गणना के आधार पर राशि-वर्ण से नाम रखे जाते हैं जैसे पुराने ज़माने में प वर्ण से पुष्पलता रखा जाता था। अब नए दौर के माता-पिता प वर्ण से पल्लवी रखते हैं। धर्मग्रन्थों से भी नाम चुने जाते हैं जैसे राम, लक्ष्मण, भरत आदि। ईसाई धर्मग्रन्थों के लोकप्रचलित नाम हैं जैकब, अब्राहम, आइज़क, जोज़फ आदि। इसी तरह कुरान के आधार पर प्रचलित नाम हैं. याकूब, युसूफ, इब्राहिम, इसाक आदि।

लेखक ने नामों से जुड़ी अधिकांश जिज्ञासाएँ या यूँ कहें कि ककारषष्ठी को अपनी विषय-सूची में इस तरह समोया है कि उसे देखने के बाद कोई भी सम्बन्धित अध्याय तक पहुँचने से खुद को रोकना मुश्किल है। मिसाल के तौर पर व्यक्ति नाम की आर्य शैली, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, नामकरण का उद्धेश्य, नाम निर्धारण आदि। इसी तरह कल्पित नाम, भौगोलिक नाम, पदवी नाम, मनमौजी नाम, उद्धेश्यनाम, व्यावसायिक नाम, छद्मनाम, संकर नाम, सम्बोधननाम आदि। लेखक ने श्रमपूर्वक नामों की परिभाषाओं से गुज़रते हुए विश्वभर में संज्ञ-नामों पर चल रहे शोध पर नज़र रखते हुए, उसके अनुरूप भारतीय नामों के सन्दर्भों में बुंदेली व्यक्तिनामों का अध्ययन किया है, जो अपने आप में अनूठा और मूल्यवान है।

आमतौर पर लिंग्विस्टिक्स और फ़िलोलॉजी भाषा-अध्ययन की दुरूह शाखाएँ हैं। तुलनात्मक भाषा विज्ञान से भी लोग बचकर निकलते रहे हैं। कोई भी भाषा सीखते हुए व्यावहारिक व्याकरण से परिचय होते ही हमें वह कठिन लगता है, तब भाषा की उत्पत्ति, शब्दरूप, विकास, निर्वचन, वाक्यरूप जैसे अनेक विषय और भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में भाषा प्रेमी की दिलचस्पी ही बहुत कम होती है, ऐसे में साहित्यिकों-लेखकों और हिन्दी प्राध्यापकों से इस विषय पर शोधपूर्ण काम की अपेक्षा करना, साध जैसा ही है। हमने पाया है कि अधिकांश हिन्दी शिक्षकों का जुड़ाव कथा-कहानी वाले पाठ्यक्रमों से होता है। डॉ. राकेशनारायण द्विवेदी ऐसे दुष्कर क्षेत्र में न सिर्फगहन रुचि रखते हैं बल्कि निरन्तर सक्रिय रहते हुए दो महत्वपूर्ण शोध-कृतियाँ हिन्दी जगत को दी हैं। ये कृतियाँ नए शोधार्थियों के लिए प्रेरणा हैं। इन दोनों कृतियों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि दुरूह विषयों पर दिलचस्प अंदाज़ में लिखने जैसा चुनौतीपूर्ण काम भी उन्होंने सहजता से साध लिया। हिन्दी को उनसे अनेक अपेक्षाएँ हैं। एक भाषा प्रेमी होने के नाते लेखक को खूब बधाई और अनंत शुभकामनाएँ।

# इक्कीसवीं सदी: बुंदेलखंड, किसान और हिंदी कहानी

-धीरेन्द्र प्रताप सिंह

'विकास' नाम से पैदा हुई इक्कीसवीं सदी को सत्रह साल पुरे होने ही वाले हैं। इन सत्रह वर्षों में राजनीतिक-आर्थिक गलियारों में विकास की नित नई इबारत लिखी गई है। विकास के बजते डंके में कभी सेंसेक्स का चढ़ाव-उतार, बड़ी-बड़ी व्यापारिक साझेदारी, मेट्रो की आंधी, बुलेट ट्रेन की आहट और कंक्रीट के जंगलों की दास्तान सुनाई पड़ता है। कभी भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच के रोमांच, मिस यूनिवर्स की रैम्पवॉक एवं बिग बॉस के घर में रहस्य की आवाज सुनाई पड़ता है। दिखाई और सुनाई देता है कि सब पढ़ रहे हैं, सब बढ़ रहे हैं, सड़क, पुल, रेल, कॉलेज, अस्पताल, मिसाइल, बम, बन रहे हैं। सीमाएं सुरक्षित हैं। स्त्रियाँ निर्भीक हैं। हर हाथ शक्ति, हर हाथ तरक्की हो रही है और अच्छे दिन आने ही वाले हैं।

राजनीतिक गलियारों से विकास की बजने वाले डंके को जरा ध्यान से सुनने पर एक मद्धिम लेकिन किसानों की आत्महत्या की भयाक्रांत चीत्कार सुनाई पड़ती है। आंकड़ों के हवाले से यह पता चलता है कि विकास के तमाम वादों और इरादों के बावजूद आज देश का अन्नदाता गहरे संकट में है। वह मजबूरन मौत को गले लगा रहा है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो ने हाल में जो आंकड़े जारी किए हैं, उनके मुताबिक, क़िसान आत्महत्याओं में करीब 72 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। 30 दिसम्बर, 2016 को 'एक्सिडेंटल डेथ एण्ड सुसाइड इन इण्डिया 2015' शीर्षक से जारी ब्यूरो की रिपोर्ट में कहा गया है कि 2015 में 12,602 किसानों और खेतिहर मजदूरों ने आत्महत्या की। 2014 में कुल 12,360 किसानों और मजदूरों ने आत्महत्या की थी। आंकड़ों के मुताबिक, 1995 से लेकर अब तक देश भर में क़र्ज, सूखा और भुखमरी के चलते करीब सवा तीन लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं।

वैसे देखा जाय तो किसान आत्महत्याओं का यह चलन देश के लगभग सभी हिस्सों में व्याप्त हो चुका है। इसके पीछे सरकारी कर्ज, बिचौलियों का षड़यंत्र, साहूकारों का भय, भूमि अधिग्रहण की मनमानी नीति, उपज अनाज के उचित मूल्य और खरीद का अभाव, समय पर नहरों में पानी, बिजली एवं सोसायटी पर खाद नहीं, बी.टी., कॉटन बीज के खतरे और प्राकृतिक आपदा के फ्लस्वरूप सरकारी तंत्र का भ्रष्टाचार मुख्य रूप से जिम्मेदार है। यही वो कारण है जिससे समूचे देश का किसान, आंदोलन और आत्महत्या की राह पकड़ने को बाध्य है। यह सही है कि आज समूचे देश में कहीं का किसान सबसे अधिक हताश, परेशान, भयाक्रांत और आत्महत्या का शिकार है तो वह बुंदेलखण्ड का किसान है।

वर्तमान भौगोलिक नक्शे में बुंदेलखण्ड उत्तर प्रदेश के जालौन, झांसी, ललितपुर, चित्रकूट, बांदा, महोबा, एवं हमीरपुर जिले तथा मध्य प्रदेश के सागर दमोह, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दतिया जिले के अलावा भिंड जिले की लहार और ग्वालियर जिले की भांडेर तहसीलें तथा रायसेन तथा विदिशा जिले का कुछ भाग शामिल है। बुंदेलखण्ड अर्थात् देश का वह खण्ड जिसकी भाषा बुंदेली और इतिहास बहादुरी से भरा पड़ा है। जहां तलवार की धार से स्त्रियां खेलती रही हैं। जहाँ 1857 की क्रांति से पहले क्रांति का बिगुल फूँक, बुंदेलखण्ड को आजाद घोषित कर दिया गया था। यह वही बुंदेलखण्ड है जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक समृद्धता के कारण विख्यात रहा है। यह बुंदेलखण्ड क्षेत्र दी है जिसे भारत में दलहन (अरहर, चना) व तिलहन (अलसी) उपज का सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है। इसके बावजूद लेकिन आज बुंदेलखण्ड की पहचान को सूखा, अकाल और किसान आत्महत्याओं से जोड़कर देखा जाने लगा है।

बुंदेलखण्ड के किसानों के ऊपर प्राकृतिक आपदा (सूखा, बारिश, ओलों), की मार तो है ही, लेकिन सरकारी सूखे एवं तंत्र के दोहरे हमले उन्हें भला आत्महत्या करने को मजबूर क्यों न करें? इसकी एक बानगी आँखों देखी और कानों सुनी एक रिपोर्टिंग इस प्रकार है- 'अखबारों में आ रहा था कि एक किसान की भूख से मृत्यु हो गई। हम लोग वहाँ गए, किसान का नाम नेता नत्थू प्रसाद था। वे मुंगसु पुरवा गांव के निवासी थे। परिवार में उनकी पत्नी, 4 लड़के और 2 लड़की है। अंत्योदय कार्ड था, पर घर में 4 दिन से राशन नहीं था। चौथे दिन जब राशन मिलने की खबर आई तो वे भूखे पेट गए। राशन लिया, वापस गांव लौट रहे थे। पानी पिया और पानी पीते ही मृत्यु हो गई। डी.एम. बांदा कहते हैं कि यह मृत्यु भूख से नहीं हो सकती। हम जहां भी गए इस ऑनलाइन कार्ड का रोना सुनने को मिला। सूखे की इस भयावहता में इस ऑनलाइन कार्ड व्यवस्था ने लोगों की जैसे लाइफलाइन काट दी है।'[1] देश भर में घटित हो रही इक्कीसवीं सदी की तमाम रहस्यमयी स्थानीय और बड़ी घटनाओं का उस किसान से क्या सरोकार जो अन्नदाता कहलाते हुए भी दो वक्त की रोटी के लिए जूझ रहा है एवं मौत को अपना रहा है? 'महेश कटारे' अपनी एक कहानी 'कुकाल में हंटर' में जिक्र करते हैं कि एक गाँव में एक लड़की भाग गयी है, राष्ट्रीय स्तर पर इंडिया की टीम बुरी तरह हार चुकी है, कोई परदेसिन महिला ने किसी शो में शिल्पा शेट्टी को रूला कर राष्ट्रीय हंगामा खड़ा कर दिया है और स्वर्ण पाखी (शेयर बाजार) काफी नीचे गिर गया है।

इन घटनाओं के पश्चात लिखते हैं कि- 'वैसे इन राष्ट्रीय दुर्घटनाओं से यहाँ के रहवासियों का दूर-दूर तक कोई सम्बन्ध नहीं है। यहाँ तो जैसे अकाल ही स्थायी भाव बनकर पसर गया है। अकाल और अपमान से बचने का रास्ता भी खेतिहरों ने निकाल लिया है। सारे दु:खों का कारण यह देह हैं। देह का अंत ही दुख से मुक्ति है। यहाँ पर पखवारे कोई-न-कोई मुक्त हो लेता है।'[2]

बुंदेलखण्ड के किसान जीवन पर विचार करते हुए एक साथ कई आयाम दिखते हैं। जल और जमीन का सूखा होने के बाद हालात यह है कि अन्नदाता घास की रोटी खाने को मजबूर है। यह दृश्य देवेंद्र कुमार मिश्र की कहानी 'घास की रोटी' में उपस्थित है। कहानी रिपोर्टिंग और संवाद शैली में है। कहानी का आरम्भिक अंश इस प्रकार है-

'अब 21वीं सदी में हैं हम। भारत विकासशील से विकसित होने जा रहा है। संचार क्रांति सौ फ़ीसदी सफल हो चुकी है। कर्मचारियों को 7वां वेतन आयोग लागू हो चुका है। 'गाँव-गाँव में

सड़कें, बिजली, कम्प्यूटर पहुँच चुका हे और तुम कहते हो कि देश के बीचो-बीच बसे बुंदेलखण्ड में लोग घास की रोटी खा रहे हैं। क्या वहां खेती नहीं होती। क्या राशन की दुकानें नहीं हैं। तुम भी अजीब बात करते हो यार।' चैनल के पत्रकार रवि चौधरी ने कहा- जब उसके पत्रकार साथी विनोद रंजन से उसे ये जानकारी दी।'[3]

किसानों में भी मुख्य रूप से दो वर्ग होते हैं। एक तो साधन संम्पन्न किसान, दूसरे छोटे व मजदूर किसान। 21वीं सदी में जहाँ साधन सम्पन्न किसान विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्र मसलन ट्रैक्टर, हार्वेस्टर, आलू, गेहूँ बोने एवं दवा छिड़कने की मशीन आदि रखने लगे हैं, वहीं छोटे किसान आज भी हल-बैल के भरोसे बैठे हुए हैं। छोटे किसानों की हालत बड़ी दयनीय है। बुंदेलखण्ड भी इससे अछूता नहीं है। 'महेश कटारे' की कहानी 'उलझन के दिन' में इसका उल्लेख मिलता है। कहानी के दौरान यह प्रसंग आता है कि- 'साधन संपन्न किसानों ने ट्रैक्टर जुताई के लिए डीजल की टंकियाँ भरवाने लगे तो हल बैल वाले भी मरने या बिकने से बचे, चारे की किल्लत में दाँत किर्राते, सूखे भूखे बैलों के साथ खेत जोतने की जुगाड़ बिठाने लगे।'[4]

इतना ही नहीं एक ऑनलाइन वेब पोर्टल का लेख 'बुंदेलखण्ड में मौत की खेती' में मिलता है कि- 'यहाँ अप्रैल वर्ष 2003 से मार्च 2015 तक 3280 (करीब चार हजार) किसान आत्महत्या किए हैं।.... आंकड़ों के मुताबिक़ बुंदेलखंड में 80.53 फ़ीसदी किसान कर्जदार हैं।'[5]

यह दौर खेती-किसानी के सवाल पर मानों चुप्पी साधे बैठा हुआ है। किसान हताश-परेशान है। बर्बाद हो रही किसानी से किसानों एवं उनके बाल-बच्चों का भविष्य भी बर्बाद हो रहा है। अधिकांश खेत के मालिक किसान आज छोटे-बड़े महानगरों में मजदूर बनने को विवश है। किसान परिवार बेरोजगार हैं। उस किसान परिवार में सामूहिक आत्महत्या हो रही है। किसानों के पास खोने को जमीन के अलावा कुछ बचा नहीं है। बेटी की शादी के लिए या मौत के श्राद्ध के लिए, या तो वे सरकारी कर्ज या साहूकारों से चक्रवृद्धि ब्याज पर कर्ज लें या उन्हीं साहूकारों को अपनी जमीन बेंच दें। यही कारण है कि आज किसानों के छोटे-छोटे सपने भी दम तोड़ रहे हैं।

बुंदेलखण्ड के भौगोलिक परिदृश्य में यह सच पूरी नग्नता के साथ उपस्थित है। 'सत्य नारायण पटेल' अपनी कहानी 'लाल छींट वाली लूंगड़ी का सपना' में बताते हैं कि किस प्रकार एक किसान डूंगा का सपना अपनी बेटी को केवल एक लूंगड़ी दिलवाना, सपना ही रह जाता है। अब इस सपने को पूरा करने के लिए उसके पास तीन विकल्प है। या तो वह अपनी जमीन बेंचे, या हाड़ तोड़ परिश्रम करे या आत्महत्या ही कर ले। तीनों ही स्थितियाँ एक किसान के लिए भयावह है। जमीन बेचना यानि पुरखों की धरोहर बेंचना, हाड़तोड़ परिश्रम से पेट भरने के सिवा और कुछ मिलने वाला नहीं और आत्महत्या तो आत्महत्या ही है। सत्यनारायण जी लिखते हैं कि- 'डूँगा ऐसे समय और महान देश के गाँव का किसान था, जिसमें डूंगा तो क्या उसके जैसे गाँव के किसी भी रामा बा या सामान्य किसान का पेट भरने के अलावा कोई सपना देखना और मेहनत की फ़सल बेचकर जीते जी सपना पूरा करने का सोचना गुनाह से कम न था।'[6]

महेश कटारे की कहानी 'फागुन की मौत: बतर्ज किस्सा' बुंदेलखण्ड के किसानी जीवन के विभिन्न आयामों से एक साथ टकराती हुई दिखती है। यह कहानी किसान जीवन के त्रासदी की धुंधलका को हटाती है। काफी नजदीक से किसानों के दु:ख-दर्द, मौसम के छल, नये सरकारी साहूकार और भ्रष्ट निर्मम सरकारी तंत्र से सामना करती हुई दिखाई देती है।

यह वही कहानी है जिसका नायक शहर से पढ़ा लिखा नौजवान है। जिसने प्राइवेट या सरकारी चाकरी के बजाय खेती करना ज्यादा मुफीद समझा। शायद यह उसकी भूल थी। उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि किसानी कितना भाग्य, मेहनत, महंगाई, मौसम के मार और सरकारी तंत्र के निर्मम भ्रष्टता का खेल है। कहानी के हिस्से से- 'डी.के. की जमा पूँजी जरूरत भर ही थी, अत: व्यवस्था के नाम पर दो साल के खाद, बीज, जोत-पानी और कीटनाशकों में सरक गयी। एक साल सफेद मूसली उपजी तो ठीक पर बाजार ने धोखा दे दिया। अगले वर्ष सोयाबीन खेत में सड़ गई। सरसों मसूर पर माहू का कीट चढ़ दौड़ा। इस वर्ष बैंक से कर्ज लेकर आलू लगाया तो भादों, क्वार, कार्तिक के सूखे ने मार दिया।'[7]

उल्लिखित कहानियाँ इक्कीसवीं सदी की एक बानगी भर हे जो किसान जीवन की सच्चाइयों को उजागर करती हैं। इस तरह की और भी कई कहानियाँ लिखी पढ़ी गयी हैं, जिनके अध्ययन से और भी अन्य कृषिगत संकट सामने आते हैं। फि़र भी यह कहने में गुरेज नहीं कि कुछेक रचनाकारों को छोड़कर इस बुंदेलखण्डी धूल-धूसरित और मौत मिश्रित सच को बयाँ करने से हिंदी साहित्य भी घबड़ा रहा है या भाग रहा है।

फिलहाल इन स्थितियों में भला किसान कैसे और कब तक किसानी को जिंदा रख सकता है? यह परिस्थितयां दो ही विकल्प देती हैं या तो खेत बेंचकर-छोड़कर परदेश भाग जाओ या आत्महत्या कर लो। आखिर हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था क्या गुल खिलाना चाहती है? इसकी पड़ताल करते हुए सुभाष चंद्र कुशवाहा लिखते हैं कि- 'आज खेती किसानी के सवाल और सवालों की शक्ल बदल गई है। किसानी के जटिल प्रश्नों को आयातित विचारों और लम्पट कारपोरेटी आक्टोपेसी भुजाओं ने फांस कर, खाद्यान्न, खाद, बीज और कीटनाशकों पर नियंत्रण कर, अपने व्यवसाय का संवर्द्धन किया है। दुनिया के मठाधीश बनने वालों के पांव, किसानों की पीठ और पेट पर पड़ रहे हैं।'[8]

इक्कीसवीं सदी यदि 'विकास' की सदी है तो यह मानना पड़ेगा की इस विकास में किसान हाशिये पर हैं। एक कहावत प्रचलित है कि 'सोर (जड़) में पाँव डालकर तोड़ना। आज किसानी करना भी ऐसा ही हो चुका है। किसान खेती में पाँव डालकर अपना पाँव तोड़ ही रहा है। किसान आत्महत्या के आंकड़े नई आर्थिक नीतियों (1991) लागू होने के बाद से जितनी आई है, शायद ही इतने बड़े पैमाने पर पूर्व में किसानों ने आत्महत्या की हो। यह सोचकर मन व्यथित हो जाता है कि यदि अन्नदाता यूँ ही मौत को गले लगाते रहे तो न जाने कितने परिवार भूख से खुद-ब-खुद मर जायेंगे। यह भ्रष्ट पूंजीवादी राजनीतिक तंत्र कितना निर्मम होती जा रही है, इसका अंदाजा इसी बात से लगता है कि किसान खुद-ब-खुद मर जा रहे हैं। किसानी घाटे का सौदा साबित हो रहा है। किसानों के उपर कर्ज बढ़ता जा रहा है। सूदखोरों की पौ बारह है। इस सदी का सबसे बदनुमा दाग किसान बन चुके हैं और किसान जीवन की कब्रगाह बुंदेलखण्ड बन चुका है। यदि

समय रहते जनपक्षधरता, लोकधर्मी चेतना और मानवीय मूल्यों की करूणा समाज के एक बड़े हिस्से में जन्म नहीं लेती है तो यकीनन यह सदी 'अन्नदाताओं की मौत की सदी' कही जायेगी।

**संदर्भ -**


1 अरविंद राज स्वरूप, सरकारी सूखे की मार बुंदेलखंडः अभाव और दरिद्रता का समाज, समकालीन जनमत, जून 2016, इलाहाबाद, पृ.सं. 4

2 महेश कटारे, कुकाल में हंटर, छछिया भर छाछ, सं.- सुधीर सुमन, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, सं. 2008, पृ.सं. 103-104

3 www.rachanakar.org/2016/04/blog-post-49.html=1a देवेंद्र मिश्रा, घास की रोटी, 13/12/2017

4 महेश कटारे, उलझन के दिन, रचना समय (कहानी-विशेषांक-1), जनवरी-फरवरी, 2016, सं0- हरि भटनागर, भोपाल, पृ0सं0 28

5. bundelkhand.in/bundelkhand-me-mout-ki-khati-by आशीष सागर/अरूण तिवारी, 13/12/2017

6 सत्यनारायण पटेल, लाल छींट वाली लूगड़ी का सपना, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, सं0-2011, पृ0सं0-126

7 महेश कटारे, फागुन की मौतः बतर्ज किस्सा, नया ज्ञानोदय (आपदा और पर्यावरण एकाग्र) सं0- लीलाधर मंडलोई, जून 15, नई दिल्ली, पृ0सं0-55

8 सुभाषचंद कुशवाहा, हिंदी कहानी और किसान अनुभूति, रचना समय (कहानी-विशेषांक-2), जनवरी-फरवरी, 2016, सं0- हरि भटनागर, भोपाल, पृ0सं0-156



-शोध छात्र (डी.फिल., हिन्दी साहित्य)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
पताः 24/28, सरोजनी नायडू मार्ग,
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-211001
सम्पर्क सूत्र- 09415772386


## गरीब किसान

**-दुर्गाप्रसाद श्रीवास**

ऐसो धन्य किसान के जी को, पेट अबैनों रीतौ।
भुन्सारे सें खेतन कड़है, सारो दिन है बीतो।।
स्वापी-पाग, न पैर पनैयां, मैंनत खेतन् सीचौ।
बेर, मकोरा, मउआ, विनकें, भूखन लगहै नीकौ।।
बहुतै लागे चैत को घाँमौं, पानूँ पियत घरी कौ।
पैलें साल सें खेती समरी, तनक न बैठ घरी कौ।।
जा किसान है, जब्बर छाती, कर्जा चुकहै जीको।
साव उतै आ गये मेड़ पै, बोरा धरें पछीतौ।।
सिलो, वीनबें, मोड़ा-मोड़ी, लागें ठठुआ सींकौ।
देखत जो, अंसुआ वे डारें "भानू" प्रान पिरीतौ।।


-वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
प्रान्तीय खण्ड, लो. नि. वि. झाँसी


## दोहे

**-शिवभूषण सिंह गौतम**

औरौं को उपदेशते, स्वयं चले विपरीत।
यही आज-कल चलन में है, दुनिया की रीत।।
दिन-दिन बढ़ता जा रहा, प्रतिमा का आकार।
किन्तु संकुचित हो रहा, श्रद्धा का संसार।।
चिंदी-चिंदी चरित का, है व्यक्तित्व बुलंद।
उतनी मंहगी जींस है, हों जितने पै बंद।।
सत्य सिसकता मुँह छिपा, अंधेरे में बैठ।
लाबर लड्डू खा रहे, सीना तानें ऐठ।।
दर्शन औ आध्यात्म के, दुर्लभ हुये विचार।
भौतिकता की दौड़ में, अनाचार अतिचार।।
आडम्बर है धर्म में, भूला वैदिक ज्ञान।
गुरुडम की आंधी चली, फैला तम अभिमान।।
ठेकेदार समाज के, मठाधीश विद्वान।
करते भ्रमित समाज को, बाँटें विकृत ज्ञान।।
धन दौलत शोहरत सुयश, मान और सम्मान।
धरे रह गये धरा पर, कर गये प्राण प्रयास।।
अपनें-अपनें गाँव की, अपनी-अपनी बात।
अपनें - अपनें दाँव है, अपनी-अपनी घात।।
शतरंजी चौसर बिछी, शकुनी साधे दाँव।
राजनीति के खेल में, विगड़े अपनें गाँव।।
भर गये अपने गाँव में, राजनीति के रंग।
काँटे कुटिल करील के, झड़बेरी के संग।।
प्रेम अपनपौ की फसल, चरि गे कपट कुरंग।
बीज धृणा औ द्वेष के, बोये नफरत संग।।
खट्टा मीठा चिरपिरा, तीखा औ नमकीन।
मौसम अपनें गाँव का, था कितना रंगीन।।
अपनें-अपनें दुख सें, दुखी रहें कम लोग।
अधिक दुखी हैं देखकर, औरों का सुख भोग।।
दंपति संतति साधते, हैं सेवा की आस।
पर चौथेपन में उन्हें, होना पड़े निराश।।
जिन बूढ़े माँ-बाप नें, दी आँचल की छाँव।
उनको ही तुमने दिया, वृद्वाश्रम में ठाँव।।
जिन पर जीवन कर दिया, हँस-हँस कर बलिदान।
वद्वापन में अब कहाँ, परिवारिक पहिचान।।
कुछ बननें की राह में, कहाँ आ गये आप।
राह हेरते-हेरते, हेरा गये माँ-बाप।।


-अन्तर्वेद कमला कॉलोनी
छतरपुर (म.प्र.)

# घरेलू नाम और बुंदेलखंड

-डॉ. राकेश नारायण द्विवेदी

स्त्री और पुरुष दोनों के घरेलू नाम पाए जाते हैं। लाड़-प्यार में या दुलार करते समय यह नाम रखे जाते हैं। यह प्रदत्त नाम के समानांतर होते है। इन नामों के स्रोत तथा पद्धति भाषा और समाज के अनुसार पृथक-पृथक होते हैं, किंतु इन गौण या द्वितीयक नामों की व्याप्ति किमधिक विश्व में सब जगह है। प्रदत्त नाम का प्रयोग सभी औपचारिक तथा अनौपचारिक व्यवहारों के लिए होता हैं, किंतु घरेलू/दुलार नाम का प्रयोग मौखिक व्यवहारों के लिए होता है। यह किसी व्यक्ति को घर में बुलाने का नाम या बहुत नजदीकी लोगों द्वारा रखा गया लाड़-प्यार का नाम (बंगला भाषा का डाक नाम) होता है। इस नाम का प्रयोग आधिकारिक या विधिक उद्देश्यों के लिए नहीं होता है, पर अपने आस-पास के लोगों में इसका प्रयोग खूब होता है। इस नाम के प्रयोग से नामी बड़ा खुश होता है क्योंकि इससे उसे घरेलू वातावरण की सुखद अनुभूति होती है। यह नाम हंसी-प्यार अथवा उपहास में दिया जाता है। डॉ शिवनारायण खन्ना ने लिखा है घरेलू नाम का तात्पर्य घर में व्यवहृत ऐसे नाम से है जो वास्तविक नाम के अतिरिक्त हो।

यद्यपि घरेलू/दुलार नाम प्रियता तथा घनिष्ठता के द्योतक हैं, पर कभी-कभी यह व्यंग्य तथा हास्य के भी कारक बन जाते हैं।

**क. घरेलू नामों का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य -**

प्राचीन संस्कृत साहित्य में भी घरेलू नामों की विद्यमानता के साक्ष्य प्राप्त होते है। घरेलू नाम व्यक्ति की शारीरिक विशेषताओं, चारित्रिक गुणों एवं मानवीय गतिविधियों में किए विशिष्ट योगदानों के आधार पर रखे जाते थे। संस्कृत साहित्य में ऐसे बहुत से उदाहरण है, जिनमें व्यक्ति नामों की जगह घरेलू नामों का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए पतंजलि अपने महाभाष्य में कहते हैं - यर्वाणः तर्वाणः नाम ऋषयः बभूवुः अर्थात् उस समय बोलचाल के संवाद में ऋषियों के ऐसे नाम व्यवहृत होते थे। यर्वाणः यद् वाणह के लिए तो तर्वाणः तद्वाणह के लिए कहा गया। अपने सहयोगियों के बीच इन्हें यर्वाण, तर्वाण कहा जाता रहा।

माघ, भारवि, बाण, भवभूति जैसे संस्कृत साहित्य के रचनाकार अपने विशिष्ट साहित्यिक योगदान के कारण इन नामों से विख्यात हुए। भवभूति का मूल नाम श्रीकंठ, माघ का नाम घंटामाघ, भारवि का मूल नाम दामोदर, बाण का नाम तुरंग बाण था, जिन्हें अब मुट्ठीभर लोग भी नहीं जानते। चाणक्य का नाम विष्णु गुप्त और कौटिल्य बहुविदित है। वाल्मीकि के भार्गव, अग्निशर्मा नाम मिलते हैं, व्यास का नाम कृष्ण द्वैपायन था। कालिदास भी नाम नहीं, उपाधि थी, इनका वास्तविक नाम पद्मगुप्त था। आचार्य दण्डी का मूल नाम अभी भी खोजा नहीं जा सका है।

संस्कृत कवयित्री विकट नितंब (असामान्य नितंब) का नाम उनके शारीरिक गठन के कारण पड़ा। उनका वास्तविक नाम इस प्रचलित नाम के आगे प्रचलित नहीं हो पाया। पुष्ट और मांसल वक्ष स्थल के कारण स्त्री को पीन पयोधरा नाम दे दिया जाता है।

पालि साहित्य के आचार्य बुद्धघोष उनका पदवी नाम था। अपभ्रंश साहित्य में सरहपाद का बाल्यनाम राहुलभद्र या सरोज (सरोरुह) वज्र था। सिद्ध साहित्य के अनेक कवियों के नाम, जिनसे वह प्रसिद्ध हुए, उनसे इतर रहे हैं।

जैन कवि हेमचंद्र का नाम चांगदेव था। नरपति नाल्ह में पहला प्रदत्त नाम तो दूसरा उपाधि नाम था। हिंदी साहित्यकारों के नामों की लंबी सूची है, जिनका वास्तविक नाम कुछ और था, किंतु उन्हें हम अन्य नाम से जानते हैं।

महाभारत तथा रामायण जैसे महाकाव्यों तथा पौराणिक साहित्य में बहुत से उदाहरण मिलते है जिनमें व्यक्ति नाम शारीरिक तथा चरित्रगत विशेषताओं पर रखे गए मिलते हैं। महाभारत में देवव्रत का नाम कठिन प्रतिज्ञा रखने के कारण भीष्म हो गया। राजा हरिश्चंद्र के पिता राजा सत्यव्रत का उपनाम त्रिशंकु पड़ गया; क्योंकि उन्होंने तीन गंभीर पाप कर्म किए थे (1) गौहत्या (2) पिता की अवज्ञा तथा (3) ब्राह्मण की पत्नी का अपहरण। अष्टावक्र, आठ क्षेत्रों से टेढ़े होने से नाम पड़ा, दुर्वासा नाम दूर्वा घास पर रहने अथवा गंदे वस्त्र पहनने से पड़ा। इसी तरह दुर्योधन (जिससे लड़ना दुष्कर हो), दुःशासन (अननुशासित), रावण (रुलाने वाला), मेघनाद (मेघ की तरह गर्जन करने वाला) नाम हुए।

आज भी कहीं-कहीं शारीरिक तथा चारित्रिक विशेषताओं के कारण तदनुसार उपनाम रखे जाते हैं जैसे अंधे व्यक्ति को सूरा, अत्यंत गौर वर्ण के व्यक्ति को भूरा, काले रंग के व्यक्ति को कल्लू, मूर्खता पूर्ण आचरण के कारण बुद्धू इत्यादि। इसी तरह चूहा, बंदर, छिपकली, लोमड़ी, चमगादड़, हाथी नाम रखे जाते हैं। ब्राह्मणेतर व्यक्ति भी चौबे तिवारी जैसी समझ रखने अथवा उसकी चाह रखने के कारण चौबे, तिवाई कहे जाने लगते हैं।

**ख. घरेलू नाम बनाम दुलार नाम -**

आमतौर पर यह दोनों नाम एक ही अर्थ में प्रयुक्त किए जाते हैं, पर इनके बीच अंतर है। घरेलू नाम व्यक्ति की शारीरिक एवं स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर रखा जाता है अथवा उस व्यक्ति के तत्संबंधी विलक्षण योगदान के कारण घरेलू नाम पड़ जाता है जबकि दुलार नाम माता-पिता के प्यार से रखे गए नाम को कहा जाता है। इस नाम में कोई शारीरिक अथवा चारित्रिक विशेषताओं का होना आवश्यक नहीं। कभी-कभी तो बिना अर्थ का शब्द भी दुलार नाम का रूप बन जाता है। ऐसे नाम माता-पिता के अतिरिक्त उनके अभिन्न मित्र, परिचित अथवा रिश्तेदारों को ही ज्ञात होते हैं। दुलार नाम को जब उसके वरिष्ठ पुकारते है तो प्रेम का संस्पर्श होता है और प्रिय भावना उमड़ जाती है। नामी व्यक्ति प्रफुल्लित हुए बिना नहीं रहता। दुलार नामों का प्रयोग अजनबी व्यक्ति तथा अपरिचित व्यक्तियों द्वारा नहीं किया जाता। बुंदेलखंड में दुलार नाम यदि अपरिचित को ज्ञात हो जाए और उसका सार्वजनिक प्रयोग कर दे तो कभी-कभी बात बिगड़ भी जाती है।

**ग. घरेलू नाम बनाम निंदात्मक नाम -**

घरेलू नाम तथा निंदा/कुरूप नाम के बीच मोटा अंतर है कि घरेलू नाम जहां बच्चे को उसके माता-पिता उसकी विशेषताओं के कारण बड़ा होते समय प्यार पूर्वक देते हैं, जबकि निंदा नाम

सोददेश्य दिए जाते हैं और व्यक्ति के जीवित रहने तक यह नाम चलते रहते हैं।

निंदा नाम अशिक्षित ग्रामीण व्यक्तियों द्वारा नामी अथवा उसके परिवार के प्रति अरुचि भाव रखने के कारण भी रखा जाता है। कभी-कभी तो ऐसे नामों के अपमानजनक अर्थ भी प्रकट होते है। बुंदेलखंड में ऐसे नाम खूब मिलते हैं - बुद्धू, कल्लू, टुड़िया, टुंडा, बूचा आदि। जब यह नाम प्रचलित हो जाते हैं तब व्यक्ति के प्रति अनुपेक्षा दिखाने के आशय से नामोच्चारण में ध्वन्यात्मक सौष्ठव दिखाया जाने लगता है जैसे बुद्धू का पूरा नाम बोलने लगेंगे बुद्धू सिंह या बुद्दे/राम, टुंडा को टुंडे, लटोरा को लटोरे, कड़ोरा को कड़ोरे इत्यादि।

**घ. घरेलू नाम बनाम लेखनी नाम -**

सामान्यत: घरेलू नाम तथा लेखनी नाम को हिंदी में उपनाम कहा जाता है। उपनाम के कई स्तर होते हैं। वस्तुत: नाम के दूसरे रूप अथवा नाम के उत्तरवर्ती पद अथवा नामेतर रूप को हिंदी में प्राय: एक ही शब्द 'उपनाम' कह दिया जाता है, किंतु उपनाम कहने से उन नामों के बीच की सूक्ष्मता प्रकट नहीं हो पाती। घरेलू नाम को अंग्रेजी में 'निकनेम' कहा गया है। घरेलू नाम तथा लेखनी नाम दोनों के अलग-अलग विशिष्ट रूप है। दोनों में मुख्य अंतर है कि घरेलू नाम व्यक्ति के गुण स्वभाव व शारीरिक गठन के आधार पर दूसरे व्यक्ति प्रदान करते हैं। यह प्रदत्त नाम से पृथक एक द्वितीय नाम होता है जबकि लेखनी नाम व्यक्ति स्वयं रखता है जो प्राय: शिक्षित व्यक्ति अपनी विशेषताओं को छिपाने के लिए अथवा किसी उमंग में रखता है। इस नाम का उसके व्यक्तित्व अथवा शारीरिक/चारित्रिक विशेषताओं से सीधा संबंध नहीं होता।

**च. घरेलू/दुलार नाम बनाम प्रदत्त नाम -**

घरेलू/दुलार नाम तथा प्रदत्त नाम के बीच प्रमुख अंतर है कि घरेलू/दुलार नाम का प्रयोग औपचारिक अथवा अनौपचारिक कार्यों के लिए अनिवार्य नहीं होता। इन नामों का प्रयोग अपने बंधु-बांधवों, रिश्ते/नातेदारी और मित्रों/ कुटुंबियों के बीच ही होता है किंतु प्रदत्त नाम की प्रयोग सीमा अप्रतिबंधित है। यह सभी तरह के दस्तावेजों तथा संबोधनों में प्रयुक्त होता है।

इसके अलावा घरेलू नाम व्यक्ति की कुछ शारीरिक विशेषता या आदत का संकेत करता है किंतु प्रदत्त नाम से ऐसा कोई संकेत अनिवार्यत: नहीं मिलता। प्रदत्त नाम का व्यक्ति की शारीरिक अथवा चारित्रिक विशेषताओं से आत्यंतिक संबंध न होने के कारण नाम निरर्थकता संबंधी अनेक कहावतें चल पड़ी है। बुंदेलखंड निवासी प्रसिद्ध पत्रकार कृष्णानंद गुप्त द्वारा अनूदित और संशोधित एस डब्ल्यू फैलन के हिन्दुस्तानी कहावत कोश से ऐसी कहावतों के कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं।

*नाम इमरत पिलाए विष*
*नाम की नन्हीं उठा ले जाए धत्री*
*नाम के बाबा जी करनी छावर*
*नाम बड़ा ऊँचा कान दोनों बूचा*
*नाम बड़े और दर्शन छोटे*
*नाम बसंती मुंह कूकुर सा*
*नाम हीरामल दमक कंकड़ सी भी नहीं*
*रंग कौवे सा मेहताब (चांद) नाम*
*रहे के झोपड़ी नाव लेवे के धरोहर*
*डरे लोमड़ी से नाम दिलेर खां*
*आप मियां सूबेदार घर में बीबी झोंके भाड़*
*अस्सी बरस की उमर नाम मियां मासूम*
*आंख गड्डु नाक भद्द सोहनी नाम*
*आंख न नाक बन्नी चांद सी*
*नाम भर का।*

सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो घरेलू/दुलार नाम किसी समाज की वर्ग संरचना को सूक्ष्म रूप में रेखांकित करते हैं।

कई बार घरेलू/दुलार नाम ही प्रदत्त नाम बन जाते है जैसे- मुन्ना, भूरे, कल्लू, बुद्धू आदि। ऐसे नाम प्रदत्त नामों के रूप में प्रयुक्त होने लगते हैं। यह स्थिति समाज के निम्न वर्गों में अथवा आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों में देखी जाती है। जहां बच्चे का नामकरण नहीं होता, बच्चे को जिस नाम से समूह पुकारने लगा, वही नाम उसका वास्तविक नाम बन जाता है।

कभी-कभी यह भी देखा गया है कि घरेलू/दुलार नाम प्रदत्त नाम से भी अधिक प्रचलित हो गया और व्यक्ति का वास्तविक नाम कहीं पीछे छूट गया। इसी अध्याय के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य स्तंभ में कतिपय साहित्यकारों के ऐसे नाम दिए जा चुके हैं। कतिपय प्रमुख व्यक्तियों के ऐसे नामों के कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ प्रमुख रज्जू भैया (राजेंद्र सिंह), पूर्व मंत्री और विधायक राजा भैया (रघुराज प्रताप सिंह) संगीतकार पंचम दा (राहुल देव वर्मन) रज्जू (राजनारायण बुधौलिया) बुंदेलखंण्ड में कुछ संबंध नाम ही घरेलू/दुलार/आदर नाम बन जाते हैं जैसे- नन्ना जू (चाचा/माता), कुंवर जू, कक्को जू, फजू, बायजू (ननद), बइयर जू (स्त्री/ननद), दुलैया जू, दाऊ साब/जू (बड़े भाई), कक्का (चाचा), दद्दा/दादा (पिता/पिता के बड़े भाई), राजा, दिमान (वरिष्ठ जन)-दिव्यमान, रावसाब, बउआ (वृद्ध स्त्री), बहू (बधू), मानजू (मामी), राजे-राजा (लड़की), दायजू (पिता के बड़े भाई), कक्की (चाची), पावने (दामाद)। छोटे बहनोई, लाला (जीजा/दामाद/देवर) लला/लल्ला (बालक), बब्बा (वयोवृद्ध), बाई (माता), मताई (माता) जिज्जी (दीदी/बुआ)। यहां तक कि यही नाम कभी-कभी प्रदत्त नाम भी स्वीकृत हो जाते हैं। बुंदेलखंड में नाम के आगे जुड़ा 'जू' निपात आदर सूचक होता है। कभी-कभी गाली देने के लिए भी यहां जू लगाया जाता है जैसे सारे जू, निपोरा जू।

छ. घरेलू नामों की श्रेणियां -

प्रदत्त नाम की तरह घरेलू नामों की भी विभिन्न श्रेणियां होती है। मुख्यत: इसकी दो श्रेणियां है (1) एक स्वतंत्र पहचान, जो व्यक्ति के कुछ शारीरिक व चारित्रिक गुणों या उसकी अवस्थाओं पर आधारित हो अथवा उसके जीवन की कुछ घटनाओं से जुड़ी हो। (2) पूर्ण नाम का संक्षिप्तीकरण अथवा उसकी काट-छांट।

(1) स्वतंत्र पहचान- स्वतंत्र घरेलू (निक) नामों की लंबी सूची बन जाएगी जैसे- संबंध सूचक नाम- भैया, दादा, दाऊ, ताऊ, काका, बब्बा, फजू, काका पंजाब में बालक को कहते हैं, किंतु बुंदेलखण्ड में यह चाचा को कहा जाता है। मुन्ना, मुन्नी, गुड्डो, गुड़ो, गुड़िया इत्यादि भी संबंध सूचक घरेलू नाम है। कुछ घरेलू नाम शारीरिक अथवा

अवस्थागत कारणों से होते हैं जैसे-छुटकी, लंबू, नन्ही, बड्डे, बड़े, मझले, संझले, गंझले, नन्हें इत्यादि। पैदा होते समय चपटा सिर (गुड़ बटी की भांति) होने के कारण शिशु का नाम 'बाटे' रखा गया। बाद में उसका नाम विद्यालय में दर्ज कराते समय 'महाराज सिंह' किया गया।

(2) संक्षिप्तीकरण - प्रदत्त नामों को संक्षिप्त करके उनके आद्यक्षर अथवा उनकी काट-छांटकर अर्द्धांशनाम घरेलू अथवा दुलार नामों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। घरेलू नामों तथा लघु/संक्षिप्त दुलार नामों में मुख्य अंतर यह है कि घरेलू नाम एक स्वतंत्र तत्व हैं जो प्रदत्त नाम से संबंधित नहीं होता, किंतु संक्षिप्तीकृत नाम प्रदत्त नाम की ही काट-छांट करके बनाए जाते हैं। इस प्रकार यह पूर्ण नाम से संश्लिष्ट होता है, जिसका प्रथम अथवा द्वितीय पद (घटक) प्रदत्त नाम का ही रूप होता है।

संक्षिप्तीकृत नामों का इतिहास भारत में बहुत पुराना है। महान व्याकरण शास्त्री पतंजलि ने अपने महाभाष्य में कहा है, लंबे नाम वाले किसी व्यक्ति को उसके नामांश रूप से भी जान सकते हैं। अतः अगर किसी व्यक्ति का नाम सत्यभामा हुआ तो उसे 'सत्य' अथवा 'भामा' नाम से जाना जा सकता है। पाणिनि ने भी अपनी अष्टाध्यायी में संक्षिप्तीकृत नाम उद्धृत किए हैं। उन्होंने देवदत्त को देव या दत्त कहा। नाम का संक्षेप किए जाने के उदाहरण भी व्याकरण शास्त्री पाणिनि के यहां मिलते हैं जैसे - देवदत्त से देवत्त अथवा स्वाति दत्त से स्वाति।

बुंदेलखंड में स्वतंत्र घरेलू नामों के अतिरिक्त संक्षिप्तीकृत नाम भी घरेलू नामों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसा पतंजलि कह गए कि प्रदत्त नाम को प्रारंभिक अथवा अंतिम पद में प्रत्यय लगाकर अथवा बिना प्रत्यय ही संक्षिप्तीकरण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जुगुल किशोर पुरुष नाम को जुगुल अथवा किशोर नाम से संक्षिप्तीकृत किया जा सकता है। स्त्री नाम जैसे हेमलता/प्रेमलता को हेमा/प्रेमा रूपों में व्यक्त किया जाता है। बहुधा बुंदेलखंड में पूरे नाम का प्रथम पद काटकर संक्षिप्त कर लिया जाता है, किंतु इस नाम में प्रथम पद के प्रथमाक्षर व्यवहृत होते हैं जैसे (पुरुष) हरिश्चंद्र- हरीश/हरि, राजेंद्र- रज्जू, शिवानंद/शिवेंदु/शिवशंकर- शिव/शिबू, ललितमोहन- लल्लू, जगभान/जगमोहन- जग्गू/जगन, रामदत्त- रामू, संजय कुमार- संजू, विजय- बिज्जी, कन्हैयालाल- कन्नू, भूपेंद्र- भूपी, शैलेंद्र- शैलू, बृजमोहन/बृजनारायण/बृजेश- बिरजू, राजेंद्र/राजेश- राजू, दीनानाथ- दीनू, मनोज कुमार- मनु (स्त्री) अनुराधा- अनु, मनोरमा- मनु, दिव्यांशी- दिब्बो, लीलावती- लीला, भानुमती- भानु, चंपाकली- चंपी, दीपिका- दीपि, मोहिनी- मोना आदि। संरचना के स्तर पर उच्चारण में भी पुरुष नामों में सामान्यतः ओ/ऊ तथा स्त्री नामों में आ/ई प्रत्यय जुड़ जाता है।

घरेलू/दुलार नामों की एकरूपता के कारण पहचान की समस्याएं भी आती है। घरेलू/दुलार नामों की व्याप्ति प्रत्येक सामाजिक और भाषाई समूह में है। इन नामों के स्रोत और रूप व्यक्ति नामों की तरह नहीं होते। इसलिए सभी क्षेत्रों और समुदाय की बोलियों में घरेलू/दुलार नामों की अनेकरूपता व्यक्ति नामों की भांति नहीं मिल पाती। एक समूह के घरेलू नाम अन्य समूह के नामों में भी प्रयुक्त होते रहते हैं।

घरेलू नामों की विविधता से कभी-कभी किशोर बालकों की पहचान करने में समस्या आती है। जब कुंभ जैसे बड़े मेलों की भीड़ में बच्चे खो जाते हैं। उनके नामों की घोषणा होने के बावजूद उन्हें पहचानने में भ्रम उत्पन्न होता है। पूर्ण कुंभ मेला इलाहाबाद से एक समाचार आया था कि खोए हुए एक पप्पू नाम के बालक के तीन दावेदार सामने आ गए, लेकिन उन तीनों में से भी कोई उस खोए हुए बालक के परिवार का नहीं था।

'गुड़िया' बड़ा प्रचलित स्त्री घरेलू नाम है। कुंभ के इसी मेले में खोई हुई बच्ची 'गुड़िया' की घोषणा हुई तो माता-पिता ने सोचा, उन्हें उनकी बच्ची मिल जाएगी पर जाकर देखा कि वहां 7 से 10 वर्ष की आयु की तीन गुड्डी नाम की बच्चियां उपस्थित है। उसकी गुड़िया वहां नहीं है। ऐसे भ्रम कई अवसरों पर, घरेलू नामों में ही नहीं बड़े-बूढ़ों के व्यक्ति नामों की पहचान में भी हो जाया करते हैं।

**ज. घरेलू नामों की संरचनाए -**

घरेलू नामों की व्याकरणिक संरचना में उनके शब्द रूप प्रदत्त नामों की तुलना में छोटे होते हैं, किंतु उनके ध्वनि रूप लयबद्ध होते हैं। भाषा का ध्वनि रूप उच्चारण में और शब्द रूप लिखित रूप में प्रयुक्त होता है। घरेलू नामों का ध्वनि रूप नामकरण संस्कार के समय का स्मरण करा देता है। यह नाम सामान्यतः दो अक्षरों का लघु रूप होता है। नाम के अक्षर प्रायः व्यंजन स्वर व्यंजन अथवा स्वर व्यंजन स्वर अथवा व्यंजन स्वर व्यंजन स्वर पद्धति में होते हैं। गौर करने वाली बात यह भी है कि घरेलू नामों में प्रायः दूसरा व्यंजन द्वित्व हो जाता है तथा दूसरा या अंतिम स्वर आ/ई/ऊ/ओ हो जाता है। पुरुषों के घरेलू नामों में सामान्यतः आ/ऊ तथा स्त्री के घरेलू नामों में आ/ई प्रत्यय लगाया जाता है। उदाहरण के लिए (पुरुष) मुन्ना, चुन्नू, बिज्जू, कल्लू, बिद्दू, लल्लू, गुल्लू, पप्पू, बब्बू, बब्लू, कक्कू, दद्दू, लल्ला, बिल्ला, नानू, सोनू, मिंटू, भोलू, नत्थू, गुड्डू तथा (स्त्री) पम्मी, पप्पी, रिंकी, मुन्नी, निक्की, निम्मी, सिम्मी, गुड्डी, लल्ली, बब्बी, बेबी, कुक्की, रानी, गुड़िया आदि। इनमें से कुछ नाम स्त्री पुरुष दोनों के लिए चलते हैं। कभी-कभी पुत्र की चाह में यदि पुत्री पैदा हुई तो पूर्व से सोचा हुआ घरेलू नाम उस पुत्री का रख दिया जाता है। कभी-कभी पुरुष नामों में भी ई प्रत्यय लगाया जाता है, जैसे पम्मी, बिज्जी आदि।

बुंदेलखंड में प्यार पूर्वक 'आ' प्रत्ययांत स्त्री पुरुष घरेलू नाम बन जाते हैं जैसे बबुआ, गुड़िया। इस पद्धति में नाम में अक्षर क्रम व्यंजन स्वर व्यंजन स्वर स्वर हो जाता है।

कभी-कभी उपेक्षा में भी 'आ' प्रत्यय नाम में जोड़ दिया जाता है, किंतु इससे पूर्व का अक्षर ह्रस्व हो जाता है जैसे दाऊ से दउवा, नाऊ के लिए नउआ, हरनारायण के लिए हन्ना (इसी नाम को प्यार से बोलने के लिए हन्ने ध्वनि रूप हो जाता है)

उपेक्षा और गुस्से में घरेलू अथवा व्यक्ति नामों के कई ध्वनि रूप बनने लगते हैं। कोई माता-पिता अथवा परिजन अपने बालक को पहली बार बुलाए गए मूल नाम से यदि न सुने या अनसुना कर दे तो अगली बार उसे प्यार और उपेक्षा के मिश्रित नाम से पुकारा जाएगा और फिर भी यदि नहीं सुनता है तो उसे आक्रोश पूर्वक बुलाया जाएगा जैसे - स्याम, स्सियाम, हियाम। यह रूप लिखित माध्यम में नहीं आ पाते हैं।

स्वर व्यंजन का उक्त अक्षर क्रम अंग्रेजी अथवा अन्य भाषा समूहों के लिए लागू नहीं होता। आम तौर पर घरेलू नामों में द्वितीय

व्यंजन का द्वित्वीकरण हो जाता है। यदि चतुराक्षरिक नाम हुए तो प्रथम दो तथा अंतिम दो अक्षरों की पुनरावृत्ति भी हो जाती है जैसे मुनमुन। कुछ घरेलू नामों और व्यक्ति नामों का ध्वनि रूप उपेक्षा और प्रतिरोध भावना अथवा ईर्ष्या के कारण बदल दिया जाता है। ऐसे नाम चिढ़ाने के लिए भी गढ़ दिए जाते हैं, राकेश को रक्सा, दयाराम को दिल्ला, जगभान को जगना आदि रूप बन जाते हैं।

घरेलू नामों से व्यक्ति के मूल निवास स्थान का संकेत भी प्राप्त होता है। मुन्ना, मुन्नी प्रकार के घरेलू नाम बुंदेलखंड ही क्या संपूर्ण हिंदी क्षेत्र में पाए जाते है, किंतु पंजाब में काका, काकी, निक्की, बिट्ठू, बिल्ला, बिल्लू आदि घरेलू/दुलार नाम भी मिलते हैं। दक्षिणी राज्यों में- तमिल मे चिट्टी (छोटा), पोट्टी (संक्षेप) इत्यादि, दक्षिणी कर्नाटक में पुट्ठू, कक्कू, अन्नू/अन्नी, सिक्कू, लकरू (दुबला - पतला), कलुआ/काला (बहरा) तो अम्मू, अप्पी, पप्पू, मिंकी, अप्पी आदि संपूर्ण कर्नाटक में मिलते हैं। केरल में - कुल्लन, कुनन, करुप्पन, कसंडी, कुथिरा, अना, कुरुन्ना, विक्कन, मरक्कल आदि घरेलू नाम मिलते हैं। केरल में ईसाईयों में दुलार नाम सममित आकार में मिलते है जैसे एबी, बेबी, राय, रूबी, रूनी, आदि।

बुंदेलखंड क्षेत्र के मुस्लिमों में घरेलू नाम प्रायः अन् अथवा ऊ/ओ प्रत्ययांत मिलते हैं। किसी भाषा का प्रभाव सभी प्रकार की जाति और धर्म के लोगों पर पड़ता है। अतः बुंदेली बोली का प्रभाव मुस्लिमों के घरेलू/दुलार नामों में हुआ है। उदाहरण के लिए (पुरुष) - सद्दन, फुट्टन, कल्लन, जुम्मन, छिद्दन, छुट्टन, अच्छन, मच्छन, भूरे, छोटे, नन्हे आदि (स्त्री) - मुन्नी, बहीदन, रशीदन, शकीलन, नफीसन, नसीरन, रफीकन आदि। इनमें से कुछ घरेलू नाम हिंदू मुस्लिम और जैन व्यक्ति नामों में भी ध्वनि रूपों के परिवर्तन के साथ प्रयुक्त होते हैं। मुस्लिमों में अच्छन और छिद्दन, हिंदुओं में क्रमशः अच्छे और छिद्दू हो जाते है। मुन्नी, भूरे, छोटे, नन्हे जैसे घरेलू नाम हिंदू, जैन तथा मुस्लिम समुदाय के व्यक्तियों में यथारूप प्रचलित हैं।

ईसाईयों में प्रचलित घरेलू नाम निम्मी, पिंकी, पिंटू, रिंकू, कट्टी, बेबी, रूबी, बेबी, रोजी, किट्टी, पप्पी, बबली गैर ईसाइयों में भी प्रयुक्त होते हैं।

-245 शब्दार्णव, नया पटेल नगर,
कोंच रोड, उरई-285001
मो 9236114604

## माँ बाप की पीड़ा

**-फेरन सिंह परिहार**

कमा कमा कड़ गई उमरिया।
ई लरकन के लानें।।
बेई बाप-मतारी तरसें, दो रोटन के लानें।।
करी चाकरी जीवन काटो।
तुम्हें पढ़ाओ लिखाओ।।
जहाँ तुम्हारो गिरो पसीना।
उत पै खून बहाओ।।
कितनें करम करे है, जिनको, मोल चुका ना पानें।।
बेई बाप मतारी तरसें, दो रोटन के लानें।।
जब सें आ गईं बहुयें घर में।
बंटाढ़ार करा दओ।।
उठा कें डेरा बाहर डारो।
घर सें अलग धरा दओं।।
सोचो ना लरकन नें तनकउ।
होनी हो कें रानें, बेई बाप-मतारी तरसें।
दो रोटन के लानें।।
अरे विधाता कब लौं जीने।
भव सें पार लगा दो।।
सिंह सहन ना होती पीरा।
मौत हाँ जल्द बुला दो।।
कीसें कहिये कैसो करिये।
अब आगे का होने।।
बेई बाप-मतारी तरसें, दो रोटन के लानें।।

-ग्राम पिपरा माफ
जनपदः महोबा (उ. प्र.)
मो. 07607378537

## गाय की व्यथा

**डॉ.मोहन तिवारी 'आनंद'**

गैया भूखी-प्यासी मर रई, मैं जा व्यथा कौन से काँव।

तीन साल से सूखा पर रओ, खाली परो तला नईं भर रओ,
नदिया-नाले खाली डर रए, बूँद-बूँद खौं प्यासे फिर रए,
मोरी व्यथा बड़ी भारी है, की सें कहने जांव।
गैया भूखी-प्यासी मर रई, मैं जा व्यथा कौन से काँव।

तुम सब मो खां माता मानत, पाँव परत पूजत सम्मानत।
भूखे पेट भटक रई दर-दर, लाठी-डंड़ा खा रई घर-घर
जूठन-कचरा, पन्नी खाकर
कब लौ जान बचांव- गैया भूखी-प्यासी ...।

मोरी तुम सुनलो लाचारी, कुर्सी वाले-सत्ताधरी।
मैं माँ-बहनों जैसी प्यारी, धरम-करम में सदा तुम्हारी।
मुझ पर झूंठे दांव चलो न हाथ जोड़ समझाँव,
गैया भूखी-प्यासी मर रई, मैं जा व्यथा कौन से काँव।

मोरी थोड़ी विनती सुनलो खुद की बोली-वानी गुनलो।
बातें छद्म करो न भैया हाथ जोड़ घिगया रई गैया।
मो पर चाल चलो न फर्जी हाथ जोड़ समझाँव।
गैया भूखी-प्यासी मर रई, मैं जा व्यथा कौन से काँव

-सुन्दरम बंगला, 50 महाबली नगर,
कोलार रोड, भोपाल-462042
मोबा. 8989439312

# 'फागुन की मौतः बतर्ज किस्सा' का हरित पाठ

-शिवम् सिंह

बुन्देलखण्ड की माटी के खांटी रचनाकार महेश कटारे की यह कहानी नया ज्ञानोदय, जून 2015 (आपदा और पर्यावरण एकाग्र) अंकमें, कहानी के तेवर को जाहिर करती इस टिप्पणी के साथ प्रकाशित होती है- ''मौसम जब छल कर रहा हो किसान से तो गांव के नये महाजन भी हो जाते हैं बेइमान। सरकार का तो कहना ही क्या। वह ऋण देकर चमड़ी उधेड़ने का काम करती है। भारी वर्षा से फसल नष्ट और ऊपर से कर्ज की मार। कैसे मनायें होली और कैसे भाये फागुन का राग। किसान बेमौत मरा और फगुनी हवा पगला उठी।''[1] जाहिर है, खेती-किसानी से जैविक (जीवन्त) रूप से जुड़े वरिष्ठ कथाकार महेश कटारे की यह कहानी हमारे कल्पना लोक में स्थापित किए गए गाँव की मोहक छवि को तोड़ते हुए, बुन्देलखण्ड के एक गाँव के भू-राजनीतिक परिदृश्य व अन्यान्य विद्रूपताओं को सामने लाने के साथ ही कृषि के पेशे पर गाढ़े रूप से आच्छादित पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी के आसन्न संकटों के प्रति भी अगाह करती है।

वस्तुतः हिन्दी साहित्य में प्रारम्भ से ही प्रकृति चित्रण और उसके आलम्बन-उद्दीपन रूपों का मनोज्ञ अंकन तो साहित्यकारों के यहाँ खूब विद्यमान रहा है। किन्तु, औद्योगिकीकरण, प्रौद्योगिकी, विकास तथा भोगवादी संस्कृति के कोख से जन्मा पर्यावरण असन्तुलन, उसे सन्तुलित, बचाने, संरक्षित व संवर्धित करने की मुहिम का साहित्य न्यूनाधिक मात्रा में ही रचा गया है। समकालीन साहित्य में, कविता में जहाँ विनोद कुमार शुक्ल, चन्द्रकांत देवताले, लीलाधर मंडलोई, नरेश सक्सेना, अनुज लुगुन व निर्मला पुतुल इत्यादि कवि एवं कवयित्रियों ने पर्यावरण, वन, वनवासियों के जीवन पर रचना की है। वहीं, कथा क्षेत्र में वीरेन्द्र जैन ने 'डूब', संजीव ने 'फंस', रणेन्द्र ने 'ग्लोबल गांव के देवता', और 'गायब होता देश' तथा पूरन हाड़ी ने 'बूढ़ान' जैसे कथा साहित्य को जन्म दिया है। कथेतर गद्य में अनुपम मिश्र 'आज भी खरे हैं तालाब', 'साफमाथे का समाज', 'राजस्थान की रजत बूंदे', अच्छे विचारों का अकाल', सोपान जोशी 'जल थल मल', अमृत लाल बेंगड़ 'सौन्दर्य की नदी नर्मदा', रजनीकांत 'नर्मदा की नई कथा' आदि लेखक पर्यावरणीय परिदृश्य के साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं।

हरित पाठ का अभिप्राय पर्यावरणिक आलोचना या पारिस्थितिक आलोचना से है। सामान्य रूप से यह पर्यावरणिक आलोचना, पारिस्थितिक आलोचना का सुग्राह्य तथा बोध गम्य रूप है। इसको पाश्चात्य बौद्धिक विमर्श के ईको क्रिटिसिज्म का हिन्दी भावानुवाद भी कह सकते हैं। साहित्य के सन्दर्भ में, इसके अन्तर्गत पर्यावरण और साहित्य के सम्बन्धों का अध्ययन अनुशीलन किया जाता है। अर्थात् हरितपाठ की सैद्धान्तिकी पर्यावरण की आँख से साहित्य को देखने के विवेक की हिमायत करती हैं। इस पद्धति विशेष के माध्यम लोगों और उनकी संस्कृति के उन समस्त क्रिया व्यापारों, तौर तरीकों की समीक्षा की जाती है, जो लोग आए दिन जल, जंगल व जमीन के साथ करते आ रहे हैं। पर्यावरण और स्त्री, पर्यावरण और दलित, पर्यावरण और गाँव, पर्यावरण शहर, पर्यावरण और पहाड़, पर्यावरण और नदी, पर्यावरण और बांध, पर्यावरण और औद्योगिकविकास, पर्यावरण और भूमण्डलीकरण एवं पर्यावरण और कृषि इत्यादि पद युग्म साहित्य के हरित पाठ के अनुषंगी टूल्स या औजार हैं। हालांकि अभी यह आलोचना दृष्टि अपने विकास की प्रक्रिया में है, अभी इसके कई 'टूल्स' और सूत्र आने बाकी हैं।

इस आलोचन दृष्टि के उदय के मूल में हैं 80 के दशक से वैश्विक पटल पर पर्यावरण से जुड़े प्रश्नों को लेकर आयोजित होने वाली सन्धियाँ (प्रोटोकाल्स) एवं सम्मेलन। जिनमें आजतक पहली दुनिया, दूसरी दुनिया तथा तीसरी दुनिया के देशों के मध्य कोई सर्वमान्य हल एवं ठोस समझौता नहीं हो पाया है। या यह कहना ज्यादा तर्क संगत है कि पहली दुनिया के देशों के अपने औद्योगिक हित इन समझौतों के आड़े आते रहें है। ग्लोटफेल्टी की 1996 में प्रकाशित पुस्तक The Eco Criticism Reader तथा ग्रेग गरार्ड की पुस्तक Eco Criticism 2004 से इस पद्धति की की शुरूआत मानी जाती है। दोनों विद्वानों ने थोड़े-बहुत शब्दभेदों के साथ इसे साहित्य का पर्यावरणोन्मुखी अध्ययन बतलाया है।

प्रस्तुत कहानी को दो भागों में विन्यस्त किया जा सकता है। पहला, कहानी का आरम्भ 'फागुनी बयार' व फसल कटाई की सूचना के साथ होता है ''वह उतरते फागुन की चौदस थी असमान में चाँद पूरा खिलने के तउना ही करीब रह गया था जितना की फसल की कटाई।''[2] यानि कि पूरे वातावरण में फागुन की खुमारी व अल्हड़ता अपनी पूरी भव्यता के साथ तारी है। किसानों की उल्लसित मन के साथ होली की पूर्व सन्ध्या पर सामूहिक फगुआ गान के लिये गम्मत (टोली) सजती है, लेकिन बार-बार उनकी गान की लय टूट जा रही है, रंग भंग हो जा रहा है तथा वे अपनी पक रही फसलों को लेकर सशंकित हो रहे है। कारण कि ''बदरिया तो गाढ़ी होय रई है।''[3] वे समझ रहे हैं कि फाल्गुन की यह कारी बदरी गांव के अकाश पर ही नहीं प्रकारान्तर से उनके भविष्य पर भी घिर आयी है। उनकी आशंका सच साबित होती है और उमंग-तरंग का फगुआ गान देखते ही देखते शोक गीत में बदल जाता है। कर्ज लेकर बोई गई फसल बेमौसम ओलों के साथ हुई बरसात से नष्ट हो जाती है- ''वैसे ओले की अवधि पानी से कम होती है, पर धरती के गिरने से खुद के गलने तक वह एक ही काम करता है यथाशक्ति विनाश।''[4] पूरा गांव इस ओलापात के बाद चीख, पुकार, रूदन कोहराम के साथ मातमी सदमें में चला जाता है। गाँव के पूरे किसान परिवार पथराई आंखों से अपनी कुछ फसल ही बचा लेने की आशा में खड़ी कर रहें हैं उनमें जीवन सूत्र तलाश रहें हैं। कहानीकार के शब्दों में ''टूटी, तिरकी, झकझोरी फसल खेतों में पसर गयी थी। सो भी कहीं-कहीं पानी में डूबी। अभी हरापन शेष होने से उसमें सांसे सी लगती थी।''[5]

ध्यातव्य है कि इस प्रकार की पर्यावरणीय विभीषिका को गांव की निरीह जनता और किसान असमानी आफ्त या दैवीय प्रकोप मान कर अपने भाग्य को दोष देते हैं। यद्यपि अब ऐसा नहीं है बल्कि इसके नेपथ्य में है विषम विकास की 'रैट रेस', हमारी अतृप्त एषणा जिसके लिए कभी गाँधी जी ने कहा था कि धरती सभी की जरूरत पूरा कर सकती है, सिवाय एक व्यक्ति के लालच के। विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी के नित नए आविष्कार द्वारा प्रकृति को बांधने या उस पर विजय प्राप्त करने की कोशिशे। समस्त प्राकृतिक संसाधनों को निचोड़कर, नदियों को सूखाकर, उनमें बाँध बनाकर, जंगलों को काटकर, पहाड़ों को समतल कर, अपनी भोगवादी प्रवृत्ति को तृप्त करने, धारणीय विकास की धारणा को स्थगित कर पूरी दुनिया को औद्योगीकृत कर देने की सनक के परिणाम स्वरूप आज दुनिया के कमोवेश सभी देश जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे हैं। जिससे कहीं सूखा, कहीं बाढ़ तो कहीं अनावृष्टि और अल्पवृष्टि जैसी प्राकृतिक विपदाएँ आ रहीं हैं तो कार्बन और ग्रीन हाऊस गैसों के निरन्तर उत्सर्जन के कारण वातावरण में बढ़ती धुंध और खतरनाक रसायनिक कणों की मात्रा इस संकट को और गाढ़ा कर रही हैं।

दूसरे भाग की कथा एक पढ़े-लिखे नौजवान देव कुमार उर्फ डी.के. जो अपनी अच्छी खासी नौकरी छोड़ मीडियाई कृषि शिगूफें यथा रूफगार्डनिंग, रूफएग्रीकल्चर, काटेज हार्टी कल्चर के बरक्स खेती करने गांव आता है, के माध्यम से आगे बढ़ती है। किन्तु, इंजीनियरिंग व मैनेजमेण्ट की 'डबल' डिग्री के बावजूद वह यह नहीं समझपाता है कि "खेती बन्द कमरों, छतों के नीचे की जोड़-तोड़ व्यवस्था नहीं, खुले आसमान के नीचे जिन्दा बीज बोने, उगाने का सिलसिला है।"[6] वैसे भी खेती बाजारवादी मुनाफे की तरह नहीं संचालित होती और न ही किसानों के लिये वह कोई उद्योग है। किसानी, किसानों की जीवन शैली है, लाभ हानि के गणित से निरपेक्ष चलने वाली नैसर्गिक क्रिया है। इस पेशे में वह अभी तक कभी मौसम, कभी बाजार, के कारण असफल ही रहा है। किसानी की इसी दारूण स्थिति पर समाचार पत्र आदि में लेख छपवाने की गरज से वह शहर पहुँचता है। यहाँ उसकी निराशा और बढ़ जाती है, जब वह यह देखता है कि नकदी पूँजी और सुरक्षित भविष्य वाले शहरियों की संवेदना कृषि के प्रति ऊसर हो चुकी है। उनकी दृष्टि सैलानियों सी हो गयी है। वही बारिश जो किसानों के लिए जीवन-मरण का प्रश्न लेकर आयी है उपभोक्तावादी शहरियों के लिये "मौसम बड़ा खुशनुमा हो गया है।"[7] वे कृषि को निम्न कर्म मानते हुए उसे आंकड़ों की बाजीगरी (जीडीपी) और सब्सिडी की तुला में तौल रहे हैं।

दरअस्ल, कहानी यहाँ इशारा कर रही है कि इस विरोधाभासी स्थिति के लिए जिम्मेदार है। 90 के दशक से आनी शुरू हुईविदेशी पूँजी। जिसने व्यक्ति को उपभोक्ता में बदलना शुरू किया है। इसी पूँजी के द्वारा आज ऐसी स्थिति उत्पन्न की जा रही है कि किसान किसानी से विमुख हो और अपनी भूमि उसकी 'भू अधिग्रहण' रकबे में मर्ज कर दें। खैर, 'शाम होते होते डी.के. के बँटाईदार सोनपाल का फोन आता है कि 'रामरतन ने गोली खाय लई।' काहे की गोली?....कहीं सल्फास तो नहीं।"[8]

यहाँ हमें ठहर कर सल्फास जैसे कीट नाशक और संकरण बीजों से हो रही क्षति के बारे में गम्भीरता से सोचना होगा, जो पश्चिम से आयातित हरित क्रान्ति की हासिल है। आज जब हरित क्रान्ति का शीराज़ा बिखर चुका है उसके साथ आए इन कीटनाशकों तथा रसायनिक उर्वरकों ने धरती की उर्वरता को सोख लिया है। पूरे देश में हरित क्रान्ति के अगुआ राज्य पंजाब के अधिकांश किसान कैंसर की बीमारी से जूझ रहे हैं, भूमि बंजर हो चली है। यह रासायनिक खाद व कीटनाशक तीनतरफा वार करते हैं इनके छिड़काव या भुरकाव से भूमि, जल तथा वायु प्रदुषित हाती ही है, जीव जन्तुओं, पशु पक्षियों पर भी ये बहुत असरकारी होते हैं। 'डी.डी.टी.' जैसे कीटनाशक के अत्याधिक प्रयोग से पक्षियों की प्रजनन क्षमता कम हो गई जिसमेंसे कुछ पक्षी तो लुप्त होने के कगार पर हैं। रही-सही कसर इन तथा कथित उन्नतशील बीज, जेनेटिकली मोडिफाइड बीज व हाइब्रिड बीजों ने पूरा कर दिया। इन बीजों के द्वारा हमारे पैतृक बीजों का, उनकी विविधता को तथा उनकी पुनरूत्पादन की क्षमता को खत्म करने की प्रक्रिया जारी है। नज़ीर है प्रसिद्ध पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र का यह कथन "सदियों से विकेंद्रित स्तर पर यानी अलग-अलग किसानों के घरों में बंडो, खंतियों में सुरक्षित बीजों की किस्मों का अपहरण होगा। और फिर इन्हीं में से कुछ किस्में छांटकर, उन्नत बनाकर हमें दी जाएंगी। तीसरी दुनिया के देशों में इससे रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं का बाजार कोई दस गुणा तक बढ़ जाएगा।"[9]

कहानी का अन्त होता है गोली निगलने के पश्चात किसान राम रतन की आत्महत्या, इस (आत्म) हत्या के उपरान्त सरकार द्वारा आपदा राहत के नाम पर चेक के रूप में बांटी गयी इमदाद से। (आपदा, हमारी सरकारों व मीडिया द्वारा इस तरह की बेरहम विभीषिकाओं के लिए गढ़ा गया शब्द, जिसकी सिफत है, इसमें उपसर्ग 'दैवीय' और प्रत्यय के रूप में 'प्रबन्धन' व 'राहत' लगाकर सिस्टम लोक हितकारी अभाषित होता है।) इसी राहत के रूपये और जमीन गिरवी रखकर बीस हजार का कर्ज लेकर रामरतन की श्राद्ध और तेरहवीं होती है। किसी सगे-सम्बन्धी के पहुँचने पर घर की स्त्रियों का स्थगित रूदन पुनः जारी हो जाता है। वस्तुतः यह रूदन आज कृषक समुदाय का स्थायी भाव हो गया है। विदर्भ से लेकर बुन्देलखण्ड तक पंजाब से लेकर तेलगांना तक के खेतों में रूदन की, विलाप की, फसल उग रही है। कृषि आज ऐसी यज्ञ बन चुकी है जिसमें किसान स्वयं की आहूति दे रहा है।

**सन्दर्भ**


1. सम्पादकीय टिप्पणी, नया ज्ञानोदय (आपदा और पर्यावरण एकाग्र) सं. लीलाधर मण्डलोई जून 15, नई दिल्ली पृ.सं. 51, महेश कटारे
2. महेश कटारे, फागुन की मौतः बतर्ज किस्सा, पूर्वोद्धृत पृ.सं. 51
3. वही, पृ.सं. 52
4. वही, पृ.सं. 54
5. वही
6. वही, पृ.सं. 55
7. वही पृ.सं. 57
8. वही पृ.सं. 59
9. अनुपम मिश्र, 'बीजों के सौदागर', साफमाथे का समाज सं0 किशन कालजयी, पेंगुइन बुक्स सं. 2006, गुड़गांव, हरियाणा पृ.सं. 91



-शोध छात्र (हिन्दी)क्षेत्रीय केन्द्र, इलाहाबाद
24/28 सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद-211001
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
मोबाइलः 8808215501

# अयोध्या के श्री रामलला ही ओरछा के श्री रामराजा सरकार

-गुणसागर सत्यार्थी

बीते हुए युग को हम इतिहास के दर्पण में देखते हैं। इतिहास या तो सम्राटों द्वारा अपनी जरूरत के अनुसार लिखवाया जाता रहा है, या फिर तत्कालीन आम आदमी से अनुभूतिपरक उद्भूत उन दंत कथाओं, कहावतों, लोकोक्तियों में गहरे छिपा होता है, जिन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी की मौखिक परम्परा में लोक ने सुरक्षित रखा है। बुन्देले हरबोलों ने ढप बजा-बजा कर गाँव-गाँव में झाँसी की रानी की गाथा न सुनाई होती तो हमारे पास आज ई. मार्सडन द्वारा लिखा इतिहास ही होता जो यथार्थ से कोसों दूर की बात कहता है। परन्तु खेद जनक स्थिति यही है कि आज का पढ़ा लिखा समाज लिखित प्रमाण के बगैर इतिहास की प्रामाणिकता को स्वीकार नहीं करता। भले ही ई. मार्सडन जैसे इतिहासकारों का लिखित इतिहास और उसके प्रसंग विवेक की कसौटी पर तर्क संगत लगें या न लगें...। उनके लिए तो लिखित दस्तावेज ही सब कुछ है। इस प्रकार लिखित दस्तावेजों के अभाव में आज लोक में व्याप्त लोक विश्वासों को यदि खरिज कर दिया जाता है तो निश्चय ही इतिहास की विडम्बना है।



बुन्देलखण्ड का प्रामाणिक इतिहास आज स्वयं में प्रश्न चिन्ह है क्योंकि राजकवियों ने अपने आश्रयदाता नरेशों के यशोगान में जो छत्रप्रकाश, या वीर सिंह जू देव चरित्र जैसे ग्रंथ प्रणीत किए उन्हें आधार मानकर गोरेलाल तिवारी ने बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास लिखा है। पन्ना के राजकवि गोरेलाल का विशेष प्रभाव पड़ जाने से वह एकांगी ही नहीं विश्वास करने योग्य भी प्रतीत नहीं होता। राजकवि तो अपने आश्रयदाता नरेश का हर प्रकार से चमकीला पक्ष उजागर करना अपना फर्ज समझता है। अतः राजकवियों की वाणी से अतिशयोक्ति को छानकर और आम आदमी से अनुभूतिपरक पीढ़ियों से सुरक्षित बातों को सुनकर गहरे पैठकर शोधपरक इतिहास की अपेक्षा है। राजतंत्र समाप्त हो चुका है, स्वतंत्र जनतंत्र युग में राजाओं द्वारा लिखवाया गया इतिहास अतीत की सही तस्वीर का बिम्ब नहीं बना सकेगा। इसलिए आज इतिहास शुद्धि की नितान्त आवश्कता है।

इसी सन्दर्भ में बुन्देलखण्ड के हृदय तीर्थ ओरछा के अतीत की सही तस्वीर हमें देखनी होगी। महाराजा मधुकरशाह जू देव ( प्रथम) की महारानी गणेशकुंवर भगवान श्री रामराजा सरकार की ऐतिहासिक दिव्य प्रतिमा अयोध्या से ओरछा लाईं थी। लेकिन उस समय की राजनैतिक परिस्थितियाँ क्या थीं? इस दिव्य प्रतिमा का अयोध्या से ओरछा लाना क्यों जरूरी समझा गया? इस यथार्थ को आज स्पष्ट रूप से हमारे सामने आना ही चाहिये। क्योंकि महाराज मधुकरशाह जू देव जैसे धर्मपरायण, शूर-वीर प्रतापी राजा जो मुगल काल के क्रान्तिकारी ऐसे नरेश हुये जिनपर जो फोकस पड़ना चाहिए था वह आज तक नहीं डाला गया। बल्कि उन्हें मात्र धार्मिकता से जोड़कर ऐसा संत पुरुष निरूपित किया गया है मानों तत्कालीन राजनीति से उनका कुछ भी लेना-देना न हो। उनका यह स्वरूप भी बहुत हल्के अंदाज में प्रस्तुत किया जा रहा है। जिस प्रकार आज भी बहुत लोग ऐसे मिल जाते हैं जो जै राधेश्याम नाम से चिढ़ते हैं, बकते हुए मारने तक को झपट पड़ते हैं और कहते हैं- ''सीताराम कहो न'' मानो राधेश्याम और सीताराम दो दिशाएँ हों....। कुछ इसी प्रकार से शूर वीर युगचेता, धर्मवीर, यशस्वी नरेश के संदर्भ में भी प्रचारित कर दिया गया है कि- राजा तो श्री कृष्ण भक्ति में अनुरक्त थे और उनकी महारानी गणेशकुँवर श्री रामभक्त थी। श्री कृष्णभक्ति और श्री रामभक्ति तकरार का कारण बनी और तीर्थ यात्रा का प्रसंग लेकर राजा ने रानी को खरी खोटी तक सुना डाली, उन्हें अयोध्या की तीर्थयात्रा के लिए वर्जित किया। रानी नहीं मानी तो यहाँ तक कह दिया कि -श्री राम के प्रति इतना लगाव है तो उन्हें ओरछा लेकर ही आना वर्ना मत आना। यह तो वही जै राधेश्याम या जै सीताराम के नाम पर चिढ़ने जैसी हल्की बातें हैं, जो महाराजा मधुकर शाह जू देव के संदर्भ में विश्वास करने योग्य नहीं हैं। इस तकरार में रानी भी राजा से कह सकती थी कि आप वृन्दावन जाते हैं तो भगवान श्री कृष्ण को ओरछा लेकर ही आवें...। परन्तु यह तकरार दन्तकथाओं के माध्यम से लोक में व्याप्त है अतः इस तकरार की पृष्ठभूमि में भी अवश्य कोई गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है। जो लोक में व्याप्त खुस-फुस में कभी-कभार सुनाई दे जाता है जिसे लिखित दस्तावेज के अभाव में प्रायः नकार दिया जाता है।

इतिहास को गहरे पैठकर इस संदर्भ में तर्क संगत तथ्यों को खोजकर उजागर करना चाहिये था। समाचार पत्रों में छुट-पुट कुछ आलेख ऐसे भी पढ़ने को मिलते रहे हैं जिनमें तथ्यात्मक सामग्री मिलती है। इतिहास के अध्ययेताओं से मौखिक चर्चा में यह बात अवश्य साफ हुई है कि तत्कालीन राजनैतिक पारिस्थितियों में जानबूझकर यथार्थ पर सदा परदा डालने की ही गर्ज से राजा-रानी के बीच यह रामभक्ति-कृष्णभक्ति वाली तकरार को प्रचारित किया गया है । महाराजा मधुकरशाह जू देव ने समय की नब्ज को देख-परख कर ही इस तकरार वाले नाटक में रानी सहित स्वयं का पात्र बनाकर दूरदर्शिता का ही परिचय दिया। मेरे मित्र वीरेन्द्र बहादुर खरे इतिहास के अध्ययेता हैं, पुस्तकें पढ़ना उनका व्यसन है वे कहते हैं कि उस काल की प्रामाणिक तस्वीर अबुलफजल द्वारा लिखित-अकबरनामा में देखी जा सकती है। अकबरनामा के अनुसार महाराजा मधुकरशाह जू देव एक लम्बे समय तक शहंसाह अकबर से टक्कर लेते रहे। मुगल सेना की टुकड़ियों से अनेक बार मुठभेड़ हुई, परन्तु महाराज मधुकरशाह जू देव को मुगलों ने वश में नहीं कर पाया। जबकि उस समय में ओरछा राज्य कोई बड़ा राज्य भी न था। अबुलफजल तो महाराज मधुकरशाह जू देव को ओरछे का जागीरदार ही मानता है। अकबरनामा में प्रकरण- 14 के अंतर्गत पृष्ठ 395 पर

लिखा है-"...इस जागीरदार ने कुछ अवांछनीय काम करने का अपराध किया था.... बगैरह" प्रश्न उठता है कि यह अवांछनीय काम करने का अपराध क्या था? इसी अपराध की जड़ में भगवान श्री राम की उस दिव्य प्रतिमा का अयोध्या से ओरछा आने का इतिहास छिपा हुआ है। स्पष्ट है कि कोई राजा किसी अन्य शासक की सीमा में अन्दर घुसकर वहाँ से कोई वस्तु वहाँ के शासक की आँखों में धूल झोंककर अपने यहाँ ले आए तो वह उस शासक की दृष्टि में अवांछनीय जघन्य अपराध ही तो होगा और यह अपराध उनके शब्दों में एक जागीरदार की हैसियत रखने वाला राजा तब करता है जबकि रणवाँकुरे राजस्थान पर जगह-जगह अकबर अपनी विजय पताकाएँ फहरा चुका था। कुछ राजपूतों ने तो अपनी बहिन बेटिया तक मुगलों को ब्याह देने तक में संकोच नहीं किया था। महारानी जोधाबाई तो इस बात का एक प्रमाण है ही....। तो दूसरी और बुन्देलखण्ड की एक छोटी सी रियासत के बुन्देलों का यह दुस्साहस ? कि मुगल साम्राज्य की सीमा में घुसकर अयोध्या से कोई ऐतिहासिक प्रतिमा को ओरछा ले आए? निश्चय ही कार्य महाराजा मधुकरशाह जैसे शूर -वीर और सूझ-बूझ के धनी यह राजा ने नाटकीय ढंग से ही सम्पन्न किया था जिसकी पृष्ठ भूमि बहुत गहरी थी।

इतिहास साक्षी है कि भारत में हिन्दू राजाओं की आपसी फूट का लाभ लेकर यवन यहाँ पर आए और असिबल से सत्तारुढ़ ही नहीं हुए वरन हमारी अस्मिता को भी नेस्तनाबूत करने पर तुले रहे। सोमनाथ में शिव की जो विलक्षण प्रतिमा थी वह वहाँ के पंडे-पुजारियों के देखते-देखते ही भंग कर दी गई थी और पंडे-पुजारी केवल ताकते ही रह गए थे। ऐसे दुखद युग का प्रारम्भ हो चुका था। मंदिरों को तोड़ना साधारण बात हो गई थी। कहते हैं अयोध्या में राजा विक्रमादित्य ने कसौटी के काले पाषाण से श्री राम जन्म भूमि मंदिर कभी बनवाया था जो शिल्प एवं स्थापत्य की दृष्टि से तो विशिष्ट था ही, उसके साथ यह भावना जुड़ गई थी कि यह भगवान राम की जन्म भूमि का प्रतीक ही नहीं हमारी अस्मिता है। तब यह बात बिल्कुल स्वाभाविक है कि श्री राम जन्म भूमि मंदिर के साधु संतों ने जब सुना होगा कि मंदिर तोड़ने का शाही काफिला अयोध्या की ओर बढ़ा चला आ रहा है। तब श्री रामलला की दिव्य प्रतिमा को खंडित करने का वह दुरदृश्य सोमनाथ के पंडे-पुजारियों की भांति देखते रहना उन्होंने स्वीकार न किया हो और मंदिर की प्रतिमाओं की सुरक्षा का गम्भीर चिन्तन किया।

साधु-संतों ने अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर से दिव्य प्रतिमाओं को बाहर निकाला और सरयू नदी के किनारे जंगल में उन्हें जमीन में गाड़कर ऊपर से कुटिया बनाई। साधु कुटिया में उस भूमि की सेवा पूजा ठीक उसी प्रकार करते थे जैसे मंदिर में ठाकुर जी की पूजा होती है। परन्तु जमीन की सेवा - पूजा क्यों की जा रही थी? इस रहस्य को कोई नहीं जानता था। उन साधुओं ने अपने शिष्यों को वह रहस्य यह कहते हुए अवश्य बता दिया था कि इन मूर्तियों को किसी ऐसे सक्षम राजा के हाथ में सोंप देना जो इनकी सुरक्षा करने में समर्थ हो। अस्तु-

उस समय में महाराजा मधुकरशाह जू देव की कीर्ति एक धर्म रक्षक पराक्रमी नरेश के रूप में फैल चुकी थी कि एक ऐसा भी राजा बुन्देलखण्ड में है जो धर्मवीर है और मुगलों से बराबर टक्कर ले रहा है, उसनें मुगलों के आगे कभी अपना सिर नहीं झुकाया.....। इसी संदर्भ में महाराजा मधुकरशाह जू देव की एक घटना बहुत प्रसिद्ध है कि एक बार तो उन्होंने अकबर के शाही हुक्म को बहादुरी के साथ तोड़ा था। वह यह कि अकबर का हुक्म था-कोई भी व्यक्ति शाही दरबार में तिलक लगाकर न आए अन्यथा उसका मस्तक दाग दिया जायेगा या सिर कलम कर दिया जावेगा.......बगैरह। तब एक मात्र मधुकरशाह जू ही 'टिकैंत' निकले, वे तिलक लगाकर दरबार में जा पहुँचे थे। यद्यपि इतिहासकार इस घटना को बहुत बाद की घटना बताते हैं कि मधुकरशाह ने 1573-74 से लेकर 1591-92 तक तो महाबली अकबर से मुठभेड़ ही की। अंत में जब शाही सेना की टुकड़ियाँ किसी भी प्रकार उन पर काबू नहीं पा सकीं तो अकबर ने सम्मान-जनक संधि करके उन्हें दरबार में प्रवेश दिया। अतः घटना बहुत बाद की ही कहलाई जाएगी। घटना बाद की हो या पहले की, लेकिन इस घटना से महाराजा मधुकरशाह की प्रकृति जो आरम्भ से ही यथा स्थिति थी कि वे धर्म के लिए प्रण-प्राण से संकल्पित थे अवश्य उजागर होती है। तब अयोध्या के साधु यह क्यों न विश्वास करते कि यही वह सक्षम राजा है जो इन दिव्य प्रतिमाओं को सुरक्षित कर सकते हैं।

महाराजा मधुकर शाह जू देव जैसे शुर वीर योद्धा थे वैसे ही सूझ-बूझ के धनी, दूरदर्शी और परम चतुर व्यक्ति भी थे। अतः जब अयोध्या के साधुओं ने ओरछा आकर भूमि में छिपी उन दिव्य प्रतिमाओं का रहस्य महाराजा को बताया तो महाराजा ने अपने विद्वान मंत्रियों की मंत्रणा से यह निष्कर्ष निकला कि हम बुन्देला वैसे ही मुगलों की आँख की किरकिरी बने हुए हैं। ऐसे में फौज-फाटा लेकर अयोध्या जायँ और भगवान रामलला की प्रतिमा लाएँ तो खतरे से खाली न होगा....। बहुत सोच विचार एवं गम्भीर चिन्तन के बाद परम भक्त महाराजा मधुकरशाह जू देव ने राजा-रानी के बीच कृष्ण भक्ति को लेकर तकरार वाला नाटक रचाया। मात्र रचाया ही नहीं, उसका खूब प्रचार-प्रसार भी किया क्योंकि वह समय की मांग थी। रानी व स्वयं को इस नाटक का पात्र बनाकर इतने सहज स्वाभाविक ढंग से नाटक की प्रस्तुति की गई कि- यथार्थ को कोई सूँघ भी न पाए। इस प्रकार स्वयं महाराज मधुकरशाह जू देव ने ही उस सच्चाई को छिपा दिया था तब लिखित दस्तावेज भला कहाँ मिलेंगे?

आगन्तुक साधुओं को महाराजा ने उस नाटक की भूमिका भली भाँति समझाकर ओरछा से विदा किया। साधुओं ने रातों-रात चुपचाप उन प्रतिमाओं को जमीन से बाहर निकाला और सरयू नदी के पानी में एक विशेष स्थान पर छिपा दी। ओरछा में राजा-रानी की चर्चित तकरार हुई और तदनुसार रानी ने अयोध्या की तीर्थ यात्रा की, ओरछा से राम को साथ लेकर आने की बात पूरी न होने पर योजना बद्ध तरीके से प्राणों की आहुति देने हेतु वे सरयू नदी में ठीक उसी स्थान पर कूदीं जहाँ प्रतिमाएँ छिपी थीं। इस प्रकार भगवान श्रीराम महारानी गणेशकुँवर की गोदी में आ गए। लोगों ने जय-जयकार किया। महारानी के अयोध्या के प्रस्थान के साथ ही महाराजा मधुकरशाह जू देव ने भगवान श्रीराम की उस दिव्य प्रतिमा की स्थापना हेतु रानी के खास महल के समीप ही स्थापत्य कला में बेजोड़

मंदिर के निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया। श्रीराम के ओरछा आने तक उस मंदिर का निर्माण पूर्ण होना जरूरी था समय पर्याप्त चाहिए था। इसलिए भगवान श्रीराम के द्वारा रानी की गोदी में आकर यह शर्त रखना आवश्यक थी कि उनकी यात्रा केवल पुष्य नक्षत्र में ही होगी। इस संदर्भ में यह लोक में यह पंक्तियाँ प्रचलित हैं-

"मधुकरशाह नरेश की, रानी कुँवर गणेश ।
पुक्खन - पुक्खन ल्याई हैं, ओरछा अवध नरेश।"

पुष्य नक्षत्र को बुन्देलखण्डी में पुक्खन तो कहते ही हैं। परन्तु यहाँ यह बात भी उल्लेखनीय है कि- पुक्खन-पुक्खन आना बुन्देली का एक मुहावरा भी है ठीक वैसा ही अर्थ रखता है जैसे-ईद-बकरीद मिलना, होली-दिवाली पर दिखाई देना निश्चय ही पुक्खन-पुक्खन मुहावरा यहाँ पर यही अर्थ प्रकट करता है कि मुगल साम्राज्य के विस्तार की लम्बी दूरी की सीमा से वह प्रतिमा रुक-रुक कर मौका ताड़-ताड़ कर धीरे-धीरे ही ओरछा लाई गई कि किसी को कानों कान भी उसकी सूचना न होने पाए। इस प्रकार पुक्खन-पुक्खन मूर्ति ओरछा तक पहुँची, तब तक मंदिर लगभग तैयार तो हो चुका था परन्तु इस बीच महाराजा ने विचार किया कि जब अयोध्या में विक्रमादित्य द्वारा निर्मित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तोड़ दिया गया तो कालान्तर में यह मंदिर भी तो यवनों की आँख पर चढ़ सकता है। तब सुरक्षा की दृष्टि से श्रीराम की दिव्य प्रतिमा को अन्तःपुर यानि रानी के खास महल के भीतर स्थापित करने का निश्चय किया गया। महारानी ने भगवान श्री राम की उस ऐतिहासिक प्रतिमा को अपने व्यक्तिगत महल में यह कहकर विराजमान कर दिया कि मंदिर का निर्माण अभी पूरा नहीं हुआ। इसके लिए भगवान श्रीराम के द्वारा रानी के सम्मुख दूसरी शर्त यह रखना भी जरूरी था कि- हम जहाँ पर जाकर विराज जाएँगे फिर वहाँ सें उठेंगे नहीं..... । वर्तमान में श्री रामराजा का मंदिर रानी का खास महल ही है। उसका स्थापत्य एवं शिल्प देखने से मंदिर का आभास नहीं होता। इसका प्रमाण यह है कि- ओरछा में जहाँ पहले न्यायालय था जिसे अब हटा दिया गया है, उसका भवन, पालकी महल, वर्षा महल, फूल बाग, हरदौल का बैठका बगैरह सभी भवन रानी के रनिवास (वर्तमान श्री रामाराजा मंदिर) से जुड़े थे। आज मंदिर के बाएँ से जाने वाले मार्ग में चौड़ी-चौड़ी नीवें पाटे गए पत्थरों के नीचे दबी हुई हैं। कालान्तर में यह भवन सार्वजनिक दर्शनों के लिए जब मंदिर रूप में खोल दिया गया होगा तभी उसे अन्य भवनों से अलग करके मंदिर का स्वतंत्र रूप दिया गया प्रतीत होता है। मात्र इतना ही नहीं वर्तमान मंदिर के बाएँ से जो मार्ग आज है उस मार्ग की सीध में बीच में ही महर का घर अब भी यह स्पष्ट करता है कि पहले यहाँ मार्ग नहीं था बल्कि यह सभी महल एक दूसरे से जुड़े थे। निश्चय ही वर्तमान मंदिर रानी का महल है। मंदिर तो उसके समीप दूर से दिखाई देता है जो श्री चतुर्भुज मंदिर के नाम से जाना जाता है।

चूँकि अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में प्रतिमा श्री रामलला नाम से जग विख्यात थी। ओरछा आने पर भी यदि उन्हें इसी नाम से जाना जाता तो मुगलों को संदेह हो सकता था। इसी कारण यहाँ पर नाम परिवर्तन आवश्यक ही नहीं वरन समय का तकाजा था। इसीलिए गोद में आकर भगवान श्री रामलला ने रानी से तीसरी शर्त यह भी रखी कि- ओरछा में फिर श्री राम ही राजा होंगे, अन्य कोई नहीं, अतः यहाँ श्री रामलला को "श्री रामराजा सरकार" कहा गया और ओरछा नरेशों ने स्वयं को मात्र कार्यकारी राजा मान उनकी ओर से ओरछा में वर्षो राज्य किया।

लगभग 200 वर्ष बाद इसी शर्त को प्रमुखता देते हुए ओरछा राज्य की राजधानी ओरछा से टीकमगढ़ परिवर्तित की गई तो उसके पीछे भी तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियाँ ही प्रमुख रहीं अन्यथा उनके नाम पर कार्यकारी राजा 200 वर्षो तक ओरछा में राज्य करते रहे तो आगे भी किया जा सकता था। ओरछा राज्य के अंतिम शासक महाराजा वीर सिंह जू देव (द्वितीय) ने भी ओरछा श्री रामराजा मंदिर में यह शब्द कहे थे कि ओरछेश तो श्री रामराजा सरकार ही है, हम तो टीकमगढ़ में बैठकर उनकी ओर से काम चलाऊ राजा है।

कुल मिलाकर हम इसी निष्कर्ष पर आते हैं कि तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों में वक्त का तकाजा था कि यथार्थ को छिपाया जावे। परन्तु उस समय की सभी इतिहास-सम्मत परिस्थितियाँ अनकहे ही लोक में व्याप्त खुस-फुस आवाज का समर्थन अवश्य करती हैं। अयोध्या का वह ऐतिहासिक श्री राम जन्म भूमि मंदिर यदि कसौटी के काले पाषाण का था, तो ओरछा के श्री रामराजा सरकार ही नहीं, उनके साथ विराजे शेषावतार श्री लक्ष्मण जी तक उसी कसौटी के काले पाषाण के ही हैं जबकि श्री लक्ष्मण जी की श्याम वर्ण प्रतिमा प्रायः देखने को नहीं मिलतीं। इसलिए अपने आप यह प्रमाणित हो रहा है कि यह दिव्य प्रतिमाएँ जिन्हें एक युगपुरुष, धर्मरक्षक दूरदर्शी पराक्रमी नरेश की महारानी गणेश कुँवर अयोध्या से 1574 ई. में ओरछा लेकर आई थीं और उनके पति महाराजा मधुकर शाह जू देव ने भारत के इतिहास-सम्मत संक्रमण काल में अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देकर साहस के साथ देश, जाति समाज की अस्मिता को सुरक्षा प्रदान की थी। बुन्देलखण्ड के हृदयतीर्थ ओरछा में विराजे भगवान श्री रामराजा सरकार ही अयोध्या वाले श्री रामलला है। जिनके लिए आज भी सतत् लोक स्वरों में गूँज रहा है कि-

*रामराजा नैं ओंड़छें में आसन जमाई,*
*चलौ दरसन खों भाई।.........*

बुन्देल धरा का यह परम सौभाग्य रहा है कि वनवास काल में साक्षात श्रीराम, जानकी और लक्ष्मण जी ने चित्रकूट में आकर अपनी विपदा के दिन काटे थे-

*चित्रकूट में रम रहे, रहिमन अवध नरेश,*
*जा पै विपदा परत है, सो आवत इहि देश।*

जब देश में यमनों का शासन आया और देश की अस्मितास्वरूप तीर्थ स्थलों पर विपदा आई तो एक बार पुनः श्री रामलला को इसी बुन्देलखण्ड की धरती पर ओरछा पधारने का संयोग बनाना पड़ा। यदि आज रहीम जैसे कवि होते तो मुक्त कंठ से यही गाते कि-

*धाम ओरछा रम रहे, रहिमन अवध नरेश,*
*पीर विपत के दिनन की, बाँटलेय इहि देश।*

-ज्योतिकलश
पो.-कुण्डेश्वर (टीकमगढ़) म. प्र.
मो.-08989484951

# बुन्देलखण्ड के दुर्ग, गढ़ तथा गरौठा के गढ़ी बन्दों की गाथा

-डॉ. सरोज गुप्ता

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में बुन्देलखण्ड का विशेष महत्व है। चौदहवीं से सत्रहवीं शताब्दी के मध्य बुंदेलखण्ड की अपनी अलग पहचान रही है। धर्म, दर्शन, शिल्प,स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला एवं वीरता के अनेकों प्रमाण हमें इस धरा पर प्राप्त होते हैं। मध्यप्रदेश के सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ व दतिया जिला तथा उ. प्र. के झाँसी, ललितपुर, जालौन, कालपी, हमीरपुर, बाँदा आदि जिले सम्मिलित हैं जहाँ बुन्देलों की सत्ता रही है। यहाँ पर आल्हा -ऊदल, मलखान, रानी सारन्धा, चम्पतराय, महाराज छत्रशाल, मधुकरशाह, विजय सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, तात्याटोपे, नाना साहब आदि के बिना बुंदेलखण्ड का इतिहास अधूरा रहेगा।

बुन्देलखण्ड में गढ़ी और दुर्गों की परम्परा प्राचीनकाल से रही है। राजा वीरसिंह जू देव ने अपने राजत्वकाल में अपने राज्य में नये दुर्गो का निर्माण करवाया। कईं गाँवों में गढ़ी तथा छोटे-छोटे दुर्गा की सुरक्षा की दृष्टि से, परकोटे, बुर्जो पर छतरिया बनाकर सौन्दर्यीकरण किया था। दुर्ग व गढ़ी के भीतर-बाहर मंदिर, चबूतरे, तालाब/जलाशय/सुरक्षा कर्मचारियों के आवास, नन्हीं कोठी, बड़ी कोठी, दरबार हाल, बाग-बगीचे आदि सभी अत्यधिक आकर्षित एवं हृदय को सुकून प्रदान करने वाले, मन को मोहने वाले दुर्गों का निर्माण करवाया जिससे बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था तथा यहाँ के लोगों की संस्कृति की झलक इनमें मिलती थी।

पुरातात्विक महत्व के इन दुर्गों के निर्माण में चन्देल-वंशीय राजाओं का विशेष योगदान रहा। बुन्देलखण्ड की पावन भूमि पर प्राचीन दुर्ग व गढ़, हमारी अमूल्य धरोहर हैं। वर्तमान समय में कुछ दुर्ग व गढ़ी सुरक्षित हैं। कुछ का तो नामोनिशान भी नहीं है। आज इनके सरक्षण की आवश्यकता है। हमारी म. प्र व उ. प्र. की सरकारें व गणमान्य व्यक्ति आदि इसके पुनरुत्थान के लिए प्रयास करें तो इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। पर्यटन से व्यवहारिक ज्ञान व इतिहास तथा भौगोलिक जानकारी भी प्राप्त होगी। हम अपनी क्षेत्रीय भाषाओं लोक संस्कृति, लोकगीतों, यहाँ के लोगों के रहन-सहन , रीति-रिवाज, आचार-विचार तथा सभ्यता, संस्कृति व साहित्य की जानकारी उपलब्ध कर सकेंगे।

म. प्र. के दुर्गों में पिछोर, करैरा, नरवर, दतिया, सेंवढा, इंदरगढ़, बडौनी खुर्द, चंदेरी के दुर्ग, मनियागढ़, बारीगढ, बिजावर, गुलगंज, किशनगढ़, देवरा, ईशानगर, रामपुर, गरौली, रगौली, राजनगर, देवरान, घुवारा, महाराजगंज, खटौला, ओरछा, गढ़कुण्डार, बल्देवगढ़, टीकमगढ़, खरगापुर, लिधौरा, मोहनगढ़, पृथ्वीपुर, दिगौड़ा, बड़ागाँव, जतारा, रामगढ़, पचेर, चन्दपुरा, मजना, अस्तौन, बम्होरीकला, राहतगढ़, धमौनी, खिमलासा, गढ़पहरा, सागर, देवरी, रहली, गौरझामर, कंजिया, बिनैका, हीरापुर, ऐरण, गढ़ौला जागीर, बरायठा, नरयावली, पिठौरिया, बरौदिया-नौनगर, जैसीनगर, गढ़ाकोटा, मालथौन, शाहगढ़,बिलहरा, खुरई, सानौधा, सिंगोरगढ़, हटा, नरसिंहगढ़, मढ़िया, तेजगढ़ रानगिर, बटियागढ़, पंचमनगर, जटाशंकर, अजयगढ़, जोधपुर के दुर्ग व गढ़ अत्यन्त लुभावने तथा पुनरुत्थान के इन्तजार में आज भी खड़े हैं।

बुन्देलखण्ड भारतदेश के हृदय क्षेत्र का विशाल भू-भाग है जिसे दशार्ण, वाकाट, चेदि, जैजाकभुक्ति इत्यादि नगरों से जाना जाता है। विन्ध्यपर्वत की विशाल श्रेणियाँ, पहाड़ियाँ तथा कम ऊँचाई की पर्वत श्रंखलाएँ विद्यमान हैं।

उ. प्र. के दुर्गों में झाँसी, एरच, गुरसराय, चिरगाँव, मोंठ, अमरा समथर, बरुआसागर, महरौनी, मड़ावरा, बानपुर, तालबेहट, गरौठा, सौरई, कैलगुवाँ, बालाबेहट, मनकौरा, कालपी, जगम्मनपुर, रामपुरा के दुर्ग तथा कालिन्जर , बाँदा, मडफा रासिन, कल्याणपुर, तिंदबारी जसपुरी, बारगढ़, लोखरी, उगासी, मरबल, महोबा चरखारी, जैतपुर, श्रीनगर, सूपा, राठ, कुलपहाड़, सुगरा, रामगढ़, हमीरपुर, सुमेरपुर, मौधा, कैलाश के दुर्ग व गढ़ी प्रसिद्ध हैं।

इन गढ़ियों में ऐसे बलिष्ठ - वीर बलवान पहलवान लोग रहा करते थे जिनके कारण गाँव व नगर में सुरक्षा का वातावरण निर्मित होता था। ये बलवान बुन्देलखण्ड की आन-बान-शान कहलाते थे। विशाल देहधारी वीर पुरुषों, दुर्गों व गढ़ी के रक्षकों की गाथाएँ गढ़ीबंद के रूप में प्रचलित होती थी। आल्हा की तरह गायन शैली में रचित गाथाएँ उनकी करनी-बरनी का बखान करती जनश्रुति के रूप में आज भी अमर हैं।

गरौठा झाँसी के पास स्थित एक गाँव है जहाँ के गढ़ों, बंदों की चर्चा स्वर्गीय श्री शिवदीन व्यास राजवैद्य जी ने की थी। हास्य-व्यंग्य शैली में लिखी गयी यह गाथा वीर छंद आल्हा ध्वनि में है। प्रारम्भ में भारत माँ की व देशभक्तों की स्तुति का वर्णन किया गया है। ये गढ़ी बंदी किस प्रकार देश प्रेम की भावना से ओतप्रोत होकर जन-जन को प्रेरित करते हैं। उदाहरण दृष्टव्य है-

सुमरन करके भारत माँ को, लै कैं बाई साब को नाव।
साको उचारों उन वीरन का, जान को जिनन लगाऔ दाव।।
ओखद खाकें दुनियां मरबे, बिरले खायं गोली को घाव।
साको गवैया उनई को गावें, नित उठ लेंय उनईं को नांव।।
धरती माता सबकी माता, सबखां पलवे कौ अधिकार।
जियन जोरिया जौलौं जी की, तो लों जा धरती सों प्यार।।
अत्याचारी जब जब बाढ़े, तब तब भयो महां संग्राम।
धरती के पूतन ने बढ़ बड़ तुरतई नगद चुकाये दाम।।
जान पै खेले संकट झेले, सह न सके तनक फटकार।
शेर शिवाजी की तो अबलों, पचनद गूँज रयी ललकार।।
प्रताप प्रताप नश नश मां फड़के, भुला को सके जौहार की ज्वाल।
इन आँखन माँ नित दिन झूलत, गुरु गोविन्द सिंह के लाल।।
जलिया बारी बाग सुनाबे, अबलों ऊ बिरिया को हाल।
पै नहीं अघानी जा दानवता, लाखन खाँ मानव के लाल।।
जितनी तरैयां हैं बादर माँ, जितने होंय मूँड़ मां बार।
उतनेउ सों ज्यादा मानव जूझे, झेल झेल दुश्मन कौ बार।।
देशन देशन गांवन गांवन रोजई मच रई हा हा कार।
नाम करौआ आगें कड़वें, पांछें परे फना फटकार।।
एई समैया एई औसर माँ, सासौ एक सुनाऔ हाल।
बात पुरानी है तो भौतऊ, गुजरे भये पूरे सौ साल।।

अठारह सौ सत्तावन भइया, जाहर सबै गदर की साल।
भारत भर मां भारत मचगयो, भूली अंगरेजन की चाल।।
कुट्टम कुमूतन की करनी सों, फिरंगियन फेर गलाई दाल।
आपस की फूटन सों फूटो, बंधो बंधाओ सागर ताल।।
झाँसी जिले मां बसे गरौठा, लखेरी नदी किनारे गाँव।
यहाँ के बीरन की करनी को, अबलौं गांवन-गांवन नांव।।
गढ़ी मराठन की को अज हूँ, गुरजा गुजरो हाल बताय।
देख के झण्डा आजादी को, आँसू पोंछ रयो हरषाय।।
गढ़ी बुन्देलन की को बांकी, तनकऊ नइयां नाम निशान।
दाई की मड़िया चौकी गावे, अबलौं उन बीरन की शान।।

झाँसी के गरौठा क्षेत्र के गढ़ी के लोगों की वीरभावना न सिर्फ दृष्टव्य वरन हम सब के लिए अनुकरणीय भी है। भारत देश की प्राचीन व्यवस्थाओं की झलक इस गरौठा के गढ़ीबंदी काव्य में दिखायी देती है। जहाँ न पुलिस विभाग है, न शासन व्यवस्था वरन यहाँ के लोग सिर्फ अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अपनी तथा अपने गाँव की रक्षा करते थे। ठाकुर गढ़ीबंद राजपूतों की वीर बाँकुरों की भोजन खुराक, उनका बलशाली स्वरूप देखिए-

इक सी लरकदोंद जाँ बैठी, होबे परस होय जेवनार।
दोउ पंगतन कौ सब खा गये, रमतूला तोउ बजो न यार।।
चढ़ी करइयां भीतरई भीतर, परस की धीमी भई रफतार।
दो और चार की न गिनती रई, कर कर गड्डी धरैं अगार।।
तरकारी की तरी झार दई, तब चटनी की भई भरमार।
परसत परसत परसा थक गये, तोउ न थके जिमैया यार।।
का गत बरनों वा बेरा की, बागाट मची हा-हा कार।
जां तां आपस मां बतराबें, बड़े-बड़े मान रहे मन हार।।
देख खुराकें अचरज बाढ़ो, दाँत तिनूका रये दबाय।
गजब गुजर गयो परलो पर गयो, सौ मन सामा गये चबाय।।
एकई पांत में झूरन नई रयो ,भोरई हुइये कौन हवाल।
जनम के भूखा जे खजवा है, खा गये बिना कूत को माल।।
पानी पिय है पेट डबर है, मारें छेर छेर गलियार।
तब का खै हैं भोरई भकुआ , नाम थुके हैं बापन क्यार।।
सुन गेरा घूँसा नंगे नाऊ, बोलो ऐंठ मूँछ को बार।
पेट भरउवा हम कोउ न है, हैं सब बूँद बुन्देलन क्यार।।
इक इक हाथी कौ बल राखें, मन चाये जबई लेब अजमाय।
बड़ी बड़ी बातें सुन नंगे की , एक ज्वान बोलो खिसियाय।।
भोर नदी माँ देखो जै है, तुम मैमानन की करतूत।
की माँ कितनी ताकत है कै, खायबे के हो बड़े सपूत।।
भुकईं झुकें जुर गयो गांव भर, नदिया मां माचौ घमसान।
मैमानन की हँसी करन खां, बाल बच्चन सों पौंचे आन।।
सबई गरौठा वारे लरका, इक इक पथरा लाये उठाय।
चौगिरदा चौकी सी डारी, सिगरो गाँव जो बैठो आय।।
दस दस बारा मन सों, पथरा नीचो नाय दिखाय।
देख कें कौतक इन ज्वानन कौ, सबरे गये सनाका खाय।।
फिर का अपनी अपनी ठाकुर, ठकरौती सब रये बघार।।
कछुक जनन की करनी खाँ, भुला न सकें अबै लों यार।।

बेआस कवि का कथन है कि यह बुन्देली गाथा कल्पित नहीं है। मेरी माताजी के पिताजी के पिताजी जो सन् 1936 में स्वर्गवासी हुए थे जिनका नाम श्री शिवदीन व्यास राज्यबैद्य था, जो इस गाथा के पात्र भी है। इनसे ही मैंने क्या मेरे ग्राम के कई व्यक्ति जो अभी भी हैं सुन रक्खी है। इनके अतिरिक्त भगवान माली विशाल देह धारी वीर पुरुष को हम सबने देखा है। इस गाथा के पात्र 80-82 वर्ष की उम्र में भी दो-दो सेर भोजन लेते तथा नियमित रूप से कसरत करते थे। ऐसे पहलवान पुरुष कि उन्हें देखकर दाँतों तले उंगली दबाते थे लोग...। सिर्फ भोजन ही नहीं इनकी पहलवानी करतब के अनूठे उदाहरण पुस्तकों में भरे पड़े हैं। यथा-

भगवान माली अपनें मूँड सों पथरा ईटें फोर दिखाय।
नंगे नाऊ एक हाथ सों गाड़ी सरगै रयो उठाय।।
दूला जू की इक टुकड़ी ने, घाले सबद बेदिया बान।
घिस्सू शेख अरू कैंचू ढीमर, रये दो दो बखर अछंगा तान।।
को जोरावर जोर बखाने, रेवता मीड़ घूर हो जाय।
वासदेव सिवदीन लड़न्ते, नदिया गर्द वर्द भइ जाय।।
खरे लखेरे की सागन सों, चट्टानें छिदना हो दरशाय।
अनमोल सिह अनमोल निशानों, उड़त चिरैया धरती आय।।
रामबगस चमार के धक्कन, पेड़ खडों न एक दिखाय।
घुन्दे कोरी के ताले से, हथनी डग भर न बढ़ पाय।।
प्रान दउबा ने देवला पड़वा, उठा कें फेंको धार के पार।
मुलू बढ़ई की चुटकी लग तई, गजासाई हो गयो कल्दार।।
हरिया धोबी पकर लिंगोंटी, पिल्लन से दये सांड लड़ाय।
मेतर जगन्नाथ छाती पै, घनन सों पथरा रयो फराय।।
ओरउ कइयक कौतुक कीनें, थोर माँ दये 'बेआस' लखाय।
गरौठा बारिन कौ जौ साको, अब लौं घर घर गाओ जाय।।

'बुन्देलखण्ड के प्राचीन दुर्ग और गढ़ी' पुस्तक श्री केशव प्रसाद गुरू जी द्वारा वर्ष 2014 में प्रकाशित की गई। पुस्तक में गरौठा की गढ़ी की चर्चा नहीं है। जबकि मेरे पास सन 1957 (तीज भाद्रपद शुक्ल 2014 सम्वत्) की पुस्तक ''गरौठा के गढ़ी बंदी'' है जिसमें उपरोक्त विशद वर्णन के साथ-साथ और भी महत्वपूर्ण जानकारियाँ हैं। श्री केशव प्रसाद गुरू ने बुन्देलखण्ड के लगभग 125 से आधिक दुर्गों व गढ़ों का इतिहास प्रस्तुत कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। पुरातात्विक महत्व के इन दुर्गों, गढ़ियों के संरक्षण की तथा बुन्देलखण्ड की विरासत को संजोने व नया रूप देने की आज महती आवश्कता है। हम अपनी पुरानी मान्यताओं, परम्पराओं को पुनर्जीवित करें ।

**संदर्भ**


1. बुन्देलखण्ड के प्राचीन दुर्ग और गढ़ी- श्री केशव प्रसाद गुरू, पृ.भूमिका
2. गरौठा के गढ़ीबंद, श्री शिवदीन व्यास, संक्षिप्त पुस्तिका



-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
पं. दीनदयाल उपाध्याय शा. स्ना (अग्रणी)
महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

# हसमत छतरपुरी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

-डॉ. जगदीश प्रसाद रावत

*हजारों साल नरगिश अपनी बेनूरी पे रोती है,*
*बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।*

साहित्य के पद्य विद्या (शायरी) की दुनिया का नामचीन शायर श्री हसमत छतरपुरी सैयद हसमत अली छतरपुरी एक हँसमुख एवं जिन्दादिल इंसान के साथ-साथ नामवर शायर भी थे। बेफ्रिक और बेलौस तरीके से अपने आप में मस्त, अलमस्त, अस्त और व्यस्त रहने वाला फिरकापरस्ती से दूर इस शायर की अपनी अलग ही दुनिया थी। शायरी के प्रति अत्याधिक समर्पण या यूं कहे कि बकलम दुष्यंत कुमार -

*जिसे मैं ओढ़ता बिछाता हूँ*
*वह गजल आपको सुनाता हूँ।*



सचमुच में हसमत छतरपुरी गजल को ओढ़ते बिछाते थे, उनकी गजल कहने की कहन, शैली ऐसी थी कि वे गजल के कद्रदान को अपनी तरफ बरबस आकर्षित कर लेते थे। कवि गोष्ठी एवं मुशायरों के तो वे मानों प्राण थे। गोष्ठियों व कवि सम्मेलनों के कुशल और सफल संचालन में मानो उन्हें महारथ हासिल थी। खासतौर से प्रतिवर्ष बसारी में होने वाले बुन्देली उत्सव की तो वे धुरी ही थे, इस लोकप्रिय और इकलौते कार्यक्रम के प्रति इतना समर्पण, इतना जनून था जो अकथनीय है। इस आयोजन की सफलता का श्रेय कुछ ऐसे ही व्यक्तित्वों को जाता है।

बेहद मुफलिसी में पैदा हुआ यह सख्श अपनी प्रतिभा के बलबूते पर सफलता की सीढ़िया क्रमश: चढ़ता गया, शायद ऐसे ही महामानवों के जीवन पथ का उद्देश्य रहता है -

*इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना*
*किन्तु पहुंचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं।*

**चरैवेति प्रचलाम्** जिसके जीवन का मकसद रहा हो, भला उसे मंजिले मकसूद पाने से कौन रोक सकता है और ऐसे अनंत पथ के राही अंततः अपनी मंजिल को पाकर ही दम लेते हैं। दीन, ईमान और धर्म का समर्पण हसमत छतरपुरी में कूट-कूट कर भरा था। सममुच में सच्चाई की तो वे प्रतिमूर्ति थे, अपने जातीय धर्म के प्रति उनकी आस्था अटूट थी, अखण्ड विश्वास था और वह पीड़ित मानवता की आजीवन अनवरत सेवा में रत रहे तभी तो वह अपनी शायरी में कहते हैं कि -

*सांसों की इबादत की महक आयेगी कैसे ?*
*सीने में अगर आपके कुरआन न होगा।*

वह मुफलिसी से उठकर मध्यम वर्गीय बने। लेकिन मुफलिसी की जड़ों को कभी नहीं भूले। उन्होंने गरीबी को ही ओढ़ा और बिछाया है, वैसे ही गजल को वह दुष्यंत कुमार की भांति ओढ़ते और बिछाते थे, बकलम दुष्यंत, **जिसे मैं ओढ़ता बिछाता हूँ वह गजल आपको सुनाता हूँ।** यहां हसमत छतरपुरी बयान करते हैं -

*इंसान को चाहत का शजर दे मौला*
*फिर उनमें वफाओं के समर दे मौला*
*महलों को भी मुफलिस की खबर दे मौला*
*कुटियों में बहारों का गुजर दे मौला।*

स्वावलंबन एवं स्वाभिमान का सबक हसमत ने बचपन से ही अपनी खून की रवानगी में दौड़ाया। उन्होंने सम्मान व स्वाभिमान से आजीवन कभी भी समझौता नहीं किया। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को जो लोग बखूबी जानते हैं वह हसमत को जानते हैं कि वह किस आन, बान और शान की मिट्टी से बने थे।

*एक न एक दिन खूने गरीबां, अपनी कीमत मांगेगा*
*कब तक तुम रूपेश रहोगे, हैवानों के दामन में।*

जो जिसके काबिल नहीं होता, सौभाग्य से उस इंसान को दुनिया में बिना मांगे वह सब मिल जाता है। कहा भी जाता है कि बिन मांगे मोती मिले ..........

*दाताओं को इस दुनिया में सिर्फ खिजाँ की आंधी दी*
*फसले बहारां खेल रहीं हैं, नादानों के दामन में।*

इस भोगवादी सभ्यता और आपाधापी के युग में परस्पर सौहार्द और स्नेह का स्त्रोत मानों सूख सा गया है। परिवारवाद की प्रणाली चकनाचूर हो रही है, भाई-भाई के दिलों की दरारें चौड़ी होती जा रही हैं। परस्पर प्रेम की खाईयां गहरी होती जा रही हैं। इन दरारों से नफरत की दीवालें ताका-झांकी करती दृष्टिगोचर हो रही हैं यथा -

*कैसी इज्जत, कैसी अजमत,*
*कैसी मोहम्मत, कैसा खुलूस*
*अब तो खाली खून भरा है, इंसानों के दामन में।*

*दुनिया में लेके आये जो फूलों की वारिशें*
*पत्थर जरूर हैं उनके मकान पर*
*उनमें मसालहत मैं करूंगा कभी नहीं*
*होगा लहू का जायका, जिसकी जबान पर*

कवियों का मन नवनीत जैसा होता है, जो अंदर वह बाहर पारदर्शिता या यह कहें कि मन और दिल एक दर्पण की भांति होता है। समानधर्मा प्रतिबिम्ब ही आइना में परिलक्षित होता है।

*हसमत जो मेरी रूह की गहराईयों में था*
*आया न उसका नाम कभी भी जबान पर।*

शायर का मन जो बात मान बैठा उसकी आत्मा ने भी वहीं स्वीकार कर लिया है। उसका विचार सुनिश्चित और एकाकी हो गया है, इतना ही नहीं वह आने वाले कल के अंगारों की आंच को भी बड़ी सिद्दत से कुछ इस तरह महसूस कर रहा है -

*भूल जा उन्हें ए दिल क्यों फरेब खाता है*
*जो कभी न आये वो कभी न आयेंगे*
*आग का जमाना है और हर तरफ हैं अंगारे*
*कागजी बदन कैसे आबरू बचायेंगे।*

कवि परिवर्तन का पक्षधर है, वह मानता है कि हम बदलेंगे, युग बदलेगा लेकिन शायद वह इस प्रकार के उद्घोष और उद्बोधन से निराश है, कदाचित इसीलिये इसकी तूलिका नैराश्य की इस विचारधारा को अंकित करती है -

*क्या करें जमाने ने खुद हमें बदल डाला ?*
*सोचते थे, दुनिया में इंकलाब लायेंगे।*

कहते हैं कि जिनके खुद के मकान शीशे के बने होते हैं वह दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकते, यही जुमला वह शायरी रूपी माला में पिरोकर श्रोताओं और पाठकों को पहनाना चाहता है, कुछ इस तरह

कांच के घरों में जो रह रहे हैं वर्षों से
*पत्थरों की बारिश में सर कहां छुपायेंगे ?*

संवेदनाओं के समुद्र में शायर लवरेज रहता है, शारीरिक आघात तो वह कदाचित एक बार सहन कर सकता है लेकिन दिल का दर्द सहन नहीं कर सकता, किसी शायर ने भी बहुत खूब कहा है कि **मंदिर को तोड़ डालिये, मस्जिद को ढाईये, दिल को न तोड़िये ये खुदा का मकाम है।**

*जहां किसी ने मेरे दिल का साथ छोड़ा था*
*वहां गमों की सुलगती चिता लगे है मुझे*
*कहीं भी जुल्म हो तकलीफ दिल को होती है*
*कोई सताये किसी को, बुरा लगे हैं मुझे।*

स्मृतियां या यादगारें मानव मन को रह-रह कर याद आती हैं, अतीत के यह चलचित्र हमारे सामने जीवंत होकर गुजरते हैं और ऐसे लगते हैं कि मानों कि यह विगत की नहीं वर्तमान की ही बातें हो

*किसी की याद की खुशबू ने छू लिया शायद*
*तमाम जिस्म महकता हुआ लगे है मुझे*

जीवन अगर एक हकीकत है तो मृत्यु वास्तविकता होते हुये एक पहेली है। एक ऐसी पहेली जो सदियों के बाद आज भी अबूझ है और कालान्तर में भी शायद इस मृत्यु को कोई सुलझा न पायेगा -

*वका के बाद फना है और फना के बाद वका*
*हयात औ मौत में इक सिलसिला लगे है मुझे।*

प्रेमी को प्रेयसी की वायवीय उपस्थिति पर भरोसा नहीं है, वह उसकी काया को स्पर्श करके देखता फिर भी उसे विश्वास नहीं होता कि यह मेरी प्रियतमा के अंग-प्रत्यंग हैं। हाथ कंगन को आरसी क्या या प्रत्यक्षं किं प्रमाणं ? की कहावत यहां बेमानी ही सिद्ध होती है, शायद वह प्रेम पयोनिधि और प्रेम पॉश से शापित है। हो सकता है कि यह श्राप उसके पूर्व जन्म का हो।

*क्यों इसमें वो कशिश वो नजाकत नहीं रही*
*ये तेरे हाथ हैं या किसी अजनबी के हाथ।*

जुल्फो खम पर, जुल्फ के फन पर दीवान के दीवान लिखे जा चुके हैं, हर एक शायर ने इस तबस्सुम को अपने-अपने अंदाजे बयां में जाहिर किया है। अक्सर डाह बस वालों को सर्पिनी की संज्ञा दी गयी लेकिन कमाल है कि यहां हसमत जुल्फ को जंजीर और मोहब्बत की बेपनाह छांव तक कह डालते हैं।

*आपकी जुल्फ मेरे पांव की जंजीर भी है*
*प्यार की छांव भी है, हल्फ ए तकदीर भी है।*

हसमत की परेशानी के अनेकानेक सबब हैं, लेकिन उनके महबूब का शवाब तब और ज्यादा परबान चढ़ता है जब उन्हें उनके अपनों की याद आती है -

*सांसों के शोले उठते हैं, आहों में तूफां होता है*
*जब याद किसी की आती है दिल और परेशां होता है।*

वे प्रेयसी के प्रेम के विविध आयामों की अवधारणा को कुछ इस तरह बयां करते हैं -

*मुफलिस की तबाही का कोई गमख्वार नहीं है दुनिया में*
*कुटिया में दीपक बुझते हैं, महलों में चिरागां होता है।*

शायर बहुत अच्छे वक्ता नहीं होते, अलबत्ता वह तो **सत्य कहहुं लिखि कागद कारे** की उक्ति को ही चरितार्थ करते हैं। वास्तविकता है कि वह दुनिया कि पाठशाला में पढ़ने जाता है और तरह-तरह के इंसानों के चहरों को पढ़ता रहता है। वह उन्हें बड़े गौर से देखता है, बड़े गौर से सुनता है, कहता है और अंततः लिखता है, जो उसका सृजन कहलाता है।

*पढ़लो हमारे चेहरे से फुर्कत की दास्तां*
*कहने की ताब रखते नहीं हैं जबां में हम*

जिन्दगी ने इतने गम ओर सितम दिये कि तौबा इस इकलौते बेचारे लखते जिगर का खून (कत्ल) ही कर दिया, भला मारा गया तो यह अपनों के ही हाथों से -

*शायद गमे हयात ने दिल खून कर दिया*
*कतरे लहू के पाते हैं, अश्के रवां में हम।*

कवि का जितना बड़ा होंसला होता है, उतना बड़ा वह इस नाशवान शरीर में एक अदद दिल भी रखता है जो किसी-किसी को देखकर जोर-जोर से धड़कता है और कभी-कभी किसी को देखकर इस दिले नादां कमबख्त की अपनी बोलती (धड़कन) ही बंद हो जाती है -

*धीरे-धीरे उसकी नजरे मेरी जानिब उठती हैं*
*रफ्ता-रफ्ता हो सकता है, वो मेरा दिलबर हो जाये।*

जुल्फों को नागिन सी बलखाती संज्ञा दी गयी लेकिन यहां क्या शायर साहब रात को जादूगरनी मानकर उसका मानवीकरण कर रहे हैं, चुनांचे वह तो स्वयं अपनी जुल्फे खोले हुये हैं, उसके गेशुओं के साये में अनेक कवियों ने कविता के कसीदे काढ़े हैं, पढ़े हैं -

*रात खड़ी है जुल्फे खोले और मैं तनहा सोच रहा हूँ*
*ऐसे में तुम आ जाओ तो ये शब जादूगर हो जाये।*

प्राचीन काल में हनुमान जी के पास ऐसी तरकीब और ताकत थी कि वह अपनी हथेली पर पर्वत उठा लिया करते थे लेकिन प्रेमी भी उनसे कमतर नहीं है। प्रेम अपना-अपना है और ख्याल अपना-अपना -

*अपना घर कांधों पर लेकर घूमते-फिरते हैं जो इंसा*
*काश कहीं इन मजबूरों का इस दुनिया में घर हो जाये।*

सरमायेदारों की बात भी इशारों-इशारों में हसमत कर देते हैं, क्योंकि वह एक ऐसे तरक्कीपसंद शायर थे जो जमीन से जुड़े थे। वे आम आदमी की और अबाम तथा वामपंथ की बात करते थे। यह साम्यवादी (मार्कसवादी) विचारधारा पूरी दुनिया में फैली, फली, पेरोस्त्रोइका और ग्लाशनोस्त जैसे विचारों को इसने परिपोषित किया और दुनिया के मजदूरों एक हो का इकबाल बुलंद नारा दिया।

*हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर,*
*लोग आते गये और कारबां बनता गया।*

-कमला कालोनी, नया पन्ना नाका, छतरपुर (म.प्र.)
मो.- 8085795729

## जा फिकर कोउखों बिलकुल नईयाँ

-पं. हरगोविन्द तिवारी 'कविहृदय'

अब जगन-जगन के गुरुकुलन में, हो रई हैं भौतऊ मनचईयां।
सो नौनें गुरुकुल संग गुरु चेला, कऊं बिलकुल एकऊ हैं नईयां।
अब खूब चला रये गुरुकुल कागा,अर चेला हैं अब टुईयां।
सो होत फिरत है इनके बीचां, छीना झपटी संग नौंचईयां।
अर बचत फिरत बिचारे चेला, लयें निज पइसन की छइयां।
सो पइसन खौं देख गुरु फिर, तुरतऊं पकरत चेलन की बईयां।
अर पईसा छीन झपट कैं उनखौं, जे टिपा देत बेज्ञान डिगरियां।
बेज्ञान डिगरियन कीं जे खुली दुकानें
कऊं पढ़ाई लिखाई तौ होतई नईयां।
अब ईकौ अंजाम का हुईयै, जा फिकर कौऊखौं बिलकुल नईयां।
'कविहृदय' बस, बंद करौ अब, गुरुकुल की जै सब गड़बड़ियॉं।

-इंदिरा प्रियदर्शिनी वार्ड, तिवारी मुहल्ला,
शाहगढ़ जिला सागर म. प्र.

पुस्तक समीक्षा- 

# सरल बुंदेली शब्दकोष-डॉ गौरी शंकर सरल

समीक्षक-डॉ. श्रीमती प्रमोद पाठक

लेखक डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय सरल की प्रस्तुत कृति मध्ययुगीन भाषा के स्वरूप को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके पूर्व बुंदेली के लुप्त होते शब्दों पर कुछ विद्वानों ने कार्य किया। डॉ. उपाध्याय ने एक कोश की रचना कर महत्वपूर्ण कार्य किया।

भाषा वैज्ञानिकों ने हिन्दी की लोक भाषाओं का उद्भव मध्यदेशीय शौरसैनी अपभ्रंश से माना गया। शौरसैनी अपभ्रंश ही मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा और आधुनिक कालीन भारतीय आर्यभाषा हिन्दी में मध्य की कड़ी है। इसके एक ओर शौरसैनी प्राकृत और दूसरी ओर प्राचीन हिन्दी है। शौरसैनी अपभ्रंश को पश्चिमी अपभ्रंश कहा गया है। इसके अंतर्गत गुजरात राजस्थान सहित आज का हिन्दी प्रदेश है। यह वही शौरसैनी है, जिसका विकास 11वीं शती में प्राचीन हिन्दी के रूप में हुआ है। को हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसी ग्राम्य अपभ्रंश से ही आधुनिक देशी भाषाओं का विकास माना। बुंदेली में पश्चिमी हिन्दी, शौरसैनी अपभ्रंश और प्राकृत की प्रवृत्तियों से प्रभावित है। इस समय जो बोलियां विकसित हुई उनमें एक अपनी विशिष्टता है।

डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त बुंदेली का उद्भव अन्य लोक भाषाओं से डेढ़ दो सौ वर्ष पुराना मानते हैं। डॉ. गुप्त के मत से चंदेलकाल में बुंदेली लोककाव्य की रचना निरंतर होती रही, दूसरे ग्वालियरी बुंदेली का ही नया उत्थान था, तीसरे ग्वालियरी की संगीत और पद परम्परा के रूप में बुंदेली ही मथुरा वृंदावन के केन्द्र की भाषा बनी, जो ब्रजी में ढलकर ब्रजभाषा के मान से साहित्य में छा गई। बुंदेलखण्ड का केन्द्र बना ओरछा तथा पन्ना, जहां बुंदेली राजभाषा के पद पर आसीन होकर मध्यकाल की राजनीति के संपर्क की माध्यम बनी। छत्रसाल के पत्र बुंदेली भाषा में ही लिखे जाते थे। इसी प्रकार 17वीं 18वीं शती में राजकाज की भाषा बुंदेली रही। उसके दो रूप सदैव जीवित रहे एक परिष्कृत बुंदेली का साहित्यिक रूप और दूसरा ग्रामीण बुंदेली का लोक रूप। इन दोनों रूपों में निरंतर सृजन होता रहा।

बुंदेली के विकासात्मक विवेचन से उसकी भाषायी प्राचीनता और समृद्धि स्वतः हो जाती है। पिछले दशकों में बुंदेली साहित्य पर शोधपूर्ण कार्य हुए जिसमें डॉ. कृष्णानंद, डॉ. बलभद्र तिवारी, डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त, गंगा प्रसाद गुप्त, सृजन के क्षेत्र में भी शताधिक साहित्यकारों की रचनायें प्रकाशित हो चुकी है। ईसुरी, पत्रिका अथाई की बातें, बुंदेली बसंत, बुंदेली दरसन जैसी शोध पत्रिकाओं ने साहित्य सृजन एवं समीक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। इन रचनाओं के माध्यम से ज्ञान विज्ञान की नवीन अवधारणाओं से नवीन शब्दों का सृजन भी हुआ और बहुत से शब्द प्रचलन से बाहर भी हुए। कुछ परिनिष्ठित भाषा में अपना स्थान बनाने लगे है।

'सरल बुंदेली कोश' भाषा के व्यवहारिक स्वरूप को समझने में सहायक है। संस्कृत हिन्दी कोश की अपनी वृहद परम्परा रही है। बुंदेलखण्ड में सरल बुंदेली कोश, बुंदेली साहित्य एवं संस्कृति के अध्येताओं के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। लोक-भाषाओं ने हिन्दी के संवर्द्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध कर दिया है। शब्द रचना और उच्चारण भी दृष्टि से बहुत से शब्दों का स्थान भेद के कारण परिवर्तन दिखाई देता है, उनके अर्थबोध में अनेक कठिनाइयां होती है। सरल बुंदेली कोश का महत्व बुंदेली साहित्य और संस्कृति का बोध कराने का अनूठा प्रयास है। मानक हिन्दी के प्रचलन के कारण क्षेत्रीय शब्द लुप्त होते जा रहे है जबकि मानक हिन्दी की समृद्धि में उनकी अर्थव्यंजनता में ये क्षेत्रीय शब्द महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। पुस्तक में हजारों शब्दों का सूक्ष्म से सूक्ष्मतर व्याकरण सम्मत अर्थ स्पष्ट करने की कोशिश की है। इसमें बहुत से मानक हिन्दी के शब्द भी आ जाते है। लेखक शब्दों की प्रकृति और व्याकरण के संकेत देकर शब्दों की विवेचना भी है। कुछ शब्द तो प्रचलन से बिल्कुल लुप्त हो चुके है उनका लेखक ने विवेचन किया है। यथा आटक सदैवो- छेवले के पेड़ की जड़े, असीदाई-अखाड़े की देवी, अँकुरिया- खेत जोतने वाली लकड़ी का अग्र का एक भाग, अँकाबो- लोहे की गर्म छड़ से दगवाने की क्रिया। एक ही शब्द में क्रिया के बहुत से रूपों के शब्दों का विश्लेषण किया गया है। -देखें

| | | |
|---|---|---|
| चंपबौरी | - | हंसीमजाक |
| धुकैल | - | धोका देने वाला |
| गोस्टो | - | एक बैल का खेती बारी से दूसरे लेने का समझौता। |
| गोसली | - | गाय, भैसों का दूध निकालने का काम, |
| गौंत | - | गंदा पानी |
| गौड़इया | - | चारों ओर गोल आकृति में घिरा स्थान |
| गोड़ापाई | - | दौड़धूप बार-बार आने जाने की क्रिया। |
| घँगइया | - | छोटी कन्या का घंगरा |
| घगौरना | - | बर्तन के पदार्थ को हिलाना डुलाना। |
| घटोरिया | - | घाट के देवता |
| घपलयाबो | - | भूख से बेचेन होकर निढ़ाल होना |
| घरकन से | - | घरवालों से |
| गोड़िया | - | केवटों की एक जाति |
| गुटुआ | - | छोटी टोकनी |
| खामोदा | - | जिम्मेदार, खास व्यक्ति |
| खड़रा | - | टहनियों की झाडू |
| खटूला | - | लकड़ी का चौकोर आसन |
| कँदौरा | - | जमीन में पैदा होने वाला साग |
| ओजनई बैठी | - | अकल काम न करना। |
| औसोन डिगबो मुहा | - | साहसटूटना, हिम्मत हारना |
| ऐलई पार | - | गाँव नदी के इस तरफ |
| उटगरी | - | अनुभवहीन, अनजान, अनभिज्ञ |

| | | |
|---|---|---|
| इंगरौटा | – | ईंगुर अथवा कुमकुम रखने की डिब्बी |
| उजीला | – | उजाला |
| उजूँ | – | संबोधन |
| उन्सार | – | लक्षण |
| कंठाल | – | तुरही की तरह को बाजा |
| कठरयाई | – | परचूनो का बाजार |
| चँदरयाबौ | – | जानबूझकर किसी बात से मुकरना, अनजान बनना |
| चलनोसन | – | आटे की छानन |
| छजेंनियाँ | – | छोटे आकार का छाज |
| झुड़कीआँदी | – | तेज आँधी आना |

डॉ. उपाध्याय जी ने ऐसे हजारों शब्दों का संकलन किया है जो लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसे बहुत से शब्दों का अर्थ बोध नई पीढ़ी को नहीं है। शब्द सामर्थ्य, अर्थ बोध एवं हिन्दी भाषा की समृद्धि की दृष्टि से ग्रंथ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। व्याकरण की दृष्टि से शब्दों का विश्लेषण ग्रंथ को अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध करता है।

–सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
शास.पी.जी. कन्या महाविद्यालय, छतरपुर म.प्र.

*लघुकथा*

## मरजाद

**–साकेत सुमन चतुर्वेदी**

*'' मैनें ऊकी ठठरी बाँद दयी। ''*
*'' की की ?'''' खिरिया वारी।''*
*'' ऊ दरूआ, संजले जेठकी।'''' काये? ''*

''आज जब मैं सपखोर कें बखरी में शालिगराम खों जल ढार रयी ती कै नाया मिटौ मोरौं हाथ पकर कें दारू की झोंक में लार चुँआत बोलो, रानी तो पै ज्वाँनी खूब फब रयी। लल्लू के वश की नहीं है इयै सँवारबौ, बौ तौ ढीलौ-ढालौ बेसई है, मोय खुस कर दे। पटरानी बनाकें राखहौं।''

''ऐसौ बोलो संजलौ।'' सुनवे बारी की आँखें फैल गईं।

''मोय कसकें रोस आ गव और मैंने ऊकी कनपटी पै करौं थापर जड़ दव।''

'' चटाक सुनकें सबरे घर वारे बखरी में आ गये। ठट्ट लग गव। सबरे संजलो की पिच्छ लैंन लगे। कोऊनें मोई एक नई सुनीं। मोरौ मुंस जैसें मौनी बाबा बन गव। सबरे मोय खोर दैकें ताड़न लगे।''

''सास गुस्सा में खिसयाकें बोली – ''तैंने घुंघट की मरजाद नयीं राखी खिरियावारी।''

मैंने कई – '' कै संजले ने भी तौ मूँछ की मरजाद नईं राखी है। आग लगै ऐसी मरजाद में।''

– 36/15, प्रेमगंज झाँसी उ. प्र., मो.– 9264908574

## बुन्देली मुक्तक

**–डॉ. प्रेमलता नीलम**

छत पे बोलो कागा कारो, अब उठो भओ भुंसारो।
उठ गई घर की बढ़ी काकी, गइयन खाँ चारो पूरा डारो।।
जियरा भौंरा सो मडरानो, बाग, बगियन फिरे हिरानो।
रस मिले ने सो मन हारो, ढूढ़त फिरत ऊ जमानो।।
घुँघटा खेंचत, खेंचत हारी, नयना दोऊ लगत हैंअनारी।
इन नयनो सें बच के रइयो, देखतई चढ़ जात है तिजारी।।
काये ले रये प्रान हमारे, तिरछे नैना जे तुमारे।
ऊँसई तो इकहरी देहिरा, समारत-समारत हारे।।
हँसन तुमारी जादू कर गई, मनइँ-मनइँ मन हर गई।
नोनी छब टुइंयाँ सी मुइंयाँ, मोरे हियरा उतर गई।।

**** **** **** ****

जियरा महेरी खाँबें ललचानो, मन मचलो, तबई जो जानो।
मठा चाँऊँरे हींग राई से छोंको, साचऊँ जियरा तबई जुड़ानो।।
हतपऊ रोटी तुम खा लइयो, दिन भर वीरकाम करत रइयो।
संजा बिरियाँ मेथी भाजी संगे, ज्वाँर रोटी तुम फिर खइयो।।
भादों मे कबऊँ दही ने परसियो, क्वाँर करेला तनकऊ ने खइयो।
रातन सतुआ कबऊँ नइं खाने, इनसे जुरदा -मुरदी ने करयो।।
दारें पाँचऊं मिलाकें बनाउंने, ज्योनार पौष्टिकता बढ़ाउँने।
राहर मूँग मसूर उरदा चना में, लासुन हींगजीरा छोंक लगाउँने।।
सिमैंइयाँ बहुतंईमने भा गई, भौजी बैला भर-भर खा गई।
भियाने तीज उपासो राने, बे ककरी के ठासें लगा हैं।।
कढ़ी-बरी की हो जान दे, दरया पापर सोई खान दे।
बुंदी लड्डुआ बरफी, परसो, फिर लौंग इलायची पान दे।।

–काव्य कुंज, बी29, एलोरा कॉलोनी,
दमोह, म.प.

## मिटजै हड़फूटन

**–डॉ. राज गोस्वामी**

भौत दिनन में बनों हिंगोरा है पीवे कौ मन।
जइसें मिट जै उचकन, भड़कन, मिटजै हड़फूटन।।
केंथा की चटनी खों बटतइ
मौ पानी आ गव।
गुड़ की एक डिगरिया कुतरी
सबइ कछू भा गव।।
जेठी भौजी पुरी बना रइ, भये मन के भोजन।
जइसें मिट जै उचकन, भड़कन, मिटजै हड़फूटन।।
गये ममा कें मिली महेरी
संग भात पछयार।
मिल गव दूध निपनिया पीवे
मिलौ ममेरौ प्यार।।
बरा मगौरा और कचरियाँ खाकें हो गऐ टन।
जइसें मिट जै उचकन, भड़कन मिटजै हड़फूटन।।
देख शहर की मची चिल्लपों
अच्छो अपुनों गांव।
बिछी खाट पै परे चैन सें
जा पीपर की छांव।।
सबके संगें रहनें, जैसें लोइ सें परथन।
जइसें मिट जै उचकन, भड़कन, मिटजै हड़फूटन।।

–श्री सदन, सिविल लाइन्स
दतिया म. प्र.
मो.–9229688096

स्मरण शेष -

# कबीराना मिज़ाज़ के फक्कड़ आधुनिक बुंदेली कवि: नाथूराम साहू

-दिनेश बैस

इस वर्ष की शुरुआत झाँसी ही नहीं, मानें तो, पूरे बुंदेलखंड के साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्र की उल्लेखनीय क्षति के रूप में हुई- झाँसी के चमनगंज, सीपरी बाजार के हाता सीताराम निवासी, बुंदेली भाषा के जनकवि, लोक.गायक, संस्कृतिकर्मी तथा दहेज तथा मृत्यु-भोज निषेध जैसी कुरीतियों के विरुध्द, एकल सामाजिक आन्दोलन के प्रवर्तक, नाथूराम साहू ने, 23 जनवरी के भोर में इस संसार से विदा ले ली। जन्म-मृत्यु का अपरिहार्य अभिलेखीकरण उस समय विशेष महत्व नहीं रखता था। इस विडम्बना के चलते उनकी निश्चित जन्म-तिथि तो नहीं है। अलबत्ता 1920 के किसी महीने में उनके जन्म का अनुमान लगाया जाता है। सम्भवत:, मऊरानीपुर के कटेरा गाँव में उन्होंने इस संसार में पहली बार आंखें खोलीं। इस प्रकार वे लगभग 98 वर्ष के थे। यह जानकारी स्वयं उनके कनिष्ठ पुत्र अजय साहू ने दी है। कदाचित यह मात्र संयोग ही नहीं है कि नाथू राम साहू माँ सरस्वती को अपनी अन्यतम् प्रेरणा मानते थे। उनके अवसान के समय माँ सरस्वती के जन्म, बसंत पंचमी की तिथि भी अपने अवसान पर जा रही थी।



जिस हाता सीताराम में नाथू राम साहू, 'साहू' लेखकीय नाम से उनका साहित्य सृजन चलाए उसी हाता सीताराम में सुदीर्घ समय तक, अपने रेल.सेवाकाल में, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी भी रहे। झाँसी निवासी सुविख्यात बाल साहित्यकार, फ्लैटिली डाक-टिकिट, विशेषज्ञ तथा द्विवेदी जी पर शोध करने वाले साहित्य मनीषी, दिवंगत गोपीचंद श्रीनागर के अनुसार, द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' के अनेक अंकों का सम्पादन यहीं रह कर किया। हालाकि नाथूराम साहू जिन्हें पिछ्ली कई पीढ़ियां 'कक्का' कह कर सम्मान देती रहीं, के जन्म तक आचार्य महावीर प्रसाद सम्भवत:, झाँसी छोड़ चुके थे। इसी हाता सीता राम में कक्का के घर आंगन में पले पढ़े, हिंदी के मधुर गीतों के बेहद सशक्त रचैयिता प्रमोद विकल्प ने भी बाल्यकाल से युवा होने तक की सीढ़ियां लांघी। यहीं उन्हेंने गीत लिखना सीखा। वे अज्ञात इसलिये रह गये कि कतिपय कारणों से वे किसी अज्ञात स्थान पर स्वनिर्वासित जीवन बिता रहे हैं।

कक्का को दहेज तथा मृत्यु भोज विरोधी सामाजिक आन्दोलन चलाने का प्रबल योध्दा उनकी परिस्थितियों ने बनाया। स्थानीय पत्र 'निधि मेल' के 15अगस्त 2002 अंक में डॉ. गौरीशंकर 'सरल' के एक लेख के अनुसार उनके पिता दिवंगत लालाराम साहू का निधन, उनकी एक वर्ष की आयु में ही हो गया था। सिर पर साये के रूप में मां, तलसाबाई ही रह गईं। पिता के देहांत के बाद गाँव में जीवनयापन मुश्किल हो गया। वे अपने एक मात्र पुत्र, नाथूराम साहू को लेकर झाँसी आ गईं। मेहनत मजदूरी करके किसी प्रकार इतना अर्जन ही हो पाता था कि पेट भर जाये। तन ढक जाये। ऐसे में कक्का की विधिवत शिक्षा का प्रश्न कहाँ उठ सकता था। पारिवारिक संस्कारों के कारण वे प्रबल स्वाभिमानी थे। किसी के सामने हाथ नहीं फैला सकते थे। फैलाते भी तो कौन से हाथ भर जाने थे। स्वभाव और परिस्थितियां नाते रिश्तेदारों को भी निर्मम बना देती हैं। होश सम्हालते-सम्हालते वे स्वयं मेहनत मजदूरी कर माँ की सहायता करने लगे। अपनी शिक्षा के विषय में स्वयं लिखते हैं-

*'धोबी गुरू देव जू से ज्ञान कछु पायो है'।*

ऐसे में उन्होंने मां से ही जाना होगा कि पिता की मृत्यु के बाद उनकी तेरहवीं करने के लिये किस प्रकार का पुरोहिताई तथा सामाजिक दवाब उनके ऊपर आया। मां की मृत्यु के अवसर पर वे स्वयं इस अनुभव से रूबरू हुये। किसी प्रकार तेरही की तो व्यवहार में पाया कि तेरही जीमते समय पुरोहित वर्ग किस प्रकार हँसी.ठट्टे में मस्त रहा। जबकि माँ का साया उठ जाना उनके लिये एक हादसे की तरह था। वे वितृष्णा से भर उठे। मृत्यु-भोज जैसी क्रूर प्रथा के विरुद्ध घृणा से भर गये। बेटियों के विवाह में दहेज जिस दैत्य के रूप में उनके सामने आया, उसने इस प्रथा के विरुद्ध उनमें कटुता पैदा कर दी। उनका जीवन इन दोनों प्रथाओं के निषेध के लिये समर्पित हो गया। उनका सारा लेखन तथा संस्कृति कर्म न केवल इस अभियान पर ही केन्द्रित रहा अपितु इनके विरोध में उन्होंने सम्पूर्ण बुंदेलखंड की सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा अपनी जानी पहचानी सायकिल से ही की।

सामान्यत: सिर पर गांधी टोपी, मारकीन की कमीज, गैर संघी खाकी निकर या सफेद पायजामा, बेहद साधारण सी चप्पलों में वे सायकिल पर होते। सायकिल के हैंडिल में टिन का एक बॉक्स फंसा होता। नीले रंग के बॉक्स पर लाल रंग से लिखा होता 'समय की पुकार'। बॉक्स में एक सर्वोदयी होता। थैले में उनकी दहेज विरोधी पुस्तिकायें तथा पर्चे रखे होते। बांटने के लिये। जब तक उनमें शक्ति रही तब तक यह उन्माद रहा कि किसी ऐसे आयोजन के समय आयोजन स्थल पर ही पहुँच जाते। दहेज तथा मृत्यु भोज के अनौचित्य पर तकरीरें देनाए साहित्य बांटना शुरू कर देते। सुधार अपने घर से ही शुरू होता है, इस सिद्धात के चलते, उनके अभियान के मुख्य केन्द्र उनके स्वजातीय ही होते थे। उन्हें यह रंग में भंग डालना लगता। वे कक्का को अपमानित-प्रताड़ित करने पर उतर आते।

पाँच पुत्रियां तथा तीन पुत्रों का जन्म परिवार में हुआ है। उसके पालन-पोषण के लिये उन्होंने घर के पास ही, मुख्य बाजार में एक चक्की लगा ली। लोगों का अनाज पीसते। स्वयं भी विभिन्न तरह के अनाज का आटा रखने लगे। आज से दशकों पहले आटा बेचने की उनकी एकमात्र दुकान थी। शहरी प्रकृति के विकास के चलते आज आटा ही खरीदना शहरी लोगों की मजबूरी बन चुकी है। वक्त की जरूरत को समझते हुये उन्होंने चावल के अतिरिक्त अनेक प्रकार की दालों का आटा भी रखना शुरू कर दिया। आज उनकी दुकान लगभग सड़सठ की आयु प्राप्त कर चुकी है। आसपास इस प्रकार की अनेक दुकानें अस्तित्व में आ गई हैं लेकिन कक्का का नाम ही उनके उत्पादों की स्तरीयता की गारंटी बन गया है।

उनके जीवनकाल में ही उनके कनिष्ठ पुत्र, अजय साहू ने उनका

व्यवसाय सम्हालना शुरू कर दिया था। सच तो यह है कि चक्की ही नहीं, कक्का की सम्पूर्ण विरासत अजय साहू ने ही सम्हाली है। कक्का का व्यवसाय देखने के साथ ही वे कक्का के साथ घूमे हैं। कक्का से रंगमंच सीखा है। आज बेहद साधनहीन स्थिति में भी अजय साहू बुंदेली भाषी फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सुज्ञात नाम हैं। 'बुंदेलखंड फिल्म अकादमी' के सम्भवतः संस्थापकों में रहे हैं अजय साहू। वे बुंदेली भाषी फिल्म निर्माण में पटकथा लेखनए संवाद लेखन, निर्देशन जैसे विभिन्न पक्षों को देख रहे हैं।

दुकान से कुछ धनार्जन होने लगा। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि कक्का की मानसिकता बदल गई हो। वह ऐसी ही रही कि, 'दाता इतना दीजियो, जामें कुटम समाये, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखौ जाये'। आमदनी का बड़ा हिस्सा कक्का के दहेज-मृत्यु भोज विरोधी आन्दोलन के लिये प्रकाशित होने वाले साहित्य पर चला जाता। रामलीला नुक्कड़ या ऐसे ही अन्य अवसरों पर रंगमंच को समर्पित हो जाता। अपनी कद-काठी, वकोक्ति के साथ बात कहने की शैली के कारण प्रायः वे विदूषक की भूमिका पसंद करते। तत्काल दिमाग में आये उनके अपने संवाद होते। उन संवादों में भी दहेज तथा मृत्यु.भोजों पर वे चुटीली शैली में तीखे हमले करते रहते। किसी जन.आन्दोलन को सक्रिय रखने के लिये कैसे अवसरों का प्रयोग किया जा सकता है, यह सीखना हो तो कक्का की कार्यशैली से सीखा जा सकता है। इन सब कामों से फुर्सत मिलती तो दुकान की ओर ध्यान देते। जब दुकान पर होते तो वह एक सांस्कृतिक केन्द्र का रूप ले लेती। साहित्य-संस्कृति से जुड़ा कोई न कोई उनके पास आता ही रहता। अपनी कहने। बदले में उनकी सुनने। दुकान सहायक के जिम्मे हो जाती। कक्का इन सबकी जिम्मेदारी सम्हालने में मस्त हो जाते। कक्का को अंतर नहीं पड़ता था कि आगंतुक नवांकुर है या स्थापित। उनके हृदय में स्थापित के लिये सम्मान होता। नवांकुर को देने के लिये मार्ग-दर्शन होता। दुकान के सामने ही गली में बैंच या स्टूल पर बैठ कर गोष्ठी शुरू हो जाती। किसी के आते ही वे बगल की चाय की दुकान पर चाय का आदेश दे देते। खुद पियें न पियें, अतिथि को पिला कर ही विदा करते। दुकान खोल कर साफसफाई के बाद पहला काम होता वहाँ लगे ब्लैक बोर्ड पर संदेशप्रद कोई स्वरचित कविता लिखना। प्रायः हर दिन एक नई कविता होती। पता नहीं सब लिपिबद्ध कर भी पाये या नहीं। उनके कबीराना अंदाज पर पत्नी मूलादेवी खीझतीं, कुढ़तीं लेकिन एक आदर्श भारतीय पत्नी की तरह घर तथा उनके व्यवसाय में हाथ बटाने के लिये दिन रात लगी रहतीं है। आटा बेचने में वैसे भी बहुत से खटराग होते हैं। अनाज.दालों को साफ करना, सुरक्षित रखना जैसे। यह सारे दायित्व मूला जी सम्हालती रहतीं।

जैविक परिवार से अलग कक्का का एक मानस परिवार भी रहा है। वह शायद जैविक से अधिक महत्वपूर्ण रहा है। लक्ष्मणदास साहू पृथ्वीपुरः बुंदेलखंड के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर शोधपरक लेखन के लिये ज्ञात, आयकर आयुक्त जगदीश 'जगेश', चतुर्भुज साहू, मुन्नी लाल साहू जैसे कुछ लोग उनके मानस परिवार में शामिल रहे। इनमें करोड़पति से लेकर खाकपति तक रहे लेकिन कक्का के लिये यह महत्वपूर्ण नहीं था। महत्वपूर्ण यह था कि उनसे वैचारिक साम्य है तो वे उनका परिवार हैं। यह डोर अभी तक उन्हें मजबूती से बांधे रही। उनके जैविक परिवार का संकल्प है कि आगे कक्का के बाद भी उनका मानस परिवार उनका संरक्षक तथा मार्ग.दर्शक रहेगा।

लगभग दो साल से भी पहले 'दैनिक जागरण' झाँसी की उप सम्पादक, शिखा पोरवाल को दिये साक्षात्कार में वे बताते हैं कि अपने अभियान को समर्पित गद्य, हास्य.व्यंग्य की पद्यात्म शैली में उनके द्वारा सृजित, उनकी उन्नीस पुस्तकें हैं। अठारह प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके पुत्र अजय साहू उनकी पुस्तक, कविता तरंग, मन की तरंग, समय की पुकार, समय की पुकार के त्यागी भाई, मृत्यु भोज क्यों और क्यों नहीं, देश और जाति का दुश्मन दहेज, दहेज विरोधी गीत, बुंदेली चौकड़ियां, समाज एवं राष्ट्र हित, बुंदेली लोकगीत, दर्पण, कक्का के छक्के, धन्यवाद, व्यंग्य बौछार, सफर, लाख टका की बात, बुंदेली जनगीत, दहेज, मृत्युभोज एवं अन्न की बर्वादी का जिक्र करते हैं। उनकी अधिकांश किताबें पुस्तिकाकार हैं। लेकिन महत्वपूर्ण यह नहीं है कि उनकी पुस्तकों का आकार क्या है। कलेवर आकर्षक है या नहीं। महत्वपूर्ण यह है कि पुस्तकों की सामग्री क्या है। वे कतई गैर व्यवसायी थे। ओरछा के राजा राम चंद्र को अपना संरक्षक मानते थे। सारी किताबें उन्हें ही समर्पित हैं। समाज का दर्पण दिखाने वाली उनकी किताबें अनमोल हैं लेकिन उनकी कोई कीमत नहीं है। निशुल्क वितरित की जाती रही हैं। परस्पर आर्थिक सहयोग से पुस्तकें प्रकाशित करते रहे हैं। प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देने वालों के नाम आभार स्वरूप देते रहे हैं। अपने आन्दोलन को सक्रिय रखने के लिये उन्होंने 'समय की पुकार' के नाम से एक संस्था बनाई। रंगमंच, फिल्म तथा टी वी कलाकार, आरिफशहडौली बताते हैं कि अपने अंतिम वर्षों में वे समय की पुकार का वारिस, कवि, लोकगीत गायक तथा रंगमंच कलाकार ब्रह्मादीन 'बंधु' को बना गये हैं।

कक्का अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति के रहे किंतु साम्प्रदायिकता तथा जातिवाद उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाये थे। उनके पारिवारिक सम्बंध अनेक विधर्मी तथा दलित लोगों से रहे हैं। वे धार्मिक थे। साम्प्रदायिक बिल्कुल नहीं थे। आस्थावादी थे। दूसरों की आस्था और विश्वास का सम्मान करते थे। रक्षा करते थे।

बीती सदी के अंतिम डेढ़ वर्षों में यह लेखक 'जनवादी लेखक संघ', झांसी का सचिव रहा। कक्का हमारे संरक्षक हुआ करते थे। यह वह दौर था जब लाल कृष्ण आडवाणी अपनी विवादास्पद रथ यात्रा कर रहे थे। उसकी अंतिम परिणिति 1992 में बाबरी मस्जिद ध्वंस के साथ हुई। राम राजा के प्रति परम आस्थावान कक्का उस पूरे दौर में रामनामी दुपट्टा ओढ़े जनवादी लेखक संघ के प्रतिरोधी अभियानों में उत्साह के साथ शामिल रहे। सदी के अंतिम वर्षों में झांसी में जनवादी लेखक संघ का राज्य सम्मेलन प्रस्तावित हुआ। इस प्रस्ताव से जलेस, झांसी के कुछ विघ्नप्रिय तत्व बेचैन हो उठे। उनकी कुत्सित चेष्टाओं से जलेस का राज्य तथा केन्द्रीय नेतृत्व विचलित हो गया। उसे झांसी में सम्मेलन की सफ्लता पर संदेह होने लगा। पूरी तैयारी के मात्र तीन.चार दिन पहले राज्य नेतृत्व ने झांसी सम्मेलन निरस्त कर दिया। प्रतीकात्मक रूप से उसे अलीगढ़ में उन्हीं तिथियों में करने का निर्णय ले लिया। कक्का न केवल सम्मेलन की तैयारियों कि प्रक्रिया मेंए आर्थिक सहयोग प्राप्त करने के लिये, मेरे साथ सायकिलों पर दसियों किलोमीटर चले अपितु सम्मेलन निरस्त होने के बाद, नौजवान साथियों की हताशा, निराशा तथा आक्रोश के दिनों में मजबूती से साथ

खड़े रहे। हमारे लिये यह विराट सम्बल था।

'जनवादी लेखक संघ', 'भारतीय जन नाट्य मंच',इप्टा.ए 'दैनिक जागरण', 'खजुराहो फिल्म फैस्टीवल' के तत्वावधान में फिल्म.कलाकार राजा बुंदेला सहित देश भर की दर्जनों साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्थायें उन्हें सम्मानित कर गौरवान्वित हुई हैं।

वे वर्तमान व्यवस्था से इतने असंतुष्ट थे कि कभी-कभी कहने लगते थे कि इससे तो राजशाही और अंग्रेजशाही ही अच्छी थीं। हालांकि यह क्षणिक होता था। वास्तव में वे सर्वजन समर्थ एक मजबूत भारत के स्वप्नदृष्टा थे। अपने सपनों का भारत देखने के लिये उनका आह्वान रहा है-

*देश ऊँचा उठाने को हम अपने मन बदल डालें,*
*त्योहारों को मनाने का कुछ तरीका बदल डालें।*
*जिसकी गोदी में जन्मे, किया है आबे दाने को,*
*उस मादरे वतन का आँचल हम खुशियों से भर डालें।*
*मजहब की आग के ऊपर हैं सेकते जो रोटी,*
*उन् धर्म के ठेकेदारों का इरादा हम कुचल डालें।*

कक्का की पुस्तक, 'दर्पण' की कविताए 'मन बदल डालें' से।

-3-गुरूद्वारा, नगरा, झाँसी-284003
मो. 0800 4271503

---

# 21वें बुन्देली उत्सव में सम्मानित

1- **श्री महेश कटारे 'सुगम'**, बीना -
राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान
(बुन्देली साहित्य सर्जना हेतु)

2. **डॉ. रामस्वरूप खरे**, उरई -
राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान
(बुन्देली साहित्य समीक्षा तथा संपादन हेतु)

3. **श्री हरगोविन्द कुशवाहा**, झाँसी-
राव बहादुर सिंह बुन्देला स्मृति सम्मान
(बुन्देली लोक संस्कृति व लोककलाओं के संवर्धन में उत्कृष्ट योगदान हेतु)

4. **डॉ. सफिया खान**
ओरछा दीवान प्रतिपाल सिंह स्मृति सम्मान
(बुन्देलखण्ड के इतिहास में उल्लेखनीय कार्य हेतु )

5. **डॉ. शिवाजी चौहान**, गुरसराय-
डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान
(लोक गायकी ख्याल के उत्कृष्ट गायन हेतु)

6. **श्री राममूर्ति नामदेव**, बसारी-
गौरिहार नरेश प्रताप सिंह स्मृति सम्मान
(बुन्देली उत्सव में सक्रिय व उत्कृष्ट योगदान हेतु)

7 **श्री वसन्त निरगुणे**, भोपाल -
श्री हरगोविन्द हेमल स्मृति सम्मान
(निमाड़ी लोक साहित्य में उत्कृष्ट रचनात्मकता हेतु)

बुन्देली विकास संस्थान द्वारा प्रत्येक सम्मान में 3100/- की राशि, सम्मान पत्र तथा शाल-श्रीफल से सम्मानित किया जाता है।

# एक पाठकीय प्रतिक्रिया

-विनोद मिश्र ''सुरमणि''

*दोहा -मास फरवरी में मिलौ, सन् सतरा कौ अंक।*
*सिंह बहादुर ने सुधो, जो बुन्देली बसंत।।*

बुन्देली की भई तैयारी, भरौ समइया ग्राम वसारी।। 1।।
है बुन्देली कौ संस्थान, मुन्नाराजा को प्रतिमान ।। 2।।
डेढ़ शतक जाके हैं पन्ना, सुघर लेख, कविता के सुन्ना ।। 3।।
अपनी बात कही सम्पादक, जासे सुयश वड़यो है दायक ।। 4।।
कवि त्रयी मीर, ईसुरी मधुकर, कवि हनुमत सहगौरी शंकर ।।5।।
दास बनारसी अना अकेला, सव का राज लेख से खोला ।।6।।
उदय, पाण्डेय, मोना श्री विन्दु , गायत्री, वैभव हरिविष्णु ।।7।।
अजय, प्रमोद संग है गुणसागर कामिनी , नंद ,निरगुणे व नागर।।8।।
मन मोहन व श्याम विहारी, हरगोविन्द अरु सीमा तिवारी ।।9।।
आशुतोष, चौबे, बरसैयां, रजनी, श्रवण, दुर्गेश, कन्हैया ।। 10।।
राम किशोरी, सरोज, प्रभाकर, लखन लाल वीरेन्द्र बहादुर ।।11।।
नंद किशोर मिश्रा प्रभुदयाल, एन. डी. रजनी राम गोपाल ।। 12।।
विष्णुमोहन, मुन्नालाल, सोम भास्कर करत कमाल ।। 13।।
रामस्वरूप नामदेव लिधोरी,सुधा शिवाजी राम किशोरी ।। 14।।
शिरोमणि, सुरमणि, सत्या सीकर, दुर्गाचरण दया व निर्झर ।। 15।।
व्यास, संग शिव भूषण नायक, मनोज देवदत्त ओ.पी. लायक।।16।।
गद्य के पीछे पद्य सुसज्जित, रखा रहे बुन्देली इज्जत।। 17।।
पूरन, गुप्त हरि वेताल, प्रबोध, पीयूष, यदुवंशी पाल।। 18।।
शिल्पी, नवल, सनेही कंज, मायूष, शांत, गोस्वामी, पंकज।। 19।।
परिहार, गौतम, त्रिपाठी, सुगम, विश्व, सरल परिपाटी।। 20।।
सुधाराजे, शाडिल्य, स्वतंत्र दिनेश वैस, गौतम के मंत्र।। 21।।
जयराम महावीर नगायच हरिकृष्ण हरि, लाल, उवाच।। 22।।
सुरेन्द्र, गुलाब श्रीराम गोपाल, इनकी पढ़ी बुन्देली चाल।। 23।।
लिख गय लिखनारे बुन्देली, गद्य विधा की सुन्दर शैली।। 24।।
अजीत, रिछारिया, संग अवधेश, मनोज, क्षमा, पथ के संदेश ।।25।।
सोम, दया, वीरेन्द्र, भास्कर, देवदत्त, साकेत, उजागर।। 26।।
भाषा संस्कृति परम्परा, करी सृजन साहित्य धरा।। 27।।
संतोष मुन्नालाल नरेश, उमादेव, द्विवेदी, दुर्गेश।। 28।।
नेहा बुन्देला ने लिखडारी, रपट बसारी की जा सारी।। 29।।
कन्हैया लाल ने लिख दओ पत्र, जैसो लगो सो चित्र विचित्र।।30।।
तीस किताबै मिली जा साल, उनको नाम दियो तत्काल।। 31।।
सुन्दर चित्र कवर पे दीन्हा, अंशुमान की कलम से लीन्हा।। 32।।
अक्षर संयोजन की वारी, मन से रच गईं प्रतिमा तिवारी ।। 33।।
आकृति मुद्रक ने कर दई, बसंत बुन्देली बसंत सी भर दई।। 34।
सह संपादक हरि घोष, रखी बहादुर जू पे धोंस।। 35।।
मानवीय मुन्ना जू राजा, जिनके सुयस यह काजा।। 36।।
राम सेतु की गिलहरी जैसी, कइ प्रतिभायें समर्पित तैसी।। 37।।
धन्य भाग्य भए आज हमारे, गद्य पद्य पढ़ लए है सारे।। 38।।
विनती सुनहौ हमारी सव जन, पढ़ौ बुन्देली बसंत ज्ञान धन।। 39।।
देओ अशीस श्री बहादुर जू हित, करत रहें वे काज लोकहित।।40।।

*दोहा- 'सुरमणि' ज्ञान भण्डार कौ, देखत रूप अनंत।।*
*हर सालै मिल जात है, जा बुन्देली बसंत।।*

-मधुकर मार्ग पकौरिया महादेव, दतिया (म.प्र.)

# लोकगीतों में भारतीय संस्कार और परम्पराओं की झाँकी

-डॉ. अन्नपूर्णा सिसोदिया

आदिकाल से ही मानव प्रकृति की गोद में फला-फूला है। प्रकृति के अप्रतिम सौंदर्य ने उसकी भावभूमि को स्पर्श कर उसके साथ तादात्म्य स्थापित किया। प्रकृति के साहचर्यजनित अनुभवों को मानव ने जब अपने मन के उद्गारों की लय में पिरोया, तो लोकगीतों का जन्म हुआ। बाहरी जीवन की कृत्रिमता और आडंबर से परे निश्छल मानव हृदय के नैसर्गिक उद्गार ही (लोकगीत) हैं। लोकगीतों में प्रकृति से उत्पन्न प्राकृतिक संगीत की खनक स्पष्ट सुनाई देती है। पहाड़ों की नीरवता, झरनों का अविराम कोलाहल, पत्तों की मर्मर-ध्वनि, नदी के चंचल जल का कल-कल नाद, बारिश की बूँदों की छम्प-छम्प, महामेघ की गर्जना, बिजली का चमकना, कलियों का चटकना, फूलों का महकना, भँवरों का गुंजन, विशाल सागर का महारव, पक्षियों की चहचहाहट, पशुओं और अन्य जीव-जंतुओं की आवाज में उसी प्राकृतिक संगीत की मधुर ध्वनि समाहित है। प्रकृति के इसी मादक संगीत का लोकधर्मी रंग और ग्राम्य संस्कृति की अल्हड़ता इसे एक अनूठा रूप प्रदान करती है। इन्हीं लोकगीतों में हमारी सभ्यता का इतिहास और परम्पराओं की झाँकी दिखाई देती है। लोककंठ से निःसृत ये गीत मूल रूप से मौखिक, वाचिक और श्रुति परम्परा का परिमार्जित और विकसित रूप हैं। ये गीत अनेक लौकिक विधानों, अनुष्ठानों और परम्पराओं पर आधारित होते हैं तथा लोक आस्थाओं को लयबद्ध अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

भारतीय लोकजीवन आदिकाल से ही संगीतमय रहा है। हिंदू परम्परा के अनुसार मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कारों से गुजरना पड़ता है और प्रत्येक संस्कार के लिए लोकगीत हमारे ग्रामीण अंचलों में गाये जाते हैं, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन, कर्णवेधन, विद्यारंभ, उपनयन, वेदारंभ, केशांत, सम्वर्तन, विवाह और अन्त्येष्टि संस्कार, ये सोलह संस्कार हैं, जिनसे हमारा सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन पुष्ट होता है। संस्कार गीत सबसे समृद्ध गीत शैली है। जन्म में यदि सोहर गाया जाता है, तो अंतिम यात्रा की अनुभूति कराने के लिए निर्गुण गाया गया।

बुन्देलखण्ड के एक सोहर में प्रसूता नहान की एक बड़ी मनोरम झाँकी है। प्रसूत महिला कुँए की पूजा करके और जल भर के सहेलियों के साथ बच्चे को गोद में लिए घर के दरवाजे पर आकर कहती है-

*''हम पैरैं मूंगन की माला*
*हमरी कोउ गगरी उतारो*
*कहाँ गए मोरे सइयाँ गुसईंयाँ कहाँ गये वारे लाला*
*एक हात मोरी गगरी उतारो*
*दूजे से ललना संभारो*
*हमारी कोऊ -----''*

भारत के ग्रामीण अंचल में आज भी प्रेम का स्वच्छंद प्रकटीकरण संभव नहीं, ऐसे में विवाहित महिलाएँ किस प्रकार सार्वजनिक रूप से अपने पति को बुलाने की चिरौरी करते हुए अपने प्रेम को प्रकट करती हैं, इस राजस्थानी लोकगीत में यही भाव अत्यंत सुन्दर रूप में मिलता है -

*''रखडी दे दूँ हाँसज दे दूँ*
*प्राण दे दूँ सा*
*कि छेरयाँ जाओ*
*म्हारा राज कुँवर सा ने लेर आओ सा।''*

प्रेम का कैसा अनूठा प्रकटीकरण, विशुद्ध भारतीय परम्परा के अनुरूप, जहाँ अपने पति की एक झलक के लिए पत्नी प्राण तक न्यौछावर में देने को तैयार है।

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में सुआ, करमा, डण्डा, पंथी नृत्य गीत हैं। सुआ गीत करुण गीत है, जिसमें नारी जीवन को सुअना अर्थात् पिंजरे में बंद तोते के समान माना जाता है। गोंड जाति की नारियाँ दीपावली के अवसर पर आंगन के बीच में पिंजरे में बंद सुआ को प्रतीक बनाकर (मिट्टी का तोता) उसके चारों ओर गोलाकार वृत्त में नाचते हुए अगले जन्म में नारी जीवन पुन न मिले, ऐसी कामना के गीत गाती हैं।

*''तरि नरि ना ऽऽ ना ऽऽ मोर*
*तरि नरि ना ऽऽ ना ऽऽ गा ऽऽ*
*ओ ऽऽ सुआ न ऽऽऽ*
*तिरिया जनम झन देबे*
*तिरिया जनम मोर गऊ को बरोबर*
*गऊ के बरोबर*
*रे सु आना ऽऽऽ*
*तिरिया जनम झन देबे ऽऽऽ*
*सती सु लोचना ऽऽऽ रोवथे ओ ऽऽऽ*
*तरिया तीरे ऽऽऽ*
*तरिया तीरे ऽऽऽ*
*तिरिया जनम झनि देबे*
*ओ सु आना ऽऽ''*

(राउत गीत) दीपावली के समय गोवर्धन पूजा के दिन राऊत जाति के द्वारा गाया जाने वाला गीत है। यह वीर-रस के गीत हैं, जिसे लाठियों द्वारा युद्ध करते हुए गाया जाता है। इसमें तुरंत दोहे बनाए जातें हैं और गोलाकार वृत्त में घूमते हुए लाठी से युद्ध का अभ्यास करते हैं। पौराणिक प्रसंगों के वर्णन के अलावा तत्कालीन सामजिक तथा राजनीतिक विसंगतियों पर कटाक्ष करते हुए पौरुष प्रदर्शन किया जाता है।

*''अरे रे ऽऽ रे ऽऽ भई ऽऽ रे ऽऽ भई रे ऽऽ*
*कन्हैया के गांव मां आगी लगगे,*
*राजा कहां तोर गोलियार ?*
*बलवव कंस ला ठेंगा मार के*
*कहां हे तोर तरवार ?''*

अपनी अनूठी लोक परंपरा व लोककलाओं के कारण ही मालवा क्षेत्र की देश में एक विशिष्ट पहचान है। मालवांचल में कुँवारी युवतियाँ श्राद्ध पक्ष में संजा खेलती है, गोबर से घर की दीवार पर विभिन्न आकृतियाँ बना कर उन्हें फूलों से सजाती हैं और संजा बाई के गीत गाती हैं। संजा एक ऐसा पर्व है, जिसमें भित्ति-चित्रण की विविध आकृतियों के रूप में ग्रामीण सभ्यता के चित्रण के साथ ही संजा के लोकगीतों के माध्यम से लड़कियों को विवाह हेतु गंभीर होने की हिदायत भी दी जो ती है-

''तमारा सासरिया से हाथी भी आया, घोड़ा भी आया।
*म्याना भी आया पालकी भी आई*
*जाओ संजाबाई तम सासरिये.....''*

संजा पर्व मालवा में ही नहीं देश के अन्य प्रान्तों में भी अलग-अलग नामों से मनाया जाता है यथा मेवाड़ में सभन्या, राजस्थान में संझ्या, हरियाणा में सांझी-धूंधा, ब्रज में सांझी, बुन्देलखण्ड में संजा-गुजरी तथा महाराष्ट्र में बुलाबाई के नाम से जाना जाता है।

विवाह के लोकगीतों की तो एक लम्बी श्रृंखला है घोड़ी, बन्ना बन्नी, मेंहदी, हल्दी, कामन, मायरा(भात), मंडप, भाँवर, कन्यादान, विदाई, गौना और नव वधु के स्वागत के साथ मेहमानों की अगवानी, देवी-देवताओं के आह्वान, समधियों के साथ हास-परिहास वाले (गारी) के गीत भारतीय लोकजीवन में प्रचलित हैं।

घोड़ी गीत-

*''घुड़ला तै बल ल्याइओ घुड़ला रे चाबक आओ*
*अनोखा लाडला हो राई बर धीरे धीरे चाल*
*मंजलै मंजलै चाल।'' (हरियाणवी)*

सिंदूरदान गीत -

*''कवने नगर के सेनुरिया सेनूर बेचे आईल हे*
*कि आगे माई कवने नगर के कुंवारी धिया*
*सेनूरा बेसाहेले हे..'' (भोजपुरी)*

मैथिली लोकगीत बिहार प्रांत के चंपारन, दरभंगा, पूर्वी मुंगेर, भागलपुर, पश्चिमी पूर्णिया और मुजफ्फरपुर के पूर्वी भाग के ग्रामीणों द्वारा गाए जाते हैं। सोहर, जनेऊ के गीत, संमरि लग्न, गीत, नचारी, समदाउनि, झूमर तिरहुति, बरगमनी, फाग, चैतावर, मलार, मधु श्रावणी, छठ के गीत, स्यामाचकेवा, जट जटिन ओर बारहमासा यहाँ के मुख्य लोकगीत हैं। (समदाउनि) मिथिलांचल का प्रमुख बिदा गीत है। सीता के देश में इस गीत से बाबुल के घर से विदा होती हर बिटिया के घर में वही करुणा उत्पन्न होती है, जो कभी जनक के घर से उमड़ी थी-

*''बड़ रे जतन हम सिया जी के पोसलों से हो*
*रघुबंसी ले जाय आहे सखिया।''*

हमारे लोक अंचलों में हर त्यौहार और परंपरा के अनुरूप लोकगीत हैं। विवाह के अवसर पर राम-सीता और शिव-पार्वती के विवाह-गीत के साथ ही हर विधि के लिए अलग-अलग गीत, शिशु जन्म पर सोहर, बिरहा, कजरी, सामा-चकवा, तीज, भाई दूज, होली पर होरी, छठ पर्व पर छठी मइया के गीत, सभी संस्कारों के लिए लोकगीतों की अनंत श्रृंखला लोकजीवन को जीवंतता प्रदान करती है।

एक गीत भाई दूज के अवसर पर गाया जाता हैं। इसमें पहले तो बहनें अपने भाई को श्राप देकर मार देती हैं फिर जीभ में काँटा चुभा कर स्वयं को कष्ट देती हैं कि इसी मुंह से भाई को श्राप दिया और फिर भाई की लम्बी आयु के लिए आशीष देती हैं

*''जीय जीय ( भाई का नाम) भईया लाख बारिस*
*(बहन का नाम लेकर) बहिनी देलीन आसीस हे''*

बिहार और उत्तर प्रदेश में दीवाली के पहले या बाद में घर से दलिदर भगाने की प्राचीन परंपरा है। गाँव की स्त्रियाँ समूह में प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में हाथ में सूप और कलछुल या छड़ी लेकर घरों से निकलती हैं और सूप ढबढबाते हुए दलिदर अर्थात् दारिद्रय को (लक्ष्मी घर दलिद्दर बाहर) गाते हुए दूसरे गांव की सीमा तक खदेड़ आती हैं। यहाँ बड़ी बात, उनका ये विश्वास कि उन्होंने ऐसा करके समस्त गाँव के दुख, दरिद्रता रूपी अलक्ष्मी को गाँव से बाहर खदेड़ दिया है, ऐसी निश्छलता और भोलापन केवल हमारी लोक संस्कृति में ही संभव है।

ऐसा माना जाता है कि श्रम से संगीत का जन्म हुआ शायद कभी सभ्यता के उदयकाल में किसी ग्वाले ने कोई आलाप छेड़ा होगा, बैलों के गले में बंधे घुंघरूओं के साथ हल चलाते किसान के कंठ से कोई मीठी तान पसीने के साथ बही होगी, ब्रह्म मुहूर्त में चक्की चलाती महिलाओं के होंठें पर कोई राग सजा होगा, छछ बिलौनी की ध्वनि ने ही संगीत का पहला स्वर लिखा होगा, सभ्यता के उसी आदिकाल से आज तक लोकगीतों की ये अजस्र धारा लोकजीवन को अपनी मधुरता से सिंचित कर रही है। रोपाई बिनाई के गीत, धान कूटने के गीत, कटनी, रोपनी, सोहनी व जांतसार के दौरान गाए जाने वाले, नाव खेते हुए मल्लाह या डोली ले जाते हुए कहार, धुनिया, हरवाही, चरवाही अथवा सरपोटनी आदि श्रम लोकगीतों की अपनी एक अलग ही परम्परा है। गेहूं पीसने के लिए जांत के सामने महिलाएं, जो गीत गाती थीं जितना अनाज पीसना होता था उसी हिसाब से गीतों की लंबाई हुआ करती। इनमें पवही, अधसेरही, सेरही, दूसेरही और पसेरही गीत होते।

हमारे इन लोकगीतों में हमारी सभ्यता का इतिहास साँस लेता है। भारतीय संस्कार और परम्पराओं को अपनी धुनों में समेटे ये लोकगीत हमें अपनी जड़ों से जोड़े हुए हैं। आज आधुनिकता का अंधानुसरण करती नयी पीढ़ी अपनी इस अनमोल धरोहर को विस्मृत करती जा रही है, आवश्यकता है इस धरोहर के संरक्षण की, जिससे हमारी आने वाली पीढ़ियाँ अपने सभ्यता और संस्कृति से परिचित हो सकें।

-37, पार्क के पास, लेक सिटी कॉलोनी
पछाड़ी खेरा, अशोक नगर (म.प्र.)

## बुन्देली गीत

-गुलाब सिंह यादव 'भाऊ'

अब नये लरका बिगरत जा रये।
अपने मन कौ चारये।। अब नये................
सट्टा, जुँआ, जुगाड़ में बिद रये।
सुनलौ गुटका खारये।। अब नये................

मदरा मास चरस में बीदे,
होटल रोजऊ जा रये।। अब नये................
बाप मताई की कई ना करवै।
अपनौ गणित लगारये।। अब नये..............

काम धाम न करवै घर कौ।
बैठे मोबाइल चला रये।। अब नये.............
घर कौ उल्टौ करत मिटौनौ।
गाड़ी रोज घुमारये।। अब नये...............

उनके लरका बिगर रहे है।
जो अवगुन खा धारये।। अब नये................
ऐसे नहीं चलावा चलबै।
सुधरौ भाऊ बतारय।। अब नये...............

-ग्राम-लखौरा, पोस्ट-बहादुरपुर
जिला-टीकमगढ़ म. प्र., पिन:472001

# पारम्परिक देवी-गीत (बुन्देली)

-श्रीमती व्रजलता मिश्र

कैसे कें दरसन पाएँ री, मैया तोरी लागीं किवरियाँ।
लागी किवरियाँ मैया सँकरीं दुअरियाँ । कैसे के...
माई के दुआरें एक अन्धौ पुकारै,
देओ नैना घरै जाए री, मैया तोरी...

माई के दुआरें एक लूलौ पुकारै
देओ हाँत घरै जाए री, मैया तोरी...
माई के दुआरें एक लँगड़ौ पुकारै
देओ पाँव घरै जाए री, मैया तोरी...

माई के दुआरें एक बौरा पुकारै
देओ बानी घरै जाए री, मैया तोरी...

माई के दुआरें एक कोड़ी पुकारै
देओ काया, घरै जाए री मैया तोरी

माई के दुआरें एक निर्धन पुकारै,
देओ माया घरै जाए री, मैया तोरी..
माई के दुआरें एक कन्या पुकारै
देओ घर वर घरै जाए री, मैया तोरी

माई के दुआरें एक बाँझ पुकारै,
देओ ललन घरै जाए री, मैया तोरी...
सिमिर-सिमिर मैया तोरौ जस गावें
चरन छोड़ कहाँ जाएँ री, मैया तोरी

### गीत की स्वरलिपि - ताल - दादरा

स्थायी-

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा- | सा- | सा- | रेरे | -सा | नि़- | सा- | रेग | ग- | मग- | -रे | सा- |
| कैऽ | सेऽ | कैंऽ | दर | ऽस | नऽ | पाऽ | एँरी | ऽऽ | मैया | ऽतो | रीऽ |
| नि- | सा- | रे- | गरे | -सा | - | सारे | ग- | म- | गग- | गरे | सा- |
| लाऽ | गींऽ | किऽ | वरि | ऽयाँ | ऽ | लाऽ | गीऽ | किऽ | वरि | याँमै | याऽ |
| नि़नि़ | सा- | रे- | गरे | -सा | - | × | | | ० | | |
| सँक | रीऽ | दुऽ | अरि | ऽयाँ | ऽ | | | | | | |
| × | | | ० | | | | | | | | |

अन्तरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सारे | ग- | म- | गरे | -सा | सा- | नि़- | सा- | रे- | ग- | -रे | सा- |
| माई | केऽ | दुऽ | आरें | ऽए | कऽ | अंऽ | धौऽ | पुऽ | काऽ | ऽरै | ऽऽ |
| सा- | सा- | सा- | -रे | -सा | नि़- | सा- | रेग | - | मग- | -रे | सा- |
| देऽ | ओऽ | नैऽ | ऽना | ऽघ | रैऽ | जाऽ | एरी | ऽ | मैया | ऽतो | रीऽ |
| नि़- | सा- | रे- | गरे | -सा | - | × | | | ० | | |
| लाऽ | गींऽ | किऽ | वरि | ऽयाँ | ऽ | | | | | | |
| × | | | ० | | | | | | | | |

नोट - शेष अन्तरे इसी तरह गाये जाएंगे।

-पूर्व प्रवक्ता (संगीत)
आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, झाँसी (उ.प्र.)

# कश्मीर की समस्या

-श्रीमती सुधा खरे

रोज-रोज की कथा कश्मीरी व्यथा,
ऐसें चलै नई ढला चला.............
केशर की क्यारी पे दुश्मन की घात,
लातन के भूत ऐसे माने न बात।
भूंज डारो भला मोरी मानो सला। ऐसें ....
खुद कौ समझ रहे वे सेर पै सवा,
राजनीति कूटनीति दे रई हवा।
करो फार दो पला मोरी मानों सला। ऐसें ....
सरहद के पार जिते दुश्मन दिखायँ
एकई में टपकादो जिंदा न जायँ।
मिट जावे बला मोरी मानों सला। ऐसें ....

बूड़न की बात कजन मान लई जाय
अधकुचरे साँपन खों छोड़ो न जाय।
कुचर डारौ लला मोरी मानो सला। ऐसें ....
'सुधा' अबई खतम करौ रोज की कथा
आँगें के लानें नें राबै व्यथा
जतन काढ़ौ लला मोरी मानों सला ऐसें ....

-43, होप रेजिडेन्सी, टीकमगढ़, म. प्र.
मो.-07771013342

# आसमान की मामुलिया

-आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल

*'मामुलिया के आये लिबउआ*
*झमक चली मोरी मामुलिया'......*

गाउत भईं गाँव की बिटियां क्वाँर (आश्विन) के महनां में जां-तां दिखा परहे। काँटिन के तनक से झकरा पे भांत-भांत के फूलन से सजी मामुलिया और उकी ठसक तो बस देखतई बनत है। बांतनई-बांतन में क्वांर को महना कबे कढ़ गओ पताई नई परो। कातिक को महना लग गओ। जो का भओ ? काँटन के झकरा पे फूलन सजी सजाई जा "मामुलिया" तो अब आसमान में जा पौंची है। आसमान तो धरती से भौतई ऊंचो है, सो ऊंचन की ऊची बात होतई की है। धरती की मामुलिया बिटियन ने फूलन से सजाई ती जा आसमान की मामुलिया हीरा-मोतिन से सजी सजाई जगमगा रई है। मानो उने उते मोतिन चौक पुरा दये होंय। आसमान पे जा पुरबयाँऊ मामुलिया सबई काउको मन मोह रई है। का कईये ? जे किरकिचियां है ! बुंदेली माटी की महत्त महक भरो बिचार इनमें पूरी तरां से है, एसो लगत जैसे वे कौनउं अनकही बात खों कानन में खुसुर-फुसुर कर रई है।

ऐसई ऐसे सैंकरन-हजारन वर्ष कढ़ गये ओर इनकी जा खुसुर-फुसुर जो बतकओ जां कों तां है। को जाने इनकी जा खुसुर-फुसुर में का रहस दुको है, जी खों जुगन के जुग कढ़ गये अकेलें कोउ जा रहस्य को जान नई पाओ। जी दिना जा सिरिस्टी बिधना ने रची हुईये ओई दिनो सें जो रहस्य तो रहस्यई बनो रओ है। सबने जग में देखो बेद के रिषियन ने लिखो और आज के बडे-बडे विज्ञानिक देख रये है। पे जा बात की तां अनकही मईं रे गई है।

जा बात कछु ऐसी भई होती तो फिर अबे कायखों उठने ती ? ई धरती के लालन ने और ललियन ने इन किरकिचियन खों चीनो है, उनने आसमान की जा जगमगाउत जोत खों अपने घर-कुटुम्ब के दुख सुख में सोंझिया बना लओ है। बुदेलखण्ड की गोरी धना इन किरकिचियन पे अपनो गुस्सा बगराउत भई निचाट कै देत है-

*''किरकिचियाउं बैरिन भई मोरे बालमा। .... ''*

गांव के पांड़े जू से कतकियारी पूंछ रई के 'काय महाराज पूनो खों किरकिचियां की बेरां ऊग रई ?' उनन ने अपने घर बारन के कुशल मंगल के लाने और घर- कुटुम्ब की खुशहाली खों कातिक अनाओ है। कातिक अनावे को अनुष्ठान कछु ऐसो बैसो नई होत, किरकिचियन में कतकियारी पानी लौं नई पी सकत, सो गांव के अकेले जनवा पांड़े जू नौ भगी आई है। नौने गुरीरे पुआ बना के लियाई है, पुअन पे पूरो आसमान बना के किरकिचियाउं उकेरी है, जे पुआ पांड़े जू खों अरपन करकें उनसे कथा सुनवे बैठ गईं है।

आज कतकी पूनो है। पांड़े जू अपने पुलपुले मों से कछु से कछु उच्चारत भये संस्कृत बघार रये है। कथा सुना रये है। बीच बीच में चेताउत जा रये है, के बहूरानी ! गेंदारानी ने केउ कातिक अनाये ते। प्राग राज (इलाहबाद) में महिनन रई ती उते बड़े-बड़े पंडितन से पुरान सुने ते। और मन में खूबई गुने ते। ऐसी हती बे तुमाई सास। उनको तो निचाट केवो हतो के जेसी कथा हमाये पांड़े जू महाराज सुनाउत उसी कथा हमने कितउं नई सुनी। फिर का हती पांड़े जू ने बिना जा बात सोचे बिचारे के जा नई नबेली बहु खों हमाई कथा तन थोरी समझ में आरई के नई ? बाये कथा में रस मिल रओ है के नईं ? बे कथा सुनाबे में लीन हो गये, और कथा सुनाई।

उतई ठांड़ो-ठांड़ो मोंगे-मोंगे में पांड़े जू को जो चमत्कार देख रयो तो के गांव की गोरी धना मंदिर में पांड़े जू से किरकिचियाउ पूने पूछवे आई ती और पांड़े जू ने बातनई बातन में पूरी कथा के डारी। गोरी धना ने कथा सुनी आंचर को छोर पसार कें पांड़े जू के पांव परे पांड़े जू मंदिर की चौखट के भीतरें ऐसे ठांड़े ते जैस परम पूज बृम्हा जू होवें।

मेने कई पांड़े जू महाराज पांव लागे पांड़े जू ने रूखे मों उतर दओ "जय राम जी की"। बे उची आबाज में बोले "मास्टर साब, अपन ने उर्दू तो पढ़ी हुये, बताओ आसमान पे जोन किरकिचियां ऊगी है उने उर्दू में का कत हैं ? मैने उर्दू तो एन पढ़ी अकेलें उर्दू में इन किरकिचियन खों का कत है सो तो हमाये पढ़ावे बारे गुरू मौलवी साब लों नई पतो है। मैने कई पांडे जू पढ़ी तो एन है। पे हमाई उर्दू तो आज की आये, आपके जमाने की उर्दू और हमाये जमाने की उर्दू में भौत फरक है। आपकी उर्दू से का मुकाबला करें। सुनतई पांडे जू की मुस्कान बगर परी और बे हस के बोले "तुम सई के रए हो, बो सोई का जमानो हतो ........." फिर बोले उर्दू तो का हम तुमें अरबी में तक बतायें देत के किरकिचियन खों अरबी में "अंथूरिया" कत है। जी को मतलब होत है भौत तरैयन को गुच्छा। इके अलावा 'अलनज्म' सोउ कत जी को मतलब होत उंची कबिताई। सो चमकत दमकत तरैया कों 'अला' कहत जी को मतलब "अम्बा" होत है। बेटा जो भौत उची कविताई है जाये समझो जाये देखो-

*''पश्य देवस्य इमं काव्यं न ममार, न जीर्यती।''*

हरां हरां पांडे जू खुलत जा रये ते। उनकी आंखें फिर से चमक उठी- बेटा तुमे एक बात मोरी जिंदगानी भर याद राखने के काउ पांडे जी ने कई हती......... और इत्तो के के बे चुप हो गये। मोय सांत भाव से हेरन लगे। मैने कई के अपन तो बूढ़े पुराने पुराने चांउर हो, सो हमाये लाने तो गुरू समानई हो सो आग्या करो। पांडे जू धीरे सुर में बोले बेटा तुम रोजीना भुन्सारे उठ कें बृहम मुहुर्त में आकाश की तरैयन के दर्सन करियो इमें चूक ना होय काय से कई जात है के "प्रज्ञानाय नक्षत्र दर्षनं" मतलब जो के ग्यान चाओ तो नखतन के दरसन करो। में अग्याकारी चेला नौने ठांड़ो पांडे जू को बांते सुन रओ तो, पांड़े जी बीच में बोल परे जे आयें किरकिचियां।

किरकिचियन के दर्सन साल भर में दस ग्यारा महना होत रत है, इनके दर्सनन से उमर बढ़त है, जो बेद में लिखो है। नखतन में "सोम" है सोम है इमरत को रस। ऊ इमरत रस खों आंखन से पिओ फिर पांडे जू कड़क के बोल। में सिटपिटियां के रै गओ। को जाने पांडे जू का के डारे सो मैने दोई हाथ जोर लये। फिर बे उंची आबाज में बोले "बेद अगन कों मुख्य देवता मानत और किरकिचियन खों बेद अगन कें नखत (नक्षत्र) बताउत और नखतन में होत है सोम। सो इनमें दोउ चींजे अगन और सोम है जा बात जानो।" और जा बात सोउ जानों के तुमाये जोतिष में लिखी है के साल को श्री गनेश इन किरकिचियन से होत तो। हमने मूढ़ हला दओ क हओ, पांडे जू अपने पिलपिले मों से कछु मंत्र बोलन लगे, फिर बोले सुनों "दूसरे नखत जब इकट्ठे होत तो दो तीन होत जादा से जादा चार होत के किरकिचियाउं तो है भौत और जे पूरब मेंई रती है और सुनो.............।" पांडे जू खों अपनी पूजा की खबर हो आई सो भीतर महादेव बाबा नों उनको अभिषेक करवे

के लाने चले गये हमने हाथ जोरे और अपनी गैल पकरी।

में सोच रओ तो के जे गांव के बूढ़े पुजारी भौत जानत है। जे मूरख नईया हम इन्हें सोचत ते लठा पांडे, सो जे तो सांचउ को पांडे है, इन्हें पुरानो ग्यान भौत है। ऐसो लगन लगो जैसे हमई होंय सांचउ में लठ पांडे। हम अपने जूठे ग्यान के गरभ में ऐंडे-ऐंडे उंसई फिरत रत है असल बात तो जे जानत है। पांडे जू की बातन ने मोय सोचवे के लाने प्रेरना दे दई। बिचार आरओ- '

'देवगढ़ को शिलालेख........'।

स्वामी महासय। स्कंधगुप्त इनई किरकिचियन के ध्यान में डूबे मगन है, ...... '' सांगलोई ताम्रपत्रक ....... ''। फिर पांडे जू को उंचो सुर ..... और आसमान में पूरब से उग रई तरैया ..... जैसे मामुलिया ....... इनमें अंबा की दमक ..... जाने का का दिखा रओ। सूरज के डूबतई पूरब में किरकिचियन के दरसन होत। पूरी रात जो जोत को गुच्छा जोन दिना पूरी रात आसमान में बनो रत है। उ दिना धरती को बेटा त्यौहार मनाउत है। सेंकरन दिया उजार कें सजा कें धरती के कन-कन में उजयारो भर देत है। दिवारी मनाउत है, और उते मईना भर बाद कातिक के आसमान में चंदा किरकिचियन के संगे रास रचाउत है। किरकिचियन के लिंगा आज गुरूदेव बिराजे है, आज कातिक की पूनो है। भगवान के महामच्छ अवतार को जन्मदिन है, त्रिपुरोत्सव को समय है। आनंद बरस रओ है, काय से जो सरद रितु की पूनो है। आजई के दिना कभउं कुबेर के सराप् से बो ''यक्ष'' अपनी अलकापुरी में बिछुरी घरवारी से मिलो तो। और आज कन्हैया ने रास रचाओ तो, सो आज को दिना सोनो सो नौनो है।

दूर देस बिलायत में सोउ किरकिचियन की पूंछ परख है। उते जे ''एटलस'' देवता की सुंदर बिटियाँ हैं। इनको नाव ''प्लीएड्स'' कओ जात है। इनपे बियाधा, शिकारी, ''ओराइन'' नें अपनी नियत खराब करी ती, इने पकरवे कों दौर परो तों बिटियां बिचारी रोउत थर-थर कंपत देवतन के देव ''ज्युपिटर'' के पास पौंची ती दुष्ट से बचावे कों उनने पेलें आंगो पीछो करो फिर एक जुगत से काम लओ। एटलस की इन बिटियन खों ''बगुला'' बनाकें आसमान में उढा दओ। वो षिकारी उते सोउ पौच गओ। पे बे उकी पकर से दूर फर्र से उढ़ गईं। जो एक ग्रीक किसा है इमें तथ्य कैसे के सकत है ?

आसमान में ताकझाक करवे बारे विग्यानिक कत है के किरकिचियां अनगिनत तरैयन को एसो गुच्छा है जी की सबरी तरैयां एक सी गत से चलत है। एक सी गत से दिसन में घूमत है। जे किरकिचियन की तरैयां धरती से भौतई दूर है। इनसे चलवे बारो प्रकाष तीन लाख कि0मी0 सेकेंड की गत से धरती लौं पोंच वे में पाच सौ वर्ष लेत है। इसे किरकिचियन खों पांच सौ प्रकाश वर्ष की दूरी पे कहत है। जो है इनकी दूरी। इन तरैयन की संख्या सोउ एक रहस आय। अच्छी भली आंखन वारे जादा से जादा छः तरैयां देख पाउत हजारन में एकाद सात देख लेत पूरी दुनिया भर में आंख से देखवे वारे इमें लगे है। कछु भौतई अच्छी आंखन बारे है। जा किरकिचियन के गुच्छा में उन्नीस तरैया देख लई है। अपन अपनी निगा आजमा लें देखें अपन कानों गिन पाउत है। दुरबीन से अबे लों किरकिचियन की तरैयन की संख्या पांच सौ नों पौंच गई है।

तरैयन को गुच्छा भौत बडो है। इत्तो बडो है के इके आरपार प्रकाश खों जावे में पचास वर्ष लग जात। इन तरैयन के बीच में एसो नईया के कछु न होवे इते सुन्न नईयां। इनके बीच में पदारथ है। जा को विग्यानिक सिरिस्टी को पदारथ कहत है, जा को मतलब है के जोई पदारथ सबसे पेलें हतो। जई पदारथ से बनी है पूरी दुनिया, धरती, आसमान, और तारे पूरे संसार को सिरजन जई पदारथ से भओ है।

किरकिचियन की चमक-दमक बदलत रत है। इसे जो अंदाज लगत है के इते नई रचना रच रई है। असली बात के का हो रओ कोउ नई जानत है। जो हम देख रये वो तो हम पांच सौ वर्ष पेलें की देख रये है। इन बातन को समझ कें जब किरकिचियन खों देखत है। तो फिर वे औरई अच्छी लगती है। छिन-छिन बदलत उनकी चमक-दमक उनको सुंदर सरूप भौतई अच्छो लगत है।

अपने जा देश में किरकिचियन से रिसतो भौत पुरानो है। ज्योतिष को एक ग्रन्थ है जी को नाव है '' वृहत्संहिता'' इमें लिखो है के अपने देश में पेलें साल की सुरूआत तब मानी जात ती जब पूरो चंदा किरकिचियन के पास में होत तो। जा को मतलब भओ के कातिक की पूनों से साल की सुरूआत होत ती। ''अलबेरूनी'' ने सोई बताई है के भारत में जोन दिनां किरकिचियन के संगे पूरो चंदा होत है उके दूसरे दिनां से इते की साल सुरू होत है। जा बात गीता जू सोउ कती है। '' मासानाम् मार्गशीर्षोऽहम''। किषन भगवान ने कही है के हम मइनन में सबसें उत्तम अघन को मइना है। जा से जा बात को पतो चलत है के पेंलें साल अघन से सुरू होत ती। काय सें के कातिक की पूनों खों किरकिचियन के संगे पूरो चंदा होत है। अपने परोस के देष चीन में सोइ ई.पू. से दो हजार तीन सो संतावन साल पेले अघन से साल की सुरूआत होत ती। सो इ तरा किरकिचियन से हमाई और हमाये परोसियन की पहचान हजारन साल पेंले से है।

किरकिचियां पूरे सालभर में दस ग्यारह मइना दिखाती है। जब वे ऊगती है तो पूरब दिसा में ऊगती है। और वे संसार भर में तब पूरब दिसा मेंइ दिखाती है। इसे एक बात भई के समुंदर में जो नाव चलावे बारे हते उनके लानें जे ऐसी तरैयां हो गई जो रसता दिखाउती हे। सो इने वे (सेलिंग स्टार्स) कहन लगे। जे ऐसी अच्छी तरैयां है जिनने दुनिया भर के सबई नाव चलावे बारन खों सई रसता दिखाई है। चांय वे ग्रीक के होंय चांय फेनिसिया के , चीन के या अपने भारत के कौनउ पक्छपात नई करतीं है। जे महाभारत में किशन कनैया के लाने ''विभूती'' रई है। जे विग्यानिक चंद्रशेखर के लाने अबे लों रहस की ''गंगोत्री'' है। इन किरकिचियन खों हजरत मुहम्मद साब नें कुरान शरीफके 53 और 86 सूरा में याद करो है। और कई है के जे अल्थूरिया और अलनज्म है, और इने अपने बुदेलखण्ड के रहवासी लोक माता के रूप में मान रये है ओर पूज रये है। जे किरकिचियां आज ऊपर से जो संदेषो पठेरई है के-'' अरे ओ धरती के पूत! अपनी भौंछ खों सीधी करो। हमाई तरफको हेरो। गैरे डूब के देखा के हमाये हिरदै में जा सिरिष्टी के भौत रहस छिपे है। हम उनखों खुलासा कर रये है, पे तुम आंखे खोल कें हेरो तो इसे तुमाई खुलहे ग्यान की आंखें फिर तुम जान लेहो जा सिरिष्टी को पूरो रहस।''

का अपुन इ आसमान की मामुलिया खों हेरवे के लाने कछु छिन-पल दै पेहो ?

-नूतन विहार कॉलोनी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

०७६८२-२४३१४६

# बुंदेली कवि हरनारायण सिंह 'यार' की याद

- डॉ. नीरज खरे

बुंदेली लोक अंचलों में ऐसे रचनाकार भी हुए, जो साहित्य जगत की दलबंदी, लोकप्रियता और पुरस्कारों की आपा-धापी से दूर अपनी संस्कार-भूमि में बैठ, एकांत साहित्य-साधना में तल्लीन रहे हैं। मध्यप्रदेश की लोक भाषाओं अथवा जनपदीय बोलियों में ऐसा अलक्षित अपार साहित्य है। बुंदेली में भी ऐसा महत्त्वपूर्ण लोक साहित्य है। बुंदेलखंड के सुदूर ग्राम्यांचलों और जनपदों के ऐसे कवियों और उनके काव्य को भुला दिया गया। अपवादों को छोड़ दें तो ऐसे रचे गए लोक साहित्य का न तो विधिवत् प्रकाशन हुआ और न ही किसी ने अध्ययन द्वारा उसका ठीक-ठीक महत्व आंका है। अनमोल लोक साहित्य का सृजन करने वाले कवि अथवा साहित्यकार साहित्य-जगत में वांछित स्थान और पहचान से भी वंचित हैं। स्व. श्री हरनारायण सिंह 'यार' ऐसे ही एक बुंदेली कवि हैं, जिन्हें लोग भूल गए। हालांकि, उन्हें लगभग भरपूर उम्र मिली। उनकी जन्मतिथि को देख ख्याल आया कि वे अगर और जीवित रहते तो आज सौ साल के होते।

उनका उपलब्ध साहित्य अधिक नहीं है, पर जितना है वह उल्लेखनीय जरूर है। ठेठ बुंदेली की सहज मिठास और सोंधेपन की महक 'यार' की काव्य-रचनाओं में विशेष ध्यान खींचती है। बुंदेलखंड में प्रचलित लोकगीत, फाग, दादरा, विलवारी के अतिरिक्त परंपरागत कवित्त, सवैया, कुडलियाँ और दोहों में बद्ध उनकी लगभग दो हजार से अधिक कविताएँ और गीत हैं। किंतु कवि के व्यक्तिगत प्रयास से चार काव्य-संग्रहों के रूप में कुछ रचनाएँ ही प्रकाशित हो सकी हैं। हरनारायण सिंह जी की शेष रचनाएँ अनेक डायरियों में दर्ज हैं जो अप्रकाशित हैं। 'अटकल-चटकन', 'सुदामा के श्याम', 'कुछ अटपटे कुछ चटपटे दोहे' और 'अजायबघर' नाम से उनके चार, आकार में छोटे काव्य-संग्रह ही प्रकाश में आए, जो उन्होंने स्वयं के खर्च पर साधारण छापेखाने से छपवाकर प्रकाशित कराए थे।

विजया दशमी संवत् 1973 (सन् 1917) को अजयगढ़ (जिला-पन्ना, म.प्र.) में जन्में हरनारायण सिंह के पिता का नाम बृजलाल सिंह था। माता श्रीमती रामदुलारी बाई भक्ति में तन्मय रहती थीं और रामचरितमानस का सदैव भावविभोर होकर पाठ करती थीं। अपनी माता की इस सात्विकता का प्रभाव बाल्यावस्था से ही हरनारायण सिंह पर पड़ा था। यद्यपि उनकी शिक्षा कक्षा नवीं तक ही हो पाई, लेकिन स्वाध्याय एवं सत्संग द्वारा अपने व्यक्तित्व को बहुआयामी बनाया। बहुआयामी इस संदर्भ में कि एक कवि हृदय में एक मूर्तिकार, चित्रकार, छायाकार, वैज्ञानिक, संगीतज्ञ और होम्योपैथ चिकित्सक भी निवास करता था। हालांकि इस आलेख में इन पक्षों की चर्चा प्रासंगिक नहीं होगी। फिर भी इतना कहना आवश्यक है कि हरनारायण सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और उनकी सारी विशिष्टताएँ कवि हृदय के इर्द-गिर्द ही घूमती रहीं। अजयगढ़ के महाराज पुण्य प्रताप सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचान कर, राज्य में विद्युत विभाग के सुपरवाइजर पद पर नियुक्त किया था। अनेक स्थानों पर उन्होंने अपना सेवा दायित्व निभाया। सन् 1962 में हृदयाघात से पीड़ित होने के कारण स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हुए। 80 साल की अवस्था तक उनकी काव्य-साधना जारी रही। अजयगढ़ राजवंश की चार पीढ़ियाँ देखने के साथ-साथ स्वातंर्त्योत्तर भारत की प्रजातांत्रिक गतिविधियों को उन्होंने देखा। बचपन रियासती परिवेश में बीता और प्रौढ़ावस्था में स्वाधीनता संग्राम एवं गांधीवादी विचारधारा ने उनके मन को प्रभावित किया। इनके प्रतिबिम्ब उनके काव्य में प्रायः ढूँढ़ने से मिल जाते हैं। उनके काव्य में प्राचीन काव्य परंपरा से प्रेरित अनुभूतियाँ हैं और आधुनिकता के प्रति आग्रह भी।

साहित्य की प्राचीन परिपाटी के प्रति 'यार' का विशेष आग्रह है। विषय का चयन हो या कविता का स्वरूप रीतिकाल की अलंकार प्रियता से वे मुक्त नहीं हैं। 'अनुप्रास' के प्रयोगों में निश्चय ही वे पद्माकर की परंपरा में ठहरते हैं। जीवन की निस्सारता को व्यक्त करते इस पद में अनुप्रास की छटा भी देखने लायक है-

*अपनो न कछु सब है सपनो।*
*विधना रचौ जग है अलबेलो।।*
*झक झंझट झूमत झूलत है।*
*झग झोरत झोरत झूठ झमेलो।।*
*सतरंग को रंग है दो दिन को।*
*हिल के मिल के सब साथ में खेलो।।*
*जर जात है जात न साथ कछु।*
*जर जात है जो तन 'यार' अकेलो।।*

वर्षा ॠतु के वर्णन की एक बानगी और दृष्टव्य है:

*खेलती सी रेलती सी, पेलती सी जल दल को।*
*आनंद उड़ेलती सी, वर्षा ऋतु आती है।।*

हरनारायण सिंह 'यार' अपने काव्य में साहित्य की प्राचीन परिपाटी का पालन करते हुए भी लोक जीवन के प्रति गहरी आस्था व्यक्त करते हैं। मानवतावादी दृष्टिकोण तथा आधुनिक चिंतन को भी उनके काव्य में समाहित किया गया है। यद्यपि 'यार' की कविता में ईसुरी जैसी चित्रमयता का भास होता है लेकिन उनकी शैली शिष्ट हास्य एवं व्यंग्य की है। उनकी मूल प्रवृत्ति भी यही है। 'अटकल-चटकन' कवि की हास्य-व्यंग्य पूर्ण रचनाओं का संकलन है। जिसमें स्वातंर्त्योत्तर भारत के बदले हुए सामाजिक-राजनैतिक नेतृत्व के खोखलेपन को केंद्र में रखा गया है। अवसरवादी छुटभैए नेता और उनकी वोटों की राजनीति पर कवि ने व्यंग्यपूर्ण कटाक्ष किए हैं। नेतागण अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं और पिस रही है आम जनता, यह तथ्य कवि ने व्यंग्य के माध्यम से पूरे विश्वास के साथ उभारा है। उनकी ऐसी ही हास्य-व्यंग्यात्मक कविताओं के कुछ अंश यहाँ दृष्टव्य हैं:

(1)

*बहुतउ नौनो खेल, भइया बहुतउ नौनो खेल।*
*अटक-चटकन दही चटोकन, बहुतउ नौनो खेल।*
*मौका मिल गओ बने मिनिस्टर, कछु दिनन के लाने।*
*हो गई कृपा लच्छमी जू की, भर दए घरै खजाने।।*

(2)

*नेता अब दूल्हा बन बैठे, चमचा बने बराती।*
*सीधी मिली दार दरबे खां, है जनता की छाती।।*

मूल्यहीन समाज और राजनीति, इनमें व्याप्त भ्रष्टाचार, जनसंख्यावृद्धि, प्रजातंत्र की विसंगतियाँ, मँहगाई, गरीबी और शोषण

पर कवि ने व्यंग्य प्रहार किया है। यह बात अलग है कि कहीं-कहीं 'यार' अपना लोभ संवरण नहीं कर पाते ओर उपदेशक बन बैठते हैं और कहीं हास्य की इतनी प्रधानता है कि रचना का साहित्यिक-मूल्य घट जाता है। पर कुछ कविताएं हास्य के बीच भी गंभीर बात कह जातीं हैं। भले ही हास्य के अधिक निकट होकर भी 'बीधो गणतंत्र है' नामक कविता हमारे 'गणतंत्र' की वस्तुस्थिति उजागर करती है। संविधान द्वारा परिभाषित गणतंत्र की दरअसल हकीकत क्या है? 'यार' की इस कविता में स्पष्टत: अंकित है:

*सड़क छाप भौंरन में साँप और नौरन में,*
*मंत्रिन के दौरान में भारत स्वतंत्र है।*
*मद के मतवारिन में नये कट बारन में,*
*नेतन के नारन में आदि है न अंत है।*
*लूट पीट हत्या में लालच लौलत्या में,*
*'यार' यहाँ मिथ्या में बीधो गणतंत्र है।*

इसके अतिरिक्त हिंदू-मुस्लिम एकता का संदेश देते हुए धार्मिक सद्भाव और प्रेमभाव पर वह कहते हैं:

*ओंधा में अल्ला बसे गोई में श्रीराम।*
*खपरन ते टपरा बनों, सब खों है आराम।।*

तब ऐसी सहजता में वे कबीर से प्रभावित जान पड़ते हैं। छप्पड़दार घर के रूपक में भारतीय समाज की साझा विरासत को उपर्युक्त दो पंक्तियाँ बेहद सहजता से कह देती हैं। ऐसी कविताएं आज भी प्रासंगिक नजर आती हैं।

'सुदामा के श्याम' कवि हरनारायण की एक भाव प्रधान रचना है। इसमें एक ओर दीनता एवं निर्धनता का हृदयस्पर्शी चित्रण है वहीं मित्रता का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें भक्तिभाव पूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए, 'यार' आधुनिक भाव-बोध के प्रति भी सजग दिखाई पडते हैं। स्वयं कवि ने इस खंड काव्य की भूमिका में लिखा है''इस विन्ध्य भूमि के पुनीत अंचल में, पन्ना जिले के अजयगढ़ क्षेत्र के निवासी, बालक, युवा तथा वृद्धजन ही तो मेरे श्याम हैं। जिन्होंने मुझे आदरमय प्रेम और भी सब कुछ दिया, जिनका है 'यार' सुदामा और मैं ही हूँ सुदामा उनका 'यार'।'' 'सुदामा के श्याम' काव्य-कथा में कवि ने दोहा, सोरठा, चौकड़िया, राई की तर्ज पर पद रचे हैं और गेयता का विशेष ध्यान रखा है। बुंदेली के ठेठ शब्दों के चित्रात्मक प्रयोग और कहावतों के द्वारा काव्यात्मक सौंदर्य में निखार आ गया है। ऐसे अनेक पद हैं जिन्हें उद्धृत किया जा सकता है।एक-दो उदाहरण बानगी के तौर पर दृष्टव्य हैं:

(1)

*जैसे सुदामा की पत्नी सुशीला का यह कथन:*
*''जादा से जादा का कह हैं, करिहें कछु ठिठोली*
*कहियो भेंट दई भौजी ने, प्रीति तखरियन तोली।''*

(2)

*''हते सुदामा बड़े ललत्ता, उन्हें परी ना रहाई।*
*खोल पुटरिया मसकां-मसकां, खा गए सबरी लाई।।''*

'कुछ अटपटे कुछ चटपट दोहे' नामक संग्रह में कवि ने अपनी सहज अनुभूतियाँ समेटी हैं। जिसमें भक्ति की तनमयता है और नीतिगत उपदेश भी। लेकिन व्यंग्य की फटकार वहाँ भी मौजूद है और व्यवस्थागत खामियों के प्रति कवि की अकुलाहट मुखर हो उठी है। लेकिन बुंदेली रचना होने के नाते कहीं-कहीं खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग खटकता है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि कवि ने धारा में बहकर तुकबंदी द्वारा साधारण रचनाएँ भी लिखी हैं। कहीं-कहीं 'यार' कवि से अधिक उपदेशक प्रतीत होते हैं। लेकिन स्वयं यह बात उन्होंने एक स्थान पर स्वीकार की है -

*मैंने तो यह लिख दिए, दोहा रूपी छंद।*
*त्रुटियाँ सोध सुधार के, पाठक ले आनंद।।*

इसमें दो राय नहीं हैं कि 'यार' की कविताएँ पाठक के मन में मस्ती का माहौल पैदा करती हैं और गुदगुदाते हुए हृदय को छूती हैं। कुछ पद बरबस ही आकर्षित करते हैं। जैसे -

*''डर न चोर चहार को, निर्धन भले हैं 'यार'।*
*वे खुड़के लुड़के रहे, उड़के रहें किवार।।''*

'अजायबघर' हरनारायण सिंह की बालोपयोगी रचनाओं का संकलन है और यह बुंदेली में नहीं बल्कि खड़ी बोली में है। इसमें राष्ट्रभक्ति, ज्ञान-विज्ञान की कविताएँ और बच्चों के मनोरंजन के लिए पहेलियाँ संग्रहीत हैं। अत्यन्त सहज और कथाक्रम में लिखी हुई कविताएँ बालमन में सीधे उतरकर गुदगुदाने और शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हैं। हिंदी में बालोपयोगी स्वस्थ्य और शिक्षाप्रद साहित्य का नितांत अभाव है। इस लिहाज से 'अजायबघर' हरनारायण जी का स्तुत्य प्रयास कहा जाएगा।

कवि 'यार' का बुंदेली भाषा-ज्ञान उच्चकोटि का है। रचनाओं में बुंदेली के ठेठ और प्राय: बोल-चाल के लुप्त होते शब्दों का चयन, मुहावरे और लोकोक्तियों की मिठास हमें लोक से जुड़ने के अवसर प्रदार करती हैं। कवि जिस क्षेत्र के थे वह बुंदेली की उपबोली 'खटोला' बोले जाने वाला क्षेत्र है। अत: बुंदेली के इस रूप का प्रयोग ही उनकी रचनाओं में अधिक मिलता है। 'यार' की भाषा में बुंदेली माटी की दारारों से फूटी ठेठ बोली की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। वे आयोजनों में भी काव्य-पाठ के लिए आमंत्रित किए जाते थे। आकाशवाणी से भी उनके प्रसारण होते थे। अपने नगर के वे प्रतिभाशाली व्यक्तित्त्व थे। लखनऊ के एक समारोह में उन्हें 'काव्य श्री' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। फिर भी उनका साहित्य समुचित प्रकाश में न आने से उन्हें वह स्थान न मिल सका, जिसके वे हकदार थे। बुंदेली के समृद्ध लोक-साहित्य की परंपरा में हरनारायण सिंह 'यार' एक महत्त्वपूर्ण कड़ी जोड़कर, बुंदेली कवियों और काव्य परंपरा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भले ही अभी उनका महत्त्व आंका जाना शेष है। उनकी रचनाओं में बुंदेली लोक की पहचान के साथ-साथ कवि-परंपरा से अपना अनुराग और समय की अनेक विद्रूपताओं के प्रति कटाक्ष भी मौजूद है। पहले तो उनकी रचनाओं का विधिवत प्रकाशन होना जरूरी है, ताकि उनका रचा हुआ समग्र वैविध्य बुंदेली प्रेमियों और अध्येताओं के सामने आ सके। यही उनकी स्मृति में सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी - 221005
मो. 9450252498

# बुन्देलखंड का संग्रहणीय दस्तावेज 'बुन्देली बसंत'

-आचार्य भगवत दुबे

विद्वान लेखक, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बहादुर सिंह परमार द्वारा संपादित एवं बुन्देली विकास संस्थान महल परिसर छतरपुर द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'बुन्देली बसंत' बुन्देलखण्ड का महत्वपूर्ण परिचायक एवं संग्रहणीय दस्तावेज है। इसके अनुक्रम को चार खण्डों में विभक्त किया गया है (1)भाषा साहित्य और आलोचना (2) इतिहास परंपरा और संस्कृति (3) बुन्देली गद्य एवं (4) बुन्देली काव्य।

अपनी संपादकीय में डॉ. परमार ने बुन्देल खण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला है जिसमें चेदि चन्देल काल में हुए उत्कर्ष तथा यशोवर्धन, धंग एवं गंड जैसे यशस्वी शासकों के कल्याणकारी कार्यो के अनन्तर चन्देलों के पराभव के चार-पाँच शताब्दि बाद, महाप्रतापी , साहित्य एवं कलाप्रेमी वीर बुन्देला महाराजा छत्रसाल द्वारा बुन्देलखण्ड की अस्मिता को नई ऊँचाइयां प्रदान करने की चर्चा है। बुन्देलखण्ड की शक्तिमती एवं बुद्धिमती ललनाओं यथा जैत कुँवरि, लक्ष्मीबाई एवं झलकारी बाई की वीरता तथा राय प्रवीण के वैदुष्य की चर्चा है, किन्तु बाद में मुगलकाल एवं अँग्रेजी शासनकाल में यह वैभवशाली बुन्देलखण्ड उपेक्षा का शिकार हो गया। डकैती, गरीबी, अशिक्षा एवं नशाखोरी जैसी बुराइयों ने इस क्षेत्र को जकड़ लिया। जिसके प्रति संपादकीय में गहरी चिन्ता व्यक्त की गई है फिर भी आज कला एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं में हो रहे अनेक सृजनात्मक कार्यो पर संतोष व्यक्त करते हुए इस क्षेत्र की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों तथा विलुप्त होती बोलियों के संरक्षण का संदेश डॉ. बहादुर सिंह परमार ने अपनी संपादकीय के माध्यम से दिया है।

यह प्रसन्नता की बात है कि, बुन्देलखण्ड विकास संस्थान महल परिसर छतरपुर द्वारा भव्यता के साथ बुन्देली उत्सव मनाया जाता है।

पत्रिका बुन्देली बसंत के अंक 2016 की डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैयाँ, श्री ओ. पी. रिछारिया, श्री देवकी नन्दन 'शान्त' श्री राजीव नामदेव, श्री सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' आदि विद्वानों ने अपनी चिट्ठियों के माध्यम से भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

डॉ. के. एल. वर्मा 'बिन्दु' ने बुन्देली आसुकवित्रयी के महत्वपूर्ण रचनाकार श्री राम सहाय जू के सारस्वत अवदान को बुन्देली बोली में ही सोध्दरण प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में सीता स्वयंवर की एक झलक देखिये-

''राजा टेक धनुष की ठाने, सीता जू के लाने'' रजनी नामदेव ने चैत्र-क्वांर की नौरात्रि में देवी ढारवे की लुप्त होती परंपरा पर चिन्ता व्यक्त की है। भारत की आजादी में बुन्देल खण्ड का भी बड़ा योगदान रहा है। श्री श्रवण सिंह सेंगर ने, दिमानराव हमीर सिंह जू देव के स्वातंत्र्य समर में किये गये योगदान की अनेक साक्ष्यों द्वारा प्रामाणिक चर्चा की है।

वीरांगना दुर्गावती के प्रतापी पति गोंड़वाने के शासक दलपतशाह के शासनकाल की चर्चा डॉ. कन्हैलाल अग्रवाल ने अनेक ताम्रपत्रों एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के माध्यम से की है जो एक ऐतिहासिक धरोहर है।

बुन्देलखण्ड की मूर्तिकला एवं स्थापत्यकला उत्कृष्ट एवं बेजोड़ थी। ओरछा इसका केन्द्र था। शासन की उदासीनता के कारण कुछ महलों को छोड़कर शेष खण्डहर होते जा रहे हैं। कहीं-कहीं तो भग्नावशेष ही बचे हैं। इन्हें संरक्षित करने की आवश्कता है। ओरछा की गौरवशाली स्मारकों का श्री नरेश कुमार पाठक ने विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया हैं। डॉ. गायत्री वाजपेयी ने सैर साहित्य में भरथरी की गाथा की महत्वपूर्ण प्रस्तुति दी है। सैर साहित्य के मूर्धन्य रचनाकार श्री गंगाधर व्यास ने भर्तृहरि के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों पर सैरें लिखी हैं। बुन्देलखण्ड की मूर्तिकला पर श्री हरगोविन्द तिवारी कवि हृदय का आलेख भी महत्वपूर्ण है। श्री हरिविष्णु अवस्थी ने हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान एवं प्रखर पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के, कुण्डेश्वर निवास एवं 'मधुकर' के संपादक बनने में, ओरछा नरेश वीर सिंह जू देव द्वितीय के बीच हुए पत्राचारों के संस्मरणों को, को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। डॉ. अजय कुमार खरे ने, छतरपुर के कवियों एवं उनकी सामाजिक चेतना की सार्थक प्रस्तुति दी है। डॉ. सीमा तिवारी ने लोक देवता कारस देव एवं धर्मासॉवरी की गाथाओं में चारागाही का सुन्दर उल्लेख किया है।

डॉ. गुणसागर सत्यार्थी ने स्व. हरगोविन्द त्रिपाठी जी को संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि दी है। डॉ. ओम प्रकाश तिवारी ने मकर संक्रान्ति पर भरने वाले मेलों में जाते समय गायी जाने वाली बमभुलिया एवं लमटेरा के उद्धरण किया है जहाँ मेला भरते हैं। यथा रणछोर जी, नीलकण्ठेश्वर, माताटीला, देवगढ़, कुण्डेश्वर धाम, ओरछा धाम, जटाशंकर, परीक्षा बॉध, कालपी कर्णखेरा, बांदकपुर एवं कामदगिरि आदि स्थलों पर सँकरात के मेले भरने हैं।

श्री सुरेन्द्र नायक का व्यंग्य आलेख 'प्रेम न होय बिना चमचाई यथार्थ परक एवं चुटीला है। डॉ. दया दीक्षित की बुन्देली कहानी चिट्टी पत्तरी डॉ. ओम प्रकाश चौबे ने 'वैरायटा (राजा विराट की नगरी) की कथा को 'साख' के उध्दरणों सहित प्रस्तुत किया है।

श्री रामस्वरूप स्वर्णकार 'पंकज' ने समाज में व्याप्त झूठ, कपट,छल, बेईमानी सार्थ एवं दोगलेपन पर अनेक स्तरीय दोहे लिखे लिखे हैं।

सरोजा शिल्पी ने बर्फीली पहाड़ियों के दुर्गम क्षेत्रों में सीमा में दिन रात डटे रहने वाले पहरुओं के प्रति अपनी काव्यांजलि दी है। श्री जगत मोहन हरि ने, कृषिकार्यो में महिलाओं के योगदान को अपनी कविता 'दुलैया चली काटबे खेत' के माध्यम से रेखांकित किया है। श्री जगदीश प्रसाद कुशवाहा प्रबोध ने देश में अचानक की गई नोट बंदी से परेशान जमाखोरों पर पैने कटाक्ष किये हैं। श्री गुलाब सिंह यादव 'भाऊ' ने मजूर की पीड़ा पर संवेदना व्यक्त की है। पं. रामगोपाल प्रजापति ने कन्या भ्रूण हत्या बंद करने को सुझाव दिया है। डॉ. हरिकृष्ण 'हरि' मानव के जीवन के दार्शनिक पक्ष को प्रस्तुत किया है। श्री रामगोपाल रैकवार ने बुन्देलखंड में प्रचलित टहूकों एवं सरोज गुप्ता ने किसानों के हित में, वर्षा विज्ञान की कहावतों को प्रस्तुत किया है। श्री हरगोविन्द 'विश्व' की नामाक्षरियां भी अच्छी हैं। जिनमें पुरानी काव्यकला की झलक है।

समग्रत: 'बुन्देली बसंत' बुन्देल खंड क्षेत्र का सामाजिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण अभिलेख है यह पत्रिका ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं संग्रहणीय है।

-महामंत्री 'कादम्बरी' पिसनहारी-मढ़िया के पास
जबलपुर-482003 म.प्र.
मो-9300613975

# बुन्देलखण्ड में शकुन-अपशकुन

-अजीत श्रीवास्तव

जिस तरह से बचपन में अ-आ-इ-ई के अक्षरों को देखते-देखते दिमाग में चढ़ जाते हैं, फिर लिखना-पढ़ना सीख जाते हैं, ठीक इसी तरह समाज की पढ़ाई बहुत सी बातें भी दिमाग में हाबी हो जाती हैं, 'शगुन-अपशगुन' उनमें से एक हैं। जिसे 'शकुन-अपशकुन' भी अपभ्रंश में बोल देते हैं। यह केवल बुन्देलखण्ड में हो ऐसा भी नहीं पूरे विश्व में ऐसी धारणायें व्याप्त हैं, हाँ यह फर्क हो सकता है कि कही क्रिया शकुन हो तो कहीं अपशुकुन स्वरूप में हो।



उनमें मुख्य रूप से पक्षी, जानवर मानव समुदाय की विकृतियाँ या प्राकृतिक तत्वों पर आधारित अवधारणायें ज्यादा होती हैं, कुछ संख्या भी इनमें शामिल हैं जैसे तेरह संख्या ठीक न मानना। मुस्लिम समाज में तीन - तेरह तेईस और 8-18 को आमतौर पर निकाह नहीं रखते। कुछ दिनों में भी शुभ -अशुभ ढूँढ लेते है, यथा मंगलवार को नववस्त्र धारण न करना या सफर न करना आदि

बुन्देलखण्ड कहावत है-

*कपड़ा पैनो तीन वार-बुद,शुक्र, शनिवार।*
*इतवा जेरे सोमवार फटै, मंगल वारों पीरा करें।।*

पक्षियों पर तो शुभ अशुभ ज्यादा है पर गौर करें जो पायेंगें कि जो पक्षी सबको अच्छे लगते है वह शुभ मानते है, पर ठीक नहीं वे अशुभ श्रेणी में खड़े हो जाते है इनमें उल्लू और कौव्वा प्रमुख है, कौव्वा सिर पर बैठ जाये तो काफी 'जतन' ढूँढ़कर पूजन तक कराते है, पर यह कौव्वा सुबह घर की मुड़ेर पर आकर बोले तो मेहमान आने की सूचना समझते हैं। कनागत या श्राद्धपक्ष में कौव्वों में अपने मरे पितृ ढूँढ़ते है लोग। उससे शयद इसी से भय भी खाते है। कबूतर या परेवा को शुभंकर माना जाता है। अच्छे उत्सवों में उन्हें छोड़ते भी हैं। इसी तरह नेवला दर्पण (तख्ता) सफेद चौचवाली चील, प्रिय भोजन, पपीहा चातक, नीलकंठ कभी भी दिखें तो शुभ मान लेते हैं। कहते है कि मन की अभिलाषा पूर्ण हो जायेगी।

बुन्देलखण्ड में सियार (लड़ईया) और कुत्ते का रोना अशुभ मानते है कहा जाता है-

*" आड़ी गैल लड़ईया काटे, तो न जइयो हाटै। डेरे से कढ़ जाय दाइनौ, असगुन भारी डाटै।।"*
*2. साँप सटके, तेली, विधवा मिले अकेली,*
*3. कन्या, बामन मिले ज्वान, तौ बरया बटकें बचें प्रान।।"*

ऐसी तमाम उक्तियाँ गाँवों में प्रचलित है यह या तो सुनी सुनाई या अनुभव जन्म हादसों से गढ़ ली जाती हैं। पर कुछ तो ऐसा भी लगता है कि एक जमाने में 'वास्तुशास्त्र' नामक ग्रंथ भी प्रचलित था, वर्तमान में देखे तो वह सकारात्मक एवं नकारात्मक ऊर्जा बताता था। जिनसे इनकी पोजीटिव निक है वह शुभ और नेगेटिव इनर्जी वाली वस्तुएँ बताता था। हो सकता है वह बातें प्रचलित होते-होते प्रथागत, रीति-कुरीति स्वरूप में आ गई हैं। सोमवार, शुक्रवार चूड़ी न पहनना भी रीति है। आज भी लाफिंग बुद्धा, कछुवा, विंड पाइन, एक्वेरियम शुभ हेतु लगाते है।

आमतौर पर बुन्देलखण्ड घर से निकलते या शुभ काम में जाते हुए, हंसकर देखते हुए लोग दिखने पर शुभ मान लेते हैं। कुछ नाक के दाहिने स्वर (सुर) से सांस लेना ठीक मानते हैं, जल भरा घड़ा या गगरी दिखना शुभ है, गाय दिखना या बछड़े को दूध पिलाती गाय, कन्या, दूध दोहते ग्वाला का दिखना अच्छा मान लेते हैं। नीलकंठ पक्षी भगवान शंकर का नामधारी होने से शकुन है तो सोन मछलियाँ दशहरा को देखना बहुत शुभ होता हैं हाथ की गदेली में खुजली होना 'धन' प्राप्त होने का संकेत मान लेते हैं। किसान लोग टिटहरी (टिटरी) पक्षी, जो जुते हुए खेतों के मिट्टी के ढेलों के बीच खुले में अण्डा देता हैं। यह आमतौर पर चार अण्डे होते है उनके वर्षा का शुभ-अशुभ फल देखते है, चारों अण्डा की नोंकें आपस में मिली दिखें तो चार माह बरसात होगी, तीन मिली दिखें तो तीन, ना मिलें तो सूखा होगा, ऐसा मानते है।

शगुन-अपशगुन हमें ज्यादा परेशान नहीं करते थोड़ा रुक जाना या सोचना, इससे ज्यादा फर्क नहीं होता पर बुद्धिजीवी इसे 'आर्थोडॉक्स' या अंधविश्वासी का उस व्यक्ति पर लेबिल चस्पा कर देते हैं जो इस पर यकीन करता हो। बुन्देलखण्ड में कवित्त से लोग कह उठते हैं-

*खरा, सांप औ जोशी, तेली, विधवा नार मिले अकेली।*
*कनवा, बामन मिले ज्वान, तौ मुश्किल से बचें प्राण।।*

अगर अपशकुनों पर विचार करें तो जाते समय पीछे से टोकना अशुगुन मानते हैं, वहीं कुछ लोग काना (एकाक्षी) नेवला, कौव्वा, बिल्ली का गली काटना, खाली बरतन दिखना या तीन संख्या में खाली मिट्टी के बर्तन दिखना ठीक नहीं मानते हैं, जाते समय दाई ओर से बांई ओर जानवर रास्ता काटे तो अशुभ मान लेते है। आदमी की दाईं आँख फड़कना, शुभ है तो स्त्री की बांयी आँख फड़कना अशुभ या बुरा का सूचक मान लेते है। छिपकली गिरना, किसी अंग पर लोग इसे ठीक नहीं मानते। मछली-दही शुभ श्रेणी है तो कलश तो हर शुभ कार्य में शामिल होते ही हैं। सबसे ज्यादा प्रचलित छींक के बारे में शुभ एवं अशुभ ढूँढा जाता है। कुछ लोग पीछे-पीछे छींकना को शुभ एवं सामने छींकने को अशुभ मान लेते हैं, बुन्देलखण्ड में इस पर उक्तियाँ हैं-

*दाँई छींक अशुभ अति मानै। बाँई छींक लाभ प्रद जानै।।*
*नीचे छींक होय भयकारी, ऊँची छींक होय जै कारी।*
*सनमुख छींक महा दुखदायी, पीछे छींक सदा सुखदाई।।*

इस तरह प्रचलित शकुन-अपशकुन प्रचलित हैं, इन पर कोई रिसर्च नहीं करता, बिना सोचे समझे फालतू कह देते हैं, पर है पूरा ज्ञान।।

-राजीव सदन, नायक मोहल्ला
टीकमगढ़ 472001 (म.प्र.)
मो. 8827192845

श्रद्धांजलि- **विनम्र विद्वान और साहित्य मनीषी:पंडित रामकृपाल मिश्र**

-डॉ. सत्या घोष

महाराजा छत्रसाल की पावन जयन्ती के वार्षिक उत्सव का आयोजन था। प्रातः सात बजे छत्रसाल चौक पर नगर के साहित्यकार गणमान्य जन और विभिन्न वर्ग के लोग एकत्रित थे। मूर्ति के समीप कुछ सज्जन भी बैठे थे और कलेक्टर साहब से पं. रामकृपाल मिश्र जी पूजन करवा रहे थे। तभी मैंने मिश्र जी के दर्शन किए थे। उच्च भाल पर रामानन्दी तिलक, श्वेत केशों की छोटी सी झालर, आँखों पर चश्मा, लंबा सा सफेद कुर्ता और मोटी किनार की सफेद ही परदनिया, बादामी रंग की ढीली सी जैकेट और कंधे पर भगवा रंग की सुंदर सी स्वापी। सुंदर शुभ्र शरीर में बुंदेली रंग से सरोवोर सजीली आत्मा में इतनी आत्मीयता कि सहज ही किसी को अपना बना ले।

मिश्र जी का जन्म छतरपुर निवासी पंडित हरिश्चंद्र मिश्र के घर मार्गशीर्ष प्रतिपदा कृष्ण पक्ष संवत 1982 ईसवी तदनुसार एक नवंबर 1925 को हुआ था। माता श्रीमती बेटी बाई के धर्म संस्कारों का प्रभाव कुछ ऐसा पड़ा कि बचपन से ही उनका मन माँ किशोरी जी के चरणों में लग गया। माँ किशोरी जी आजीवन उनकी प्रेरणास्त्रोत रहीं। प्राथमिक शिक्षा उन्होंने संस्कृत पाठशाला हटवारा छतरपुर से प्राप्त की यहाँ उनके पं. श्री राम किशोर शास्त्री थे। यहाँ से प्रथमा की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन् 1958 में महाराजा कॉलेज जयपुर ( राजस्थान) में प्रवेश लेकर मध्यमा की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ श्री विंध्याचल प्रसाद जी से ज्योतिष की शिक्षा भी प्राप्त की । जयपुर से लौटने के बाद मिश्र जी ने कर्मकांड और ज्योतिष का कार्य प्रारंभ कर दिया। इसी बीच नगरपालिका परिषद छतरपुर में सेवा भी प्रारंभ कर दी। समानान्तर रूप से दोनों कार्य करते रहे और सन् 1982 में वे लेखापाल के पद से सेवा निवृत्त हो गए। ज्योतिष का कार्य 2015 तक वे करते ही रहे और दस दिसम्बर 2017 को उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया यहाँ उल्लेखनीय यह भी है कि ग्यारह वर्ष की आयु से प्रारंभ हुआ साहित्य सेवा का कार्य इन सभी के साथ अनवरत चलता रहा जो उनकी विशेष पहचान बनी।

मिश्र जी के कवि व्यक्तित्व का मूल्यांकन करने के लिए उपलब्ध है उनकी काव्य-सम्पदा का संकलन एक पुस्तक के रूप में जिसका नाम है -'काव्य-कल्पतरु'। 'काव्य-कल्पतरु' में संस्कृत, बुन्देली और हिन्दी में रचित काव्य धाराओं का पावन संगम है। प्रारंभ में मंगलाचरण और गुरु वंदना के बाद श्री सीताष्टक, पराशक्ति का स्तवन, श्री रामवंदन, भगवान पर्शुराम अष्टक और अनेक महापुरुषों की वंदना की गई है। देववाणी संस्कृत में रचित इन रचनाओं में कवि की भावाभिव्यक्ति भक्ति-भावोत्प्रेरक है। इन छंदों की प्रवाहमयता, सरलता और स्तुत्य है। इसी क्रम में गणेश वंदना, वाणी -वंदना किशोरी जू की वंदना, शिव वंदना, श्री भवानी अष्टक, श्री जगदम्बाष्टक, माँ जानकी अष्टक आदि आत्मनिवेदन-परक रचनायें भक्ति भाव से परिपूर्ण और सहज मिठास से भरी हुईं हैं। बुंदेली का माधुर्य भरा टकसाली रूप दृष्टव्य है-

*'' ग्राह ने गात गहो गज कौ, जब क्रुद्ध हो जुद्ध कियो पर हारो।''*

कवि माँ जानकी का अनन्य भक्त हैं। संभवतः इसीलिए भाव-विभोर होकर की गई उसकी आर्त पुकार इतनी मर्म-स्पर्शी हो गई है-

*रोवत-रोवत सैंप गयो, बिलखात चलै अँखियान पनारौ।*<br>
*आसरौ एक मसा कें मिलो, जननी अब ना ललनै ललकारौ।।''*

छतरपुर में साहित्य प्रतियोगिताओं का विशेष चलन रहा है। सैरों की फड़वाजी में दो दल थे। -पहला पं. गंगाधर व्यास का दल और दूसरा पं. परमानंद पाण्डे का दल। पं. रामकृपाल मिश्र सैर सर्जक के रूप में इन्हीं पाण्डे जी के दल में प्रमुख स्तम्भ रहे हैं।

रीतिकालीन परंपरा से प्रभावित सैर साहित्य में नायिका भेद संबंधी रचनाओं का महत्व विशेष रहा है। स्वाभाविक है कि मिश्र जी ने ऐसी सैकड़ो सैरों की रचना की। प्रभाती नायिका की सैर का एक छंद दृष्टव्य है-

*डारत निगाह तिरछी वरछी सी विदारत,*<br>
*दारत दरार चित्त चित्त होस विसारत।*<br>
*सारत प कछू साफ और मन उलझारत।*<br>
*झारत दुवार मानों हँस जादू डारत।।*

साहित्यिक फड़ में सामने वाले प्रतियोगी के समक्ष सैर में ही प्रश्न कठिन प्रश्न रखना और जबाव मांगना क्रमशः चलता था। मिश्र जी की ऐसी ही सैर की चार पाक्तियाँ दृष्टव्य हैं-.

*पर्यङ्क परी युवती सिर मौर सती के।*<br>
*पर पती अंग छुवत संगपरी पती के।*<br>
*बाहर है मनुज मन वा पक्षी की गती के।*<br>
*देबै जवान होवैं जे विमल मती के।*

श्री मच्छङ्कराचार्य विरचित देव्यापराध क्षमापन स्त्रोत और श्रीराम गीता का पद्य-भावानुवाद हिन्दी के सरल और सरस छंदों में करके मिश्र जी ने श्रद्धालु जनों की आस्था को संबल किया है। श्रीराम के जन्म से राजगद्दी तक एवं श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन अनूठे ढंग से करके भक्तों के लिये अपने आराध्य के प्रति आस्था, विश्वास और समर्पण की भाव-भूमि निर्मित करने का सुन्दर कलेवर दिया है। विनय की भावाभिव्यक्ति में नवीनता देखें-

*मसकें पकर पाई जा देरी, मातु जनकजा तेरी।*<br>
*देरी-देरी भटकत-भटकत भई देरी पै देरी।*

आशुकवि के रूप में प्रतिष्ठित मिश्र जी की कलम आशीर्वाद, अभिनंदन-वंदन, स्वागत और शुभकामनाओं के साथ-साथ भावभीनी श्रद्धाञ्जलियाँ समर्पित करने में भी खूब चली है।

मिश्र जी पुरानी पीढ़ी के कवि तो हैं ही, साथ ही तत्कालीन परिस्थितियों के प्रति भी उनकी सजगता कम नहीं दिखाई देती।

स्वतंत्रता दिवस जैसे राष्ट्रीय त्योहार भी जन सामान्य के लिये उल्लास लेकर नहीं आता। कुछ पंकितयाँ प्रस्तुत हैं-

*भाँतन भाँतन पन्द्रा अगस्त।*<br>
*तन-तन सी रोटी के लानें, भटकत हैं भूके भैराने।*<br>
*जाँ जँगा मिली ताँ परनि, वर्षा गरमी सरदी साने।*<br>
*मगनारन की पन्द्रा अगस्त, भाँतन भाँतन पन्द्रा अगस्त।।*

मिश्र जी छंद और लोक छंद दोनों परम्पराओं के सफल कवि हैं। साहित्य फड़ों की प्रतियोगिता में उनका सदैव सम्मान रहा है। पूर्ति में उन्हें सदैव सफलता मिली है। साहित्य जगत में युग युग तक आई स्मरणीय और प्रेरक कवि रहेंगे।

-घोषयाना, संकटमोचन मार्ग<br>
छतरपुर (म.प्र.)

# बुन्देली लोकभाषा:नई दिशाएँ, नए प्रश्न

-डॉ. बहादुर सिंह परमार

लोकभाषा लोकजीवन की वह प्रवाहित सरिता है, जिसमें निर्मलता-पवित्रता तथा पावनता के साथ वह जीवन का सारा कलमल प्रवाहित होता रहता है, जो लोक में व्याप्त होता है। बुन्देली लोकभाषा बुन्देलखण्ड अँचल के दर्प और स्वाभिमान की भाषा है। इसमें रचित साहित्य की अपनी सुदीर्घ परम्परा है। जो लगभग दसवीं शताब्दी से प्रारंभ होकर आज सतत प्रवाह मान है। बुन्देली लोकभाषा में काव्य तथा कथाओं के सृजन की अपनी प्रभावी परम्परा है। बींसवी शताब्दी में बुन्देली लोकभाषा में रचनात्मक दृष्टि से व्यापक परिवर्तन परिलक्षित हुए। कारण साफ है कि भारत देश के इतिहास में भी इसी सदी में महान् परिघटनायें घटित हुईं। देश की आजादी, उसका विभाजन तथा संविधान निर्माण के साथ प्रजातांत्रिक व्यवस्था का अंगीकरण, ऐसी बड़ी ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जिसने सारे देश के नागरिकों को न केवल प्रभावित किया है बल्कि जन-मन को गहरे से बदल दिया है। इन्हीं सबका प्रभाव बुन्देलखण्ड अँचल के लोकमन पर भी पड़ा और लोकभाषा बुन्देली में विधागत वैविध्य के साथ संस्मरण, व्यंग्य, नाटक, एकांकी, उपन्यास, यात्रा-विवरण, गजलें, हाइकू आदि के माध्यम से रचनाकारों ने लोक मनोभावों का न केवल प्रकटीकरण किया बल्कि लोकमन को नई दिशा दे ने का महनीय कार्य किया गया। सामंती परिवेश में लम्बी यात्रा करने वाला बुन्देलखण्ड भी प्रजातांत्रिक बयार से आल्हादित हो उठा जिससे लोकमन का मयूर नाचने लगा। इस अँचल में भी स्त्रियों की दुर्दशा, दलितों व शोषितों की उपेक्षा तथा कमजोर वर्गो की प्रताड़ना के विरुद्ध चेतना के स्वर प्रकट हुए जिससे संघर्ष की स्थिति बनी। समानता पर आधारित संविधान के प्रति आस्था के कारण लोग अपने हकों के लिए चेते। यह सब लोकभाषा बुन्देली की रचनाधर्मिता में प्रतिबिम्बित है।

लोकभाषा बुन्देली की रचनात्मकता में अनेक नई दिशाएं विधागत व भावगत आई हैं। हम पहले विधागत देखें तो पाएंगे कि पहले लोकगीत, लोककथा, और गाथा तथा लोक नाट्यों के संकलन तक ही बुन्देली की रचनात्मकता सीमित थी। इस अक्षुण्य भंडार के संकलन से भी बहुत बड़ी धरोहर उपलब्ध है किन्तु नवीन चेतना व स्फूर्ति से लोकभाषा में भी नई-नई विधाओं में सृजन प्रारंभ हुआ जो वर्तमान में अपनी परिपक्वता के साथ उपस्थित है। काव्य के क्षेत्र में देखें तो पारम्परिक छंदों यथा-दोहा, कुण्डलियाँ, सवैया, छप्पय, चौकड़ियों के साथ बुन्देली में गजलें नई तासीर व तेवर से लिखी जा रही हैं। साकेत सुमन चतुर्वेदी, झाँसी, मायूस सागरी, बंडा, राघवेन्द्र उदैनियाँ, छतरपुर ने बुन्देली में गजलें लिखकर प्रेम के साथ लोक जीवन का खुरदुरा यथार्थ भी सफलता से प्रस्तुत किया है। इनकी रचनाओं में किसान की पीड़ा, उसकी विवशता तथा शोषण के विभिन्न स्तरों का दिग्दर्शन कराया गया है। इसी बीच बुन्देली गजल में एक सूर्य का उदय हुआ है जिसके ताप का प्रभाव बिहार से लेकर दिल्ली तक महसूस किया जा रहा है। यह हैं बुन्देली के श्रेष्ठ रचनाकार श्री महेश-कटारे 'सुगम' बीना। जिनके गाँव के गेंवड़े तथा अब जीवे कौ एकई चारौ दो बुन्देली गजल संग्रह प्रकाशित हैं। इनकी गजलों में शोषितों, उपेक्षितों तथा पीड़ितों की पुकार के साथ स्थानीय राजनैतिक षड़यंत्रों, कुचालों का भण्डाफोड़ व सामंती सरदारों का प्रशासनिक भ्रष्टाचार बेनकाब होता है। सत्ता का खेल किस तरह शक्ति केन्द्रों की राह पर संचालित है, इसे यह अपनी लोक शैलियों की धुनों पर आधरित प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। जुल्मी सत्ता के कारण समाज की विडम्बनाओं पर लोकभाषा बुन्देली में प्रभावी ढंग से प्रहार करते हैं सुगम जी-

*कैबे के लानें शासन की बातें हैं*
*चलते पुर्जा बदमासन की बातें हैं*
*बिना नाथ के सांड बने अफसर नेता*
*सब जनता खौं अनुशासन की बातें हैं*
*पढ़ रये हैं रामान राम खौं पूजत हैं*
*करमन में सबरी रावन की बातें हैं*
*रोटी की चोरी पे मच रऔ हो हल्ला*
*बड़ी चोरी हुश्यारन की बातें है*
*सत्ता है, कानून, कायदा, कुतका पै*
*लूट, डकैती सरदारन की बातें हैं।*
*जै बोले की रोज निछावर मिल रई है*
*झूठी टीबी अखबारन की बातें हैं।*
*शासन बनो गुलाम खरीदो है उननें*
*मानत सब साहूकारन की बातें हैं।*

गजलों के साथ जापानी छंद हाइकू भी बुन्देली में आया है। राजीव नामदेव लिधौरी 'राना' का हाइकू संग्रह प्रकाशित हो चुका है। कथा- साहित्य इस समय काफी पढ़ा-लिखा जा रहा है। बुन्देली लोकभाषा में भी मौलिक ढंग से कथाओं का लेखन सफलता पूर्वक हो रहा है। डॉ. दुर्गेश दीक्षित कुण्डेश्वर व डॉ.राम नारायण शर्मा, झाँसी ने बुन्देली में मौलिक भावों की उद्भावना से कथाएँ लिखी किन्तु वे परंपराबोध के मोह से ग्रसित रहे। नवीन उद्भावनाओं के साथ शरद सिंह सागर, दया दीक्षित कानपुर, लखन पाल, उरई, शिरोमणि सिंह 'पथ' सेंवडा, भास्कर सिंह माणिक, वीरेन्द्र खरे 'अकेला' छतरपुर तथा सुरेश पएग, देवेन्द्रनगर, पन्ना आदि ने बुन्देली में कहानियाँ लिखी हैं, जो विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। लगभग इन सभी कथाकारों के बुन्देली कथा-संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं। 'राख तरे के अंगरा' में शरद सिंह ने शोषण को बारीकी से पकड़ने के साथ स्त्री मन की कोमल भावनाओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया हैं। लखन पाल दलित उपेक्षित-शोषित वर्ग की आवाज को बुलन्दी के साथ अपनी कहानियों में उठाते हैं। दया दीक्षित के सभी पात्र क्रांतिकारी स्वभाव के हैं, वे उन सामाजिक बंधनों के विरोधी हैं, जो समान मानवीय विकास के विपरीत हैं। सुधारावत 'क्षमा', प्रेमलता नीलम तथा ब्रजलता मिश्रा ऐसी रचनाकार हैं, जो अपनी कथाएँ बुन्देली में रचकर लोकमन को स्वर दे रही हैं। रामनारायण शर्मा ने बुन्देली में 'जयराष्ट्र' उपन्यास तथा दया दीक्षित में गुण अवगुन की गली में ...लघु उपन्यास रचा हैं।

बुन्देली लोक भाषा में आजकल संस्मरण लिखे जा रहे हैं जिनमें यात्रा संस्मरण के साथ जीवन की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं को उतारा जा रहा है। कल्याण दास साहू, पृथ्वीपुर ने हते बड़े गुनवारे शुक्ल ने , ब्रजलता मिश्रा ने 'गुनवन्ती बऊ' तथा गुणसागर सत्यार्थी ने विंध्य कोकिल भैयालाल व्यास का संस्मरण बुन्देली में लिखकर पाठकों को उपलब्ध कराये हैं, जिनकी काफी चर्चा हुई है। झाँसी के गौरी शंकर

उपाध्याय 'सरल' ने तो 'संस्मरणात्मक कथाऐं' शीर्षक से बुन्देली में पुस्तक प्रकाशित कराई है जिसमें संस्करण हैं। डॉ. परशुराम शुक्ल विरही शिवपुरी ने भी यात्रा-विवरण बुन्देली में रचे हैं। देवदत्त द्विवेदी, बड़ामलहरा ने '' नोटबंदी कौ सिकार'' संस्मरण रचकर नवीन विषय को बुन्देली के पाठकों के समक्ष रखा है। भानुप्रताप शुक्ल 'भानु' ने 'कन्हई कक्का' तथा शिवाजी चौहान, गुरसरॉय ने रेखाचित्र बुन्देली में रचे हैं। बुन्देली लोकभाषा में लघु कथाएँ बहुतायत में लिखीं जा रहीं हैं, जो काफी लोकप्रिय हो रही हैं। निहाल अहमद सिद्दीकी, छतरपुर का लघु कथा - संग्रह 'ठक्का ठाई' काफी सराहा गया। इसमें सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियों के साथ परिवेश पर व्यंग्यात्मक ढंग से चोट की गई है। राजीव नामदेव, अजीत श्रीवास्तव, टीकमगढ़ भी बड़ी पैनी लघुकथाएँ लिख रहे हैं। एल. आर. सोनी 'सीकर', दतिया की लघु कथाएँ लोक हास परिहास को नवीन संदर्भों में प्रकट करती हैं। शरद सिंह, सागर के द्वारा समाज की विसंगतियों के साथ बेटियों और बहुओं से संबंधित बिषयों को लघु कथाओं के परोसा गया है। यहाँ की गरीबी और उससे संघर्ष को भी इनमें रखा गया है। मुझे एक लघुकथा 'उपास' याद आ रही है जिसमें विवशता को व्यक्त किया गया है- वे लिखती हैं कि सब ओरें जेई जानत आएं कै कलुआ की मताई बड़ी धरम-करम बारी ठैरी। अब आनई की लै लो, दुलारी बाई ने कलुआ की मताई सें पूछी- '' काए कलुआ की मताई, तुमाओ आज सोई उपास है का?'' 'हओ' कलुआ की मताई बोली। 'काये कित्ते उपास रखती हो? अबै काल सोमवती कौ रहीं, परों सूरज देव, ऊके पैलें सनीदेव को उपास थीं.... काए इत्तौ भूको रै-रै कें कोंन के लानें बचा रईं? काए संगे तौ जैहो का?' दुलारी बाई ने कलुआ की मताई की हँसी उड़ात भई कई। 'संगै को ले जेहै, बाई। मोय तो धरम की लगन आए तो उपासी रै लेत।' कलुआ की मताई ने कई। दुलारी बाई के जाबे के बाद कलुआ की मताई अपनी झुपड़िया में घुस गई और गिरस्ती के बासन - भाड़े खोल-खोल के देखन लगी और अपनें आप मों में बड़बड़ान लगी-

''जब खाबे के लाने कछु हैई नइयाँ सो उपासे तौ रेवी?''

लोकभाषाओं में लोक नाट्यों की परम्परा है किन्तु बुन्देली लोकभाषा में मौलिक नाटक, एकांकी, प्रहसन तथा रेडियो रूपक लिखे जा रहे हैं। जबलपुर निवासी गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त के अनुसार बुन्देली का पहला मौलिक नाटक 'विवेकी और निपोची' हैं, जो 1950 ई. में राजनगर की आर्य समाजी संस्था ने प्रकाशित कराया था, इसके लेखक अज्ञात है। डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त के मौलिक बुन्देली नाटक ईसुरी तथा सुंदरिया और गंगिया हैं। गुप्तेश्वर द्वारका गुप्त ने हंसा चल देस विराने भोले भड़या पांडे, लाला की बातें, जमराज के गरे परी तथा पतीबिरता आदि लिखे हैं इनका मंचन भी हुआ है। बेटियों के महत्व को रेखांकित करता नाटक 'पैली बेटी धन की पेटीं तथा पाखंडियों पर प्रहार करता' 'बाबा कौ पिरताप' नाटक सुधा रावत 'क्षमा' द्वारा लिखे गये हैं। डॉ. रामनारायण शर्मा का राजतिलक नाटक काफी सराहा गया हैं। बैरून भौजी सुरेन्द्र तिवारी द्वारा एवं सरू बाबा प्रहर्सन एन. डी. सोनी लिखित है। सुरेश पराग ने हरदौल तथा अन्य समसामजिक विषयों पर नाटक रचे हैं। लोक धुनों पर रेडियो रूपक भैयालाल व्यास जी द्वारा लिखे गए हैं, जो आकाशवाणी, लखनऊ व छतरपुर से प्रसारित हुए हैं। डॉ.परशुराम शुक्ल विरही, डॉ. गंगा प्रसाद बरसैया द्वारा बुन्देली में एकांकियाँ तथा नाटकों का सृजन किया गया है, जो मंचित व प्रकाशित हैं। व्यंग्य असंगत स्थितियों को उद्घाटित कर उन पर प्रहार करता है। बुन्देली लोकभाषा में मौलिक व्यंग्य लेखक डॉ. गंगा प्रसाद गुप्त बरसैया, रामस्वरूप दीक्षित, सुरेन्द्र नायक, दिनेस वैस, दिनेश चंद्र दुबे, रमेश खरे, जगदीश रावत, अजीत श्रीवास्तव, राजीव नामदेव, सुधा रावत, आदि के द्वारा प्रभूत मात्रा में किया जा रहा है। कुछ के संग्रह प्रकाशित हैं, कुछ के फुटकर व्यंग्य आलेख प्रकाशित प्रसारित हैं। लोकभाषा बुन्देली में ललित निबंधों की सर्जना करने वाले आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल हैं, जो संस्कृत व भाषा विज्ञान के उद्भट पंड़ित हैं। उनके विशद् ज्ञान का प्रभाव ललित निबंधों पर है वे कोई सामान्य -सा दिखने वाला विषय लेकर उस पर गंभीर - गुरु ज्ञान सरल बुन्देली लोकभाषा में इस तरह प्रवाहित करते हैं कि पाठक के ह्रदय में सीधे पहुँचता हैं और पाठक वाह-वाह कहने को विवश हो जाता है। इनके ललित निबंधों का संग्रह शीघ्र प्रकाश्य हैं। उनके प्रसिद्ध निबंध हरौ निबौला चौथें पहरे झौंकन मद बगराबे तथा भई न बिरज की मोर हैं। इन्होंने अकौआ, पलाश, अशोक जैसे वृक्षों तथा दिवारी, होरी जैसे पर्वो पर ललित निबंध बुन्देली में रचे हैं। इनके अतिरिक्त डॉ. कन्हैया लाल वर्मा 'बिन्दु' डॉ. कुंजी लाल पटेल, नारायण दास सोनी तथा जगदीश रावत बुन्देली में मौलिक निबंध लिख रहे हैं। बुन्देली लोकभाषा में साक्षात्कार लेने व प्रकाशित कराने का पुनीत व महत् कार्य वीरेन्द्र शर्मा 'कौशिक' मऊरानीपुर ने किया है। इन्होंने वासुदेव गोस्वामी, बनारसीदास चतुर्वेदी, गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' वृन्दावन लाल वर्मा, तथा कल्याण दास साहू का साक्षात्कार बुन्देली में लिखकर प्रकाशित कराया है। जो लोकभाषा बुन्देली की समृद्धता को रेखांकित करता है। बुन्देली लोकभाषा की पत्रकरिता में 'मधुकर' का नाम सर्वप्रथम आता है, जो कुण्डेश्वर से पं. बनारसी दास के संपादन में प्रकाशित हुआ तदुपरान्त 'बुन्देली वार्ता' कृष्णानंद गुप्त का योगदान महत् है। ईसुरी सागर जो डॉ. कांतिकुमार जैन ने बुन्देली पीठ सागर विवि से प्रारंभ की थी, आज भी प्रकाशित हो रही है। छतरपुर की बुन्देलखण्ड साहित्य अकादमी की 'मामुलिया' पत्रिका ने डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त के संपादन में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। बुंदेली बसंत, बुन्देली अर्चन, बुन्देली दरसन, अथाई की बातें, बुन्देली बानी, आखर-माटी आदि पत्रिकाएं बुन्देली रचनात्मकता को सार्वजनिक करने में अपनी भूमिका निभा रही हैं, जिससे लोकभाषा में लिखने का वातावरण तैयार हो रहा है।

लोकभाषा बुन्देली की भाषा वैज्ञानिक पक्ष पर भी कार्य किया जा रहा है। बुन्देली शब्द कोश जे. कैलाश बिहारी द्विवेदी द्वारा प्रकाशित कराया गया था। अभी बुन्देली शब्दों का व्युत्पत्ति कोश आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल द्वारा लिखा गया जिसका प्रकाशन भोपाल से हुआ है। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के सहयोग से डॉ. सरोज गुप्ता द्वारा संपादित 'बुन्देली भाषा कोश' विगत वर्ष लोकार्पित हुआ है। डॉ. रामनारायण शर्मा द्वारा भी बुन्देली भाषा कोश रचित है। इसके पहले डॉ. मोहन लाल गुप्त 'चातक' द्वारा भी इस क्षेत्र में कार्य किया गया। गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल' ने दो भागों में बुंदेली लोकोक्ति कोश स्वयं के व्यय पर प्रकाशित कराए हैं। इसके साथ सरल बुन्देली शब्दकोश प्रकाशित हुआ है। लोक सुभाषितों व कहावतों के संकलन प्रेमनारायण मिश्रा तथा डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी के भी सभी के सामने हैं। सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष' तथा हरिविष्णु अवस्थी जैसे अध्येता बुन्देली शब्द संपदा को सहेजने में संलग्न हैं। संस्कृत के ग्रंथों का लोकभाषा बुन्देली में अनुवाद का कार्य हो रहा है जिसमें गुणसागर सत्यार्थी तथा कालिदास के ग्रंथों का मेघदूत का बुन्देली अनुवाद किया गया। डॉ. कन्हैयालाल कलश व श्री निवास शुक्ल

ने भी मेघदूत का बुन्देली में 'संदेशौ' नाम से अनुवाद किया है। प्रभुदयाल श्रीवास्तव 'पीयूष' ने ऋतुसंहार का तथा रामरतन अवस्थी ने अभिज्ञान शाकुंतामम् का बुन्देलीमें अनुवाद किया है। प्रेमनारायण खरे ने गीता का तथा काशीप्रसाद महतों ने कठोपनिषद् का बुन्देली अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त लोकभाषा बुन्देली में शोध की नवीन सामाजिक पक्षों को लेकर नवीन दृष्टियों से विवेचन का प्रयत्न बुन्देली लोकभाषा में किया जा रहा है।

लोकभाषा बुन्देली में भावगत दृष्टि से भी विगत चालीस-पचास वर्षों में बहुत बदलाव आया है। पहले जहाँ केवल श्रृंगार के विविध प्रसंगों के साथ भक्ति की धारा प्रमुखता से बुन्देली साहित्य में प्रवाहित थी, वह अब बदली है। विषय वस्तु ही रचनात्मकता की केन्द्र बिन्दु भी जो अब नए जमाने के नये सवालों के साथ बुन्देली साहित्य में उपस्थित है। अब स्त्रियों की बदहाल स्थिति, दलितों के प्रति अन्याय बेरोजगारी और युवाओं की कुंठाओं, राजनीति और अपराध के गठजोड़ संघर्ष के स्वरों की मुखरता भी रचनात्मकता के केन्द्र में है। पर्यावरणीय दोहन से नष्ट हो रहे जंगलों, पहाड़ों तथा नदियों के प्रति सहानुभूति के स्वर भी उठ रहे हैं। सांस्कृतिक बदलाव के प्रति सजगता, राजनैतिक, जनजागृति तथा क्षेत्रीय अस्मिता भी रचनाओं के विषय वस्तु बन रही हैं। बुन्देलखण्ड अँचल भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी भू-भाग के साथ वनाच्छादित प्रांत है। यहाँ मुख्यत कृषि आधारित जीवन है। कृषि भी पारम्परिक तौर-तरीकों से बहुतायत हो रहीहै। नई तकनीकों और पद्धतियों से कृषि लागत बढ़ गई है जिससे किसानी घाटे का काम हो गया है परिश्रम स्वरूप क्षेत्र के किसान ऋणग्रस्त हो आत्महत्या को विवश हो रहे हैं। इस दशा का चित्रण कथाओं के साथ बुन्देली कविता में बखूबी हो रहा है। शंकरदयाल खरे, गोविन्द यदुवंशी, रतिभानु तिवारी 'कंज' महेश कटारे 'सुगम' आदि सशक्त ढंग से किसानों की आवाज को बुलन्द कर रहे हैं। बुन्देली के युवा कवि नीरज खरे ने अपने दोहों में किसानों की वेदना को प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त किया है देखिये-

*मोहन काबै बाप सें, ऐसो परो अकाल।*
*सूखा राहत कार्य में, नेता मालामाल।।*
*धरती की छाती फटी, तला में उड़ रइ धूर।*
*प्रानन गाठे परी सब, दिल्ली खाॅं मजबूर।।*
*अरूआ बोलें गाँव में, समय बड़ौ गम्भीर।*
*सबखाँ अपनी फिकर है, ना काछू की पीर।।*
*देख दशा संसार की, बब्बा की जा राय।*
*रखबारी को करै जब, खेत बिजूकौ खाय।।*

इन दोहों में सूखा की विकटता के साथ नेता-अफसरों के भ्रष्टाचार की ओर इशारों के साथ बेरोजगारी, भाई भतीजा वाद तथा सत्ता के प्रति शंका के भाव दृष्टव्य हैं। समाज में बाजारवाद के चलते लोकमन भी स्वार्थी हो रहा है। दहेज व अन्य सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के चलते कन्या भ्रूण हत्या का चलन तेजी से बढ़ा है। इसके प्रति लोकभाषा बुन्देली के रचनाकार सचेत कर रहे हैं। इस सम्बंध में शंकरलाल शुक्ल, कुंजीलाल पटेल, रामगोपाल प्रजापति, नवल किशोर सोनी 'मायूस' आदि ने उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन किया है। नये जमाने के बेलेन्टाइन डे पर भी व्यंग्यात्मक प्रहार बुन्देली के कवि कर रहे हैं। मँहगाई आम आदमी के जी का जंजाल बनी है। लोगों का जीवन दुश्वार है। इस पर भी बुन्देली रचनाकार अपनी पैनी नजर गड़ाये है।

आप देखें- *'' कैसौ अजब जमानो आ गव, जीबो हो गव करों।*
*प्रानन गाँठें पर रइं सबसैं, मंहगाई खों ठरों।''*

राजनैतिक चेतना के चलते लोकमन अब जिम्मेदार लोगों से प्रश्न करने लगा है। समता पर आधारित सामाजिक ताना-बाना अब समता मूलक समाज की ओर अग्रसर हो रहा है। लोकमन में अब प्रजातंत्र के प्रति गहरा आस्था का भाव जागरित हो गया है। अब रचनाकार भी लोगों को समझा रहे हैं कि अब जीवे कौ एकई चारौ, मन में बैठे डर खौं मारौ। जुर्म -अपराधों को बेनकाब कर न्याय आधारित व्यवस्था कायम करने हेतु बन्देली लोकमन आतुर है। आज बुन्देली लोक भाषा के रचनाकारों के समक्ष यह प्रश्न खड़ा है कि शोषक भी शोषण हेतु चेहरे-मोहरे बदल रहे हैं। इन बदली हुई परिस्थितियों में इन्हें पहचान कर बेनकाब करें और जन सामान्य को चैतन्य कर समता आधरित व्यवस्था निर्माण में मदद करें।

समकालीन परिवेश में उपभोक्तावाद की पहुँच बुंदेलखंड अँचल में भी निचले स्तर तक हो गई हैं जिससे आदमी पहाड़ों का नाश कर रहा है, नदियों की रेत निकाल कर असंतुलन करने के साथ जल का अत्याधिक दोहन कर उन्हें सुखा रहा है। जंगलों पर कुल्हाड़ी चलाकर उसे साफ कर रहा है। कृषि में उन्नत तकनीक के नाम रासायनिकों का खतरनाक प्रयोग कर आत्म हंता बन रहा है। इसके साथ पुरानी जाति, धर्म तथा लिंग आधारित गैर-बराबरी की बीमारियाँ लोक में पूर्व से विद्यमान हैं। इन सबसे निजात हेतु बुंदेली लोकभाषा के रचनाकार को इन खतरों के प्रति लोक को सचेष्ट करना होगा।

-शासकीय महाराजा महाविद्यालय
छतरपुर (म. प्र.)

# जौ पानीदार यहाँ को पानी

**-अवध बिहारी श्रीवास्तव**

जौ पानीदार यहाँ को पानी।
बरसे कहूँ कड़ै ओड़छे हो जो पानी।।

आल्हा ऊदल छत्रशाली ने
जोऊ पियो तो पानी।।

अग्रेंजन कबो लक्ष्मी बाई ने
पियन न दव जो पानी।

चंदशेखर आजाद पियत फिरे
एईं घाट को पानी।

कवि केशव और हरीराम व्यास ने
खूब पियो जो पानी।

धन्य रानी कुंअर गनेश
धन्य-धन्य ओड़छे को पानी।

धन्य मधुकर शाह महाराज।
धन्य-धन्य उनकी महारानी।।

जो ओड़छा बनी रामराजा की रजधानी।
बरसे कहू कड़ै ओड़छा हो जो पानी।

-नये बस स्टैण्ड के पास
टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

## चित में धर लो

-जगदीश कुमार कुशवाहा
'प्रबोध कवि'

प्रेम के बूतें मेर बढ़ाओ,
ऊँच नीच को भेद मिटाओ।
अपने घर सो औरन जानो,
इज्जत उनकी अपनी मानौ।।
कुनउ नशा सें हेत न जोड़ो,
नौनो बनबे नोनो होड़ो।

राजी खुशी सबई की सोचो,
ख्याल न राखो खोटो ओछो।
ठसा भूल कें हेत बढ़ाओ,
छीना झपटी गैल मिटाओ।।
नाक न गैरन खुशी सकोड़ो,
नौनो बनबे नोनो होड़ो।

सीखो शिक्षा, सीख सिखाओ,
लड़का बिटिया एक बताओ।
बारे ब्याव बताओ घाटी,
मैंटो छुआछूत परपाटी।।
भ्रष्टाचार उखारो गोड़ी।
नौनो बनबे नोनो होड़ो।

दौरन जा-जा शौर्य जगाओ।
भरत भूमि इतिहास बताओ।
मान तिरंगा को तम राखो।
बेरी हरकत सीमा ताको।।
बिड़े देश तो पकड़ मरोड़ो।
नौनो बनबे नोनो होड़ो।

-प्रधानाध्यापक शा.मा.शा. लक्ष्मीपुर
जिला-पन्ना (म.प्र.), मोबा. 9589904900

## गीत

-बाबूलाल विश्वकर्मा

वन से बादल, बादल से जल, जल से है जिन्दगानी।
हरे भरे बिरछा लगवा लों, खूबई बरसे पानी।।
महुआ, आम, नीम ओ जमुन, इनके पेड़ लगालो।
बरिया, बेल, बहेरो, औरी इनसे दवा बनालो।।
कटहल है सब्जी को साधन, रकम मिले मनमानी।
स्यामर, तेदू, सरई, सगौन, शीशम, हर्रा, चिल्ला।।
करधई, लिप्टस, धवा, पापरौ, खैर, कराई, कुल्ला।
कैथी, बांस, बमूरा, सांदन, सब की जानी मानी।।
शुद्ध हवा हमको देते है, जीसे जीवन जीवें।
विरछन को शंकर सम जानों, अमृत दे बिस पीबें।
फल दे भूख मिटावें सबकी, को है इन सम दानी।।

-ग्राम पुछी, जिला-छतरपुर

## विद्या धन

-रामरूप स्वर्णकार 'पंकज'

बिना पड़ो आँखन बारो,
जीवन भर अँन्धों रै है।
चिठिया कऊँ आ जाय काऊ की,
औरन तरफ चिते है।।

का का मोय लिखी चिठिया में,
पढ़कें मोय सुनाँ दो।
चिठिया अगर भेजनें कऊ तो,
औरन सें लिखवें है।।

कितऊँ काऊकी करी मजूरी,
रोजई झींकत रेहै।
पराधीनता के जीवन में,
सुख को देख नों पैहै।।

ऊँठा टेक कितऊ ठग जैहै,
घर की पूजी गमेंहै।
उमर भर घर के पुरखन को,
रो कें कोसत रेहै।।

जो अबोध विद्या का जानें,
विद्या कितऊँ न जैहै।
कोनऊ लरका ऐसो कढ़है,
घर को मान बढ़ैहै।।

मोई विनती सबसें भइया,
ग्यान कितऊ नां जैहै।
पड़े लिखे लरका बिटियन को,
सारो जग अपनैहै।।

ग्यानी कों सब बूजें,
अज्ञानी मों ताकत रैहै।
सदा गरीबी घर में रैहै,
कोऊ नई पतयेहै।।

ढोरन से नाँ घूमत फिर है,
जनम बिगर नां पैहै।
जनम सुधर है इनको,
जीवन उजयारो रैहै।

समझदार लरका बिटियन,
पेट काट पढ़वा रये।
उनके लरका अफसर बन गये,
दद्दा पूजे जा रये।।

विद्या ऐसो धन है पंकज,
चोर चुरा नां पै है।
कोऊ ऐसो लिख जैहै,
नाँव अमर हो जैहै।।

-भगत सिंह नगर, कोंच
जिला जालौन उ. प्र. 285205
सम्पर्क-09936505493

# बुन्देलखण्ड में नाग विग्रहों की अवस्थिति

-हरिविष्णु अवस्थी

सामाान्यतः सर्प को हानिकारक (जानलेवा) माना जाता है। सर्प और उसमें नाग जिसका नाम सुनते ही लोगों का रोमांच हो जाता है जबकि नाग हमारी राष्ट्रीय विरासत हैं तथा युगों-युगों से नाग

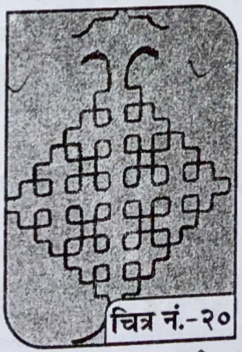

चित्र नं.-६

भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग तथा प्रतीक रहा है। इसीलिए हमारी भारतीय परम्परा के अनुसार लोग साँप को मारने से बचते हैं और विशेष रूप से नाग को मारने से।


चित्र नं.-४

"भारत की लोक कथाओं धर्म और कला में साँपों और मुख्यतः नाग का प्रमुख स्थान रहा है। वर्ष मे दो ऐसे दिन आते हैं- नागपंचमी और अंनत चतुदर्शी जबकि भारत में नाग का पूजन किया जाता है। इस पूजन का प्रारंभ कब और कैसे हुआ ? इसकी पूरी जानकारी नहीं है, किंतु पूजन का यह रूप प्राचीनकाल से चला आ रहा है। इन दो दिनों में नाग पंचमी समस्त देश में अधिक प्रचलित है। हो सकता है कि इसके मनाने की तिथि तथा स्थानीय परम्पराओं एवं मनाने के ढंग में कुछ अंतर पाये जाते हों, किंतु अधिकांश भारत में यह प्राचीन विचार धाराओं के अनुसार ही मनायी जाती है। यह भय तथा समर्पण की उन भावनाओं को प्रमाणित करती है जिन्हें साँप अनादि काल से जन समुदाय के मन में उत्पन्न करता आया है।"[1]


चित्र नं.-५


चित्र नं.-२०

समस्त सृष्टि तीन लोकों में समाहित है। इसमें आकाश को स्वर्ग लोक, पृथ्वी को मृत्युलोक एवं सिंधु को पाताल लोक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके अधिवासी क्रमशः देवता, मनुष्य एवं नाग हैं। "नाग भी लोकधर्म के देवता थे। नाग, पाताल लोक के अधिपति थे जो दवेता रूप में मान्य हुए। कथाओं में नागों को मृत्यु, तम और अमृत का प्रतीक माना गया है। और इसके विपरीत देवों को अमृत, सत्य और ज्योति का। बौद्धों ने नागों को संभ्रात देवों की कोटि में स्थान दिया। बुद्ध, महावीर और कृष्ण के जीवन में नाग देवता की कथा है।


चित्र नं.-२

जैसे इन्द्र ने अभिशंसी वृत नामक ओजायमान अहि का दमन किया था, वैसे ही इन्होंने अपलाल चन्द कालिय आदि नागों को वश में किया। शिव ने विषपान करके सर्पों को अपने शरीर पर स्थान दिया और उनपर विजय पाने के कारण शिव मृत्युंजय देव हैं।"2 जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ के सिर पर भी विष्णु भगवान की भांति नाग फणों की छाया रहती है।


चित्र नं.-१२

सर्प संबंधी पौराणिक कथाओं में समुद्र मंथन, कालिय मर्दन एवं जनमेजय का सर्प यज्ञ तो जन सामान्य के कण्ठ में अवस्थित है। चाहे भगवान विष्णु की स्तुति हो या विषपायी भगवान शंकर की, उसमें आपको नागराज का उल्लेख अवश्य ही मिलेगा। प्रभुश्री राम के अनुज श्री लक्ष्मण जी तथा भगवान श्री कृष्ण के अग्रज दाऊ श्री बलराम जी को तो शेषावतार ही माना जाता है। रामचरित-[2] मानस में श्री हनुमान जी को माता सीता की सुधि लेने जाते समय, उनकी शक्ति का परीक्षण करने हेतु, देवताओं ने नागों की माता सुरसा को ही भेजा था।


चित्र नं.-७

"सुरसा नाम अहिन्ह कै माता।
पठइहि आइ कही तेहि बाता।।"[3]

भारत के तीन प्राचीन- सनातन धर्म(हिन्दू धर्म), बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म में जब नागराज को इतना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है तो भला कलाकार नागराज को अपनी कलाओं में स्थान देनें में कैसे पीछे


चित्र नं.-३



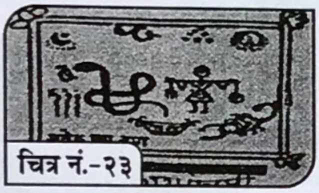
चित्र नं.-२५

रह सकते थे। पाषाण शिल्पियों ने जहाँ अपनी छैनियों से सुगढ़ नाग मूर्तियों की रचना की वहीं चित्रकारों ने नागराज को अपनी तुलिका से विभिन्न रूपों में अंकित किया।



चित्र नं.-२४

धातु के कला शिल्पियों ने विभिन्न धातुओं से विभिन्न आकारों एवं विभिन्न रूपों में नाग मूर्तियों की रचना की। देश के अन्य भागों की भाँति बुन्देलखण्ड जहाँ 10वीं ईसवी पूर्व से 11वीं ई. पूर्व तक नाग शासकों का शासन रहा हो कहाँ पीछे रहने वाले थे। यहाँ के कलाकारों ने भी नागराज को अपनी भिन्न-भिन्न कलाओं में स्थान देकर उनका स्तवन किया।



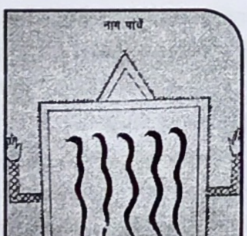
चित्र नं.-२३

**पाषाण शिल्प में नागः-**

बुन्देलखण्ड के महोबा जिला मुख्यालय में-सिंहनाद अवलोकितेश्वर की प्रतिमा अवस्थित है। ''प्रतिमा में उन्नत मुकुट व जटाएँ धारणकर अर्द्ध मुकलित नेत्र, हल्का वस्त्र परिधान, दाये हाथ में अक्षमाला और बायाँ हाथ टेके हुए त्रिसूल में सर्प लपेटे व वाम हस्त पार्श्व में पुरुष, यज्ञोपवीत धारण किये और मुख पर शालीन भाव दर्शित कराकर सूक्ष्म अलंकरण से लीलासन मुद्रा में अवस्थित है।''[4] (चित्र क्र.-1) नागकन्या की एक मूर्ति भी चरूआ गाँव में अवस्थित है। (चित्र सं.-2)



चित्र नं.-२२



चित्र नं.-२१

बुन्देलखण्ड के ही ललितपुर जिले में स्थित देवगढ़ नामक गुप्तकालीन स्थान पर पाँचवीं-छठीं शताब्दी में निर्मित गजेन्द्र मोक्ष की अद्भुद प्रतिमा है। जिसमें सप्त फण धारी नागराज प्रदर्शित हैं। (चित्र सं.-3) इसी देवगढ़ में ही 'शेषशायी विष्णु' की अद्भुद प्रतिमा अवलोकनीय है। (चित्र -4)

बुन्देलखण्ड के पन्ना जिला में स्थित प्राचीनतम स्थान भूमरा में शिव मूर्ति में नागराज कण्ठहार के रूप में प्रदर्शित किये गये है। यह विग्रह



चित्र नं.-१९



चित्र नं.-१८

पाँचवीं शताब्दी का माना जाता है। (चित्र -5) यहाँ एक नाग कन्या की मूर्ति होना भी बताया जाता है। बुन्देलखण्ड के ही टीकमगढ़ जिले के मोहनगढ़ में 'शेषशायी विष्णु' की भव्य प्रतिमा है। (चित्र -6) टीकमगढ़ नगर के नजरबाग मंदिर में प्रतिष्ठित भोलेनाथ की प्रतिमा में नागराज सुशोभित हैं। (चित्र-7)



चित्र नं.-८

स्थानीय रौरइया हनुमान मंदिर में शिवलिंग की जलहरी पर नाग-नागिन उकेरे गए हैं। (चित्र-8) देवरदा नामक स्थान के मंदिर में गणेश जी के शरीर पर नाग लिपटा हुआ है। (चित्र-9) भेलसी ग्राम में बाराह की विशाल प्रतिमा के गले में नागराज प्रदर्शित हैं। (चित्र-10) लेखक के निजी संग्रह में कच्छप की पींठ पर नागराज बने हैं जो एक व्यक्ति का आधा पैर मुँह में दबाये हैं। (चित्र-11)



चित्र नं.-१०



चित्र नं.-११

टीकमगढ़ नगर के माँझ के जैन मंदिर में पार्श्वनाथ मूर्ति पर नाग राज अपने फणों से छाया किये हुए है। जिले के शक्ति भैरों नामक प्राचीन ग्राम में नाग-नागिन युगल की मूर्ति को एक दूसरे से रस्सी की भांति लिपटा हुआ दर्शाया गया है। शीर्ष पर दोनो के फण प्रथक-प्रथक दिखाई देते हैं। दोनो का शेष शरीर एकाकार है। (चित्र-12) जिले के धामना नामक ग्राम में नाग की स्वतंत्र प्रतिमा है जिस पर सिन्दूर चढ़ाया जाता है (चित्र-13) एक नागमूर्ति जिले के कारी नामक ग्राम के जंगल में हनुमान मंदिर के बाहर रखी है। नाग-नागिन का एक छोटा सा विग्रह मेरे निजी संकलन में उपलब्ध है। (चित्र-14)



चित्र नं.-१

जिले के कुडीला थाना परिसर में एक नागकन्या की विशाल प्रतिमा स्थापित है। एक नाग कन्या की प्रतिमा जिले के असाटी ग्राम में स्थित है। जिले के कुण्डेश्वर पुरातत्व



चित्र नं.-१३


चित्र नं.-१४

संग्रहालय में नाग कन्या कि एक मूर्ति प्रदर्शित है। (चित्र संख्या- 15 )

**चित्रकला में नागः-**

टीकमगढ़ जिले में विश्व प्रसिद्ध मध्यकालीन नगर ओरछा के किले में स्थित महल की भित्तियों एवं छत पर अनेक आकर्षक प्राचीन चित्र बने हैं। इनमें समुद्र मंथन (चित्र 16) एवं शेषनाग (चित्र 17) के चित्र अद्भुद हैं। टीकमगढ़ नगर के निकट स्थित रानी की बाबरी के पीछे वाले द्वार के बाहर छज्जे पर तथा यहीं बने एक मंदिर के गर्भ गृह के पीछे की दीवार के छज्जे के नीचे नागराज के स्वतंत्र चित्र बने हैं। भिति चित्रों में इस प्रकार नाग का स्वतंत्र चित्र प्रथम बार देखने में आया है। लोक चित्रकला जिसे बुन्देलखण्ड में 'चतेवरी' कहा जाता है के अन्तर्गत नागपंचमी के दिन गृह के मुख्य प्रवेश द्वार पर विभिन्न आकार-प्रकार के नागों के चित्र बनाने की परंपरा है। (चित्र 18,19,20)


चित्र नं.-१५


चित्र नं.-१७

धातु से निर्मित कला कृतियाँः- सामान्यतः शिवलिंग के साथ नागराज की मूर्तियाँ दृष्टिगोचर नहीं होती हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि अधिकांश शिवलिंग स्वनिर्मित होते हैं। कलाकारों द्वारा निर्मित शिवलिंगों में भी नागराज की उपस्थिति दिखलाई नहीं पड़ती। इस कमी को दूर करने हेतु अब पीतल, ताँबा आदि धातु से नागराज की मूर्तियों का निर्माण किया जाने लगा है और उन्हें शिवलिंग के निकट स्थापित किये जाने की प्रथा चल पड़ी है। कुण्डेश्वर में इसी प्रकार धातु की नाग मूर्ति दृष्टव्य है। (चित्र संख्या- 21) धातु से विभिन्न आकार-प्रकार की नागराज की मूर्तियाँ भी बनाई जाती हैं। (धातु की बनी मूर्तियों के चित्र-22,23,24)


चित्र नं.-१६

नाग मंदिरः- टीकमगढ़ नगर में छोटा सा नाग मंदिर भी विद्यमान है।(चित्र संख्या-25) उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि बुन्देलखण्ड में नाग स्तवन की परंपरा नाग शासन काल से चली आ रही है तथा यहाँ के कलाकारों ने अपनी-अपनी कलाओं में उन्हें सम्मानीय स्थान प्रदान किया।

**सन्दर्भ-**


1-पी.के देवरथ-भारत के सर्प -पृ.-12

2-अनीता बाजपेयी-म.प्र.के नागवंशीय सिक्के-पृ.-173

3-गोस्वामी तुलसीदास-रामचरित मानस-सुंदरकाण्ड 2-2

4- बासुदेव चौरसिया-चंदेलकालीन महोबा एवं जनपद हमीरपुर महोबा के पुरावशेष-पृ.- 88



-अवस्थी चौराहा, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

मोबाइल-9407873003

# शतायु स्वतंत्रता सेनानी, साहित्य सेवी श्री महतों

-सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष'

बुन्देलखण्ड के शतायु स्वतंत्रता सेनानी एवं व साहित्य - सर्जक, छतरपुर रियासत के उत्तरदायी शास. में शिक्षा एवं वन मंत्री रहे, सेवा निवृत्त सहायक शाला निरीक्षक, अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित श्री काशी प्रसाद जी महतों का जन्म 5 मार्च सन् 1917 को छतरपुर जिले के पान उत्पादक नगर गढ़ी मलहरा में पान व्यवसायी साथी महतों परिवार में श्री बुच्ची लाल जी महतों एवं श्रीमती रुनी महतों के घर हुआ था।

श्री महतों की बी. ए. बी. एड. की शिक्षा प्रारंभ में गढ़ी मलहरा तदुपरान्त महोबा, छतरपुर एवं कानपुर में सम्पन्न हुई। शैशवकाल एवं किशोर आवस्था में पिता जी का निधन हो जाने से आपका जीवन अत्यंत संघर्षमय रहा।

छतरपुर रियासत के प्रजा मंडल आंदोलन के सेक्रेटरी रहे। इसके पूर्व आप रियासतों में इंस्पेक्टर व उत्तरदायी शासन में 1948 में शिक्षामंत्री व वन मंत्री रहे। 19 49-50 में श्री महतों रियासत में डिप्टीकलेक्टर भी रहे किन्तु मन मुटाव होने के कारण पद त्याग कर दिया। आंदोलन के दौरान आय को 22 दिन की जेल सजा भी काटनी पड़ी।

स्वतंत्रता के पश्चात आप गढ़ी मलहरा नगर पालिका के अध्यक्ष पद पर रहे। इसी दौरान घर की अर्थिक के स्थिति डगमगा जाने से,घर में चोरी हो जाने व पान बरेजे में आगजनी के कारण राजनीति छोड़ आप शासकीय सेवा में प्रधानाध्यापक पद पर पदस्थ हुये। दतिया, कुर्राहा, लौड़ी, लुगासी, मुड़ेरी, आदि विद्यालयों में कार्यरत रहे। 1972 में सहायक शाला निरीक्षक लौड़ी के पद पर पदस्थ हुये। 1975 में आप इसी पद पर सेवा निवृत्त हुए।

अपने स्वभाव के अनुकूल आप गायत्री परिवार से जुड़ गए। अपनी सक्रियता से आचार्य श्री राम शर्मा के समीपी बन गए उन्होंने आपको दीक्षा देकर आपका नाम 'प्रेमानंद जी' घोषित किया। आपके स्नेहिल व्यवहार के कारण समूचा नाम आपको बड्डे के नाम से सम्बोधित करता है। शासन द्वारा प्रस्तुत सम्मान निधि (पेंशन) स्वतंत्रता सेनानी के नाते आज भी प्राप्त हो रही है। आपको दो प्रमुख अभिरुचियाँ रहीं है प्रथम - तीर्थाटन द्वितीय- साहित्य सृजन। आपने चारों धाम की यात्रायें की हैं।

युवावस्था में आप हाकी के खिलाड़ी रहे, छतरपुर नरेश महाराजा भुमानी सिंह जू देव के साथ बहुत समय तक हाकी खेलते रहे। नित्य व्यायाम करना आपकी दिन चर्या का अनिवार्य हिस्सा रहा है।

सन् 1955 से आप को साहित्य सृजन की रुचि पैदा हुई जो अद्यसवधि भी नियमित है। आपने छोटी बड़ी 22 पुस्तकों का सृजन किया एवं स्वयं के बलबूते उन्हें प्रकाशित भी कराया। उनमें गीत, पद भजन, गजल, छंद एवं काव्यानुवाद सम्मिलित हैं। इन कृतियों का रचनाकाल व प्रकाशन वर्षवार निम्नांकित है-

1. शांति शतक दोहावली - 1956
2. शांति कीर्तन - 1957
3. शांति शतक पदावली - 1978
4. गीता ज्ञान - 1986
5. ब्रम्हदर्शन (प्रथम भाग) (5 उपनिषदों का दोहानुवाद) - 1992
6. काशी की कुण्डलियां - 1995
7. ब्रम्हदर्शन (द्वितीय भाषा) (चार उपनिषदों का पद्यानुवाद) - 1996
8. कैकई महान (खण्ड काव्य) - 2003
9. काव्य कुंज - 2004
10. ब्रम्हदर्शन (तृतीय भाग) (छान्दोग्य उपनिषदका) - 2005
11. ब्रम्हदर्शन (चतुर्थ भाग) (बृहदारण्यक उप निषदका पद्यानुवाद) -2006
12. दीवान - ए - काशी - 2006
13. वन्दन गान - 2007
14. अनुभव रत्न मंजूसा - 2008
15. संगीत-मंजरी - 2010
16. गीत-गुंजन - 2011
17. गायकी गुणगान - 2011
18. मेरा जीवन - 2012
19. बजरंग वैभव - 2012
20. मंगल गान -2014

सरस्वती सदन पुस्तकालय ट्रस्ट द्वारा आपकी साहित्य सेवाओ के उपलक्ष में सम्मानित कर स्वयं गौरवान्वित किया है। सन् 2009 ई. बुन्देली उत्सव समिति, बसारी ने आपको राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति-सम्मान से विभूषित किया है।

तपस्वी साहित्य साधक को शतशः नमन

-शुक्लाना मोहल्ला, छतरपुर
मो. 9685519223

# लिखतन बुन्देली अखरी सी

-महाकवि अवधेश

*लिखतन बुन्देली अखरी सी, बोलत में मिसरी सी।*
*संस्कृत की बौ सगी सहेली,प्राकृत की छुकरी सी।।*
*बचपन सूर जुआनी तुलसी के आंगन सँबरी सी।*
*प्रौढ़ भइ केशव के अँगना बिहरी कें विहरी सी।।*

*आल्हा के तन मन में रम गइ, डिंगल में सपरी सी।*
*जेठी बैन लोक भासन की, सबइ गुनन अगरी सी।।*
*कोटि-कोटि हिरदै में बसकें, अधरन पै बगरी सी।*
*कयें 'अवधेश' मका की रोटी नैनूं से चिपरी सी।।*

-४२५ श्रमणा सदन, नई बस्ती, झाँसी
मोबा. ९४५१९३७१७०

# अखबारों के आइने में बुन्देली उत्सव



छतरपुर एक्सप्रेस

Shealing Public School

Hostels for Boys & Girls

Shealing APP

## देश में पहचान बन गया बुन्देली उत्सवः राजा बुन्देला

बुन्देली उत्सव साढ़े अन्न का आय: मुन्नाराजा

बुन्देली उत्सव अप्रत्याशित प्रगति कर रहा : सत्यव्रत चतुर्वेदी

अखबारों के आइने में बुन्देली उत्सव

## बुन्देली उत्सव के चाथे दिन 11 फिल्मों का प्रदर्शन

मंचीय कार्यक्रम में फिल्म अभिनेता राजा बुन्देला रहे खास मेहमान

## ...व के तीसरे दिन चौपर, कबड्डी के साथ हुई रस्साकसी

चौपर में गरसंगय और कबड्डी में गाजीपुर बना विजेता


## बुन्देली उत्सव के चाथे दिन 11 फिल्मों का प्रदर्शन

मंचीय कार्यक्रम में फिल्म अभिनेता राजा बुन्देला रहे खास मेहमान


## इक्तीसवॉं बुन्देली उत्सव-2017

आजई सें हो रओ शुरू

# अखबारों के आइने में बुन्देली उत्सव

## बुन्देली कला, संस्कृति और खेल को बढावा देने आयोजन श्रेष्ठ प्रयासः राजेश ब



छतरपुर। बुन्देलखण्ड की संस्कृति यहां के रीति रिवाज परम्परायें और बुन्देली भाषा बेहद समृद्ध है। इसके संरक्षक के साथ-साथ इसके संवर्धन के लिए एक सप्ताह तक चलने वाला बुन्देली उत्सव श्रेष्ठ प्रयास है। इसके लिए आयोजन समिति और समिति के संरक्षक शंकर प्रताप सिंह बुन्देला निश्चित रूप से बधाई के पात्र है। इस अंचल के अलावा यहां होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों से अपनी अपनी संस्कृति को समेटे सभी कलाकारों और खिलाड़ियों को हम शुभकामनाएं देना चाहते है।

वाणिज्यकर विभाग के अपर आयुक्त इंदौर व छतरपुर के पूर्व कलेक्टर आईएएस राजेश बहुगुणा शनिवार को पर्यटक ग्राम बसारी पहुंचे और उन्होंने यहां जारी अश्व नृत्य प्रतियोगिता का भरपूर लुत्फ उठाते हुये उक्त आशय के उद्गार व्यक्त किये। शनिवार के इस आयोजन अवसर पर भाजपा के जिला अध्यक्ष व बुन्देली संस्कृति, कला व पारम्परिक खेलप्रेमी पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह गुड्डू भी मौजूद थे। उन्होंने बुन्देली उत्सव के आयोजन को बुन्देलखण्ड के लिए महत्वपूर्ण बताया और कहा कि इसके आयोजन की समिति और समिति के संरक्षक मुन्नाराजा जी के प्रयासों से ही विगत 20 वर्षों से लगातार बिना किसी गतिरोध के यह आयोजन सफलता के साथ जारी है। उन्होंने कहा कि इस आयोजन के लिए जो भी सहयोग अपेक्षित होगा उसमें पूरी मदद किये जाने में हम पीछे नहीं रहेंगे। इस अवसर पर ताजग्रुप द्वारा संचालित खजुराहो के चंदेला होटल के प्रबंधक नारायण सिंह भी बतौर मेहमान मौजूद थे।



### अश्व नृत्य के साथ कबड्डी और चौपर भी हुई

पर्यटक ग्राम बसारी में जारी 21 वें बुन्देली उत्सव के दूसरे दिन शनिवार को अश्व नृत्य प्रतियोगिता के अलावा कबड्डी और चौपर का भी आयोजन किया गया। आयोजन समिति के अतिनेन्द्र त्रिपाठी के अनुसार कबड्डी में मेजबान बसारी की पांच टीमों के अलावा गाजीपुर उत्तर प्रदेश की टीम ने भी हिस्सा लिया। [illegible]





आज की प्रतियोगिताएं

रविवार 19 फरवरी को बुन्देली उत्सव के तीसरे दिन सुबह के [illegible]



## हो [illegible] खेल और बुन्देली संस्कृति का बेहतर संवर्धन : राजेश बहुगुणा

# घोड़ा की थिरकन ने किया मनोरंजन

छतरपुर ■ राज न्यूज नेटवर्क

बुन्देलखण्ड की संस्कृति यहां के रीति रिवाज परम्परायें और बुन्देली भाषा बेहद समृद्ध है। इसके संरक्षक के साथ-साथ इसके संवर्धन के लिए एक सप्ताह तक चलने वाला बुन्देली उत्सव श्रेष्ठ प्रयास है। इसके लिए आयोजन समिति और समिति के संरक्षक शंकर प्रताप सिंह बुन्देला निश्चित रूप से बधाई के पात्र है। इस अंचल के अलावा यहां होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों से अपनी अपनी संस्कृति को समेटे सभी कलाकारों और खिलाड़ियों को हम शुभकामनाएं देना चाहते है।

वाणिज्यकर विभाग के अपर आयुक्त इंदौर व छतरपुर के पूर्व कलेक्टर आईएएस राजेश बहुगुणा शनिवार को पर्यटक ग्राम बसारी पहुंचे और उन्होंने यहां जारी अश्व नृत्य प्रतियोगिता का भरपूर लुत्फ उठाते हुये उक्त आशय के उद्गार व्यक्त किये। शनिवार के इस आयोजन अवसर पर भाजपा के जिला अध्यक्ष व बुन्देली संस्कृति, कला व पारम्परिक खेलप्रेमी पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह गुड्डू भी मौजूद थे। उन्होंने बुन्देली उत्सव के आयोजन को बुन्देलखण्ड के लिए महत्वपूर्ण बताया और कहा कि इसके आयोजन की समिति और समिति के संरक्षक मुन्नाराजा जी के प्रयासों से ही विगत 20 वर्षों से लगातार बिना किसी गतिरोध के यह आयोजन सफलता के साथ जारी है। उन्होंने कहा कि इस आयोजन के लिए जो भी सहयोग अपेक्षित होगा उसमें पूरी मदद किये जाने में हम पीछे नहीं रहेंगे। इस अवसर पर ताजग्रुप द्वारा संचालित खजुराहो के चंदेला होटल के प्रबंधक नारायण सिंह भी बतौर मेहमान मौजूद थे।

### अश्व नृत्य के साथ कबड्डी, चौपर और वॉलीबॉल

पर्यटक ग्राम बसारी में जारी 21 वें बुन्देली उत्सव के दूसरे दिन शनिवार को अश्व नृत्य प्रतियोगिता के अलावा कबड्डी, वॉलीबॉल और चौपर का भी आयोजन किया गया। आयोजन समिति के अतिनेन्द्र त्रिपाठी के अनुसार कबड्डी में मेजबान बसारी की पांच टीमों के अलावा गाजीपुर उत्तर प्रदेश की टीम ने भी हिस्सा लिया। बेहद रोमांचकारी आज के तीनों मैचों में जिले के नयागांव ने बसारी को, गाजीपुर उत्तर प्रदेश ने जिले की बारीठी टीम को और स्टेडियम बसारी ने हरमालधाम बसारी की टीम को पराजित कर अपने अपने मैच जीत लिये।

इसी तरह अश्व नृत्य प्रतियोगिता के लिए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी [illegible]







लोकप्रिय रहा चौपर के खेलों का भी चौपर के सैकड़ों प्रेमियों ने भरपूर आनंद उठाया। समाचार लिखे जाने तक अश्व नृत्य और चौपर तथा वॉलीबॉल प्रतियोगिताएं जारी थीं।

### आज की प्रतियोगिताएं

रविवार 19 फरवरी को बुन्देली उत्सव के तीसरे दिन सुबह के वक्त प्रातः 8 बजे से कबड्डी और वॉलीबॉल प्रतियोगिताओं के फाइनल मैच [illegible]

### 20 वर्ष की यात्रा पर बोले अतिथि, विभूतियों को मिला सम्मान

आज से 20 वर्ष पूर्व छोटे से रूप में जब बुन्देली उत्सव प्रारंभ हुआ था तो लोग यह कह रहे थे कि इतना बड़ा आयोजन आगे जारी रह पायेगा कि नहीं इस पर आशंकाएं उठाई जा रही थीं लेकिन 20 वर्ष की इस यात्रा के दौरान बुन्देली संस्कृति, कला और पारंपरिक खेलों का एक साथ इस आयोजन में जो विशाल स्वरूप हम सब देख रहे है वह निश्चित रूप से बेहद सराहनीय है। 21 वें बुन्देली उत्सव के उद्घाटन समारोह की बतौर विशिष्ट [illegible] राज्यसभा सांसद [illegible] चतुर्वेदी शुक्रवार को [illegible] कर रहे थे। [illegible]



# 21 वें बुंदेली उत्सव-2017 का प्रतिवेदन

– अतीन्द्रमणि त्रिपाठी

बुंदेलखण्ड की अदभुत छटा को बिखेरने वाले, बुंदेली लोक कलाओं को सहेजने तथा संस्कृति को पोषण प्रदान करने वाले छः दिवसीय कार्यक्रम ''बुंदेली-उत्सव 2017'' का विगत वर्षो की भाँति अत्यंत हर्षोल्लास के साथ 17 फरवरी शुक्रवार दोपहर 12 बजे पर्यटन ग्राम बसारी को भव्य शुभारम्भ हुआ। यह उत्सव नई पीढ़ी को बुंदेली लोक कला एवं चित्रण, पारम्परिक व्यंजन, खेलकूद, वेषभूषा, बुंदेली नाच, गायन आदि से परिचित कराता हैं। मुख्य अतिथि के रूप मे राज्य सभा सांसद सत्यव्रत चतुर्वेदी और मध्यप्रदेश शासन की राज्यमंत्री ललिता यादव पधारी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने महाराजा छत्रसाल के चित्र पर मल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन किया। इस शुभअवसर पर रंगविरंगे गुब्बारे एवं कबूतरों को आकाश में छोडा गया और बारूदी गोलों की ध्वनि के साथ 21 वें बुंदेली उत्सव का आगाज हुआ। डी.पी.एस. पब्लिक स्कूल छतरपुर की छात्राओं ने सरस्वती वंदना की प्रस्तुति दी।

बतौर मुख्य अतिथि पधारे श्री चतुर्वेदी जी ने बुन्देली उत्सव की लगातार प्रगति की सराहना करते हुये संरक्षक महोदय ''मुन्नाराजा'' को बधाई का पात्र माना और कहा कि ये यब मेरे छोटे भाई ''मुन्नाराजा'' की मेहनत, लगन, बुन्देली संस्कृति, भाषा, और खेलों को बढावा देने के लिये किऐ गये सतत् प्रयासों का नतीजा हैं। उदघाटन समारोह की दूसरी मेहमान मध्यप्रदेश राज्य मंत्री ललिता यादव ने कहा कि मुझे बुंदेलखण्ड की वांशिदा होने पर गर्व हैं बुंदेली संस्कृति, कला, और इन धरोहरों को बचाने का यह आयोजन एक विशेष एवं सफल प्रयास हैं इसके लिए श्री शंकर प्रताप सिंह ''मुन्नाराजा''को मे ह्दय से बधाई देना चाहती हूँ।

माननीय संरक्षक महोदय शंकर प्रताप सिंह बुंदेला ''मुन्नाराजा'' ने मुख्य अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया अपने उद्बोधन में सम्मिलित मेहमानों का हार्दिक आभार प्रकट करते हुए क्षेंत्रीय नागरिकों की प्रशंसा की सिद्धार्थ शंकर बुंदेला ने बैच लगाकर अतिथियों का स्वागत किया इसके अतिरिक्त स्वागत करने वालो में आदित्य शंकर बुंदेला अध्यक्ष बुंदेली विकास संस्थान, लखन दुबे, रामबाबू ताम्रकार, अतीन्द्र मणि त्रिपाठी डायरेक्टर जन शिक्षण संस्थान सहित अनेक गणमान्य नागरिक पत्रकार बंधु तथा आयोजन समिति के पदाधिकारी शामिल रहे। एस.बी.आर. स्कूल बसारी के द्वारा स्वागत गीत की प्रस्तुति दी गई हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी पत्रकारिता के क्षेत्र मे उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रिंट मीडिया से चयनित कमलेश पाण्डेय व अंकुर यादव को ''डॉ. हरिराम मिश्र सम्मान-2017'' से सम्मानित किया गया सम्मान में सम्मान पत्र, शाल, श्रीफल एवं उपहार स्वरूप 3100/- रूपये की राषि भेंट की गई। सम्मान पत्र का वाचन वरिष्ठ साहित्यकार सुरेन्द्र शर्मा शिरीष द्वारा किया गया।

17 फरवरी/ उत्सव के प्रथम दिन कार्यक्रमों की श्रृंखला मे रंगोली एवं लोक चित्रण प्रतियोगिता, बुंदेली पोशाक, बुंदेली नाटक, नाच, गायन आदि का प्रदर्शन क्षेंत्रीय बाल कलाकारों द्वारा किया गया जिसमे डी.पी.एस. स्कूल बसारी, सम्मती विद्या मंदिर छतरपुर, शीलिंग होम छतरपुर आदि स्कूल सम्मिलित रहें। प्रति वर्ष प्रकाशित होने वाली पत्रिका ''बुंदेली-वसंत'' का लोकापर्ण किया गया। दंगल और गिल्ली डंडा की प्रतियोगिताऐ आर्कषण का प्रमुख केन्द्र बनी। दंगल मे अंचल के अलावा देश के विभिन्न प्रांतों के कई नामी पहलवानो ने हिस्सा लिया। रंगोली प्रतियोगिता के निर्णयक मंडल मे नगरपालिका के पूर्व सी.एम.ओ. डी.डी. तिवारी, पर्यावरणविद डॉ. भगवान सिंह व पत्रकार अशोक नायडू शामिल थे। प्रथम स्थान साधना ग्रुप द्वितीय राजा बलवंत सिंह शासकीय महाविधालय राजनगर को तथा लक्ष्मी ग्राम कर्री को प्राप्त हुआ।

18 फरवरी को उत्सव के दूसरे दिन अश्वनृत्य, चौपड, कबड्डी, बॉलीवाल की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे छतरपुर के पूर्व आई.ए.एस. राजेश बहुगुणा और भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह ''गुड्डू भैया'' उपस्थित रहे। जिनका स्वागत सिद्धार्थ शंकर बुंदेला द्वारा माल्यार्पण और प्रतीक चिन्ह प्रदान करके किया गया। कबड्डी के मेजबान बसारी की पॉच टीमों के अलावा गाजीपुर उत्तर प्रदेश की टीम ने भी हिस्सा लिया। बेहद रोमांचकारी आज के तीनो मैचों मे जिले के नयागॉव ने बसारी को गाजीपुर उत्तर प्रदेश ने जिले की बरेठी टीम को और स्टेडियम बसारी ने हरसागर धाम बसारी की टीम को पराजित कर अपने मैच जीत लिए।

दूसरी और अश्वनृत्य प्रतियोगिता मे अंचल से आये अनेक अश्व पालको ने हिस्सा लिया। अश्व पालको और अश्वों की साजसज्जा बेंहद आर्कषण का केन्द्र बनी और अश्वों द्वारा किया गया नृत्य एवं विभिन्न क्रियाओं का प्रदर्शन अत्यंत रोचक रहा। साथ ही बुंदेलखण्ड के लोकप्रिय खेल चौपड़ का सैकड़ों दर्शकों ने भरपूर आनंद उठाया।

19 फरवरी को उत्सव के तीसरे दिन रस्साकशी के साथ चौपड, कबड्डी, बॉलीवाल के फाइनल मैंचों का आयोजन हुआ। पारम्परिक खेल चौपड़ मे मान सिंह यादव विजेता रहे। कबड्डी के मैंच मे गाजीपुर की टीम विजेता रहे। कबडडी के मैच में गाजीपुर की टीम विजेता हुई। इसी के बीच सामूहिक ताकत और तकनीक दोनों के सहारे रस्साकशी का प्रर्दशन हमेश भरपूर उत्साह और आनंद से ओतप्रोत बन जाता हैं।

इसी श्रंख्ला मे दूसरी ओर बुन्देली व्यंजन प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसमे अंचल से आये विभिन्न प्रतियोगियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और विभिन्न बुंदेली व्यंजनों से परिचित कराया। बुंदेली उत्सव मे पधारे अतिथिगण ने बुंदेली व्यंजनो को चखा और प्रतियोगियो के कार्य की अत्यंत सराहना की। निर्णायक मंडल मे अजय पाल सिंह ''राव साब'', डॉ0 शकुन्तला सिंह, कविता सिंह रही।

20 फरवरी को उत्सव के चौथे दिन सोमवार को बुंदेली सिनेमा के इस उत्सव मे पहली बार 11 फिल्मों का आयोजन किया गया उसमे झाँसी के अजय साहू के निर्देशन मे बनी डढ़कोला झाँसी के ही किशोर चक्रवर्ती की फिल्म 'लागी रे लगन' विमल आइना की फिल्म 'मैं वापस आउंगा' छतरपुर के जीत रायल की फिल्म 'देशी लाइव', सुनील वर्मा की 'जीजा आओ रे' अजय साहू की 'बुन्देली डान' सहित कुल 11 बुन्देली फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

21 वें बुन्देली उत्सव के चौथे दिन सायं कालीन कार्यक्रमों की श्रृंख्ला मे बधाई, कछियाई, दिवारी, बुंदेली पोशाक, अहिरयाई बैठक, बुन्देली कीर्तन, कहरवा, गारी, बनरे, लमटेरा, सैर, ख्याल, और दादरा की प्रस्तुतियाँ हुई जिसमें मुख्य अतिथि के रूप मे फिल्मी दुनिया के कलाकार ''राजा बुन्देला'' उपस्थित रहे।

21 फरवरी को उत्सव के पांचवें दिन बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अंचल के विभिन्न स्थानों से आयी हुई एक दर्जन से भी अधिक बैलगॉडियों ने हिस्सा लिया। मुख्य अतिथि के रूप मे डीलमणि सिंह ''बब्बू राजा'' पधारे। प्रतियोगिता मे ग्राम बंधियन के रमेश यादव प्रथम स्थान पर रहे और बंधियन के ही कैलाश यादव की बैलगाडी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। रमेश को 3100/- नगद और एक नई बैलगाडी पुरस्कार के रूप मे दी गई। जबकि कैलाश यादव को 3100/- रूपये नगद राशि का पुरस्कार दिया गया। दूसरी और सायं काल के कार्यक्रमों मे दलदल घड़ी, बहुरूपिया, गोंटे, कार्तिक गीत, आल्हा, बिलवारी, काड़रा, रावला, सोहरे, ढिमरयाई, और अलगोजा की शानदार प्रस्तुतियाँ विभिन्न कलाकारों द्वारा दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता त्रिलोक सिंह बुंदेला तथा देवेन्द्र सिंह बुंदेला द्वारा की गई। कार्यक्रम का संचालन शिवेन्द्र शुक्ला एवं प्रो. बहादुर सिंह परमार द्वारा किया गया।

22 फरवरी को उत्सव के छठवें दिन फाग, ढिमरयाई और राई की विशेष प्रस्तुतियॉ हुई। राई बुंदेलखण्ड का लोकप्रिय नृत्य है ढिमरयाई की विशेष प्रस्तुती मे ''चुन्नीलाल'' ने दर्शको का मन मोह लिया। ढोलक और नगड़िया की ढाप से राई की प्रस्तुतियों ने दर्शको के विशाल जनसमूह को भोर होने तक बांध के रखा साथ ही फाग की भी विशेष प्रस्तुतियॉ हुई। आज ही डा.नर्मदा प्रसाद गुप्त स्मृति सम्मान-2017 तथा गौरिहार महाराज प्रताप सिंह स्मृति-2017 प्रदान किया गया जहाँ एक ओर इन दिनों बुंदेली उत्सव मे विभिन्न कार्यक्रमों की धूम मची रहती है वही दूसरी ओर मेले की धूम भी बरकरार रहती हैं पर्यटक और दर्शक कार्यक्रमों के साथ मेले का भी भरपूर लुफ्त उठाते नजर आते है।

---

## नईं-नईं पोथीं अपुन के लानें

- गीत गीता-मनीष चंद्र झा, सागर
  प्रकाशक- संस्कार भारती सहरसा, कीमत-150/-
- प्रबोध बुन्देलखण्ड महाकाव्य-जगदीश कुशवाहा 'प्रबोध'
  प्रकाशक-समय प्रकाशन, नई दिल्ली- कीमत -450/-
- प्रभु का हिलाया पत्ता-दिनेश बैस, झॉसी
  प्रकाशक-ए.पी.एन.पब्लिकेशन, नई दिल्ली, कीमत-120/-
- ईसुरी -अयोध्या प्रसाद गुप्त, 'कुमुद'
  प्रकाशक-साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, कीमत-50/-
- बुन्देल केशरी महाराजा छत्रसाल आल्हा, पं. मनमोहन पाण्डेय
  प्रकाशक-श्री वीरेन्द्रकेशव सा. परिषद्, टीकमगढ़ की.-75/-
- किशोर पुष्पांजलि-रामकिशोर नगरिया 'किशोर'
  प्रकाशक-बुन्देली साहित्य प्रकाशन, छतरपुर कीमत-30/-
- बुन्देली गीत गोविन्द-पद्यानुवाद-पं. बाबूलाल द्विवेदी
  प्रकाशक-जानकी प्रकाशन, उरई, कीमत-275/-
- पन्ना गौरव (खण्डकाव्य) शंभूदयाल खरे 'विश्वास'
  प्रकाशक-आयुष प्रकाशन, पन्ना, कीमत-101/-
- विभिन्न सम्प्रदाय और मोक्ष-महंत रूपराज महाराज
  प्रकाशक-डॉ. दिनेश एम पंडित महाराज, पन्ना, कीमत-80/-
- टुकड़ों में आईना-सुदीप कु. श्रीवास्तव 'दीप'
  प्रकाशक-मानसी ट्रस्ट-पन्ना, कीमत-175/-
- श्रद्धांजलि मंजूषा-श्री जंगबहादुर सिंह परमार
  संपादक-सुरेन्द्र शर्मा-शिरीष, कीमत-251/-
- बुन्देली गद्य की नई विधाऐं, लेखक-डॉ. रामनारायण शर्मा
  प्रकाशक- डॉ. सुशीला, झॉसी,
- विश्वभाषा साहित्य और रामकथा, संपादक-डॉ. सरोज गुप्ता
  प्रकाशक -अनुज्ञा बुक्स, शाहदरा दिल्ली, कीमत-750/-
- यारो एक सफर -डॉ. रज्जब खान आलमपुरी
  प्रकाशक-हयात पब्लिकेशन, भोपाल, कीमत-100/-
- व्यक्ति नाम-संस्कृति के संवाहक-राकेश नारायण द्विवेदी
  प्रकाशक-जानकी प्रकाशन, ललितपुर, कीमत-475/-
- सावन मन का भी हरा है-देवेन्द्र
  प्रकाशक-बुक बनूका पब्लिकेशन, कीमत-295/-
- नेफ्रो वार्ड-सुरेन्द्र नायक, कोंच
  प्रकाशक-लेखक स्वयं, कीमत-395/-
- सरल की संस्मरणात्मक कथाएँ-डॉ.गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'
  प्रकाशक-सरल साहित्य संगम, झॉसी, कीमत-100/-
- सरल बुन्देली मुहाबरे-गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'
  प्रकाशक-सरल साहित्य संगम, झॉसी,कीमत-250/-
- सरल बुन्देली शब्द कोश, डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'
  प्रकाशक-सरल सहित्य संगम, झॉसी, कीमत-800/-
- महाउर (सीधी रंगमंच विशेषांक)
  प्रकाशक-इन्द्रावती नाट्य, समिति, सीधी
- सूत्रों के हवाले से-डॉ. रमेश चंद्र खरे, दमोह
  प्रकाशक-अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, कीमत-200/-
- सीता संताप-बाबू जी खरे
  प्रकाशक-लेखक स्वयं, कीमत-100/-
- कै रए है रामधई-किशन तिवारी
  पहले पहल प्रकाशन, भोपाल, कीमत-100/-
- हिन्दुस्तान बोलेगा-विनय प्रकाश जैन 'नीरव'
  प्रकाशक-संदर्भ प्रकाशन, भोपाल, कीमत-200/-
- कथाकार राजनारायण बोहरे-आलोचना की अदालत
  संपादक-डॉ. के.वी.एल. पाण्डेय, दतिया
  प्रकाशक-उदीप्र प्रकाशन, लखीमपुर खीरी, कीमत-180/-
- सबरी के बेर-डॉ. देवदत्त द्विवेदी 'दत्त'
  प्रकाशक-म.प्र. तुलसी सा. अकादमी, भोपाल, कीमत-200/-



बुन्देली लोक संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन हेतु आयोजित

# बाइसवें "बुन्देली उत्सव - 2018"

में पर्यटक ग्राम बसारी (बुदेलखण्ड) में पधारे
अतिथियों एवं कलाकारों का हम हार्दिक अभिनंदन करते हैं।



## योजनायें :

1. पात्र हितग्राहियों का वृद्धावस्था पेंशन का लाभ दिलाना।
2. रोजगार गारंटी योजना के तहत हर हाथ को 100 दिन के काम की गारंटी
3. समग्र-स्वच्छता अभियान के तहत शौचालयों का निर्माण करवाना।
4. भू-जल संवर्धन के लिए वृक्षारोपण करवाना।
5. कपिल धारा योजना के तहत कूपों का निर्माण करवाना।
6. शासन की मंशानुरूप गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों को योजनाओं का लाभ दिलाना।



## अपील:

1. जन्म-मृत्यु का पंजीयन अवश्य कराएं।
2. नगर को साफ स्वच्छ और हरा बनाएं रखने में मदद करें।
3. पानी अमूल्य है कृपया इसे बर्वाद न करें।
4. बच्चों को नियमित स्कूल भेजें।

जे.एस. तिवारी
सीईओ

श्रीमती चंदा राजा
उपाध्यक्ष

**श्रीमती ऊषा अहिरवार**
अध्यक्ष

सौजन्य से -

# जनपद पंचायत, राजनगर

जिला-छतरपुर (म.प्र.)